Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

लालसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

167973

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

लालसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य सदन

नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लालसा

गुरुदत्त

Central Library
167973
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web: aarshsahitya.com

081
167973

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
089.9143
GUR-L

मो० 7065618655, 9213527666
हिन्दी साहित्य सदन
2, बी.डी. चैम्बरस, 10/54, देशबन्धु गुप्ता रोड़,
करोल बाग, नई दिल्ली-110005

© प्रकाशक

प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सदन
30/90, कनॉट सरकस, नई दिल्ली - 110001

संस्करण : 1999
आवरण : पाल बधुं
लेजर : ए०वी०प्रैस, शाहदरा, दिल्ली - 32
मुद्रक : गोयल एन्टरप्राइज़िस, शाहदरा, दिल्ली - 32

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

राजा बहादुर की आज्ञा आयी कि भगवती लखनऊ से आने वाली गाड़ी से आ रहे मेहमानों को लाने के लिए स्टेशन पर पहुँच जाये।

आज्ञा लाने वाला राजा बहादुर का विशिष्ट सिपाही रामहर्ष रात के दस बजे पहुँचा था और लखनऊ वाली गाड़ी रात के डेढ़ बजे आती थी। उस समय भगवती सो रहा था। आज्ञा उसकी माँ ने प्राप्त की थी। माँ के पास घड़ी तो थी नहीं, इस कारण वह चिन्ता करने लगी कि किस प्रकार वह अपने पुत्र को जगाकर समय पर स्टेशन भेजेगी।

भगवती चरण की माँ का मकान रेल के स्टेशन से एक फर्लांग के अन्तर पर था। माँ विचार कर रही थी कि यदि वह जागती रहकर कान रखेगी तो आती रेल की सीटी की आवाज सुनकर पुत्र को जगाकर स्टेशन पर भेज देगी।

सर्दी का मौसम था। मकान के भीतर द्वार बन्द करके बैठे रहने से सीटी की आवाज नहीं भी सुनाई दे सकती थी। अतः उसने अपनी खाट मकान के प्रांगण के द्वार पर डाल दी और रजाई लपेटकर वहाँ जा बैठी। दिन-भर खेतों की देख-रेख और घर पर कूटने-पीसने के काम में व्यस्त रहने से वह थकी हुई थी। ज्यों ही रजाई में गरम हुई कि सो गयी। भगवती भी दिन-भर राजा बहादुर के काम की भागदौड़ से थका हुआ अपने कमरे में गहरी नींद सो रहा था। माँ की नींद खुली, रेल की सीटी की आवाज सुनकर। वह हड़बड़ाकर उठी और भागकर मकान में जाकर, भगवती को हिला-हिलाकर जगाने लगी। भगवती जागा तो पूछने लगा, "माँ! क्या है?"

"जल्दी उठो! राजा बहादुर की आज्ञा आई है कि कोई मेहमान इस गाड़ी से आ रहे हैं और तुम्हें उनका सामान उठवा, ठिकाने पर पहुँचाने जाना है।"

राजा बहादुर की आज्ञा की बात सुन वह उठा और कपड़े पहन अपनी लाठी हाथ में ले स्टेशन को भागा।

मेहमान के आने की कोई सूचना उसे नहीं थी। वह नहीं जानता था कि मेहमान कौन हैं और उन्हें कहाँ ठहराना है। फिर भी वह जा रहा था। वह स्टेशन पहुँचा तो गाड़ी छक-छक करती हुई प्लेटफार्म पर आयी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु वह तो मालगाड़ी थी। स्टेशन बाबू हाथ में हरी बत्ती लिए प्लेटफार्म पर खड़ा था। गाड़ी को वहाँ खड़ी नहीं होना था और स्टेशन बाबू उसको हरी बत्ती दिखा, स्टेशन से निकल जाने का संकेत कर रहा था। जब गाड़ी निकल गयी तो भगवती स्टेशन बाबू के पास पहुँचकर पूछने लगा, "बाबू साहब, सवारी गाड़ी कब आयेगी?"

स्टेशन बाबू उसे पहचानता था। भगवती राजा बहादुर के काम से प्रायः स्टेशन पर आया करता था। बाबू भगवती के प्रश्न पर मुस्कराया और पूछने लगा, "गाड़ी से कोई आने वाला है क्या?"

"जी।"

"कौन है?"

"यह तो नहीं जानता। राजा बहादुर की आज्ञा आयी है कि स्टेशन पर मेहमान की अगवानी करने पहुँच जाऊँ।"

"परन्तु अभी तो बारह ही बजे हैं। गाड़ी आने में डेढ़ घंटा है।"

भगवती समझ गया कि माँ को सीटी सुन भ्रम हो गया होगा और उसने समय से पूर्व ही उसे जगाकर भेज दिया है। वह घर में घड़ी न होने का अभाव अनुभव करने लगा। उसने बाबू को कह दिया, "सीटी की आवाज से भ्रम हो गया है।"

"तो ऐसा करो। टिकट-घर में चलकर बैठो, बाहर सर्दी है। भीतर आग जल रही है, वहाँ बैठकर तापो।"

घर लौटकर जाने और फिर आने की अपेक्षा भगवती ने यही उचित समझा कि यहीं बैठकर आग तापे। उसने मुस्कराकर बाबू की ओर देखा और उसके साथ ही टिकट-घर में जा पहुँचा। वहाँ एक बड़ी-सी अँगीठी में पत्थर का कोयला धधक रहा था। वह उसके समीप भूमि पर ही बैठ गया।

बाबू ने लालटेन मेज पर रखी और कुर्सी को आग के समीप खींच, बैठकर आग तापने लगा। यह असिस्टेण्ट स्टेशन मास्टर था। बड़े स्टेशन मास्टर की ड्यूटी इस समय नहीं थी। यह एक पंजाबी बाबू था। नाम था अर्जुनसिंह। घर से इतनी दूर पैंतालीस रुपये महीने की नौकरी पर पड़ा था। हाँ, रेल की नौकरी में इतना मजा तो था कि वर्ष में दो-तीन बार यात्रा करने के लिये मुफ्त पास मिल जाते थे। साथ ही आने-जाने वाले माल के प्रत्येक पार्सल पर एक आना घूस मिल जाती थी। फिर रहने को मुफ्त क्वार्टर मिला हुआ था। इस कारण वह बहुत मजे में था। कुछ बातचीत करते हुए समय निकालने के विचार से बाबू ने पूछ लिया, "राजा साहब क्या वेतन देते हैं तुमको?"

"वेतन तो बीस रुपया मासिक है, परन्तु यह तो फोकट में ही मिल जाता है। मेरा निर्वाह तो भूमि की उपज पर होता है।"

"कितनी भूमि है तुम्हारे पास?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पच्चीस बीघा है। वर्ष-भर में खा-पीकर और दे-दिलाकर एक हजार बनिये के पास बच जाते हैं। दो मजदूर हैं। इनको खाने-भर का अनाज और तीन-तीन रुपया वेतन देता हूँ। साथ ही होली-दिवाली पर नये कपड़े बनवा देता हूँ। इनकी सहायता के लिये अस्थायी रूप में काम करने वाले समय-समय पर रखे जाते हैं। उनको दैनिक उजरत देते हैं। एक वयस्क को दो आना नित्य।"

अर्जुनसिंह को यह सब-कुछ बहुत ही कम समझ में आया। उसने पूछ लिया, "भगवती, कुछ पढ़े भी हो?"

"जी, हिन्दी पढ़ लेता हूँ। रामायण पढ़ता हूँ और अब भगवद्गीता पढ़ रहा हूँ।"

"कहाँ से पढ़े हो?"

"माँ पढ़ाती थी।"

"पर यह तो कुछ नहीं। देखो, हमारा काँटे वाला उर्दू और अंग्रेजी में हस्ताक्षर करना जानता है और तीस रुपये वेतन पाता है।"

"पर बाबू साहब, यह सहतू तो इसमें गुजर भी नहीं कर सकता। प्रायः मुझसे उधार माँगा करता है और उधार लिया रुपया इसने कभी लौटाया नहीं।"

हमारे खेतों पर काम करने वाले उधार नहीं माँगते। अव्वल तो उनको खाने और पहनने को मिलता है। उनके झोंपड़े हम मरम्मत करवाते रहते हैं। बीरू और तारा के पास तो पाँच-पाँच बीघा भूमि भी है। पिताजी ने अपने पास से नजराना देकर यह उनके नाम करवा दी थी।"

यह सुनकर तो बाबू को विस्मय हुआ। परन्तु वह अपनी स्थिति पर विचार करने लगा। पैंतालीस रुपये वेतन था। सौ रुपया महीना तक ऊपर की आय हो जाती थी फिर भी उसके पास कुछ बचता नहीं था। अतः वह समझने लगा कि भूमि रखना वास्तव में जागीरदारी है। उसने बात बदल दी और राजा बहादुर के परिवार की बातें होने लगीं। गाड़ी आयी तो भगवती उठकर प्लेटफार्म पर चला गया।

भगवती की माँ राधा अब कमरे में अपनी चारपाई पर बिस्तर में गरम हो, बैठते हुए भगवती की प्रतीक्षा करने का विचार करती थी, परन्तु वह पुनः सो गयी। कमरे का द्वार और प्रांगण का द्वार खुला रह गया। वह समझती थी कि अभी दस मिनट में भगवती मेहमान को मैनेजर के बंगले में छोड़कर आता ही होगा। वह सोयी तो उसकी जाग खुली, कमरे का द्वार खुलने और भीतर ठंडी हवा आने से। वह समझी कि भगवती आया है। उसने रजाई में से ही आवाज दे दी, "भगवती, आ गये हो?"

कोई हँसा। राधा ने रजाई मुख से हटाई, परन्तु कमरे में अँधेरा था। आगन्तुक ने टार्च के प्रकाश में अपना मुख दिखाकर कह दिया, "चुप रहो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहर मेरी मोटर का ड्राईवर और नौकर खड़े हैं। आवाज सुनकर वे आ जायेंगे।"

"यह क्या कर रहे हैं, राजा भैया?" राधा ने हड़बड़ाकर उठते हुए कहा। यह राजा बहादुर का बड़ा लड़का था।

"चुप। बदनाम हो जाओगी।"

"और आप?"

"जानती नहीं, 'समरथ को नहिं दोष गोसाँई'।"

राधा के साथ यह पहला अवसर नहीं था। उसका पिता गणपति मिश्र राजा बहादुर का खास मुसाहिब था और राधा की माँ के बाल्यकाल में ही देहान्त हो जाने के कारण, राधा राजा के कोट में वहाँ के बच्चों की भाँति पली थी। जब तेरह साल की थी कि राजा बहादुर के लड़के ने इसे मोह-जाल में फँसा, इसका भोग किया था। लड़का तो इससे विवाह करना चाहता था, परन्तु राजा बहादुर ने यह स्वीकार नहीं किया। दोनों में सम्बन्ध की बात प्रकट हो गयी। राधा के पिता ने गाँव के एक प्रसिद्ध विद्वान सीताराम पांडे से राधा का विवाह कर दिया।

विवाह के एक दिन पूर्व गणपति मिश्र का एकाएक देहान्त हो गया। राधा को विश्वास था कि उसके पिता को विष देकर मार डाला गया है। फिर भी राधा की मौसी केसरी ने राधा का विवाह कर दिया। मौसी भी राधा के राजा भैया से सम्बन्ध की बात जान चुकी थी। राधा मन से तो राजा भैया से लगाव रखती थी, परन्तु पिता के मारे जाने की घटना से उसके मन में राजा के लड़के के लिये घृणा उत्पन्न हो गयी थी।

विवाह के एक वर्ष उपरान्त राधा के लड़का हुआ। लड़के का नाम भगवती चरण रखा गया। भगवती जब एक वर्ष का था सीताराम के घर में डाका पड़ा। डाकुओं का विरोध करते हुए सीताराम मारा गया। राधा ने बच्चे को गोदी में ले अरहर के खेत में छुपकर जान बचाई। उसको सन्देह था कि डाका राजा भैया ने डलवाया है और उसका अपहरण भी हो सकता है। इससे तो वह राजा भैया से और अधिक घृणा करने लगी थी।

भूमि के पट्टे का नवीकरण कराना था। उसके लिये राजा साहब का नजराना पाँच सौ रुपये जमा कराया गया। फिर भी पट्टा नहीं हुआ। एक दिन एकाएक पड़ोस के गाँव के एक बनिये ने राधा के खेतों पर तहसीलदार की सहायता से अधिकार जमा लिया और उन पर अपना हल चला दिया। राधा परेशानी में राजा भैया की माता, रानी माँ के पास अपनी शिकायत लेकर गयी। इत्तला करने पर राजा भैया की पत्नी कुँवर रानी की दासी चुटकी आई और उसे रानी माँ के कमरे में ले जाने के स्थान राजा भैया के आगार में ले गयी। इस भेंट का परिणाम यह हुआ कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमि पर बनिये का काम करने वाले लोग भाग गये और राधा के काम करने वालों को पुनः भूमि मिल गयी।

फिर भी राधा के नाम पट्टा नहीं हुआ। इसी प्रकार कभी-कभी समय-कुसमय राधा और राजा भैया में भेंट होती रही, परन्तु राधा मन में विचार करती रही कि अपना और बच्चे का जीवन चलाने के लिये इस गन्दे काम को सहन करना है। प्रत्येक समागम के उपरान्त वह अपने मन को इससे अलिप्त रखने के लिये पूजा, व्रत, अनुष्ठान करती रहती थी।

भगवती अब सोलह वर्ष का हो गया था। उसकी माँ की आयु तीस वर्ष की थी। वह अभी भी अपने को पूर्ण यौवना अनुभव करती थी। फिर भी वह राजा भैया के इस कृत्य से घृणा करती थी। जब राजा भैया उठकर जाने लगे तो उन्होंने कहा, "राधा! आज कई वर्ष के उपरान्त यह अवसर मिला है। धन्यवाद। अब सो जाओ।"

जाते-जाते वह रुके और कुछ स्मरण कर पूछने लगे, "भगवती कहाँ है?"

"स्टेशन पर गया है।" राधा ने भर्राई हुई आवाज में कह दिया।

"मैं दरवाजा खुला देख यही समझा था।"

राजा भैया बाहर आये तो ड्राईवर ने पूछ लिया, "महाराज, बहुत देरी लगी है?"

"भीतर द्वार बन्द था और कोई जागता ही नहीं था।"

"जल्दी चलिये, गाड़ी आ रही है।"

राजा भैया लपककर गाड़ी में चढ़ गये और गाड़ी स्टेशन को चल दी।

: 2 :

गाड़ी स्टेशन के प्लेटफार्म पर खड़ी हुई। भगवती ने फर्स्ट क्लास के डिब्बे से दो यात्रियों को उतरते देखा तो समझ गया कि ये ही मेहमान हैं। वह उनके सामने खड़ा हो पूछने लगा, "आप राजा बहादुर नौगवाँ से मिलने आये हैं?"

"हाँ, तुम कौन हो?"

"मैं उनका सेवक आपकी अगवानी के लिये भेजा गया हूँ।"

मेहमान एक प्रौढ़ अवस्था का, अंग्रेजी ढंग की पोशाक पहने हुए था और उसके साथ एक लड़की थी। लड़की भीतर गाड़ी में जा, अपना सूटकेस इत्यादि उतारने लगी। भगवती लपककर भीतर चला गया और बोला, "बहनजी, आप छोड़िये। मैं निकाल देता हूँ।"

उसने दो सूटकेस, एक अटैचीकेस और एक बिस्तर निकाला तो लड़की बोली, "बस, और नहीं है।" वह भी बाहर आ गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय राजा भैया अपने सेवक बेनी के साथ वहाँ आ पहुँचे। वह मेहमान से मिलने लगे थे और लड़की सामान उठवाने लगी। बेनी ने हाथ लगा सूटकेस तो भगवती के सिर पर उठवा दिया और स्वयं बिस्तर कन्धे पर रख स्टेशन के बाहर चल पड़ा। लड़की सामान के साथ-साथ चल पड़ी। बेनी ने बिस्तर मोटर के कैरियर पर रखा और भगवती को कह दिया, "पंडित, सूटकेस रखकर बँधवा दो।" इतना कह वह भीतर प्लेटफार्म पर कुँवर साहब के पास चला गया। लड़की अटैचीकेस हाथ में पकड़े खड़ी थी और जब ड्राईवर सामान बाँध रहा था, वह भगवती को देखकर पूछने लगी, "तो तुम ब्राह्मण हो। और वह कौन है?" उसने सेवक बेनी की ओर संकेत कर पूछा।

"वह राजा भैया का प्रिय सेवक है।"

"बहुत बदतमीज है।"

"जी। वह राजा भैया का प्रिय है।"

इस समय अधिक बात नहीं हो सकी। लड़की के साथ आने वाले प्रौढ़ावस्था के बाबू राजा भैया के साथ वहाँ आ गये थे। जब सामान कैरियर पर रख दिया गया तो लड़की, उसके साथ वाले बाबू और राजा भैया पिछली सीट पर बैठ गये और ड्राईवर और बेनी अगली सीट पर बैठे। भगवती मोटर के बाहर खड़ा था। वह विचार कर रहा था कि उसे वहाँ से अवकाश मिल जायेगा। राजा भैया ने कह दिया, "भगवती! बेनी के पास बैठ जाओ। अभी तुम्हें हमारे साथ चलना होगा।"

भगवती विवश हो अगली सीट पर बेनी के पास घुस गया और गाड़ी चलकर मैनेजर के बंगले पर जा पहुँची। मैनेजर साहब का बंगला नगर में ही था। इस बंगले के आधे भाग में मैनेजर रहता था और आधा भाग मेहमानों के लिये रिक्त रहता था। इसी भाग में मेहमानों को ठहराया जा रहा था।

मोटर की आवाज सुन मैनेजर नाइट-गाउन में कमरे से निकल आया और मेहमान बाबू तथा उनकी लड़की को देख हाथ जोड़कर नमस्कार करते हुए विस्मय में पूछने लगा, "आपने सूचना नहीं भेजी?"

"भेजी तो थी। कल कलकत्ता से चलने से पहले तार किया था, परन्तु पता चला है कि यहाँ तार आज रात के सात बजे पहुँचा है।"

"ओह!" मैनेजर के चौकीदार ने नौकरों को जगाया और मेहमानों के कमरे को झाड़-फूँक ठीक करने तथा उनके बिस्तर लगाने के लिये कह दिया। बावर्ची को कॉफी तैयार करने का आदेश दे दिया गया।

भगवती ने मेहमानों का सामान लगवाया और जब कॉफी तैयार हुई तो मेहमान बैठक में आ गये और कॉफी पीने लगे।

राजा भैया ने भगवती को कहा, "राजा बहादुर की आज्ञा है कि तुम यहाँ इन बाबू साहब की सेवा में रहो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कॉफी समाप्त हुई तो बाबू साहब और उनकी लड़की सोने के कमरे में चले गये। मैनेजर, राजा भैया और भगवती बैठक से बाहर चले आये। जब राजा भैया मोटर में सवार हो चले गये तो मैनेजर ने कह दिया, "भगवती! अब तुम भी घर जाओ। प्रातः आ जाना।"

भगवती यही चाहता था। रात के दो बज रहे थे और वह नींद अनुभव कर रहा था।

वह घर पहुँचा तो प्रांगण का द्वार और माँ के कमरे का दरवाजा खुला था। वह समझ गया कि माँ ने उसके शीघ्र लौटने की आशा में द्वार खुला छोड़ दिया होगा। वह आँगन का द्वार बन्द कर कमरे में पहुँचा तो माँ को जागते देख विस्मय में पूछने लगा, "माँ! अभी जाग रही हो?"

"बहुत देर कर दी है, भगवती।"

"माँ! तुमने डेढ़ घण्टा जल्दी यहाँ से भेज दिया था। उस समय तो कोई मालगाड़ी आयी थी।"

"अच्छा! भूल हो गयी है। अब सो जाओ।"

"सुबह फिर जाना है। इन्हीं मेहमानों की सेवा में मुझे नियुक्त किया गया है।"

"अच्छी बात है, दो-तीन घण्टे तो सो लो।"

भगवती कपड़े बदल सो गया, परन्तु राधा नहीं सो सकी। वह अपने जीवन से भी ग्लानि अनुभव करने लगी थी। इस बार राजा भैया कई वर्ष के उपरान्त उसको पकड़ पाये थे। इससे तो वह अपने जीवन की दिशा बदलने के लिए विचार करने पर विवश हो गयी थी। वह सोच रही थी कि इस प्रकार के अत्याचार से बचने के लिये उसे नौगवाँ छोड़ना चाहिए। परन्तु भगवती, जिसे वह अपने पति की देन मानती थी, उसके प्रति अपने कर्तव्य का ध्यान कर वह मार्ग नहीं पाती थी। उसके गाँव से जाते ही भूमि छिन जायेगी और बीस रुपये महीना में भगवती कुछ कर नहीं सकेगा। साथ ही वह उसके विवाह के विषय में विचार कर रही थी। दोनों समस्याओं का सुझाव नौगवाँ के बाहर दिखाई नहीं देता था। इस प्रकार किसी निर्णय पर न पहुँच, वह दिन निकलने तक चारपाई पर बैठी विचार करती रही।

भगवती उठा और माँ को चारपाई पर बैठे देख पूछने लगा, "माँ! स्वास्थ्य तो ठीक है? आज स्नानादि कुछ नहीं हुआ?"

माँ का ध्यान टूटा। वह उठी और बोली, "शरीर तो ठीक है। मन ठीक नहीं। तुम शीघ्र तैयार हो जाओ।"

भगवती स्नानादि से निवृत्त हो, जल्दी-जल्दी में पूजा के मंत्र पढ़ वस्त्र पहन मैनेजर साहब के बंगले पर जा पहुँचा।

राधा उठी और अपने स्नान-ध्यान में लगी हुई अभी भी विचारों में लीन रही। वह किसी निर्णयात्मक बात तक पहुँच नहीं सकी। वह यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो समझ गयी थी कि इस प्रकार प्रायः होने वाले बलात्कारों से बचने के लिये उसे नौगवाँ की जमींदारी छोड़ देनी चाहिए। परन्तु इसे छोड़ने के पूर्व उसे वह भूमि भगवती के नाम करवानी चाहिए और भगवती का विवाह कर देना चाहिए। उसके बाद ही वह जा सकेगी; इस नौगवाँ से अथवा इस संसार से? यह भी विचारणीय प्रश्न था।

ऐसी घटनाओं के उपरान्त वह दिन-भर व्रत रखा करती थी और पूजा-पाठ जाप में लीन रहा करती थी। आज भी वह इसी कार्यक्रम में लीन हो गयी।

भगवती मैनेजर साहब के बंगले में पहुँचा तो तब तक सब सो रहे थे। चौकीदार द्वार पर खड़ा था। भगवती को आया देख उसने पूछ लिया, "कैसे आये हो पण्डितजी!"

"मेहमानों की सेवा के लिये नियुक्त किया गया हूँ।"

"अभी तो कोई जागा नहीं। वहाँ बरामदे में बैंच पर बैठ जाओ।"

भगवती बैंच पर जा बैठा। आधा घण्टा प्रतीक्षा करने पर मैनेजर की ओर का द्वार खुला और मैनेजर साहब की पत्नी रमणी दास रात के कपड़ों के ऊपर ऊनी गाउन पहने बाहर निकली। भगवती उठकर खड़ा हो गया। मैनेजर की पत्नी ने पूछ लिया, "कैसे बैठे हो?"

"राजा बहादुर के मेहमानों की सेवा के लिये नियुक्त हूँ।"

रमणी ने मुस्कराते हुए भगवती को सिर से पाँव तक देखकर पूछ लिया, "क्या सेवा करोगे?"

"जो कुछ भी वे कहें।"

"वे जूता साफ करने को कहें तो करोगे?"

"करना ही होगा।"

"किस जाति के हो?" रमणी का अनुमान था कि सामने खड़ा युवक किसी उच्च जाति का है। भगवती गौरवर्णीय, सुन्दर और सर्वथा धुले कपड़े पहने था। जूता साफ करना तो चमार, बारी इत्यादि नीच जातियों का काम है। इसी कारण उसने पूछा था "किस जाति के हो?"

"जी, ब्राह्मण हूँ!" भगवती ने उत्तर दिया।

रमणी अब बंगले के सामने की लॉन में चली गयी थी और भगवती भी उसके प्रश्नों का उत्तर देता हुआ एक पग पीछे-पीछे उसके साथ-साथ चल रहा था। मैनेजर तो ईसाई था। नाम था हरिमोहन दास। वह कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम०ए० पास कर, यू०पी० की सिविल सर्विस में नौकरी पा गया था और इस सर्विस से कलेक्टर बन रिटायर हुआ था। पेंशन ले लेने के उपरान्त वह नौगवाँ जमींदारी का प्रबन्धक नियुक्त हुआ था। इसकी पत्नी रमणी एक पंजाबी सरदार की फ्रांसीसी पत्नी से उत्पन्न लड़की थी। दोनों ईसाई होते हुए हिन्दुओं को, विशेष रूप में देहात के हिन्दुओं को,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अति संकुचित विचार का मानते थे। यही कारण था रमणी दास के विस्मय का। भगवती को जूता भी साफ करने के लिये तैयार देख रमणी को उसकी बात पर सन्देह हुआ कि वह व्यर्थ की खुशामद कर रहा है। वह पूछने लगी, "तो तुम ब्राह्मण होते हुए भी जूता साफ करोगे?"

"जी! ब्राह्मण मैं घर पर हूँ। यहाँ राजा बहादुर का सेवक होते हुए शूद्र हूँ। शूद्र मैं उसको समझता हूँ, जो मालिक के आदेश पर काम करने वाला हो। उसके कर्मों का पुण्य-पाप मालिक का होता है। सेवक तो वेतन पाता है सेवा का।"

रमणी दास के लिये यह व्याख्या नयी थी। इस समय मैनेजर मिस्टर दास भी गाउन और ऊनी टोप पहने हुए उनके समीप आ खड़े हुए। रमणी ने मुस्कराते हुए कहा, "यह ब्राह्मण कुमार है। कहता है कि मालिक के हुक्म से काम करने वाला शूद्र होता है और उसके कर्मों के पाप-पुण्य की जिम्मेदारी मालिक पर होती है।"

हरिमोहन दास ने ध्यान से भगवती की ओर देखकर पूछ लिया, "कितना पढ़े हो?"

"घर पर ही हिन्दी पढ़ी है।"

"तो ये बातें कहाँ से सीख गये हो?"

"मुझको पढ़ाने वाली मेरी माँ हैं। यह उन्होंने ही बताया है। वे कहती हैं कि नौकरी करता हुआ बड़े-से-बड़ा अफसर भी शूद्र होता है। नौकरी से बाहर ही वह अपने कर्मानुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र होता है।"

"और तुम क्या हो?" मैनेजर ने पूछ लिया।

"यहाँ पर राजा बहादुर का सेवक होने से शूद्र हूँ और घर पर पूजा-पाठ तथा विद्यार्जन करते समय, मैं ब्राह्मण होता हूँ।"

"यह भी तुमको तुम्हारी माँ ने बताया है?"

"जी।"

"क्या नाम है उनका?"

"राधा रानी। मेरे पिता श्री पण्डित सीताराम जी पाण्डे थे।"

"ओह!..." मैनेजर भगवती का मुख देखता रह गया। कुछ विचार कर बोला, "तुम्हारी भूमि का पट्टा हुआ है या नहीं?"

"जी नहीं।"

"तुम यत्न क्यों नहीं करते?"

"महाराज का सेवक होने के कारण उन पर बल-प्रयोग कर नहीं सकता।"

रमणी ने कह दिया, "अपनी माँ से कहना मुझसे मिले। मैंने तुम्हारी माँ के विषय में सुना है और यह जान कि उसका पुत्र इतने सुलझे हुए विचार रखता है, मुझे प्रसन्नता हुई है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैनेजर ने बात बदल दी, "मेहमान तो अभी जागे नहीं।"

"मेरा उनके जागने से सम्बन्ध नहीं। मैं अपने काम पर उपस्थित हूँ।"

मैनेजर समझ नहीं सका कि यह खुशामद मात्र है अथवा विचारित बात। उसने पूछ लिया, "जानते हो, यह मेहमान कौन हैं?"

"जी नहीं।"

"छोटे कुँवर साहब को जानते हो?"

"जी, कुँवर विजय बहादुरसिंह।"

"उनके विवाह की बातचीत है। यह लड़की रानी बनने के लिए आई है।"

"पर हुजूर! कोई अपने कियों से रानी बन सकती है क्या?"

"पुरुषार्थ तो किया जा सकता है।"

"इनका विवाह से पहले यहाँ आ जाना तो इनके रानी बनने में बाधक हो जायेगा।"

"ये बाबू साहब बहुत धनी हैं। धन के जोर से ये अपनी लड़की के लिए रानी की पदवी खरीदने का यत्न करेंगे। लड़की अपने बनाव-श्रृंगार से भी यत्न करेगी।"

"हो सकता है, परन्तु मैं तो यह समझता हूँ कि यदि राजा भैया की पत्नी कुँवर रानी जी ने इन्हें पसन्द कर लिया तो यह यहाँ से बैरंग ही चली जायेंगी।"

: 3 :

मैनेजर भगवती का मुख देखता रह गया। बात आगे नहीं चली। मेहमान बाबू अपने कमरे से निकले तो मैनेजर के बैरा फर्नन्डीज़ से बातें करने लगे। भगवती लपककर बाबू साहब के समीप पहुँचकर पूछने लगा, "हुजूर, क्या चाहिए?"

"तुम बेड-टी ले आओ। यह बेवकूफ है।"

भगवती विचार कर रहा था कि मेहमान बाबू ने जूता साफ करने को नहीं कहा, वर्ना रमणी दास को अपने सिद्धान्त का अभी प्रमाण देना पड़ जाता। वह रसोई में गया और वहाँ चाय ट्रे में रखकर मेहमानखाने की बैठक में चला गया। बाबू साहब भीतर सोने के कमरे में चले गये थे। भगवती ने सोने के कमरे के बन्द द्वार के समीप पहुँच आवाज़ दे दी, "हुजूर, चाय लाया हूँ।"

भीतर से लड़की की आवाज आई, "ले आओ।"

भगवती द्वार खोलकर भीतर चला गया। दोनों पलंगों के बीच रखी तिपाई पर भगवती ने ट्रे रख दी। बाबू साहब तो नाइट-गाउन में अपने पलंग पर पाँव लटकाये बैठे थे और उनकी लड़की अपने पलंग पर बिस्तर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में बैठे-बैठे अपनी रात की पोशाक पर गाउन पहन रही थी।

भगवती ने तिपाई पर ट्रे रखकर लड़की को हाथ जोड़कर नमस्कार किया और फिर बाहर जाने को घूमा तो लड़की ने आवाज दे दी, "ठहरो! तुम बैरा हो?"

"जी नहीं। बाबू साहब उसे बेवकूफ समझते हैं। इस कारण मुझे सेवा के लिए उपस्थित होना पड़ा है।"

"मतलब यह कि पिताजी तुमको बेवकूफ नहीं समझते।" लड़की मुस्कराई और टाँगें रजाई से बाहर निकाल पलंग के नीचे रखे स्लीपर पहन, खड़ी हो, भगवती को देखने लगी। वह अपने कथन की प्रतिक्रिया भगवती के मुख पर देखना चाहती थी। भगवती ने धीमी हँसी हँसते हुए कहा, "अपने कथन का मतलब तो वे ही बता सकते हैं।"

"वह बेवकूफ कह रहा था," बाबू साहब ने कह दिया, "कि भीतर मेम साहब थीं, इसलिये वह भीतर चाय नहीं लाया।"

भगवती मुस्कराता हुआ कहने लगा, "उसका मतलब इनसे था।" उसने लड़की की ओर संकेत कर दिया।

लड़की अब पलंग पर बैठ गयी थी और चाय का प्याला उठा सुरूकी लगा, पीने लगी थी। चाय का एक घूँट गले से नीचे उतार लड़की बोली, "तब तो पिताजी ने ठीक ही कहा है कि वह बेवकूफ है। मैं न मेम हूँ और न साहब हूँ।"

भगवती ने बैरा की सफाई देते हुए कह दिया, "अपनी-अपनी भाषा और उसके अपने-अपने अर्थ होते हैं। वह समझाया जा सकता है।"

"हाँ, उसको समझा देना। मैं इनकी लड़की हूँ।"

"जी, समझा दूँगा।"

इतना कह भगवती बाहर जाने को पुनः घूमा तो लड़की ने उसे पुनः रोका, "ठहरो! मुझे तुमसे कुछ पूछना है।"

भगवती घूमकर बोला, "पूछिये।"

"वह स्टूल लेकर बैठ जाओ। तुम तो समझदार लड़के मालूम होते हो।" भगवती ने दीवार के साथ स्टूल उठा दोनों पलंगों के समीप रख, उस पर बैठते हुए कहा, "जी, मुझे राजा बहादुर ने आपकी सुख-सुविधा का प्रबन्ध करने के लिये नियुक्त किया है। मैं ही रात आपको लेने स्टेशन पर गया था।"

"क्या नाम है?"

"भगवती चरण।"

"किस जाति के हो?"

"ब्राह्मण का पुत्र हूँ, परन्तु जब सेवा-कार्य में होता हूँ तो केवल मात्र सेवक हूँ।"

लड़की विस्मय में मुख देखती रह गयी। बाबू साहब चाय समाप्त कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लैवेटरी में चले गये। लड़की ने पूछा, "एक बात सत्य-सत्य बताओगे?"

"जितनी बात बताऊँगा, सत्य होगी। जो नहीं बतानी होगी, नहीं बताऊँगा।"

लड़की फिर मुस्कराई। वह बोली, "कितना पढ़े हो?"

"केवल हिन्दी पढ़ा हूँ।"

"तो अंग्रेजी नहीं जानते?"

"जी नहीं।"

"तो इतनी अक्ल की बात कैसे करते हो?"

"यह बिना अंग्रेजी पढ़े ही मिल गयी है।"

"ओह! अच्छा यह बताओ, छोटे कुँवर साहब को देखा है?"

"जी। प्रायः नित्य ही उनके दर्शन करता हूँ।"

"वे कैसे आदमी हैं?"

"स्वभाव के सरल, व्यवहार के सच्चे और सहानुभूतिपूर्ण, बोलने में मधुर-भाषी और शुद्ध-पवित्र विचार रखने वाले।"

"एक ही वाक्य में बहुत कुछ कह दिया है।"

"परन्तु वे तो इसके अतिरिक्त भी हैं। बात लम्बी हो जाने के भय से संक्षेप में ही कह दिया है।"

भगवती ने देखा कि कुँवर साहब की प्रशंसा से लड़की प्रसन्न हुई है। लड़की चाय समाप्त कर चुकी थी। उसने प्याला ट्रे में रखते हुए कहा, "उनकी आयु कितनी है?"

"वे मुझसे बड़े हैं। इस कारण बता नहीं सकता।"

"सुनी तो होगी।"

"पर आप सुनी-सुनाई बात पर विश्वास कर लेंगी।"

लड़की हँस पड़ी। भगवती ने देखा कि लड़की के दाँत बहुत सुन्दर हैं। वह चुपचाप लड़की का मुख देखता रहा। लड़की ने कहा, "बहुत मजेदार आदमी हो तुम!"

"मुझको अपनी बात में कोई विशेषता प्रतीत नहीं हुई।"

"तुम बिना पढ़े-लिखे वकीलों की भाँति बातें करते हो।"

"सत्य? मुझे पता नहीं था।"

"अच्छा, यह बताओ।" लड़की कहते हुए उठ खड़ी हुई तो भगवती भी उठ खड़ा हुआ और उसके पूछने की प्रतीक्षा करने लगा।

"कुँवर साहब के कितने विवाह हो चुके हैं?"

"मेरी जानकारी में तो अभी एक भी नहीं हुआ है।"

"तो बिना जानकारी के भी विवाह हो सकता है।"

"जी। मेरा मतलब है कि मैंने उनका विवाह होते नहीं देखा। मैं कोट के अन्तःपुर में बाल्यकाल से जाता हूँ, मैंने उनकी किसी रानी को देखा नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम तो बहुत मतलब के आदमी हो। भला बताओ, कोट में कितनी रानियाँ हैं, वहाँ का रहन-सहन कैसा है?"

"एक तो रानी माँ हैं। वे राजा बहादुर की पत्नी हैं। एक बुआ रानी हैं। वे राजा बहादुर की बहन हैं, जो अपने पति के घर से चली आयी हैं। तीसरी मौसी रानी हैं। वे रानी माँ की विधवा बहन हैं। चौथी कुँवर रानी हैं। वे बड़े कुँवर साहब अर्थात् राजा भैया की पत्नी हैं।"

"अच्छा यह बताओ, इनमें से कौन रानी तुमको अधिक समझदार और विश्वस्त समझती हैं?"

इस प्रश्न पर भगवती चुप रहा। वह विचार करने लगा था कि किन शब्दों में अपने मन की बात कहे। वह किसी की निन्दा नहीं करना चाहता था। साथ ही वह इस कोट में आकर रहने वाली एक नवीन प्राणी को कोट के भीतर की कुछ झलक दे देना चाहता था।

लड़की सामने खड़ी उसके कहने की प्रतीक्षा करती रही। आखिर भगवती ने नपे-तुले शब्दों में कह दिया, "देखिये जी! दूसरे मेरे विषय में क्या समझते हैं, मैं जानता नहीं। किसी के कथन और विचार में अन्तर भी हो सकता है। हाँ, इतना तो देख रहा हूँ कि मेरी सेवाओं का सबसे अधिक प्रयोग रानी माँ करती हैं। यह कदाचित् इस कारण है कि आरम्भ से ही मैं राजा बहादुर की सेवा में हूँ और वे मुझसे विशेष वात्सल्य रखती प्रतीत होती हैं।"

इस समय बाबू साहब लैवेटरी से निकल आये और लड़की ने बात बन्द करते हुए कह दिया, "देखिये पण्डितजी! मेरी पूछताछ के विषय में किसी को बताइयेगा नहीं।"

भगवती मुस्कराता रहा और वह लैवेटरी में चली गयी। बाबू बेनी माधोसिंह ने भगवती से पूछा, "क्या बता रहे थे सुशीला को?"

"इस नौगवाँ की बातें बता रहा था।"

"तो तुम यहाँ चिरकाल से रहते हो?"

"मेरा जन्म-स्थान यहीं है।"

बाबू साहब भगवती को कमरे के बाहर ले गये और बरामदे में जा खड़े हुए।

मैनेजर मिस्टर दास बरामदे में खड़े थे। वे जमींदारी के मुख्य जिलेदार मूलसिंह से बातें कर रहे थे। बाबू साहब को कमरे से निकलते देख, वे उनके पास आकर बोले, "आदाबअर्ज है।"

"सुनाइये, मैनेजर साहब! सब ठीक है?"

"आप बताइये, कोई तकलीफ तो नहीं हुई?"

"नहीं, सब ठीक है। अब आज का क्या कार्यक्रम है?"

"यही तो बात कर रहा था। ये हमारे जिलेदार हैं और राजा बहादुर का सन्देश लेकर आये हैं। वे चाहते हैं कि पहले आप उनसे मिलने ग्यारह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बजे चलियेगा। यदि आपसे बातचीत तसल्लीबख्श हुई तो फिर कोट से कुछ औरतें लड़की को देखने आयेंगी। यदि उनकी सम्मति अनुकूल हुई तो राजा बहादुर विवाह में होने वाली शर्तों की बात करेंगे।

यदि आपको उनकी शर्त स्वीकार हुई तो फिर उनका पुरोहित आपके पुरोहित से मिलकर विवाह की तिथि-मुहूर्त इत्यादि निश्चय करेगा और फिर विवाह हो जाएगा।"

"मैं छोटे कुँवर साहब को देखना चाहूँगा।"

"आपकी इच्छा की बात मैं कोट में भेज देता हूँ।"

मेहमान बाबू ने बात बदल दी। वे बोले, "राजा बहादुर का यह कर्मचारी," उन्होंने भगवती की ओर देखकर कहा, "तो बहुत समझदार आदमी प्रतीत होता है। क्या यहाँ के सब कर्मचारी ऐसे ही हैं?"

"जी नहीं। सब एक समान कैसे हो सकते हैं! पाँचों अँगुलियाँ एक बराबर नहीं होतीं।"

"यह कह रहा था कि छोटे कुँवर साहब इससे बड़े हैं, इस कारण यह अपनी जानकारी से नहीं बता सकता कि उनकी आयु कितनी है। जब इससे पूछा कि इसने सुनी होगी तो यह हमसे ही पूछने लगा कि, 'क्या आप सुनी बात पर विश्वास कर लेंगे'।"

मैनेजर भी हँस पड़ा। वह बोला, "इस लड़के से बातचीत करने का मुझे आज ही अवसर प्राप्त हुआ है और मैं इसके विषय में आपकी राय से सहमत हूँ।"

मेहमान बाबू ने कहा, "प्रातः के अल्पाहार के लिये किस समय तक तैयार होना चाहिए?"

"जब आपको नाश्ता करने का समय हो?"

"हम चाहेंगे कि नौ बजे तक प्रबन्ध हो सके तो ठीक रहेगा।"

मैनेजर ने कलाई पर बँधी घड़ी में समय देखा तो कह दिया, "अभी आठ बजे हैं। आप तो हमारे मेहमान हैं। मुझे भी उस समय तक तैयार हो जाना चाहिए। मैं तैयार होने जा रहा हूँ।"

इतना कह मैनेजर अपने कमरे में चला गया। बाबू साहब मेहमानखाने के ड्राइंग-रूम में जाने लगे तो भगवती बाहर ही ठहर गया। परन्तु मेहमान बाबू ने उसे भीतर बुला लिया। दोनों भीतर गये और बाबू साहब सोफा पर बैठ, भगवती को सामने रखी कुर्सी पर बैठने के लिए कहने लगे।

भगवती बैठा तो बाबू साहब पूछने लगे, "क्या राजा बहादुर बहुत लोभी जीव हैं?"

"मैं इस विषय में क्या कह सकता हूँ! राजा भैया के विवाह के समय मैं बालक मात्र था। उनके विवाह को हुए दस वर्ष से अधिक हो चुके हैं।"

"राजा भैया के कोई सन्तान नहीं है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उनके एक लड़का हुआ था। उसका देहान्त हो चुका है।"

"कोट में और किसी के बच्चे भी हैं?"

"जी नहीं। जब राजा भैया के लड़के का देहान्त हुआ तो राजा बहादुर ने मुझे कोट में रखना आरम्भ कर दिया। तब से मैं कोट के भीतर बच्चों की भाँति रहता हूँ।"

"कोट के भीतर, मेरा मतलब है अन्तःपुर में, सजावट का सामान कैसा है?"

"राजा बहादुर पुराने विचार के आदमी हैं। उनके कमरे तो नवाबों की भाँति झाड़-फानूसों से सजे हैं। राजा भैया की रानी अभी तक बच्चे की मृत्यु से शोकग्रस्त रहती हैं। उनके कमरों में सजावट का सामान बिलकुल नहीं है।"

"और छोटे कुँवर साहब के?"

"उनके घर में कोई स्त्री नहीं और घर की सजावट बिना किसी स्त्री के हो नहीं सकती।"

"मैंने छोटे साहब का फोटोग्राफ तो देखा है। उससे यह पता चलता है कि वे सुन्दर युवक हैं। तुम क्या समझते हो?"

"बाबू साहब! पुरुषों के सौन्दर्य के विषय में स्त्रियों की सम्मति लेनी चाहिए। स्त्रियों के विषय में पुरुषों की सम्मति ठीक रहती है।"

बाबू साहब हँस पड़े, "तुमने लड़की को देखा है और कदाचित् छोटे साहब तुमसे लड़की की रूपरेखा के विषय में पूछेंगे, तो तुम क्या बताओगे?"

"जो कुछ देखा है और समझा है, वही बता दूँगा।"

"वह हमको भी बता दो।"

"क्या आप विश्वास कर लेंगे कि मैं वही कहने वाला हूँ।"

"तुमने अभी-अभी लड़की के सामने कहा है कि तुम कहोगे तो सत्य ही। जो नहीं कहने की बात होगी, वह नहीं कहोगे।"

"जी, यह कहा है और मैं यह समझा हूँ कि बहनजी एक देवी हैं।"

देवी एक शब्द ऐसा था, जिसके बहुत अच्छे अर्थ भी लिये जा सकते थे और यह केवल एक औपचारिक कथन भी माना जा सकता था। बेनी माधोसिंह विस्मय में भगवती का मुख देखता रह गया। भगवती मन में विचार कर रहा था कि वह परीक्षा में ठीक उतर रहा है। वह असत्य भाषण नहीं कर रहा है।

इस समय बाबू साहब की लड़की स्नानागार से निकल भगवती के पीछे आकर खड़ी हो गई थी। उसने भगवती की अन्तिम बात सुन ली थी। उसे तो देवी से अधिक बहन शब्द अर्थयुक्त प्रतीत हुआ था।

अभी बाबू साहब देवी का अर्थ समझ ही रहे थे कि लड़की ने कह दिया, "बाबा! स्नान कर लो। ब्रेकफास्ट का समय हो जायेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 4 :

बाबू साहब स्नान के लिये भीतर गये तो भगवती फिर उठा, परन्तु लड़की ने बाबू साहब के स्थान पर बैठते हुए कहा, "कहीं जल्दी में काम पर जा रहे हैं?"

"जी नहीं। मैं तो आप लोगों के सुख-आराम को देखने के लिये ही नियुक्त हुआ हूँ।"

"तो बैठिये। आपकी बातों में रस आ रहा है।"

भगवती मुस्कराकर बैठ गया। सुशीला स्नान कर दिन के वस्त्र पहने हुए थी। साड़ी-जम्पर के ऊपर ऊनी स्वेटर था। बालों को बहुत कम तेल लगा, उसने कंघा किया हुआ था। आँखों में स्याही लगाई थी, परन्तु होंठों पर सुर्खी नहीं थी। वह अब जागने के समय से अधिक सुन्दर प्रतीत हो रही थी।

उसने मुस्कराते हुए कहा, "आपने मुझको बहन कहा है। इस कारण अपनी इस नयी बहन का नाम जान लो। मेरा नाम सुशीला है। आप मुझसे छोटे प्रतीत होते हैं, इस कारण मैं आपको भैया कह सकती हूँ।"

"यह तो आपकी बहुत कृपा हो रही है मुझ पर।" भगवती ने सुशीला को उसे, अब 'तुम' के स्थान पर 'आप' कहते सुना था।

"स्नान करती हुई मैं आपकी बातों पर विचार करती रही हूँ और समझी हूँ कि आप केवल मजेदार ही नहीं, वरन् बहुत योग्य युवक भी हैं। कोई भी औरत आपकी ओर देखते समय माथे पर त्योरी चढ़ाये बिना नहीं रह सकती।"

"पर आप तो प्रातःकाल से ही मेरी ओर देखकर मुस्करा रही हैं।"

"मैं इसी विषय पर विचार कर रही थी। इसका कारण तो आपकी बात सुनकर ही समझ में आया है। आपने मुझे बहन कहा है और बहन तो भाई से नाराज हो सकती ही नहीं।

"यह आपके मानने की बात नहीं। यह तो आपको देखने वाली औरतों के मन में आपके विषय में उत्पन्न होने वाले भावों का परिणाम होता है। मैं प्रातः ही आपको भाई के रूप में समझी थी, इससे प्रसन्नता हुई थी।"

भगवती गम्भीर भाव धारण कर विचार में डूब गया। उसे चुप देख सुशीला देवी बोली, "प्रायः औरतों के मन में आप एक अभीष्ट पति दिखाई देते हैं। इस कारण वे प्रायः आपको देख, माथे पर त्योरी चढ़ा लेती होंगी।"

"वाह! क्या ये परस्पर विरोधी बातें नहीं हैं? जो मुझको वांछित पति समझती हैं, वे माथे पर त्योरी चढ़ाती हैं? यह बात समझ नहीं आयी।"

"आपने मेरी बात को गलत समझा है। जो आपको सुन्दर वर बनने योग्य मानती हैं, परन्तु आपसे विवाह की आशा अथवा अवसर नहीं देखतीं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R 089·9143
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
GUR-L

वे त्योरी चढ़ाती हैं। आपको देख वे औरतें प्रसन्न होंगी, जो आपको भाई, पुत्र तथा पति बन सकने के योग्य समझती हैं और फिर ऐसा बना सकने की आशा करती हैं।"

"मेरा बहुत औरतों से सम्पर्क नहीं है। मेरी माँ हैं, वह तो मुझसे स्नेह रखती ही हैं। रानी माँ हैं। वे भी मुझको अपना लड़का ही मानती हैं। बुआ रानी और मौसी रानी हैं। उनका मेरे प्रति व्यवहार सामान्य ही है। और तो मैं किसी को जानता नहीं, न ही आपके कथन के सत्य-असत्य की परीक्षा कर सकता हूँ।"

"अच्छा, यह बताइये कि कभी किसी अपरिचित स्त्री ने आपकी ओर माथे पर त्योरी चढ़ाकर देखा है?"

"स्मरण नहीं। मैं तो प्रायः स्त्रियों के मुख की ओर देखता नहीं। कभी देखता भी हूँ तो उनको अपनी ओर मुस्कराते ही पाता हूँ।"

जब बाबू साहब स्नान करके तैयार हो गये तो तब तक नौ बज गये थे। वे तथा उनकी लड़की अल्पाहार की प्रतीक्षा करने लगे। भगवती अपने अल्पाहार के लिए अपने घर जाने का विचार कर रहा था। वह जानता था कि माँ उसकी प्रतीक्षा कर रही होगी।

वास्तविक बात यह थी कि बाबू बेनी माधोसिंह और सुशीला देवी भगवती को कोट का एक जानकार कर्मचारी समझ, उससे राजा बहादुर के परिवार की अधिकाधिक जानकारी प्राप्त करना चाहते थे। ज्यों-ज्यों वे उससे पूछते थे, राजा बहादुर के परिवार के विषय में, तो कुछ विशेष पता नहीं चलता रहा, परन्तु भगवती के अपने गुण प्रकट होने लगे थे। पिता और लड़की दोनों उसके प्रशंसक हो गए थे।

बाबू साहब भगवती को कहने ही वाले थे कि पता करे कि नाश्ता किस समय मिलेगा कि मैनेजर साहब की पत्नी वहाँ आ पहुँची और बोली, "आइये, सुशीला जी! अल्पाहार तैयार है।"

वे उठे और रमणी दास के पीछे चल पड़े। भगवती अपने घर जाने लगा तो मैनेजर ने हँसी-हँसी में कह दिया, "पण्डितजी! आप भी यहीं अल्पाहार कर लीजिए।"

"आप करिये, मैं अपने घर से आधे घण्टे में लौट आऊँगा।"

"पर इस समय तो तुम सेवा में हो और एक विधर्मी के साथ बैठ कर खाने का पाप-पुण्य तो मालिक को लगेगा।"

"पर मालिक ने आपकी मेज पर बैठकर खाने की आज्ञा नहीं दी है।"

"तुम बाबू साहब की सेवा में हो न?"

"इन्होंने भी तो यहाँ खाने की आज्ञा नहीं की।"

"भीतर बैठ बातें करने की आज्ञा है?"

"जी।"

Central Library Gurukula Kangri (Deemed to be University) 167373

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"तो यह भी हो जायेगी। बाबू साहब!" मैनेजर मिस्टर दास ने बेनी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधोसिंह को सम्बोधित कर कहा, "आप भगवती चरण को भी यहीं अल्पाहार करने को कह दीजिये।"

"हाँ-हाँ। यह एक इन्टरेस्टिंग जीव है। आओ, भगवती चरण!"

भोजन के समय कुछ विशेष बात नहीं हुई। अल्पाहार समाप्त हुआ तो बाबू साहब कोट जाने की तैयारी करने लगे और मिसेज रमणी दास सुशीला देवी को अपने भाग के ड्राइंग-रूम में ले गयी। भगवती अल्पाहार करके मैनेजर के पास जा बैठा। मैनेजर आज बरामदे में कुर्सी-मेज लगाकर बैठा था।"

भगवती उनके सामने बैठा तो मैनेजर बोला, "यह दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि तुम अंग्रेजी नहीं पढ़े।"

"पढ़ लेता तो क्या सौभाग्य प्राप्त हो जाता?"

"किसी बड़े ओहदे पर नियुक्त हो सकते थे। बीस रुपये महीने पर इस थर्ड रेट जमींदारी में धक्के खाते न होते।"

भगवती गम्भीर होकर विचार करता रहा। वह कुछ परेशानी तो अनुभव कर रहा था, परन्तु किसी बड़े ओहदे पर न होने के कारण नहीं, वरन् अपने मन की बात कहने के लिए शब्दों को ढूँढ़ने के कारण उसे चुप देख दास बोला, "कहो तो तुम्हें अंग्रेजी पढ़ाने का प्रबन्ध कर दूँ?"

"कर दीजिये।" इस समय तक भगवती की उर्वरा बुद्धि ने विचार कर लिया था कि उसे अपना अभिप्राय किस प्रकार प्रकट करना है। वह कहता गया, "मगर इसलिये नहीं कि मुझे अंग्रेजी द्वारा कोई बड़ा ओहदा मिलेगा।"

"तो किसलिये?"

"माँ कहती थीं कि भाषा ज्ञान सीखने और फिर सीखे हुए ज्ञान को दूसरों पर प्रकट करने के लिए होती है। वे तो कहती थीं कि मुझे संस्कृत सीखनी चाहिए। घर में पिताजी के कई सौ छपे और हस्तलिखित ग्रन्थ रखे हैं। माँ का मतलब है, उनमें लिखे ज्ञान को प्राप्त करने के लिए। और अंग्रेजी भी तो इसीलिये पढ़ी जा सकती है।"

"और हिन्दी किसलिये पढ़े हो?"

"यह तो माँ ने पढ़ाई है, जिससे मैं हिन्दी-संसार का ज्ञान प्राप्त कर सकूँ और फिर उस ज्ञान का प्रभावशाली ढंग से वर्णन कर सकूँ।"

"हाँ भाषा सीखने का यह भी एक लाभ है। इसके साथ ऊँचे पद पर पहुँचना भी कुछ कम लाभकर नहीं। यह देखो! तुम और मैं, दोनों राजा साहब के नौकर हैं। तुम बीस रुपये मासिक वेतन पाते हो और मैं यहाँ से एक सहस्र रुपया मासिक पाता हूँ। मेरी पेंशन अलग है।"

"परन्तु आप बड़े हैं, इस कारण नहीं कि आप अंग्रेजी पढ़े हैं। यह तो आपका भाग्य है, जिसने आपको बड़ा बनाया है। भाग्य से बुद्धि और बल मिलता है और इससे ज्ञान और प्रभुता मिलती है।"

"भाग्य-वाग्य कुछ नहीं होता पुरुषार्थ ही सब-कुछ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हुजूर, राजा बहादुर के पास एक मिस्टर रमेश सिन्हा आया करते हैं वे कहते हैं कि वे एम०एस-सी० हैं। परन्तु उनको तो राजा साहब कभी एक-दो रुपये दान-दक्षिणा में दे देते हैं। सब उनकी हँसी करते हैं, कोई उनका मान नहीं करता।"

मिस्टर दास हँस पड़ा, बोला, "सिन्हा दि इडियेट। उसकी बात छोड़ो। अभी ओहदे की बात भी छोड़ो। पहले अंग्रेजी पढ़ो। उसके साथ ही ज्ञान प्राप्त करो। ओहदे को भाग्य पर छोड़ दो।"

"तो बताइए, कहाँ सीखूँ?"

"तुम लखनऊ चले चलो। वहाँ तुमको एक ऐसे स्कूल में भरती करवा दूँगा, जहाँ तुम दो घण्टा नित्य पढ़कर पाँच वर्ष में एम०ए० की योग्यता प्राप्त कर लोगे। यदि तुम मुझसे चिट्ठी ले जाओगे तो तुमको तीस रुपया महीना वजीफा भी मिल जायेगा।"

"पर इसके लिये तो माँ से पूछना पड़ेगा।"

"पूछ लो। यदि वे न मानें तो उनको मेरी पत्नी से मिला दो। वे उन्हें समझा देंगी।"

"आपकी पत्नी ने भी सुबह ठीक यही कहा था और आप भी कह रहे हैं कि माँ को उनसे मिलना चाहिए। वे मिलेंगी।"

"तुमको हमारे साथ भोजन करने में ग्लानि अनुभव नहीं हुई?"

"ग्लानि अनुभव करने का कोई कारण समझ में नहीं आया।"

इसी प्रकार बातें चल रही थीं कि पौने ग्यारह बज गये। मैनेजर साहब उठे और मोटर ड्राईवर को कोट चलने के लिये तैयार होने को कहने लगे।

जब मैनेजर साहब बेनी माधोसिंह को लेकर कोट चले गये तो भगवती अपने घर माँ को अल्पाहार पर न आ सकने के विषय में बताने चल पड़ा। सुशीला देवी रमणी दास के साथ बातचीत कर रही थीं।

: 5 :

भगवती चरण घर पहुँचा तो माँ ने पूछा, "भगवती! अल्पाहार के लिए नहीं आये?"

"माँ, मेहमान बाबू और उनकी लड़की के साथ वहीं अल्पाहार कर लिया था। प्रबन्ध मैनेजर साहब का था। जब मैनेजर साहब और बाबू साहब दोनों कहने लगे तो मैं इनकार नहीं कर सका।"

"क्या खाया था?"

"वैसे तो उन्होंने डबल रोटी के सेके हुए टुकड़े और मक्खन लिया था। दूध और दलिया था। लखनऊ से मँगवाई हुई मिठाई और चाय थी। साथ में उबले अण्डे थे। परन्तु वे मैंने और बाबू साहब की लड़की ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं खाये।"

"मैनेजर तो ईसाई हैं न?"

"हाँ। पर माँ, राजा साहब के रसोईखाने से उनका बावर्चीखाना अधिक साफ है। वहाँ गया था। बाबू साहब बोले कि मैं ही उनको सुबह की चाय लेकर उनके सोने के कमरे में जाऊँ।"

"यह बाबू साहब किसलिये आये हैं? बहुत आवभगत हो रही है इनकी?"

"माँ! ये बाबू साहब रहने वाले तो इसी इलाके के हैं, परन्तु इनका कारोबार बर्मा में है और सुना है कि बहुत धनी आदमी हैं। छोटे कुँवर साहब से लड़की की सगाई करने की बातचीत करने आये हैं। इस समय बाबू साहब तो राजा बहादुर से मिलने गये हैं और लड़की मैनेजर की पत्नी से बतिया रही है।"

"देखो भगवती! मैं समझती हूँ कि अब हमको जमीन का पट्टा करवा लेना चाहिए और यह पट्टा तुम्हारे नाम होना चाहिए।"

भगवती को माँ के मुख से यह पट्टे की बात सुन विस्मय हुआ। आज मैनेजर ने भी यही बात कही थी। वह जानता था कि माँ ने एक बार इस विषय में एक दावा किया था, परन्तु वह स्वीकार नहीं हुआ था। भूमि इनके पास थी, परन्तु पट्टा किसी अन्य के नाम था। वह दूसरा, भूमि पर न तो अपना हक जमाने आता था और भूमि का लगान भी अपने पास से दे रहा था। यह कैसे हो रहा है और क्यों हो रहा है, वह समझ नहीं सका था। इस बार पट्टा कराने का आग्रह दो स्थानों से हुआ था। पहले मैनेजर और फिर माँ की ओर से। परन्तु वह अभी तक यह समझ नहीं सका था कि पट्टा कैसे कराया जाये। मैनेजर से उसने कहा था कि वह राजा बहादुर को विवश नहीं कर सकता, तो मैनेजर चुप रह गया था। अब उसने माँ से पूछ लिया, "पर माँ, हम क्या कर सकते हैं?"

"देखो, मेहमानों के चले जाने के बाद तुम राजा बहादुर से कह देना कि भूमि का पट्टा तुम्हारे नाम पर हो जाना चाहिए। यदि राजा बहादुर यह नहीं करा सकते तो फिर तुम्हारे लिए नौगवाँ में रहना कठिन हो जायेगा।"

"पर माँ! उतनी ही बात कहनी चाहिए, जितनी की जा सके। यदि मेरे कहने पर भी पट्टा न दिया गया तो फिर यहाँ से चल देना पड़ेगा।"

"मैं यही कह रही हूँ। पट्टा न मिले तो यहाँ से चल देना चाहिए। यहाँ पड़े रहने में कोई लाभ नहीं। पर राजा बहादुर को यह अन्तिम बात कह दो। इसका परिणाम देखकर ही मैं आगे का कार्यक्रम बनाऊँगी। मेरा मन कह रहा है कि यहाँ अब नहीं रहना चाहिए।"

"माँ! यदि नहीं रहना तो फिर झगड़ा करने में क्या प्रयोजन है। एक दिन चुपचाप चल देते हैं। आज मैनेजर साहब ने कहा है कि वे मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेजी पढ़ाने का प्रबन्ध लखनऊ में करा देंगे और तीस रुपये महीना वजीफे का भी प्रबन्ध कर देंगे।"

"तो तुमने क्या कहा है?"

"मैंने कहा है कि इसके लिए माँ से पूछना पड़ेगा। वे कहने लगे कि मैं पूछ लूँ और यदि माँ स्वीकृति न दे तो मैं तुमको कहूँ कि तुम उनकी पत्नी से मिल कर बात कर लो।"

माँ पुत्र का मुख देखने लगी। फिर एकाएक बोली, "मुझे आज भगवान ने यह कहा है कि मुझे यहाँ नहीं रहना चाहिए। क्या जाने वह हमारे यहाँ से बाहर जाने के साधन निर्माण कर रहा है।"

"परन्तु यदि पट्टा हो गया तो फिर बाहर नहीं जाना होगा।"

"देखो बेटा, मेरी योजना यह है कि पट्टा तुम्हारे नाम हो जाये और तुम्हारा विवाह कर दूँ। तुम इस भूमि पर रहो और मैं यहाँ से चल दूँ।"

"कहाँ?"

"यह अभी नहीं बता सकती। मैं अभी जानती भी नहीं। परन्तु भगवान की ऐसी ही इच्छा प्रतीत हुई है। फिर भी भगवान अपनी इच्छा किस प्रकार पूरी करेगा, कह नहीं सकती। तुम इतना करो और यदि तुम कहो तो मैनेजर की पत्नी से मिलकर सारी बात जान सकती हूँ।"

भगवती के लिए माँ का यह व्यवहार अप्रत्याशित था। पहले वह कहा करती थी, 'तुमको बीस रुपये वेतन मिलता है। एक सहस्र रुपया वार्षिक नकद भूमि से बच जाता है। निर्वाह भली-भाँति हो रहा है। कुछ पीछे भी जमा हो रहा है। भविष्य की चिन्ता करनी व्यर्थ है। जिसने बनाया है, वह चिन्ता कर लेगा।'

आज भी वह अपनी बात भगवान के नाम पर ही कह रही थी, परन्तु बात का रूप दूसरा था। वह कह रही थी कि भगवान कह रहा प्रतीत होता है कि यहाँ से चल देना चाहिए। फिर भी वह उसका प्रबन्ध कर दे तो ठीक है। इस परिवर्तित व्यवहार का कारण विचार करता हुआ वह माँ के चरणों की ओर देख रहा था। माँ ने उसे मौन देख पूछा लिया, "क्यों, राजा साहब को यह चुनौती देने का साहस नहीं है?"

"नहीं, यह बात नहीं है। माँ, मैं इन मेहमानों के चले जाने पर राजा साहब से कहूँगा। तुम्हें समय मिले तो मैनेजर की पत्नी से मिलना।"

"तुम अंग्रेजी पढ़ना चाहते हो?"

"पढ़ने में हानि नहीं। कुछ लाभ भी हो सकता है। वे तो कहते थे कि मैं ऊँची पदवी पर पहुँच सकता हूँ। मुझे इसकी लालसा नहीं। मैं तो ज्ञान-प्राप्ति के साधनों को विस्तृत करना चाहता हूँ।"

"तो ठीक है। अब किस समय बंगले में जाना है?"

"एक घण्टे की छुट्टी तो है ही।"

"तो मध्याह्न का भोजन भी नहीं होगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"लक्षण ऐसे ही प्रतीत होते हैं कि वहीं खाना पड़ेगा।"

माँ उठी और खेतों में निराई होती देखने चली गई। भगवती घर में कुछ देर तक बैठा सुस्ताता रहा और फिर मेहमानखाने की ओर चल पड़ा।

बाबू साहब और मैनेजर साहब राजा बहादुर से मिल कर लौटे ही थे। मैनेजर ने भगवती को आते देखा तो पूछ लिया, "कहाँ गये थे पण्डित?"

"माँ को बताने गया था कि अल्पाहार यहीं कर लिया है।"

"और बताया है कि क्या खाया है।" मैनेजर ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

"जी।"

"वे नाराज हैं?"

"वह पसन्द तो नहीं करती थी, परन्तु इसका कारण यह था कि वह मेरी प्रतीक्षा करती रही थी। जब मैंने कहा कि आपका किचन राजा बहादुर के रसोईखाने से अधिक स्वच्छ है, तो वह सन्तुष्ट हो गई थी।"

"अंग्रेजी पढ़ने के लिए लखनऊ चलने की बात माँ से कही है?"

"जी! वह कहती थी कि वह श्रीमती दास से मिलेगी।"

"ठीक है। मैं तो एक काम से जिलानगर को जा रहा हूँ। तुम यहाँ हो ही। यदि मेहमान कुछ पूछें तो कह देना कि चार बजे तक लौट आऊँगा। मध्याह्न का भोजन तुम यहाँ ही कर लेना और तदनन्तर लड़की को देखने कोट से औरतें आयेंगी। वे जायेंगी तो फिर सायं की चाय के समय मेहमानों का भावी कार्यक्रम निश्चय होगा।"

मैनेजर मोटर-गाड़ी में बैठ जिलानगर को चल दिया और भगवती वहाँ बैठा रह गया। वह अभी भी माँ की बात पर विचार कर रहा था। मैनेजर का अंग्रेजी पढ़ने का आग्रह उसकी समझ नहीं आ रहा था। फिर भी वह अभी ऐसी आयु में था कि जिसमें मनुष्य में सीखने की प्रवृत्ति उग्र रहती है।

मेहमानखाने का द्वार खुला और बेनी माधोसिंह बाहर झाँकता दिखाई दिया। वह कुछ ढूँढ रहा प्रतीत हो रहा था। भगवती उठा और लपक कर बाबू साहब के सामने जा कर पूछने लगा, "क्या चाहिए?"

"मैनेजर साहब गये?"

"जी। वे कुछ काम से जिलानगर गये हैं।"

"उनसे कुछ जानकारी प्राप्त करनी थी।"

"वे तो चले गये हैं।"

"अच्छा, तुम भीतर आओ।"

बाबू साहब उसे लेकर भीतर चले गये। ड्राइंग-रूम में सुशीला गम्भीर विचार में निमग्न सोफा पर बैठी थी। बाबू साहब उसके समीप बैठ गये और भगवती को सामने कुर्सी पर बैठाकर पूछने लगे, "मैं मैनेजर साहब से पूछना चाहता था कि जो कुछ यहाँ राजा बहादुर से बातचीत हुई है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस स्थिति में क्या रानियों को लड़की को देखने के लिये आने से मना नहीं कर देना चाहिए?"

"पर वे तो चले गये हैं।"

"और तुम क्या कहते हो?"

भगवती ने मुस्कराते हुए कह दिया, "मैं तो जानता ही नहीं कि वहाँ क्या बातचीत हुई है।"

"राजा बहादुर ने बर्मा और कलकत्ता में मेरी सम्पत्ति की बात पूछी। राजा भैया ने लड़की के यहाँ चले आने पर रोष प्रकट किया और छोटे कुँवर साहब चुपचाप बैठे रहे। जब मैं अपनी आर्थिक स्थिति बता चुका तो राजा भैया मैनेजर को जिलानगर जाने के लिये कहने लगे। मैनेजर ने कहा भी कि वहाँ का काम इतना आवश्यक नहीं है और उनको हमारी सेवा में रहना चाहिए। परन्तु कुँवर साहब ने कह दिया, 'मैं अपनी अर्जी के विषय में सरकार की प्रतिक्रिया आज ही सायंकाल से पूर्व जानना चाहता हूँ।' विवश मैनेजर साहब जाने को तैयार हो गये। हम अभी बैठे ही थे कि राजा साहब ने कह दिया कि लड़की यहाँ आ गई है तो उसे अब राज्य-परिवार की औरतें देख लें तो ठीक ही है।

"इस पर कुँवर साहब ने कहा, 'मैं लड़की स्वयं देखना चाहता हूँ।'

"राजा भैया ने कह दिया, 'कोई आवश्यकता नहीं। जब कुँवर रानी देखने जा रही हैं तो फिर छोटे साहब को देखने का कोई अर्थ नहीं।'

"राजा बहादुर तो बिना कुछ बात कहे भीतर चले गये। राजा भैया यह कहते रहे कि औरतों के कहने पर बातचीत होगी और छोटे साहब कहते रहे कि वे भी इसमें राय देना चाहते हैं।"

बाबू साहब का कथन सुनता हुआ, भगवती मुस्करा रहा था। जब बाबू साहब कह चुके और भगवती ने कुछ नहीं कहा तो सुशीला ने पूछ लिया, "पण्डित भैया! क्या कहते हो तुम?"

"मैं तो एक ही बात समझा हूँ कि आप कुँवर रानी बनने की ओर अग्रसर हो रही हैं।"

बाबू साहब विस्मय से भगवती का मुख देखने लगे। लड़की ने भगवती के कथन का कारण न समझते हुए पूछा, "जरा अपनी बात को समझाओ। किस आधार पर यह कह रहे हो?"

"मैं इन सब के स्वभाव जानता हूँ। देखो बहनजी! राजा बहादुर तो औरतों की सम्मति के बाद बात करेंगे। राजा भैया को यह सम्बन्ध पसन्द नहीं और छोटे कुँवर साहब बहनजी से मिलेंगे और विवाह के लिये तैयार हो जायेंगे।"

लड़की का उदास मुख खिल उठा। परन्तु बाबू बेनी माधोसिंह अभी भी गम्भीर हुआ बैठा रहा। भगवती चरण ने कह दिया, "छोटे कुँवर साहब मुझे बुद्धू कहा करते हैं और राजा भैया मुझको बहुत खतरनाक शरारती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़का कहा करते हैं। राजा बहादुर मेरी बात सुन कर हँसा करते हैं। इससे मैं इन तीनों बड़ों के स्वभाव का अनुमान लगाया करता हूँ और उस अनुमान के आधार पर ही कहता हूँ कि राजा भैया इस सम्बन्ध से प्रसन्न प्रतीत नहीं होते। उनको जैसे मुझमें कुटिलता दिखाई देती है, वैसे ही रानी बहन में भी दिखाई देती होगी। मैं.....।"

सुशीला ने बात को बीच में ही काट कर कहा, "रानी बहन कह कर मेरी हँसी उड़ा रहे हो, पण्डित भैया?"

"नहीं जी। मैंने प्रातः मैनेजर साहब के सामने भविष्यवाणी की थी कि यदि राजा भैया ने आपके रानी बनने में आपत्ति की तो आप रानी बन जायेंगी। यही मैं अब कह रहा हूँ।"

"पर इस भविष्यवाणी का आधार क्या है?"

"यह मेरा मन कहता है। बहनजी! क्या आप बहुत उत्सुक हैं रानी बनने के लिये?"

"तुमको इसमें विस्मय हो रहा है?"

"मैं समझता हूँ कि यह एक मिथ्या भावना का प्रदर्शन है। इसका जीवन की सुख-सुविधा से कोई सम्बन्ध नहीं।"

"जीवन में सुख का किस बात के साथ सम्बन्ध है?"

"अभी मैं आयु में आपसे बहुत छोटा हूँ और आपको किसी प्रकार की राय नहीं दे सकता। हाँ, अपनी एक बात बता सकता हूँ। मैं राजा बहादुर के कोट में उनका बालक माना जाता हूँ और वहाँ भीतर-बाहर जाता हूँ। कभी वहाँ रह भी जाता हूँ। परन्तु मैं सत्य बताता हूँ कि जो सुख-शान्ति मुझे अपने घर में प्राप्त होती है, वह वहाँ कभी भी प्राप्त नहीं हुई।"

"आखिर क्यों?"

"इस क्यों का उत्तर मैं नहीं दे सकता।"

: 6 :

भगवती की बातों से बाबू बेनी माधोसिंह सन्तुष्ट नहीं हुए। सुशीला देवी के भाव मिश्रित थे। उसकी निराशाजनक मनःस्थिति को तो उत्साह मिला था, परन्तु साथ ही भगवती ने राजा के महल को एक नीरस स्थान बता कर रानी के रूप में जीवन को हीन बताया था। इसने उसकी रानी बनने की अभिलाषा को ठण्डा कर दिया था।

बाबू साहब उठे और बोले, "मैं तनिक विश्राम करना चाहता हूँ। जब भोजन तैयार हो जाये सूचना दे देना।"

बाबू साहब सोने के कमरे में चले गये। सुशीला देवी भी उठी। वह पिताजी के पीछे सोने के कमरे में जाने से पूर्व भगवती से बोली, "अच्छा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित भैया! भोजन हमारे साथ ही करना। यह मिसेज दास भी मुझे रानी बनने के योग्य नहीं मानती।"

भगवती बैठकघर के बाहर आ गया। खाने के समय में आधा घण्टा था। मैनेजर के कक्ष में भोजन का प्रबन्ध हो रहा था। रमणी दास बैरा और रसोइये से मेज सजवा रही थी। भगवती बाहर बरामदे में बेंच पर बैठ कर समय की प्रतीक्षा करने लगा। जब मेज सज गई तो रमणी दास बाहर आई और भगवती से पूछने लगी, "बाबू साहब किस समय लंच करेंगे।"

"वे कह रहे थे कि कुछ आराम करेंगे और जब खाना तैयार हो तो सूचना दे दी जाये।"

मिसेज दास ने घड़ी में समय देखा और कह दिया, "अभी बीस मिनट हैं। उनको आराम करने देना चाहिए।"

भगवती खड़ा-खड़ा ही मिसेज दास से बातें कर रहा था। रमणी ने पूछ लिया, "कुछ पता चला कि बाबू साहब से क्या बात हुई?"

"बाबू साहब ने इतना बताया है कि राजा बहादुर और राजा भैया में मतभेद है। राजा भैया लड़की के पिता के साथ यहाँ आ जाने पर नाराज हैं।"

"परन्तु मुझे तो लड़की ने बताया है कि छोटे साहब ने उसे देखने के लिये स्वयं बुलाया है।"

"मुझे यह बात ठीक मालूम हो रही है। वे हठ कर रहे हैं कि किसी प्रकार के निश्चय के पूर्व वे लड़की को देखेंगे।"

"तो?"

"मैं तो समझता हूँ कि सगाई होने की सम्भावना बढ़ गयी है।"

"प्रातः भी तुमने कहा था कि यदि राजा भैया ने इस विवाह में आपत्ति की तो विवाह होकर रहेगा।"

"मेरा यही अनुभव है। जो बात राजा भैया चाहते हैं, वही छोटे कुँवर साहब ना-पसन्द करते हैं। वे सदा एक-दूसरे के विपरीत ही जाते हैं?"

"यह क्यों?"

"दोनों के स्वभाव नहीं मिलते। राजा बहादुर दोनों में सुलह कराते रहते हैं। फिर भी दोनों के मन नहीं मिलते।"

"तुम्हारे साथ किनका व्यवहार ठीक रहा करता है?"

"छोटे साहब तो मुझको बुद्धू मान कर मेरी बातों पर हँसते रहते हैं और जब भी कोई बात उनकी सूझ-बूझ के बाहर होती है तो हँस देते हैं। मुझे बालक समझ नाराज नहीं होते। राजा भैया मुझे बहुत चतुर परन्तु कुटिल मानते हैं। राजा बहादुर मेरे प्रति वात्सल्य भाव रखते हैं।"

"तो तुमको कौन पसन्द है?"

"मुझे तो कोठे का जीवन नीरस प्रतीत होता है। वहाँ अनपढ़, गँवार,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुशामदी और स्वार्थियों का जमघट लगा रहता है। इसी कारण मैं जब तक वहाँ से बाहर आ, अपने घर के स्वच्छ और शान्त वातावरण में पहुँचता हूँ, तो आनन्द अनुभव करता हूँ।"

भोजन का समय हो गया और भगवती ने मेहमानखाने के बैठकघर में खड़ा हो आवाज लगा दी, "हुजूर, भोजन तैयार है।"

भोजन के समय मिसेज दास और सुशीला परस्पर बातें करती रहीं और बाबू साहब भगवती को कहते रहे कि उन्होंने तो अपने को ईश्वर पर छोड़ दिया है। ऐसा करने से अब वे मन में शान्ति और सन्तोष अनुभव करते हैं।

भगवती बाबू साहब के मनोद्गारों को सुनता हुआ मौन बैठा रहा। भोजन समाप्त हुआ तो मेहमान अपने कमरों में चले गये। भगवती पुनः अपने घर लौट गया।

माँ घर पर नहीं थी। भगवती समझा कि वह खेतों से वापस नहीं आयी। वह मन में दो घण्टा-भर घर पर रहने के लिये सोचकर आया था। परन्तु माँ को न आता देख, वह घर से निकल, खेतों को चला गया। माँ वहाँ भी नहीं थी। तारा कुएँ पर बैठा रहट चला रहा था। भगवती ने तारा से पूछा, "माँ यहाँ आई थी क्या?"

"पण्डिताइन इक्का कर रामचन्द्र शुक्ल की पत्नी से मिलने गयी हैं।"

भगवती जानता था कि रामचन्द्र शुक्ल राजा बहादुर से कहा करता था कि उसकी लड़की से भगवती का विवाह कर दिया जाये। अतः अब माँ के उनके घर जाने का अर्थ वह यही समझा है कि माँ उसके विवाह के सम्बन्ध में बातें करने गयी है। वह विस्मय कर रहा था कि माँ को क्या हुआ है कि वह जमीन के पट्टे की भाँति उसके विवाह के लिये भी जल्दी करने लगी है। वह आज के माँ के व्यवहार को समझ नहीं पा रहा था।

माँ लौटी भी नहीं थी कि भगवती के जाने का समय हो गया। वह मैनेजर साहब के बंगले को चल दिया। उसका अनुमान था कि रानियाँ सुशीला देवी को देखकर लौट गयी होंगी।

भगवती बंगले पर पहुँचा तो रानियाँ अभी भी वहाँ भीतर बैठी थीं। बाबू बेनी माधोसिंह बाहर बरामदे में अकेला बैठा था। भगवती पहुँचा तो उसने गनीमत समझी। भगवती ने पूछा, "तो अभी वे गयीं नहीं?"

"नहीं। एक घण्टे से ऊपर हो गया है उनको आये हुए।"

"मैं समझता हूँ कि ठीक हो रहा है।"

"मुझे तो यह सब-कुछ बिलकुल पसन्द नहीं। मैं लड़की को यहाँ लाना कोई अच्छी बात भी नहीं समझता था। परन्तु छोटे साहब ने लिखा था कि वे लड़की को देखना चाहते हैं और उससे बातचीत भी करना चाहते हैं। इस कारण लड़की चली आयी। ये देहाती लोग क्या समझते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होंगे कि मैं लड़की का सौन्दर्य दिखा, रिश्ता पक्का करना चाहता हूँ। यह विचार तो मेरे लिये बहुत ही अपमानजनक है।"

"बाबू साहब!" भगवती ने कहा, "आपको इस बात की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। सब ठीक हो रहा है। यदि औरतें इतनी देर तक भीतर बैठी रही हैं तो अवश्य सुशीला बहन ने उनको अपनी बातों से मोह लिया होगा।"

"तो तुम अब भी समझते हो कि यह सम्बन्ध बनेगा?"

"जी।"

"पर ऐसा न हो कि वे कहीं इतना कुछ माँग लें कि मैं दे ही न सकूँ।"

"मैंने सुना है कि आपकी सामर्थ्य बहुत बड़ी है।"

"कितनी भी हो, असीम तो नहीं हो सकती, और लोभी का लोभ असीम भी हो सकता है।"

सुशीला देवी की देखनी करने रानी माँ, बुआ रानी, मौसी रानी और कुँवर रानी आयी हुई थीं और मेहमानखाने में से हँसी-मजाक की आवाजें आ रही थीं। भगवती और बाबू साहब मैनेजर के कक्ष की ओर बैठे थे। मेहमानखाने में हो रही बातें भली-भाँति सुनाई नहीं देती थीं। फिर भी इतना तो पता लग रहा था कि भीतर बहुत ही सजीव वार्तालाप हो रहा है।

लगभग साढ़े चार बजे कोट की औरतें मेहमानखाने से निकलीं। मिसेज दास उनके साथ थी और मोटर में बैठने और विदा होने तक मोटर के पास खड़ी रही। जब वे चली गयीं तो बाबू साहब भीतर चले गये और मिसेज दास चाय का प्रबन्ध करने के लिये अपने किचन में जा पहुँची।

अब मैनेजर साहब की प्रतीक्षा होने लगी। वे लौटे साढ़े पाँच बजे। इस समय तक सांयकाल हो गया था। बाबू साहब और सुशीला देवी ने अपनी सांयकाल की चाय अपने कमरे में मँगवा ली थी।

मैनेजर मिस्टर दास आये तो उन्होंने सूचना दी कि छोटे साहब लड़की से मिलने रात के खाने के उपरान्त नौ बजे आयेंगे। भगवती ने चाय मैनेजर के साथ पी और चाय पीते हुए मैनजर ने बताया, "पण्डित! तुम ठीक कहते थे कि यदि कुँवर साहब ने विवाह का विरोध किया तो छोटे साहब विवाह का हठ करेंगे! दोनों भाइयों में इस मति-विभिन्नता को मैं नहीं जानता था।

"औरतों में भी मतभेद थां। यह तो मुझे पता नहीं चला कि कौन पक्ष में है और कौन विरुद्ध, परन्तु जब वे कोट में पहुँचीं तो पिता और दोनों लड़के भीतर चले गये और आधे घण्टे के उपरान्त तीनों ही उद्विग्न-मन लौटे। मैं जिलानगर से सीधा कोट ही गया था। मुझे राजा भैया की अर्जी का परिणाम बताना था।"

भगवती जानता था कि राजा भैया का बन्दूकों के विषय में झगड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चल रहा है फिर भी उसने पूछा नहीं कि राजा भैया की अर्जी का क्या हुआ ? यह उसका स्वभाव था कि बिना कारण अथवा बुलाये वह किसी वार्तालाप में पूछताछ नहीं करता था।

मैनेजर स्वयं ही बता रहा था, "जब राजा बहादुर और दोनों कुँवर, उत्तेजित मनःस्थिति में बाहर आये तो आते ही छोटे साहब ने मुझे कहा, 'बाबू बेनी माधोसिंह से कह दीजिये कि मैं उनकी लड़की को देखने आ रहा हूँ।'

"राजा बहादुर ने भी स्वीकृति देते हुए कहा, 'छोटे साहब लड़की को देखकर जैसी राय देंगे, वैसा ही किया जायेगा। यदि उन्होंने विवाह स्वीकार कर लिया तो फिर लेन-देन की बात की सूचना भेज दी जायेगी और तब उनकी स्वीकृति मिलने पर हमारा पुरोहित उनके पुरोहित से मिलकर दिन-मुहूर्त निश्चय कर लेगा।'

"राजा बहादुर ने अभी बात समाप्त नहीं की थी कि राजा भैया बोले, 'हमारे घर में इस विवाह के विषय में सब एकमत नहीं हैं। इसलिये यह विवाह होना चाहिए अथवा नहीं? क्यों मैनेजर साहब, क्या राय है आपकी?'

"मैंने कह दिया, मैं इसमें क्या कह सकता हूँ। आपके घर में जैसी प्रथा हो, वैसा करिये। मेरी तो बात यह है मेरी श्रीमती ने अपने माता-पिता की इच्छा के बिना मुझसे विवाह किया था। मेरा उससे परिचय कलकत्ता में एक साझे मित्र के घर पर हुआ था। वह परिचय परिपक्व हुआ था चिट्ठी-पत्री से और एक दिन उसका पत्र आया कि मुझे गिरजाघर में विवाह का प्रबन्ध कर रखना चाहिये और वह आ रही है।

"वह अकेली आयी तो मैं विस्मय में मुख देखता रह गया। हमने अगले दिन गिरजाघर में विवाह रजिस्टर कराया। वहाँ केवल मेरे ही मित्र थे। विवाह के उपरान्त उसने अपनी माँ को पत्र लिख दिया कि वह अब मिसेज दास हो गयी है।

"मेरी कथा सुन, राजा भैया का मुख बन्द हो गया। राजा बहादुर ने कह दिया, 'यहाँ बात उल्टी है। लड़की नहीं, लड़का घर से लड़ कर विवाह का निश्चय करने जा रहा है।'

"मैं मुस्कराते हुए चुप रहा और मुझको कहा गया कि छोटे साहब के आने की बात बाबू साहब को बता दूँ।"

भगवती का कहना था, "मैं समझता हूँ कि यह विवाह होगा।"

"होगा तो, परन्तु परिवार में दुविधा और द्वेष का बीजारोपण भी होगा।"

सांयकाल मैनेजर साहब और उनकी पत्नी, बाबू साहब और उनकी लड़की को अपनी मोटर में बैठाकर घुमाने ले गये। इस प्रकार भगवती को अवकाश मिला तो वह माँ का समाचार लेने घर जा पहुँचा। माँ पूजागृह में बैठी थी। भगवती भी हाथ-मुख धो वहाँ जा बैठा। पूजा समाप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई तो भगवती ने पूछ लिया, "माँ! कहाँ गयी थीं तुम? मैं दोपहर बाद आया था।"

"तुम्हारे विवाह का प्रबन्ध करने गयी थी । पण्डित रामचन्द्र शुक्ल की लड़की को तो तुमने देखा ही है। उसकी माँ से बात पक्की कर आई हूँ। दो-तीन दिन में सगाई की तिथि निश्चित हो जायेगी।"

"पर माँ, बहुत जल्दी कर रही हो?"

"क्या हुआ है, माँ?"

"सब बता दूँगी। अभी उसका समय नहीं आया है।"

भगवती ने रात का भोजन घर पर किया और भोजन के बाद वह मैनेजर के बंगले में जा पहुँचा। बाबू साहब तथा सुशीला देवी घूम आये थे और भोजन कर रहे थे। भगवती बाहर बरामदे में बैठा रहा। भोजन कर सुशीला तो अपने शयनागार में वस्त्र बदलने और उचित श्रृंगार करने तथा आभूषण पहनने चली गयी। बाबू साहब भगवती और मैनेजर से देश की सामयिक बातें करने मैनेजर के ड्रांइग-रूम में बैठे रह गये।

कुँवर साहब ठीक नौ बजे आये और फिर रात के बारह बजे तक सुशीला से पृथक में बातें करते रहे। भगवती और बाबू साहब मैनेजर के ड्रांइग-रूम में बैठे बातें करते रहे।

देश में अंग्रेजी राज्य, विश्वव्यापी द्वितीय युद्व की समाप्ति और फिर स्वराज्य मिलने की सम्भावना पर बातें होती रहीं।

दास बाबू की राय थी कि जब तक इंगलैण्ड युद्ध के विनाशकारी प्रभाव से निकल नहीं जाता, तब तक गांधी इत्यादि को स्वराज्य का चकमा देता रहेगा। ज्यों ही इंग्लैण्ड की सैनिक और आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई, वह यहाँ के राजनीतिज्ञों को अँगूठा दिखा देगा।

भगवती राजा बहादुर को हिन्दी का समाचार-पत्र सुनाया करता था। राजा बहादुर इलाहाबाद से निकलने वाले 'भारत' को सुना करते थे और इसे सुनाते हुए भगवती की अपनी भी ज्ञान-वृद्धि हुआ करती थी। भगवती 'भारत' में एक लेख के आधार पर कहने लगा, "कुछ लोगों का ऐसा विचार है कि अमरीका के पास ऐटम बम बन जाने से वह देश अपार शक्ति का स्वामी हो गया है। वह इंग्लैण्ड की नाक में नकेल डाल, कुछ भी करा सकता है। अमरीका और फ्रांस के नेता अंग्रेजी साम्राज्य को भंग करने का संकल्प किये हुए हैं। इंग्लैड के लोग विवश हो जायेंगे कि हिन्दुस्तान छोड़ दें।"

"जो कठिनाई यहाँ उपस्थित होने वाली है, वह स्वराज्य मिलने की नहीं, वरन् किन को और कैसा स्वराज्य दें, इसकी है।"

मिस्टर दास भगवती का मुख देखता रह गया। उसने भी 'लीडर' में एक ऐसा ही लेख पढ़ा था। उसको विदित था कि भगवती राजा साहब को समाचार-पत्र सुनाया करता है। परन्तु उसके विस्मय करने की बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह थी कि भगवती अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को समझता था और फिर उसे ठीक शब्दों में वर्णन कर रहा था।

रात के बारह बजे छोटे साहब मेहमानखाने में से निकले और बिना किसी से कुछ कहे, मोटर में सवार हो चल दिये। मोटर की भर्र-भर्र की आवाज सुन बाबू साहब, भगवती और दास बाहर निकले तो कुँवर साहब की मोटर की लाल बत्ती बँगले से बाहर जाती दिखाई दी।

: 7 :

भगवती बाबू साहब को अपने कमरे में भेज और मैनेजर से विदा ले अपने घर के बाहर पीपल के पेड़ के नीचे अँधेरे में एक मोटर को देख चकित रह गया। वह घर के भीतर जाने के स्थान पर मोटर को देखने कि उसमें कौन है, पेड़ के नीचे चला गया। मोटर खाली थी और राजा भैया की शिवरलेट कार थी। वह इसका कुछ अर्थ न समझता हुआ वहाँ खड़ा रह गया।

इस समय मोटर के पीछे से बीरू सामने आ गया। भगवती ने उसे नहीं पहचाना और पूछ लिया, "ड्राईवर है?"

"नहीं छोटे पण्डित, मैं बीरू हूँ। मोटर की सूखे पत्तों पर सर-सर की आवाज सुन अपने झोंपड़े से निकल देखने लगा तो गाड़ी को इस अँधेरे में छोड़ राजा भैया को तुम्हारे घर की ओर जाते देख, विस्मय में खड़ा रह गया। राजा भैया ने द्वार खटखटाया तो माँजी ने द्वार खोल दिया और यह राक्षस माँजी को धकेलकर भीतर चला गया और भीतर से कुण्डा चढ़ा लिया है। तब से मैं यहाँ खड़ा हूँ।"

"क्या मतलब है इसका?"

"पण्डित, यह तो बहुत खराब हुआ है। मैं घर से सूअर झटकने का गँडासा ले आया हूँ और इस बड़े सूअर का झटका करने के लिये यहाँ खड़ा हूँ।"

भगवती को अब चेतना हुई और वह सब समझ गया। बीरू के झटका करने की बात भी उसकी समझ में आ गयी। उसने पूछ लिया, "बीरू! कितनी देर से यहाँ खड़े हो?"

"एक घण्टे के लगभग हो गया है।"

"देखो बीरू, यह हत्या यहाँ और अब नहीं होगी। इसके विषय में माँ से पूछना पड़ेगा और इस कार्य को कहीं अन्यत्र और किसी अन्य समय में किया जायेगा। यह मैं करूँगा। तुम द्वार खटखटाओ।"

बीरू द्वार के समीप जा अभी खटखटाने ही लगा था कि भीतर से किसी ने कुण्डा खोला और राजा भैया अपनी गाड़ी के पास आ गये। भगवती पहचान गया कि राजा भैया अकेले हैं। राजा भैया ने पूछ लिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कौन?"

"महाराज, मैं भगवती। आप यहाँ कैसे आये हैं?"

"तुम्हारी माँ से कुछ काम था।" राजा भैया ने बात बदल दी और कहा, "छोटे साहब गये?"

"जी।"

"देखो, मैं तुमसे कल मिलूँगा। तुम मैनेजर के साथ वहाँ चले आना। यह साथ कौन है?"

"हमारा कामा बीरू है।"

"ठीक है। बीरू, तुम भी कल आना और देखो, मेरे आने की बात किसी को बताना नहीं।"

भगवती के दिमाग में रक्त-चाप बढ़ रहा था और वह उन दोनों को वहीं छोड़ माँ को देखने भीतर चला गया। भीतर जाते ही प्रांगण का द्वार बन्द कर लिया।

भगवती को गया देख कुँवर साहब ने एक कागज जेब से निकाल बीरू के हाथ में दे दिया। बीरू ने हाथ में पकड़ पूछ लिया, "यह क्या है?"

"अपने झोंपड़े में जाकर देखना।"

इस समय तक राजा भैया मोटर में सवार हो मोटर को स्टार्ट कर बिना लाइट जलाये, मोटर को भगा कर ले गया।

भीतर पहुँच भगवती ने देखा कि माँ के कमरे में हरिकेन जल रही थी और माँ अपनी खाट पर रजाई में मुख-सिर लपेटे हुए पड़ी थी। भगवती ने आवाज दी, "माँ!"

माँ बोली नहीं। इससे भगवती ने चिन्ता व्यक्त करते हुए हाथ रजाई पर रख कर हिला दिया।

माँ ने रजाई में से ही आवाज दी, "भगवती, दूध गरम कर के पी लो और सो जाओ। मेरी तबियत ठीक नहीं।"

"क्या है माँ?"

"तुम्हें सुबह बताऊँगी। अब दूध पियो और सो जाओ।"

भगवती कितनी ही देर तक माँ की खाट के समीप खड़ा रहा। फिर माँ की लज्जा का अनुमान लगा अपने कमरे में चला गया और अपनी खाट पर बैठ विचार करने लगा कि यह बलात्कार है अथवा माँ की पिता में निष्ठा-हीनता। वह अपने पिता के स्वरूप को भी नहीं जानता था। वह जब एक वर्ष का था, जब उसके पिता का देहान्त हुआ था। अब वह सोलह वर्ष का हो चुका था। पन्द्रह वर्ष के विधवा-जीवन के उपरान्त माँ की इस कृत्य में लीनता उसे परेशान कर रही थी।

वह अपने कमरे में जाकर कपड़े बदल, माँ की उस दिन की परेशानी और उसके इस काम पर विचार करने लगा। वह अपने भविष्य के विषय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में माँ की चिन्ता का अर्थ समझने लगा था। माँ घर छोड़ने वाली है। यह सब उसे अब समझ में आने लगा। परन्तु कहाँ जाने वाली है? कोट में राजा भैया के कक्ष में? इस बात का विचार कर वह काँप उठा। वह अपने विषय में विचार करने लगा कि क्या वह उस अवस्था में नौगवाँ में रह पायेगा?

इसी प्रकार के विचारों में वह बैठा जाग रहा था। उसके अपने कमरे में अन्धेरा था। माँ के कमरे में लालटेन जल रही थी। वह अन्धेरे में बैठा देख रहा था कि माँ भी करवटें ले रही है। कदाचित् वह भी सो नहीं रही है।

बैठे-बैठे बहुत समय निकल गया। भगवती का रक्त सिर को चढ़ रहा था और उसे नींद नहीं आ रही थी। आधी रात से अधिक व्यतीत हो गई प्रतीत हो रही थी। उसे माँ के कमरे में आहट सुनाई दी। वह सतर्क हो गया। उसे लगा कि माँ उठी है। माँ के कमरे और उसके कमरे में द्वार था। वह खुला था, परन्तु उसकी अपनी खाट एक कोने में लगी थी। इस कारण वह खाट पर बैठा-बैठा देख नहीं सकता था कि माँ क्या कर रही है। उसके मन में आया कि वह उठ कर माँ से पूछे कि क्या बात है, परन्तु वह माँ को यह प्रकट करना नहीं चाहता था कि वह उसकी गतिविधियों पर नजर रख रहा है। इस कारण वह खाट पर से हिला नहीं।

राधा ने हरिकेन लालटेन उठाई और रसोई में चली गयी और वहाँ आग जलाने लगी। भगवती रसोईघर में आहट सुन रहा था। अब वह अपनी खाट पर से उठा और दबे पाँव बाहर के कमरे में आ रसोईघर के बाहर आ खड़ा हुआ। माँ ने आग जला चूल्हे पर बटलोई में जल गरम करने के लिए रख दिया था। स्वयं वह अभी भी आग के पास घुटनों में सिर दिये बैठी थी।

भगवती पीछे हट गया और फिर अपने कमरे में बैठ विचार करने लगा कि यह जल किसलिए गरम हो रहा है। वह खाट पर नहीं बैठा था। वहाँ बैठने में कुछ लाभ नहीं था। नींद तो आ नहीं रही थी। उसने एक चौकी अपने कमरे में परन्तु द्वार के समीप रख ली और उस पर बैठ पुनः विचारमग्न हो गया।

माँ ने कपड़े से गरम जल की बटलोई उठाई और गुसलखाने में ले गई। वह प्रांगण के कुँए में से एक बाल्टी जल निकाल लाई और उसे भी गुसलखाने में ले गई। भगवती अब समझ गया कि माँ स्नान करने लगी है।

राधा ने अपने धुले वस्त्र निकाले और स्नानागार में ले गई। वहाँ उसके स्नान करते हुए शरीर पर पानी के गिरने का शब्द होने लगा। भगवती के मन में एक आशंका उठी थी। वह समझा था कि माँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्महत्या करने लगी है, परन्तु अब स्नान करने से वह इस आशंका को मन से निकाल चुका था।

राधा स्नानागार से निकली और अपनी खाट पर सोने के कमरे में जाने के स्थान, पूजागृह में चली गई। भगवती की इच्छा हुई कि वह भी पूजागृह में जा बैठे, परन्तु फिर यह विचार कर कि इस समय उसके कार्यों में झाँकना ठीक नहीं, वहीं बैठा रह गया। वह चौकी पर बैठा रहा। वहाँ सर्दी लगी तो खाट पर रखी दुहर ले, ओढ़ कर बैठ गया।

आखिर पौ फटने के लक्षण दिखाई दिये। वह उठा, उसने दुहर उतार कर खाट पर रख दी और लोटा ले, यज्ञोपवीत को कान पर चढ़ा शौच के लिये खेत में चला गया।

वहाँ से लौट स्नान कर वस्त्र पहन, वह पूजागृह में गया। माँ अभी भी भगवती दुर्गा की मूर्ति के सामने आँखें मूँदे बैठी थी। एक क्षण तक वह खड़ा रहा। फिर विचार कर कि उसका क्या अधिकार है कि वह माँ के कार्यों में झाँके, वह चुपचाप माँ से कुछ पीछे हटकर मूर्ति की ओर मुख कर बैठ अपनी पूजा में लीन हो गया। वह बाल्यकाल से दुर्गा के स्तोत्र गा कर पूजा समाप्त किया करता था। आज भी उसने जप तो मौन रह कर किया, परन्तु स्तोत्र नित्य की भाँति ऊँचे मधुर स्वर में गाये:

आगच्छ वरदे देवि दैव्यदर्पनिषूदिनि।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकरप्रिये।।
अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्।
कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।।
गंगादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाऽऽहृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया।
गृहाण त्वं महादेवि प्रसन्ना भव सर्वदा।।

वह इस प्रकार स्तोत्र पढ़ता जाता था। उसने आँखें मूँदी थीं। वह माँ से पीछे हट कर बैठा था। पाठ के अन्त में उसने पढ़ा-

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्रयदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता।।

पूजा समाप्त हुई और उसने आँखें खोल माथे को भूमि से लगा, देवी को प्रणाम किया तो माँ ने, जो अब एक ओर हट गई थी और अपने लड़के और देवी की मूर्ति के बीच नहीं रही थी, लड़के की पीठ पर हाथ फेर पूछ लिया, "मेहमान ठहरे हैं अथवा चले गये हैं?"

भगवती ने सीधा हो माँ के प्रश्न का उत्तर दे दिया, "माँ, अभी ठहरे हुए हैं। आज निश्चय होगा कि उन्होंने कब जाना है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"किस समय तक जाग जाते हैं?"

"रात बहुत देरी से सोये थे, आज देरी से उठेंगे।"

"तो चलो तुम्हारा अल्पाहार तैयार कर दूँ।"

"माँ, तुम स्वस्थ हो?"

"हाँ, अब ठीक हूँ। रात मन में विकार उत्पन्न हो गया था। एक पिशाच कल रात आया था। तुम जानते हो, पिशाच बहुत बलशाली होते हैं। शरीर उसका विरोध नहीं कर सका। यह परास्त हो गया। मन भी दुर्बल पड़ता जाता था। उसमें एक घोर रोग उत्पन्न हो गया था। बाद में मैं उठी और उस मानसिक रोग की निवृत्ति का यत्न करने के लिये उद्यत हो गई। मैंने स्नान किया और अभी-अभी एक सहस्त्र भगवती गायत्री का जाप करने से मन ठीक हो रहा प्रतीत हुआ है और फिर तुम्हारे इस परम पावन पाठ ने मन की रही-सही मैल निकाल दी है। अब ठीक हूँ।

"चलो, प्रथम, समय मिलते ही पट्टे की माँग करना। मैं तुम्हारे विवाह का शीघ्र ही प्रबन्ध कर रही हूँ।"

पूर्व इसके कि भगवती कुछ कहे, राधा उठी और रसोईघर में जाकर आग जलाने लगी।

बीरू की पत्नी दूध रख गई थी। माँ ने दूध गरम किया और उसमें मक्की के परमल उबाल खीर बना दी। वह खीर में चीनी डाल भगवती को खाने को दे गई।

भगवती माँ की सुनाई पिशाच की कहानी से सब समझ गया था। इससे कुछ निश्चिन्त हुआ था। फिर भी माँ की योजना तो पहले से बनी थी और माँ मन के स्वच्छ हो जाने पर भी उस योजना को छोड़ नहीं रही थी। अभिप्राय यह कि योजना का रात की घटना से कुछ सम्बन्ध नहीं था।

भगवती खीर खा, कपड़े पहन, मैनेजर के बँगले को जाने लगा तो घर के द्वार के बाहर बीरू मिल गया। उसने भगवती के साथ चलते हुए पूछ लिया, "रात क्या बात थी पण्डित?"

"राजा भैया ने माँ पर बलात्कार किया है। परन्तु माँ का विचार है कि उसकी हत्या करने से अपनी भी तो बदनामी होगी। इस कारण वे चाहती हैं कि उसे अपने पापों का फल स्वयं भोगने के लिये छोड़ दिया जाये। हाँ, भविष्य में अपनी रक्षा का प्रबन्ध करना होगा। उसके लिये अब मुझे सांय होते ही यहाँ आ जाना चाहिये।"

"पण्डित, एक चौकीदार रख लो।"

"कोई भला आदमी ढूँढ़ दो।"

"मेरा लड़का सोहनू कैसा रहेगा। वह माँ की अपनी माँ की तरह रक्षा करेगा।"

"मध्याह्न के समय माँ से बात करूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पण्डित! राजा भैया रात जाते समय मुझे एक कागज का टुकड़ा दे गये थे और कहते थे कि अपनी झोपड़ी में जाकर देखूँ कि इस पर क्या लिखा है। मैंने दीपक में देखा तो वह कागज यह था।"

बीरू ने जेब से कागज निकाल सामने कर दिया। वह एक सौ रुपये का नोट था। भगवती ने देखा और कहा, "यह तो सौ रुपये का नोट है।"

"हाँ, मेरा मुख बन्द करने के लिये यह दिया है।"

"पर, अब तुमको माँ के लिये मौन रहना चाहिये। इसे तुड़वा कर खर्च कर लो।"

"यदि तुड़वाने जाऊँगा तो लोग समझेंगे कि मैंने इसकी चोरी की है।"

"तो ऐसा करो, यह नोट मुझे दे दो, मैं इसे तुड़वा कर तुमको दे दूँगा।"

बीरू से नोट लेकर भगवती ने अपनी जेब में रख लिया और बँगले पर जा पहुँचा।

रमणी दास बँगले के लॉन में टहल रही थी। मिस्टर दास नहीं थे। भगवती बँगले के बरामदे की ओर जा रहा था कि रमणी ने हाथ के संकेत से उसे अपनी ओर बुला लिया। वह उसके सामने पहुँचा तो वह बोली, "मेहमान अभी उठे नहीं।"

"रात बहुत देरी तक जागते रहे हैं। मैं इसी विचार से कुछ देरी से आया हूँ और आज अल्पाहार करके आया हूँ।"

"प्रातःकाल ही कोट से एक आदमी आया था और मैनेजर साहब को बुला कर ले गया है। उन्हें गये डेढ़ घण्टा हो गया है।"

"पर इस समय तो कोट में सब सोये होंगे।"

"हाँ। साहब भी विस्मय कर रहे थे कि इतनी सुबह आज क्या बात हो गयी है।"

इसमें उत्तर देने की कुछ बात नहीं थी। इस कारण भगवती आदर-युक्त मुद्रा में खड़ा रहा। रमणी अब फिर टहलने लगी थी। भगवती उसके एक पग पीछे-पीछे चलने लगा। रमणी ने पूछा, "माँ से मुझे मिलने के लिये कहा है?"

"जी, मेहमानों के चले जाने पर वे आयेंगी।"

"मैं समझती हूँ कि तुमको भूमि का पट्टा नहीं मिलेगा। इस कारण तुम्हें यहाँ से चल देना चाहिये।"

"माँ का भी यही विचार है। मैं कल राजा बहादुर से आखिरी बार पूछने वाला हूँ कि मुझे यह मिलेगा अथवा नहीं? उनको कह दूँगा कि यदि एक सप्ताह में लिखा-पढ़ी नहीं हुई तो मैं नौगवाँ छोड़ जाऊँगा।"

"बहुत खूब।" रमणी ने मुस्कराते हुए कहा।

इस समय मैनेजर साहब अपनी मोटर में वहाँ आ पहुँचे। रमणी लॉन से चल मोटर के पास आ खड़ी हुई। भगवती भी उसके पीछे-पीछे उचित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तर पर वहाँ जा खड़ा हुआ। मैनेजर मोटर से उतरा तो भगवती ने झुककर सलाम की।

मैनजर ने मुस्कराते हुए कहा, "तुम्हारे लिए एक बहुत अच्छा समाचार लाया हूँ।"

"जी।" भगवती ने दो पग आगे बढ़ कर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखते हुए पूछ लिया।

"तुम्हारी भूमि के लिये पट्टे के सब कागजात ठीक हो गये और राजा बहादुर के हस्ताक्षरों के साथ मिल गये हैं और हुक्म है कि इसकी रजिस्ट्री करवा दूँ।

"मैंने कहा, तुम अभी नाबालिग हो। राजा भैया बोले कि तुम्हारी माँ को तुम्हारा सरपरस्त मान कर उसके दस्तखतों से पट्टे की रसीद और लगान की जिम्मेदारी लिखा ली जाय।"

"पर इस समय वे जागते थे क्या?"

"मैं समझता हूँ, वहाँ रात-भर कोई सोया ही नहीं। उन्होने मुझे बुलाया था शादी के विषय में अपना फैसला बताने के लिये और बात पहले तुम्हारी ही हुई। रामचन्द्र शुक्ल वहाँ मौजूद था। उसने पट्टे के सब कागजात ठीक कर रखे थे। राजा बहादुर ने मेरे सामने हस्ताक्षर किये और अब मुझे कागज मिल गये हैं।"

भगवती समझ रहा था कि रात के कुकृत्य को छुपाने का इनाम बीरू को एक सौ रुपया मिला है। उसे यह पट्टा मिल रहा है। वह परेशान हो उठा। वह परेशान इस कारण था कि उसकी माँ की लज्जा की बात अब दो लोगों से अधिक में फैल गयी प्रतीत होती थी। वह पीत-मुख चुपचाप खड़ा रहा। मैनेजर ने पूछा, "कुछ परेशान प्रतीत होते हो भगवती?"

"जी। माँ से कुछ पूछना पड़ेगा।"

"क्या पूछना होगा?"

"यही कि अब पट्टा करवाना है या नहीं।"

"यह क्यों?"

"माँ आज आपकी मिसेज से मिलेगी और अपनी इच्छा बतायेगी।"

तभी बाबू बेनी माधोसिंह साहब ने अपने कमरे का द्वार खोला और भगवती पिछले दिन की भाँति एक ट्रे में बैड टी रखकर उनके बैड-रूम में पहुँच गया। उसने ट्रे तिपाई पर रखी तो बाबू साहब, जो अपने पलंग के पास गाउन पहने खड़े थे, बोले, "बहुत दिन चढ़ गया प्रतीत होता है?"

"जी, रात आप देरी से सोये थे न?"

इनकी आवाज सुन सुशीला देवी उठ कर पलंग पर बैठ गई और अपना गाउन ले कर पहनने लगी। भगवती ने उसे भी सलाम की तो सुशीला उसकी ओर मुस्कराते हुए अर्थ-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवती प्रश्न-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखता रहा। वह बोली, "तुम तो पण्डित भैया हो न? फिर यह सलाम किसलिये की है?"

"अभी तक तो राजा बहादुर का सेवक उनके मेहमानों की सेवा में खड़ा है। जब इस सेवा-कार्य के अतिरिक्त कुछ कार्य करना होगा तो उसमें भाई का-सा व्यवहार कर सकूँगा।"

"अच्छा, तो स्टूल लेकर बैठ जाओ। जिससे तुम भाई बन गया अनुभव करने लगो।"

भगवती भी मुस्कराया और बाबू साहब का मुख देखने लगा। बाबू साहब अब अपने पलंग पर बैठ, चाय का प्याला उठा, सुरुकी लगा बोले, "पण्डित! जब सुशीला तुम्हें भाई कहती है तो तुम मेरे लड़के ही हुए। तुम बैठ सकते हो।"

भगवती धीमी हँसी से हँसते हुए स्टूल समीप करके बैठ गया। सुशीला ने भी चाय उठा ली और बिना बिस्तर से निकले ही सुरूकियाँ लगाने लगी। बाबू साहब ने कहा, "हम राजा बहादुर से फैसला सुन और लेन-देन की बात कर मध्याह्न की गाड़ी से चले जाना चाहते हैं।"

"जहाँ तक बात मेरी समझ में आई है, मैनेजर साहब राजा साहब का सन्देश ले आये हैं।"

"क्या लाये हैं?"

"यह तो उन्होंने बताया नहीं। वह आपको ही बतायेंगे। परन्तु इतना मैं जानता हूँ कि वे सुबह कोट में बुलाये गये थे और इस विवाह के विषय में जानता हूँ कि वहाँ सुबह कोट में कुछ बात हुई है।"

बाबू साहब ने जल्दी-जल्दी चाय समाप्त की और सुशीला को कहा कि पहले वह लैवेटरी का प्रयोग कर सकती है और वे स्वीटर पहन बाहर चल दिये।

सुशीला देवी भी अब पलंग से उठी और लैवेटरी की ओर जाते हुए बोली, "तुम्हें मैं स्नान के बाद मिलूँगी। यदि बात निश्चय हो गई तो हम एक बजे की गाड़ी से चले जायेंगे।"

भगवती यह कह कि वह बाहर खड़ा है, कमरे से बाहर निकल आया। मैनेजर साहब बाबू साहब को अपने कार्यालय में ले गये और वहाँ बात करने लगे। रमणी दास भीतर चली गई थी। भगवती बरामदे में रखी बैंच पर बैठ गया। पाँच मिनट में ही बाबू साहब हाथ में एक कागज पर कुछ लिखा हुआ लेकर कार्यालय से निकले और बिना भगवती को देखे कमरे में चले गए।

सुशीला शौचालय से निकल ड्राइंग-रूम में पिता की प्रतीक्षा कर रही थी। बाबू साहब आये तो बोले, "मैं यही आशा करता था।"

"क्या आशा करते थे?"

"छोटे साहब ने तुमको अपने मोह-जाल में फँसा लिया है और तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फँसी हुई का उत्पीड़न उसके घर वाले करने का विचार कर रहे हैं।"

"क्या हुआ है, पिताजी?"

"यह राजा साहब का पत्र आया है।" बाबू साहब ने हाथ में पकड़ा हुआ पत्र पढ़ सुनाना आरम्भ कर दिया, लिखा है-'बाबू बेनी माधोसिंह की लड़की सुशीला देवी से कुँवर विजय बहादुर सिंह का विवाह स्वीकार है। विवाह के लिए दहेज एक लाख लड़के के पिता राजा बहादुर सुरेश बहादुरसिंह के लिए। पचास हज़ार लड़के की माता श्रीमती सुजाता के लिए। पचास हज़ार लड़के के बड़े भाई राजा भैया महेन्द्रप्रतापसिंह के लिए। पचास हज़ार लड़के की भावज कुँवर रानी कमला देवी के लिए और पचीस-पचीस हजार लड़के की मौसी और बुआ के लिए। इनके अतिरिक्त एक सहस्र बारातियों के आने-जाने का खर्च। उनके दो दिन तक ठहरने का तथा भोजन-व्यवस्था का उचित प्रबन्ध। प्रत्येक बाराती को दस-दस रुपया विदाई। राज्य के बड़े-बड़े अधिकारियों को उनकी पदवी के अनुसार विदाई। लड़के-लड़की के लिए जो उचित समझा जाए, वह इस सबसे पृथक्।"

"यदि यह स्वीकृत हो तो पुरोहित जी को मुहूर्त निकालने के लिए भेजा जा सकता है।' अब बताओ?"

"आप अभी तो शौचादि से निवृत्त हो जाइये, उसके बाद बात करेंगे।" सुशीला देवी का कहना था।

बाबू साहब ने कहा, "मैंने मैनेजर साहब से पूछा था कि वह इस विषय में क्या कहते हैं? वे कहने लगे इन लेन-देन की बातों को न तो वे पसन्द करते हैं, न ही इसमें किसी प्रकार की राय दे सकते हैं। मेरा अगला प्रश्न था कि मैं इस सम्बन्ध की आशा छोड़ दूँ क्या? वे कहने लगे, यह तो हमारे विचार करने की बात है। उनकी इसमें कोई सम्मति नहीं।"

"अच्छी बात है।" सुशीला ने कह दिया, "मैं सामान ठीक करती हूँ और हमको जाने की तैयारी करनी चाहिए। विवाह होता है अथवा नहीं होता, एक पृथक् बात है। हाँ, यहाँ और रहना ठीक नहीं।"

बाबू साहब समझ गये कि यह सम्बन्ध ठीक नहीं। वह शौचालय में चले गये।

अल्पाहार का समय हो गया तो भगवती उनको कहने गया कि खाने का समय हो गया है। उसने ड्राइंग-रूम में खड़े होकर आवाज़ दी, "बाबू साहब अल्पाहार का समय हो गया है?"

सोने के कमरे से आवाज़ आई, "भीतर आ जाओ, भैया!"

बाबू साहब अपने पलंग पर जाने के लिए बैठे थे। उन्होंने अपना सूटकेस बन्द कर लिया था। लड़की अभी-अभी स्नान करके आई थी और ड्रेसिंग टेबल के सामने खड़ी, बालों को कन्घा कर रही थी। जब भगवती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आया, उसने द्वार में प्रवेश कर वहीं खड़े हो आवाज दी, "जी हाजिर हूँ।"

: 9 :

"समीप आ जाओ भैया, और द्वार बन्द कर दो।"

भगवती सुशीला देवी के पीछे आकर खड़ा हो गया। सुशीला ने कन्धा करते-करते, बिना मुख मोड़े शीशे में से ही भगवती की ओर देखते हुए कहा, "सुना है, तुम्हारे राजा साहब ने क्या माँगा है?"

"जी नहीं।"

"सब मिल-मिलाकर चार लाख के लगभग है और छोटे साहब और मेरे लिए पृथक् है।"

"बहुत ज्यादा है।"

"तो क्या किया जाये?"

"रानी बनाने का मूल्य माँगा जा रहा है। इस मिथ्या नाम के लिए पाँच लाख रुपया मूल्य है। मैंने तो आपसे पहले भी कहा था, इस मिथ्या नाम के लिए लालायित होना कुछ अच्छी बात नहीं। राजा-रानी बीते काल की बातें हैं। इनमें भी महत्व नहीं रहा।"

"यह तो ठीक है, परन्तु मैं तो रात उनसे कुछ कौल और इकरार कर चुकी हूँ।"

"कौल-इकरार तो दोनों ओर से हुए होंगे?"

"उनकी बातें तो वह जानें, मैं तो सर्वथा वचनबद्ध हो चुकी हूँ।"

"परन्तु वचन तो वचन के साथ ही दिया जाता है न! यदि दूसरी ओर से वचन का पालन नहीं, तो इस ओर से क्यों?"

"बताया है न कि मेरी ओर से वचन अधिक हो चुका है। मैं इस सम्बन्ध को छोड़ नहीं सकती।"

भगवती अभी भी सुशीला का मुख दर्पण में देख रहा था। वह देख रहा था कि जब उसने कहा है कि वह इस सम्बन्ध को छोड़ नहीं सकती तो उसकी आँखें झुक गई हैं और उसके गालों पर हल्की-सी लालिमा छा गई है। वह समझ रहा था कि रात को वचन हुए हैं। उन वचनों से यह लड़की बाहर नहीं जा सकती और वह अधिक सीमा तक बँधी हुई है। साथ ही बात कहते-कहते वह लज्जा अनुभव कर रही है। उसकी समझ आया कि छोटे साहब भी तो बड़े साहब के भाई ही हैं। इससे वह सब समझ गया। वह कुछ देर तक विचारमग्न खड़ा रहा। एकाएक उसे यह सूझा कि जिससे वचन हुए हैं और जिसने वचनों की सीमा से अधिक इस बेचारी को बाँधा है, यह उसका कर्तव्य है कि वह इसकी रक्षा करे।

उसे यह समझ आया कि बाबू साहब इतना देना नहीं चाहते अथवा दे सकते नहीं, और लड़की परेशानी अनुभव कर रही है। अतः उसने कह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया, "रानी बहन, आप अपना उचित स्थान पाना चाहती हैं?"

उसने अभी भी आँखें झुकाये हुए कहा, "क्या यह स्वाभाविक नहीं है?"

"और रानी बहन के पिता उस स्थान को पाने का दाम देना नहीं चाहते?"

"बाबा ने कहा है कि जो मानयुक्त स्थान देने की सामर्थ्य रखता है, उसको तो दान दिया जा सकता है। परन्तु ये तो उत्पीड़न ही कर रहे हैं।"

"बात तो ठीक है। आपको उनसे वचन पालन करने की माँग करनी चाहिए। इस वचन में रुपये-पैसे की बात नहीं आनी चाहिए।"

"यही तो समस्या है कि मेरी माँग छोटे साहब के पास कौन ले जाये?"

"यह सेवा मैं कर सकता हूँ।"

"सेवा नहीं है भैया!" अब सुशीला ने घूम कर भगवती की ओर देखते हुए कहा, "बहन का सन्देश उसके पति के नाम, परन्तु घर वालों से गुप्त। किसी को भी पता नहीं लगना चाहिए।"

"हो जायेगा। बहन के लिये यह करना कठिन नहीं।"

सुशीला का मुख खिल उठा। बाबू साहब उठ खड़े हुए थे। सुशीला ने कह दिया, "मैं तुमको एक चिट्ठी दूँगी। वह तुम उन्हें, बिना किसी के देखे दे देना। और इसकी बात न तो उनके घर वालों को और न ही मैनेजर साहब को बतानी होगी।"

बाबू साहब ने कहा, "हम तुम्हारे इन दो दिनों के सद्व्यवहार को स्मरण रखेंगे।"

लड़की ने कहा, "अब हम ब्रेक फास्ट करेंगे और उसके बाद मैं चिट्ठी लिखूँगी। वह मैं तुमको बिना किसी के देखे, दे जाऊँगी।"

सब कमरे से बाहर निकल आये।

ब्रेक फास्ट की मेज़ पर बैठे हुए बाबू बेनी माधोसिंह ने मैनेजर साहब से कहा, "मैनेजर साहब यद्यपि यह रकम मैं बहुत अधिक समझता हूँ। परन्तु मैं इसको देने से दिवालिया नहीं हो जाऊँगा। आप राजा साहब से कह दीजिये कि वह अपने पुरोहित को कलकत्ता मेरे मकान पर भेज दें। वहाँ मुहूर्त्त निकलवा लेंगे। यह भी वहाँ ही निश्चय करूँगा कि बारात कहाँ जानी है। कलकत्ता अथवा अपने गाँव में।

"मैनेजर साहब! हम अपना सामान बाँध रहे हैं और एक बजे की गाड़ी से चले जायेंगे।"

जाने से पूर्व सुशीला देवी ने एक मुहरबन्द लिफाफा भगवती को दे दिया। लिफाफा देते हुए उसने पूछा, "भैया, कभी कलकत्ता नहीं आओगे?"

"रानी बहन! कभी राजा बहादुर को मेरे लिये कलकत्ता में काम पड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो आपसे और बाबू साहब से मिलूँगा।"

"और बिना काम के नहीं आ सकते?"

"खर्चे का प्रश्न उपस्थित हो जाता है।"

"और खर्चा मिल जाये तो?"

"तो छुट्टी का प्रश्न उपस्थित हो जाता है।"

"यह तो बहुत ही साधारण बात है।"

ये दोनों मेहमानखाने के शयनागार में खड़े बातें कर रहे थे। बाहर से बाबू साहब की आवाज़ आयी, "सुशीला! गाड़ी का समय हो गया है।"

भगवती घर आया तो राधा पूजागृह में बैठी रामचरित मानस अति मधुर स्वर में गा रही थी। भगवती पूजागृह के बाहर ही ठहर गया और माँ का गान सुनने लगा। माँ गा रही थी–

केकीकण्ठाभनीलं सुखरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं,
शोभाढ्यंपीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम्।
पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानं,
नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामम्।
कौसलेन्द्रपदकंजमंजुलौ कौमलावजमहेशवन्दितौ,
जानकीकरसरोजलालितौ चिन्तकस्य मनभृंगसंगिनौ।★

कुछ काल तक वह माँ का राम का गान सुनता रहा। तदुपरान्त वह भी जूता उतार पूजागृह में पहुँच माँ के सामने बैठ गया। माँ ने पुत्र को आया देख, पाठ बन्द कर दिया और पूछने लगी, "भोजन किया है?"

"नहीं माँ"! बाबू साहब एक बजे की गाड़ी से गये हैं और वहाँ मध्याह्न का खाना डेढ़ बजे होता है।"

"तो चलो, भोजन कर लो।"

दोनों उठे और हाथ धो, रसोईघर में जा पहुँचे। वहाँ भगवती आसन पर बैठ गया। माँ ने उसके सामने चौकी रखी और स्वयं सुलग रही आग को प्रज्वलित कर, उस पर अरहड़ की दाल की खिचड़ी गरम करने लगी।

भगवती ने कहा, "माँ! मैनेजर ने कहा है कि राजा बहादुर ने भूमि का पट्टा मेरे नाम करने की आज्ञा दे दी है। मैनेजर चाहता था कि तहसील में चल कर पट्टे को ले लूँ।"

★ मोर-कण्ठ की आभा के समान नील वर्ण, देवताओं में श्रेष्ठ ब्राह्मण के चरण कमल से सुशोभित, पीताम्बर से सुशोभित, कमल नेत्र, सदा स्तुतिमान जानकी पति, रघुकुल श्रेष्ठ, पुष्पक विमान पर आरूढ़, श्री रामजी को मेरा नमस्कार हो।

कौसलपुरी के राजा, जिनके सुन्दर कपाल स्वरूप चरण, ब्रह्मा और शिवजी से भी वन्दनीय हैं और जो जानकी जी के कोमल हाथों से दबाये जाते हैं, वे चरण भक्तों के मन में सदा बसे रहें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह ठीक हो रहा है।"

"परन्तु माँ ...।" वह कहना चाहता था कि वह इस पट्टे को स्वीकार करना अपना महान अपमान समझता है। परन्तु कह नहीं सका। वह माँ को पिछली रात की बात स्मरण करा उसके चित्त को अशान्त करना नहीं चाहता था। उसे चुप देख माँ ने लड़के के मुख पर प्रश्नभरी दृष्टि से देखा और पूछा, "तो क्या?"

"मुझे यह पट्टा, ..." भगवती ने विचार-विचार कर शब्द उच्चारण करने आरम्भ किये, "सौदेबाजी प्रतीत हुई, जिसमें हमको बहुत भारी मूल्य देना पड़ रहा है।"

माँ का मुख विवर्ण हो गया और वह विचार करती हुई कल्छी से चूल्हे पर रखी खिचड़ी हिलाने लगी। भगवती अपनी बात कहता गया. "मैनेजर साहब ने पूछा कि कब तहसील में चलूँगा। मैंने उनको बताया है कि इसके लिये माँ से पूछना पड़ेगा।"

"मुझसे क्या पूछना चाहते हो?" माँ ने डबडबाई हुई आँखों से खिचड़ी की ओर देखते हुए पूछ लिया।

"मैं पूछना नहीं चाहता माँ! तुम बताओ क्या कहती हो? मैनेजर ने कहा था कि तुमको उनकी पत्नी से मिलना चाहिए।"

"मैं आज ही मिलने जाऊँगी। तुम कोट जा रहे हो या नहीं?"

"भोजन के बाद जाऊँगा। मैनेजर साहब ने कहा था कि मैं उनकी मोटर में उनके साथ जा सकूँगा। वे बाबू साहब का सन्देश देने राजा बहादुर से मिलने जा रहे हैं।"

"ठीक है। उस समय मैं उनकी पत्नी से मिलने जाऊँगी।"

भगवती ने भोजन किया और आधा घण्टा अपने कमरे में बैठ गीता का अध्ययन करने लगा। वह पढ़ता-पढ़ता रुक गया। उसने पढ़ा-

तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम्।।*

वह इस श्लोक का अभिप्राय समझ अपने अनिश्चित मन की अवस्था पर चिन्तन करने लगा। वह विचार करने लगा था कि परमात्मा के नाम से युद्ध किया जा सकता है तो जीविकोपार्जन में कौन-सी बड़ी बात है! ईश्वर का नाम लेकर वह करणीय कर्म करे। इस दिशा में विचार करने पर उसकी समझ में आया कि उसे छोटे कुँवर साहब को पत्र पहुँचा देना चाहिए। उसने गीता की पुस्तक बन्द की और उसे अलमारी में रख मैनेजर के बँगले की ओर चल पड़ा।

---

* इसलिये सब काल में परमात्मा का स्मरण करता हुआ युद्ध कर। मन और बुद्धि को परमात्मा में लगाये हुए परमात्मा को ही प्राप्त होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 10 :

"भगवती! तुम्हारे बाबू साहब की लड़की से घुल-घुलकर बातें करने की बात राजा बहादुर को पता चल गयी है।" मैनेजर साहब ने मोटर में बैठे कोट की ओर जाते हुए कहा।

"बाबू साहब और लड़की के निःसंकोच भाव से मुझसे बात करने पर मैं स्वयं भी विस्मय करता था। परन्तु उनको इन्कार कैसे कर सकता था।"

"ये देहाती गँवार लोग भले और सभ्य घरों की बातें नहीं जानते। इनको स्त्री और पुरुष में पति-पत्नी कर्म के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार की बात का होना समझ में आ ही नहीं सकता और फिर तुम्हारा मेरी मेज पर बैठकर भोजन करना धर्म से पतित होना समझा गया।"

भगवती तो अभी-अभी भगवद्गीता में पढकर आया था-परमात्मा का नाम लेता हुआ युद्ध कर और तू परमात्मा को ही प्राप्त होगा अर्थात् सब पापों से छूट जायेगा। इस कारण वह मुस्कराता हुआ बैठा रहा। मैनेजर ने अपना कथन जारी रखा, "असल बात यह है कि बाबू साहब की लड़की ने पिछले दिन औरतों में तुम्हारी प्रशंसा की है और वह प्रशंसा कुँवर रानी को पसन्द नहीं आयी। इस कारण वह न केवल सुशीला देवी के विपरीत हो गयी, वरन् तुम्हारे भी विरुद्ध हो गयी है।"

"ओह!" भगवती के मुख से केवल यह शब्द ही निकला। मैनेजर भगवती के मन की प्रतिक्रिया जानना चाहता था। उसने आगे कहा, "फिर भी मेरे विस्मय का अन्त नहीं रहा, जब वे पट्टा देने की बात कह रहे थे। एक ही वाक्य में तुमको बेईमान और तुरन्त पट्टा देने की बात समझ में नहीं आयी।"

भगवती इसका उत्तर देना नहीं चाहता था। अभी तक वह चुपचाप सुनता रहा था और सुनकर मुस्कराता रहा था। मैनेजर ने कह दिया, "देखो भगवती! तुम सुन्दर समझदार युवक हो। तुमको सब स्त्रियाँ देखते ही मन से प्यार करने लगती हैं। कोई माँ के समान, कोई भाई के समान और कोई पति के समान भी। वह स्त्रियाँ जो तुमको पति के रूप में देखती हैं, वे दूसरों को तुमसे घनिष्ठता स्थापित करते देख ईर्ष्या करने लगती हैं। यही बात कुँवर रानी के मन में उत्पन्न हुई प्रतीत होती है।"

"हुज़ूर! मुझे किसी अन्य ने भी कुछ इसी प्रकार की बात कही है, परन्तु मैं एक बात सीखा हूँ। वह है अपने कर्म का ध्यान रखना। दूसरे क्या करते हैं और क्या समझते हैं, मेरे लिये कुछ अधिक चिन्ता का विषय नहीं है।"

"ठीक है। पट्टा कर लो और फिर इन मूर्खों के चूतड़ों पर लात मारकर चलो मेरे साथ। मेरी पत्नी की दृष्टि में तुम एक योग्य पुत्र समान समझ में आये हो। वह चाहती है कि तुम पढ़-लिखकर उसके पुत्र बन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाओ।"

भगवती ने हँसते हुए कहा, "हुजूर, यह बात आपने मेरे चित्त को प्रसन्न करने वाली बताई है। परन्तु मेरी माँ मेरी दूसरी माँ बनती देख ईर्ष्या करने लगेगी।"

"माताएँ तो एक से अधिक हो सकती हैं। इसके लिये ईर्ष्या नहीं होती। माँ अपने पुत्र को दूसरों के स्नेह का पात्र देख प्रसन्न ही होती है। बहन-भाई का सम्बन्ध भी ऐसा ही है। परन्तु पत्नी अपने पति को दूसरों में बँटता नहीं देख सकती।"

"परन्तु हुजूर, इस्लाम के अनुयायियों में यानी जिन मुसलमानों की एक से अधिक पत्नियाँ होती हैं वे ...?"

"उनकी पत्नियाँ दोजख की आग में जलती हैं?"

भगवती हँस पड़ा। इस समय तक वह कोट के बाहर पहुँच गये थे। गाड़ी खड़ी हुई तो दोनों उतर कर राजा बहादुर की बैठक में जा पहुँचे। राजा बहादुर अपने देहाती नौकर-चाकरों में बैठे हँसी-मजाक की बातें कर रहे थे। इस हँसी-मजाक में आस-पास के गाँवों की चरित्रहीन औरतों की बातें ही हुआ करती थीं। यही वातावरण था, जिससे भगवती ऊबकर वहाँ से भागने का यत्न करता रहता था। जब ये वहाँ पहुँचे तब रघुमल्ल बनिये की पत्नी 'लाली' की बातें हो रही थीं। रघुमल्ल ने पचास वर्ष की आयु में पन्द्रह वर्ष लड़की से, रुपये के बल पर विवाह किया था। लाला की पहली पत्नी से लड़के 'लाली' से बड़ी आयु के थे और यह सन्देह किया जाता था कि 'लाली' को पहले उन्होंने ही पतित किया था और अब वह गाँव में हरज़ाई मानी जाती थी।

जब ये वहाँ पहुँचे। चर्चा बहुत जोरों पर थी। इनको देख सब चुप हो गये। राजा बहादुर ने भगवती को देख पूछ लिया, "कहाँ रहे हो दो दिन तक?"

"महाराज! आपकी आज्ञा का पालन करता रहा था। मेहमान बाबू की सेवा में रहा हूँ।"

राजा बहादुर हँसने लगे। हँसकर उन्होंने पूछा, "और उनकी लड़की की नहीं?"

"वह भी आपकी आज्ञानुसार ही था।"

अब तो मैनेजर भी मुस्कराये और बोले, "महाराज, मैं बाबू साहब का उत्तर लाया हूँ।"

"क्या उत्तर है?"

"यहीं सुनेंगे? मेरी प्रार्थना है कि राजा भैया और छोटे कुँवर साहब भी आ जायें तो अधिक ठीक रहेगा।"

राजा बहादुर गम्भीर हो गये। वे बोले, "ठीक है।"

"ओ, रामहर्ष!" उन्होंने अपने प्रिय सेवक को आवाज़ दे कर कहा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भीतर बैठक में राजा भैया और छोटे साहब को बुला लाओ। कहो महाराज याद करते हैं।"

राजा बहादुर उठ पड़े और वहाँ बैठे चाटुकारों से बोले, "दरबार समाप्त हुआ। सब जाओ।"

सब उसी समय उठ पड़े थे, जब राजा बहादुर उठे थे। अब इस आज्ञा पर सब सलाम कर जाने लगे।

राजा बहादुर मैनेजर साहब और भगवती को लेकर कोट के भीतरी बैठक को चल पड़े। वहाँ सब मसनद पर बैठ गये। छोटे कुँवर साहब तो तुरन्त आ गये, परन्तु राजा भैया को आने में देरी लगी। उनके आने तक सब चुपचाप बैठे रहे। राजा भैया आये तो खड़े-खड़े ही पूछने लगे, "हुक्म हो जाये।"

"क्यों, कहीं जा रहे हो?" राजा बहादुर ने पूछ लिया।

"आज शिकार खेलने का विचार हो रहा है।"

"तो उसका आज मुहूर्त्त निकला है?"

"मन कर आया है।"

इस समय मैनेजर और भगवती राजा भैया को बैठते न देख खड़े हो गये।

"क्यों साहब! " राजा बहादुर ने पूछ लिया, "खड़े क्यों हो गये हैं?"

"राजा भैया चाहते हैं कि हम बैठने की गुस्ताखी न करें।" मैनेजर ने गम्भीर हो कर कहा।

"नहीं-नहीं।" राजा भैया ने कह दिया, "आप बैठकर बताइये।"

फिर भी मैनेजर ने खड़े-खड़े ही कहा, "बाबू साहब समझते थे कि आपकी माँग बहुत अधिक है, परन्तु उनका कहना है कि आपकी कृपा से इतना देने पर भी उनका दिवाला नहीं निकलेगा। आप अपना पुरोहित उनके पास कलकत्ता भेज दें।"

"तो हम उनका दिवाला निकालने वाले थे?" राजा भैया ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा।

"हुजूर, सब गिना गया है और उनको लड़की के विवाह पर पाँच लाख से ऊपर खर्च करना पड़ेगा। इतना कुछ तो खुद-मुख्तार रियासत में भी लेन-देन नहीं होता।"

"यह तो इसलिये था कि हम उनकी लड़की से सम्बन्ध नहीं चाहते थे।"

"तो अब क्या करियेगा?" मैनेजर साहब ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

राजा भैया विचार-मग्न हो गये। राजा बहादुर ने कुछ कहने से पहले ही कह दिया, "विवाह हो सकता है।"

"हम अपना निश्चय रानी माँ से विचार करके बतायेंगे।" राजा भैया का कहना था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटे साहब ने अपना मुख खोला और बोले–"माँ ने तो कल ही कह दिया था कि लड़की इतनी अच्छी है कि इसके बाप से कुछ भी दहेज माँगना अन्याय है।"

"फिर भी उनसे पूछना ती पड़ेगा ही। साथ ही घर में अन्य औरतें भी तो हैं।"

राजा बहादुर ने कहा, "पुरोहित रामचन्द्र शुक्ल से भी तो राय करनी होगी। तब ही तो उत्तर भेजा जा सकता है।"

प्रत्यक्ष में राजा भैया बाबू बेनी माधोसिंह के उत्तर से असन्तुष्ट थे। परन्तु राजा बहादुर ने राजा भैया के चले जाने के उपरान्त कहा, "अब तो राजा भैया कों प्रसन्न होना चाहिए।"

राजा भैया के चले जाने के उपरान्त मैनेजर और भगवती बैठ गये। राजा बहादुर ने मैनेजर से पूछा, "भगवती के नाम पट्टा हो गया है क्या?"

"इतनी जल्दी तो नहीं हो सका। मुन्शी कागज़ तैयार कर रहा है। भगवती की माँ को तहसील में ले जाने की आवश्यकता नहीं। मैं तहसीलदार को अपने बँगले पर ही बुला लूँगा और सब लिखा–पढ़ी वहाँ ही हो जायेगी। उसको भगवती के सरपरस्त होने का हलफनामा लेना पड़ेगा।"

राजा बहादुर यह सुन, गम्भीर भाव में बैठे रहे। मैनेजर ने पुनः कहा, "महाराज! यदि कुछ अन्य काम न हो तो मैं जाना चाहूँगा।"

"हाँ, जा सकते हैं।"

"भगवती?"

"यह बाद में आ जायेगा।"

मैनेजर चला गया तो राजा बहादुर ने भगवती से पूछ लिया, "भगवती! सुना है कि तुम लड़की के सोने के कमरे में घुसे रहते थे।"

"महाराज, उस कमरे में उनका पिता भी सोता था और वे चाहते थे कि मैं उनको वहाँ चाय पहुँचाऊँ।"

"वह क्या बातें करती थी तुमसे?" राजा बहादुर की आँखों में चमक दौड़ गयी।

"महाराज! वह राज्य–परिवार, दोनों कुँवर साहबों तथा औरतों के विषय में पूछती थीं और मैं उनको यहाँ की बातें बताता था।"

"यह तो तुम ठीक नहीं करते रहे।"

"पर महाराज, मैंने अपनी बातों से पिता–पुत्री के मन पर ठीक प्रभाव पैदा न किये होता तो यह पाँच लाख का खर्च सहन करने को वे तैयार न हो सकते।"

"तो यह तुम्हारी कृपा का फल ही है कि हमको यह मिल रहा है।"

"मैं इसको ऐसा नहीं समझता। मैं यह समझता हूँ कि प्रताप तो आपका ही है। परन्तु इस प्रताप को प्रकट करने वाला भी तो कोई होना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए था। वह मैं हो गया हूँ।"

"चारणों का काम करते रहे हो?"

"हजूर, यह गुण भी तो मैंने आपके दरबार में रह कर ही सीखा है।"

छोटे कुँवर साहब उठ बैठे और बोले, "मैं समझता हूँ कि बात समाप्त हो गयी है। इस कारण मैं अब जाना चाहूँगा।"

राजा बहादुर भी उठ पड़े और बाहर की बैठक की ओर चले तो भगवती से बोले, "तुम रानी माँ से मिल लो। वह तुमसे कुछ मँगवाना चाहती हैं।"

भगवती ने झुककर सलाम की तो उसने छोटे कुँवर साहब से कहा, "आप मेरी सूचना भीतर भिजवा दीजिये।"

राजा बहादुर बाहर की बैठक को गये तो भगवती ने छोटे साहब से कहा, "महाराज! आपके लिये यह है।"

"क्या?"

भगवती ने जेब से सुशीला देवी का मुहरबन्द पत्र देते हुए कहा, "रानी बहन ने यह दिया है।"

"रानी बहन?"

"जी, बाबू बेनी माधोसिंह की लड़की सुशीला बहन ने।"

"और वे रानी बन गयी हैं।"

"हाँ, जब आपने उसे स्वीकार कर लिया है तो उसके रानी बनने की बात माननी ही पड़ेगी।"

"कब स्वीकार किया है?" छोटे साहब ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा।

"दहेज की बात बाबू साहब ने मान ली है।"

छोटे कुँवर साहब के माथे पर चढ़ी त्योरी उत्तर गयी। वह समझा था कि उसके सुशीला देवी से सम्बन्ध की बात भगवती को पता चल गयी है। अब यह सफाई सुन वह सन्तोष अनुभव करके बोला, "विवाह होने पर ही तो वह रानी बनेगी।"

"विवाह नहीं होगा तो वह रानी नहीं रहेगी। केवल बहन रह जायेगी।"

"इस पत्र का उत्तर भी माँगा है?।"

"जी नहीं। वह तो अपने पिता के साथ चली गयी हैं।"

छोटे कुँवर साहब भगवती को अपने साथ ही माँ के कमरे में ले गये। रानी माँ ने उसे गाँव के बनिये से कुछ खरीदने के लिये बुलाया था। जब छोटे कुँवर साहब उसे वहाँ छोड़कर चले गये तो रानी माँ ने उसे खरीदने वाली वस्तुओं की एक लम्बी सूची दे दी। उसने एक सौ रुपये का नोट दिया और कहा, "यदि कुछ वस्तुएँ यहाँ न मिलें तो लखनऊ जाने के लिये तैयार रहो।"

"और कुछ?"

"कुछ नहीं, जा सकते हो।"

भगवती ने सलाम किया और चला आया। कोट से बाहर निकल वह पैदल ही अपने घर को चल दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

राधा रमणी दास से मिलने गयी, तो वह राधा को भगवती की सूरत-शक्ल से मिलते देख पूछने लगी, "आप भगवती चरण की माँ हैं?"

"जी, लड़के ने बताया है कि आप मुझसे मिलना चाहती हैं?"

"हाँ, मैंने आपको बुलाया है। कुछ उड़ती-उड़ती खबर मिली थी कि राजा का बड़ा लड़का आप पर डोरे डाल रहा है और यह कि आप मान नहीं रहीं। इस कारण आपकी भूमि का पट्टा आपके लड़के के नाम नहीं किया जा रहा। मैं इसी विषय में पूछकर किसी प्रकार से आपकी सहायता करना चाहती थी, जिससे आपको इन पशुओं के उत्पीड़न से बचाया जा सके। परन्तु आज फिर एक समाचार मिला है कि भगवती के नाम पट्टा करने की आज्ञा हो गयी है।

"इस समाचार से मैं प्रसन्न हूँ। इसको अर्थ मैं यह समझी थी कि मेरी सहायता की आवश्यकता नहीं रही। परन्तु साहब बता रहे थे कि भगवती की इच्छा पट्टा लेने की नहीं है और वह कह रहा था कि माँ से पूछ कर बतायेगा।"

भगवती की माँ विचार कर रही थी कि इस औरत को वह अपने मन की स्थिति बताये अथवा न बताए। वह अभी विचार ही कर रही थी कि रमणी देवी ने अपनी सूचना के स्रोत के विषय में कह दिया, "कुँवर रानी की एक नौकरानी है चुटकी। उसका लड़का साहब का अर्दली नियुक्त हुआ है। उसे गाँव में कोई नौकरी नहीं मिल रही थी। चुटकी एक दिन आयी और लड़के की नौकरी के लिये साहब से मिन्नत-समाजत करने लगी।

"लड़का नौकर हुआ तो वह स्वयं दूसरे-तीसरे दिन आने लगी। वह लड़के की नौकरी के लिये कृतज्ञता प्रकट करने के लिये सप्ताह में दो-तीन बार मेरी मालिश कर जाती है। मालिश करते हुए वह कोट की बातें बता जाया करती है। इन बातों में उसने कुछ आपके विषय में कहा था और मेरे मन में आपसे मिलने और फिर आपकी सहायता करने की इच्छा हो गयी।"

राधा ने समझा चुटकी तो उसको बाल्य-काल से जानती है, परन्तु वह यह नहीं समझ सकी थी कि कुँवर साहब से उसके यौन-सम्बन्ध को वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितना जानती है। इस कारण उसने पूछ लिया, "चुटकी मेरे विषय में क्या कहती थी?"

"कहती थी, नौगवाँ में राधा-जैसी सुन्दर स्त्री नहीं है। राजा भैया की कुँवर रानी तो उसकी जूती की भी तुलना नहीं रखती। कुँवर साहब अपनी रानी को चिढ़ाने के लिये उससे अपना आपसे सम्बन्ध का बखान किया करते हैं। एक दिन कुँवर रानी ने कहा था, 'ले क्यों नहीं आते उस चुड़ैल को?' इस पर राजा भैया ने कहा कि उसका भोग तो वे कई बार कर चुके हैं, वह हल्ला नहीं करती। कदाचित् अपनी बदनामी से डरती है, परन्तु मुझे इच्छा से स्वीकार नहीं करती। जब वह मानेगी तो उसे कोट में लाकर रखूँगा। चुटकी ने यह भी बताया है कि आप एक नेक औरत हैं और राजा भैया ने अपनी पत्नी को चिढ़ाने के लिये ही ऐसा कहा मालूम होता है।

"जब से मैंने यह बात सुनी थी, मैंने आपकी सहायता करने का निश्चय कर लिया था, परन्तु जानती नहीं थी कि आपसे कैसे मिलूँ? एकाएक भगवती कल यहाँ आये मेहमानों की सेवा के लिये पहुँचा और उसने अपना परिचय दिया तो मैंने उसे आपको भेजने के लिये कह दिया।

"आज पट्टा दिये जाने की आज्ञा सुन, मैं कुछ समझ नहीं सकी, अच्छा हुआ है कि आप आ गयी हैं। बताओ, पट्टा लेंगी अथवा नहीं?"

राधा ने मन में निश्चय कर लिया कि वह सब बात विस्तार से रमणी दास को बता देगी। उसने आरम्भ से अपनी कथा अपने समय-समय के उद्‌गार के साथ वर्णन कर दी।

इस पर रमणी ने पूछ लिया, "और अब क्या करना चाहती हैं?"

"मैं यह मानती हूँ कि वह शरीर का भोग करता रहा है। मेरा मन कभी भी उसके अनुकूल नहीं हुआ, परन्तु इस प्रकार बार-बार बलात्कारों से मेरे मन में विकार उत्पन्न होने लगा था। अन्तिम बार जब वह आया तो मैंने कहा था कि वह पट्टा दे दे तो मैं कोट में आकर रहने लगूँगी। परन्तु बाद में मुझे अपने मन के परास्त होने पर बहुत ग्लानि उत्पन्न हुई है। मैंने पूरी रात और दिन-भर पूजा-पाठ ध्यान और प्रार्थना से मन को शुद्ध करने का यत्न किया है।

"मैंने अपने को समाप्त करने का निश्चय किया है। न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी। अब पट्टा मिलता है तो मिल जाये। यह भगवती का हक है। इसके लिये नज़राना भी दिया जा चुका है। इसका मेरे भोग किये जाने के साथ सम्बन्ध नहीं। मैं चाहती हूँ कि भगवती को पट्टा मिल जाये। मैं उसका विवाह कर दूँ और तब इह-लीला समाप्त कर दूँगी।"

"कैसे कर दोगी?"

"एक दिन अपने पर मिट्टी का तेल डाल कर जल मरूँगी।"

"ओ . . . । नहीं-नहीं। ऐसा नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखिये, बबुआइन! इस जीवन में उद्देश्य था अपने पति का वंश चलाना। वह उद्देश्य भगवती का विवाह हो जाने पर पूर्ण हो जायेगा। इसके उपरान्त मेरा इस शरीर को रखने का कुछ भी प्रयोजन नहीं।"

"एक बात पूछूँ?"

"हाँ, पूछिए।"

"आप अपने धर्म के अनुसार समझती हैं कि आप परमात्मा के इतने समीप पहुँच गयी हैं कि स्वर्ग जाएँगी?"

"नहीं, परन्तु यह शरीर और जन्म तो मुझे नर्क की ओर ले जाता प्रतीत होता है।"

"पर यहाँ के हालात बदले जा सकते हैं।"

"कैसे?"

"एक मार्ग मैंने भगवती को बताया है। अब उसमें कुछ परिवर्तन हो सकता है। वह इस तरह, कल भगवती के नाम पट्टा हो जाये। परसों आप अपनी भूमि किसी को अधिये पर देकर भगवती के साथ लखनऊ चली जाएँ। भगवती पढ़लिख लेगा और वहाँ साहब उसको तीस रुपये मासिक का वजीफा भी दिलवा देंगे और फिर यहाँ की भूमि से भी कुछ मिल जायेगा। मैं आपके और भगवती के रहने का प्रबन्ध करा दूँगी। वहाँ आप अपने परमात्मा को याद करियेगा और अपना अगला जन्म सुधारने का यत्न करियेगा। अब बताइये आपकी योजना से यह ठीक है या नहीं?"

राधा विचार में डूब गयी। वह कह नहीं सकी कि यह योजना जल मरने की योजना से घटिया है। उसे चुप देख रमणी ने पुनः कहा, "राधा बहिन! अब आप जाइये। कल भगवती के साथ यहाँ आ जाइयेगा और पट्टे की बात ठीक हो जाने पर यहाँ से चलने का कार्यक्रम बना लीजियेगा।"

राधा उठी और ड्राइंग-रूम से बाहर निकल आयी। रमणी दास उसके साथ बाहर आ गयी। इसी समय मिस्टर दास मोटर में वहाँ आ पहुँचे। वह मोटर से उतर दोनों औरतों के सामने आ, अपनी पत्नी से पूछने लगे, "यह भगवती की माँ है?"

"जी, इनसे सब बात हो गयी है। ये कल पट्टे के लिये आयेंगी। आप सब प्रबन्ध करा रखियेगा।"

"हाँ, माई! कल भगवती को साथ लेकर नौ बजे आ जाना! तुम को कचहरी नहीं जाना पड़ेगा। यहाँ पर ही हाकिम आ जायेगा।"

"आ जाऊँगी।" राधा ने कहा और अपने घर को चली गयी।

रात राधा ने भगवती को कह दिया, "मैनेजर की पत्नी से मिल आयी हूँ। बहुत ही भली औरत प्रतीत होती है। मैं उसकी राय मान आयी हूँ।"

"क्या मान आयी हो माँ?"

"यही कि कल मैनेजर साहब की कोठी पर तहसीलदार आ जायेगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और तुम्हारे नाम पट्टा होगा। मैं तुम्हारी सरपरस्त रहूँगी। दो-तीन दिन में भूमि हमको अधिया पर दे देनी चाहिये और तब मैं और तुम दोनों लखनऊ चलकर रहेंगे। तुम अंग्रेजी पढ़ोगे और मैं भगवद्भजन करूँगी। मैनेजर की पत्नी हमारे रहने के लिये मकान का प्रबन्ध कर देगी।"

"तो पट्टा कर लूँ?"

"हाँ, मैनेजर और उनकी पत्नी, दोनों का कहना है कि ले लेना चाहिये। पर, यह मैं इसलिये मान सकी हूँ कि हम यहाँ से चल दें।"

भगवती को यह बात अधिक युक्तियुक्त प्रतीत हुई थी। दूसरी योजना, जो अभी तक उसे बतायी गई थी, यह थी कि भगवती पट्टा लेकर नौगवाँ में रहेगा और माँ चली जायेगी। कहाँ? यह उसने नहीं बताया था। वह समझ रहा था कि कोट में रहने। यह उसे बिलकुल पसन्द नहीं था।

भगवती ने सुख की साँस लेते हुए कह दिया, "माँ, यह ठीक है। इस योजना में सबसे अच्छी बात है कि तुम भी यहाँ से चल सकोगी।"

"मुझे तो जाना ही था। यह तो तुम्हारे साथ जाने अथवा पृथक् जाने का झगड़ा था।"

"तो पृथक् में कहाँ जाना चाहती थीं?"

"अब बताने की आवश्यकता नहीं। बेटा, एक बात समझ लो। किसी के माता-पिता सदा साथ नहीं रहते। सब जाते हैं, मैं जरा जल्दी जा रही थी। मैनेजर की पत्नी ने समझाया है कि अभी मेरी तैयारी काफी नहीं। कुछ भगवद्भजन और कर लूँ तो फिर जाने की बात विचार करूँगी।"

भयभीत भगवती माँ का मुख देखता रह गया। माँ मुस्करा रही थी। भगवती को अवाक् बैठा देख बोली, "शरीर नाशवान है, आत्मा मरती नहीं परन्तु शरीर आत्मा की, संसार से मुक्ति में सहायक होता है। सो मैनेजर की पत्नी इसमें सहायक होने का वचन दे रही है।"

: 2 :

अगले दिन भगवती और राधा नौ बजे से पहले ही मैनेजर की कोठी में पहुँच गये। उनको ड्राइंग-रूम में बैठा दिया गया। तहसीलदार के सामने राधा से कई कागज़ों पर हस्ताक्षर कराये गये और फिर भगवती और मैनेजर पीछे तहसील में गये और पट्टे की रजिस्ट्री हो गयी।

इसके उपरान्त भगवती राजा बहादुर की दरबारदारी में जा पहुँचा था। इस कारण राजा बहादुर ने पूछ लिया, "कहाँ रहे हो आज?"

"मैनेजर साहब की कोठी पर तहसीलदार आये थे और उन्होंने पट्टा करवा दिया है।"

"तो पट्टा हो गया है?"

"हाँ महाराज, आपकी बहुत कृपा हुई है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

राजा बहादुर मुस्करा रहे थे, "अच्छा यह बताओ, तुम किसकी नौकरी करना चाहते हो?"

"नौकरी? महाराज, नौकरी मैं किसी की करने नहीं आता।"

"तो क्या करने आते हो?"

"आपकी और राज्य परिवार की सेवा करने।"

"तो क्या सेवा नौकरी नहीं हुई?"

"नहीं महाराज! सेवा तो मैं स्वेच्छा से करता हूँ। आप बीस रुपये जेब-खर्च देते हैं। दोनों का परस्पर सम्बन्ध नहीं। आप खर्चा न भी दें, तो भी सेवा तो कर ही सकता हुँ।"

"एक ही बात है, सेवा कहो, नौकरी कहो। जेब-खर्चा मानो अथवा वेतन मानो। देखो, छोटे साहब कहते हैं कि तुम उनके साथ रहा करो।"

"पर महाराज, वे तो मुझे बुद्धू मानते है।"

"बुद्धू को भी साथ रखने में मज़ा रहता है।"

"आप आज्ञा करेंगे तो यह बुद्धू उनके साथ भी रह सकता है।"

"पर बड़े साहब तुमको चतुर मानते हैं कि तुम्हारी चतुराई से वे लाभ उठाना चाहते हैं।"

"चतुर नहीं महाराज! वे मुझे कुटिल और धूर्त्त कहा करते हैं।"

"कुछ भी हो, वे तुमको अपना सेक्रेटरी बनाना चाहते हैं।"

"मैं समझता हूँ कि दोनों साहब मेरी हँसी उड़ा रहे हैं। वास्तव में वे मुझको पसन्द नहीं करते। ये अवश्य अपने साथ रखकर मेरी पिटाई करायेंगे।"

"हमे ऐसा नहीं समझते। तुम बताओ, किसके साथ रहना चाहते हो।"

"आपके साथ। मेरा मतलब यह है कि जिसके साथ आप भेजेंगे चला जाऊँगा। जब तक के लिये भेजेंगे, तब तक उनके साथ रहूँगा।"

"देखो भगवती! तुम छोटे साहब के साथ रहो। वे लखनऊ जा रहे हैं और वहाँ से वे दिल्ली जाना चाहते हैं।"

"आपकी आज्ञा है तो ऐसा ही होगा।"

"नहीं, इस प्रकार नहीं। राजा भैया नाराज़ हो जायेंगे। तुम यह कहना कि तुम घूमना चाहते हो। इस कारण अभी दिल्ली की सैर के लिये जा रहे हो।"

भगवती इस बात का अर्थ नहीं समझ पाया। फिर भी उसने कह दिया, "जैसे महाराज की आज्ञा।"

"तो आओ, छोटे साहब से मिल लो।"

भगवती जाने के लिये उठा ही था राजा भैया आ गये। "ठहरो भगवती!" उन्होने आते ही कहा।

भगवती ठहर गया। राजा भैया ने पूछा, "कहाँ जा रहे हो?"

"महाराज से छुट्टी लेकर घर जा रहा था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों, आज महाराज को समाचार-पत्र नहीं सुनाओगे?"

"मैनेजर साहब के यहाँ पट्टा करने में देरी हो गयी है। महाराज भीतर जा रहे थे।"

"बैठो।" राजा भैया ने बैठते हुए कहा। भगवती बैठा तो वे कहने लगे, "अब तुम बड़े हो गये हो, तुम्हारा काम बदल रहा है।"

"हाँ, महाराज।"

"तुम आज से कोट के अन्तःपुर में नहीं जा सकोगे।"

"बहुत अच्छा, रानी माँ ने कुछ काम कल बताया था। अब वह काम करके बाहर से ही संदेश भेज दूँगा।"

"हाँ।"

"दूसरे, यह कि तुम्हारा वेतन बीस रुपये से पचहत्तर रुपया हो जायेगा।"

"बहुत कृपा है महाराज की।"

"तीसरे, मैं अपना एक कार्यालय बनाना चाहता हूँ। तुम उसमें मेरे सैक्रेटरी बनकर रहोगे।"

"पर मैं तो कुटिल और धूर्त्त हूँ?"

"मुझे अपना सेक्रेटरी धूर्त्त और कुटिल ही चाहिए।"

"तब तो ठीक है। मैं हाज़िर हूँ, परन्तु मुझे छोटे साहब ने कहला भेजा है कि वह दिल्ली-बम्बई घूमने जा रहे हैं और उन्होंने साथ चलने के लिये कहा है।"

"तो दो काम कैसे करोगे?"

"पर वे सदा के लिये तो घूमने जा नहीं रहे। कुछ दिनों में लौट आयेंगे। तब तक आप अपना कार्यालय फिट कराइये। मैं आते ही उसमें काम करने लगूँगा।"

"कब तक लौट रहे हो?"

"यह तो छोटे साहब ने बताया नहीं। उनका संदेश केवल इतना है कि मैं उनके साथ घूमने चलूँ। छोटे साहब से पूछ सकते हैं।"

राजा बहादुर साहब बोल उठे, "जल्दी किस बात की है, इसे सैर कर लेने दो।"

राजा बहादुर प्रसन्न थे कि भगवती ने उनका नाम बीच में नहीं लिया।

"पर यह जान लेने में क्या हानि है कि छोटे साहब कब जा रहे हैं? कहाँ जा रहे हैं और कब लौट रहे हैं।"

इसी समय छोटे साहब की मोटर का ड्राईवर महावीरसिंह आ गया और राजा बहादुर तथा राजा भैया को सलाम कर बोला, "छोटे कुँवर साहब, पण्डित भगवती को बुला रहे हैं।"

"जाओ, भगवती!" राजा बहादुर ने कह दिया।

भगवती ने सलाम की, और महावीरसिंह के साथ चल दिया। छोटे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहब के कमरे में पहुँचा तो वे अपने पलंग पर सूटकेस रखे राधेश्याम से अपने पहनने के कपड़े डलवा रहे थे।

जब भगवती पहुँचा तो कुँवर साहब पूछने लगे, "महाराज से मिले हो?"

"जी।"

"उन्होंने कुछ कहा है?"

"केवल इतना कि क्या मैं दिल्ली-बम्बई की सैर करने जाना चाहता हूँ? जब मैंने कहा हाँ, तो वे बोले कि मुझे आपके साथ जाना होगा।"

"ठीक है, अभी तो तुम मेरे साथ चलो। अपने लिये सात दिन तक के कपड़े तैयार कर के कल प्रातः चलने को तैयार रहना। हम आठ बजे आवेंगे और तुमको तुम्हारे घर से ले लेंगे।"

भगवती चुप खड़ा रहा। "बस ठीक है, यहाँ से लखनऊ चलेंगे और फिर . . .।" कुँवर साहब मुस्कराकर चुप रहे।

भगवती समझा कि दिल्ली नहीं जा रहे। कदाचित् कलकत्ता सुशील देवी की चिट्ठी का उत्तर देन के लिये जा रहे हैं। फिर भी वह चुप रहा। कुँवर साहब ने कहा, "अब तुम जा सकते हो।"

भगवती घर लौट आया। माँ ने पूछ लिया, "बहुत शीघ्र लौट आये हो?"

"हाँ, माँ! छोटे कुँवर साहब मुझे कहीं बाहर ले जा रहे हैं। कल सुबह यहाँ से चलना है।"

"कहाँ?"

"उन्होंने बताया तो नहीं। फिर भी मैं समझता हुँ कि कलकत्ता जा रहे हैं। कल सुशीला देवी एक मुहरबन्द चिट्ठी कुँवर साहब के लिये दे गयी थीं। आज कुँवर साहब का जाने का विचार हो गया है और राजा भैया से लड़कर मुझे साथ ले चल रहे हैं। राजा भैया नहीं चाहते कि मैं उनके साथ जाऊँ।"

"तुमने अपनी यहाँ से चले जाने की बात बताई है क्या?"

"नहीं, अभी नहीं।"

"बताना भी नहीं। अभी कुछ समय पहले मैनेजर की पत्नी यहाँ आई थीं। वह कह गयी हैं कि मुझे कल ही यहाँ से चले जाना चाहिये। अब यहाँ रहने में कोई मतलब नहीं। वे कल यहाँ से जा रही हैं। उनका कहना है कि केवल पहनने के कपड़े और एक बिस्तर लेकर मैं भी उनके साथ चल दूँ। साथ ही वे कह गयी हैं कि तुम मैनेजर साहब से मिल लो।"

"किस समय?"

"समय तो नहीं बताया। मेरी राय है कि जाओ देख लो। यदि वे बँगले पर हों तो अभी मिल आओ।"

भगवती उल्टे पाँव मुड़ा। मैनेजर अपने कार्यालय में काम कर रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। भगवती वहाँ पहुँच सलाम कर खड़ा हो गया। मैनेजर ने कहा, "कल एक काम से लखनऊ जा रहा हूँ। मिसेज भी साथ जा रही हैं। तुम्हारी माता जी भी चलेंगी, तुम रात की गाड़ी से आ जाना।"

"पर हुजूर, मुझे तो छोटे साहब अपने साथ लखनऊ और फिर दिल्ली ले जा रहे हैं।?"

"तुम उनके साथ जा रहे हो?"

"जी, मुझे आपके कार्यक्रम का पता नहीं था।"

"कुछ हर्ज नहीं, तुम इस भ्रमण से लौटकर मेरी कोठी में आ जाना। मैं कल तुमको लखनऊ में मिलूँगा।"

"माँ कहाँ रहेगी?"

"मिसेज उसे एक जगह दिखाने का विचार रखती हैं। यदि वह स्थान तुम्हारी माताजी को पसंद आ गया तो फिर वहाँ ही रहेगी। अच्छा, तुम लोग किस वक्त जा रहे हो?"

"छोटे कुँवर साहब ने कहा है कि आठ बजे तक तैयार रहूँ।"

"कुछ भी हो, मैं तुमको कल लखनऊ में राजा बहादुर की कोठी पर मिलूँगा। अब तुम जाओ, किसी को अपनी योजना नहीं बताना। राजा भैया तुमको यहीं फँसा रखना चाहते हैं। वे नहीं चाहते कि तुम्हारी माँ यहाँ से जाये।"

भगवती अब इस बात के अर्थ समझता था, वह चुप रहा। उसको यह विश्वास हो रहा था कि यदि उस रात वाली बात फिर हुई तो माँ आत्महत्या कर लेगी।

भगवती घर पहुँचा तो भीतर तारा और बीरू का बड़ा लड़का साहनू वहाँ थे। माँ कह रही थी, "भगवती अंग्रेज़ी पढ़ने लखनऊ जा रहा है। मैं उसके साथ जा रही हूँ इस कारण यहाँ का सब कुछ तुम लोगों की देख-रेख में छोड़ रही हूँ। खेतों की वर्तमान उपज में बीज के लिये निकाल कर शेष में आधा भाग तुम्हारा और भविष्य में, जब तक हम यहाँ नहीं रहते, ये खेत अधिया पर तुम्हारे रहेंगे। बताओ, है मंजूर?"

"मालिक!" बीरू ने कहा, "जब तक फसल नहीं आती, तब तक खाना-पीना कैसे चलेगा?"

"मैं रामचरण बनिये को कह जाती हूँ कि दो सौ रुपये तक तुमको पेशगी दे दे। फसल के समय हम में से कोई आयेगा तो हिसाब हो जायेगा।"

"और लिखा-पढ़ी।"

"कुछ नहीं, मुझे तुम पर विश्वास है। अच्छा, अब जाओ। और देखो, मेरे यहाँ से जाने तक किसी को बताना नहीं, कि मैं जा रही हूँ, समझते हो न?"

"हाँ, मालिक!" बीरू का अर्थयुक्त उत्तर था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 3 :

कुँवर विजय बहादुर सिंह मोटर पर लदे-फदे प्रातः नौ बजे के लगभग भगवती के मकान के बाहर पहुँचे। भगवती तो पिछले दो घण्टे से उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह अपने कपड़ों को एक छोटे-से टीन के सन्दूक में बन्द कर तैयार बैठा था। उसके बिस्तर की दरी और चादर भी उसी सन्दूक में थी। उसकी माँ भी तैयार बैठी थी, परन्तु मैनेजर साहब को प्रातः का अल्पाहार लेकर साढ़े नौ बजे जाना था।

कुँवर साहब की गाड़ी एक बजे लखनऊ पहुँची। उसी समय भोजन तैयार नहीं हो सकता था। अतः सामान कोठी पर उतार, वे भोजन करने हजरतगंज के एक रैस्टोराँ में जा पहुँचे। वहाँ खाना खाते हुए कुँवर साहब ने भगवती को अपना कार्यक्रम बताया। वे कहने लगे, "भगवती, जानते हो हम कहाँ जा रहे हैं?"

"कुछ सन्देह हो रहा है," भगवती ने झुककर धीरे से कह दिया, "कलकत्ता जा रहे है।"

"हाँ, और मोटर गाड़ी में ही।"

"आपको कष्ट होगा।"

"नहीं, रेलगाड़ी में अधिक कष्ट होगा।" कुँवर साहब ने एकदम बात बदल दी, "वह चिट्ठी तुमने पढ़ी है, जो तुम मेरे पास परसों लाये थे?"

"जी नहीं, यह तो उन्होंने जाते समय इसी प्रकार बन्द की हुई दी थी?"

"उसमें तुम्हारी बहुत प्रशंसा की है। लिखा है कि यह तुम्हारा ही सुझाव है कि जो कुछ भी उनके पिताजी को देना है, मेरे हाथ में दे दें। मैं जो चाहूँ उससे करूँ। इस प्रकार धनराशि निर्धारित कर विवाह करने की शर्त पर माँगना तो उत्पीड़न हो जायेगा। अंग्रेजी में एक शब्द है, 'ऐक्सटॉर्शन, मतलब है, गले में अँगूठा देकर वसूल करना।"

भगवती चुपचाप सुन रहा था। इस समय बैरा खाना लगाने आ गया। बातें बन्द हो गयीं। भगवती कुँवर साहब के कलकत्ता चलने पर प्रसन्न था। वह विचार करता था कि विवाह भी बहुत लम्बे-चौड़े आडम्बर के बिना हो तो और भी अच्छा हो, परन्तु अपनी आयु और स्थिति का विचार कर वह चुप था।

भोजन करने लगे तो कुँवर साहब ने पुनः कलकत्ते वालों की बात आरम्भ कर दी। वह मुस्कराते हुए पूछने लगे, "पर तुमने उस पर क्या जादू डाला है कि वह तुमको भाई के नाम से सम्बोधन करती है। वह कहती है, तुम संसार में बहुत उन्नति करने वाले होगे।"

"यह तो उनकी भविष्यवाणी से अधिक उनके मन की इच्छा ही प्रतीत होती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुछ भी हो, तुमने उस पर अपना जादू चला दिया प्रतीत होता है।"

"तो यह सुशीला बहन के कारण ही समझूँ कि आपने भगवती बुद्धू को अपने साथ ले चलने का विचार बनाया है।"

"बुद्धू तो हम तुमको व्यंग से कहा करते थे। वैसे तुम सुन्दर और समझदार युवक हो। परन्तु तुम किसी भी व्यक्ति पर एक ही भेंट में इतना प्रभाव डाल सकते हो, हम नहीं जानते थे। खैर! मैं तुमको अपना प्राइवेट सैक्रेटरी बनाकर रखना चाहता हूँ।"

"पर महाराज, मुझे अंग्रेजी का एक अक्षर भी नहीं आता। इसके बिना यह कार्य मैं कर नहीं सकूँगा।"

"अब स्वराज हो रहा है। अंग्रेजी का व्यवहार कम हो जायेगा। कम-से-कम हमारे प्रान्त में तो हिन्दी चलेगी। थोड़ी अँग्रेजी तुम पढ़ लेना। हम तुममें इतनी बुद्धि तो पाते हैं कि तुम एक ही वर्ष में 'यस-नो' करना सीख जाओगे।"

भगवती मुस्कराया और बोला, "मैनेजर, मिस्टर दास कहते थे कि यदि मैं लखनऊ में एक स्कूल में भरती हो जाऊँ तो पाँच वर्ष में एम॰ ए॰ के बराबर अँग्रेजी सीख जाऊँगा। वह स्कूल बड़ी आयु के लोगों के लिये है?"

"कहाँ है वह स्कूल?"

"हजरतगंज के कैथालोक गिरजाघर में है। नित्य पाँच से आठ बजे तक जाना होगा।"

"पर वह तो तुम्हें ईसाई बना लेंगे?"

"कैसे बना लेंगे?"

"किसी ईसाई लड़की से तुम्हारा विवाह कर देंगे और तुम ईसाई हो जाओगे।"

भगवती ने धीमे से हँसते हुए कहा, "तो ईसाई इस प्रकार बनते हैं?"

"हाँ, मैनेजर साहब के पिता इसी प्रकार ईसाई बने थे।"

"बहुत विचित्र है? और मेरी हिन्दू धर्म पर निष्ठा कहाँ जायेगी?"

"ईसाई बीबी के मोह में बह जायेगी।"

"यह मेरी समझ में नहीं आ रहा। महाराज! इसका अनुभव प्राप्त करना चाहिए कि कैसे किसी की निष्ठा एक लड़की के मोह में विलीन हो सकती है।"

"देखो, किसी की पत्नी से बलात्कार कर उसे पतित कर दिया जाये। फिर उसको उसके पति की दृष्टि में बदनाम कर दिया जाये। उसका उसके पति से झगड़ा करा, उसे अपने घर में रख लिया जाये। यह नित्य होता रहता है। अब इसी के विपरीत बात विचार कर लो। तुम्हारी शादी एक ईसाई लड़की से कर दी जाये। वह मछली-अंडा खिला दे। फिर तुम्हारी माँ का तुमसे झगड़ा करा दिया जाये। वह तुमको घर से निकाल दे। हिन्दू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुमसे नफरत करने लगें। बस, तुम हिन्दू-समाज से निकल कर ईसाई-समाज में चले जाओगे और फिर तुम्हारे बच्चे हरीमोहन दास की भाँति ईसाई हो हिन्दू-धर्म से घृणा करने वाले हो जायेंगे। यही उत्पीड़न है।"

भगवती चुपचाप खाता रहा। फिर एकाएक बोल उठा, "मेरी राय में अब ऐसा हो नहीं सकेगा। महाराज, मैं बताता हूँ। मैं और मेरी माँ खाने-पीने में धर्म नहीं मानते। मैं दास साहब के साथ बैठकर खा चुका हूँ। जब भी राजा बहादुर के काम से लखनऊ अथवा इलाहाबाद में जाता हूँ, होटल में खाता हूँ। अब भी आपके साथ इन बैरों के हाथ का बना खा रहा हूँ। मैं जानता नहीं कि यह किस जाति के हैं।

"इस कारण मैं किसी ईसाई लड़की से विवाह होने पर न तो अपने को ईसाई मानूँगा न ही मेरी माँ ऐसा समझेगी। मुझे भय है कि ईसाई लड़की हिन्दू न बन जाये।"

"पर उसके बाल-बच्चे तो उसके प्रभाव में होंगे।"

"और मेरा असर नहीं होगा उन पर?"

"आर्यसमाजी भी ऐसा कहते हैं, परन्तु जब कार्य करने का समय आता है तो वे वही करते हैं, जो दूसरे हिन्दू करते हैं।

"देखो, तुमको एक बात बताता हूँ। एक आलम-फाज़ल मुसलमान अब्दुल ग़फूर आर्यसमाजी हो गया। उसे शुद्ध किया गया, उसका नाम धर्मपाल रखा गया। वह हिन्दू-धर्म की बातें भी पढ़ गया। संध्या और हवन करने लगा। उसने इस्लाम की बेहूदगी पर कई पुस्तकें लिखीं। समय पाकर उसके विवाह का प्रश्न उपस्थित हुआ। एक हिन्दू ने अपनी लड़की का विवाह उससे करने का विचार किया तो बिरादरी के लोग और उसके मित्र उसके खिलाफ हो गये और उसको भड़काने लगे कि धर्मपाल उसकी लड़की से विवाह कर पुनः मुसलमान हो जायेगा और उस लड़की को भी मुसलमान बना लेगा। विवाह नहीं हुआ और धर्मपाल को मुसलमान बनना पड़ा।

"ऐसी ही बात तुम्हारे बच्चों की होगी। कोई हिन्दू उनसे विवाह नहीं करेगा और विवश हो, उनको ईसाई होना पड़ेगा।"

"यह आप ठीक कह रहे हैं। परन्तु यह प्रश्न तो उस समय उत्पन्न होगा, जब मेरा विवाह होने लगेगा। अभी तो अँग्रेजी पढ़ने की बात हो रही है। विवाह से पहले माँ से राय कर लूँगा।"

"पर यह खतरा मोल ही क्यों लिया जाय?"

भगवती को इसमें उसी प्रकार कोई युक्ति प्रतीत नहीं हुई, जैसे राजा बहादुर के अपने लड़के के विवाह पर उसके श्वसुर से पाँच लाख रुपया माँगने में समझ में नहीं आयी थी। रुपया माँगना विवाह न करने के लिये था। इसी प्रकार गिरजाघर के स्कूल में ईसाई हो जाने का भय दिखाना,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ाई न करने के लिए था। वह दोनों बातों को व्यर्थ मानता था। इस कारण चुप रहा।

भोजनोपरान्त वे कोठी में गये। कुँवर साहब तो आराम करने लगे और भगवती बगल की कोठरी में बैठा हुआ उन सब बातों पर विचार करने लगा जो पिछले चार-पाँच दिन में घटी थीं।

सायंकाल मैनेजर हरिमोहन दास आये तो कुँवर साहब को सूचना भेजी गयी। मुरली सूचना लेकर भीतर गया तो कुँवर साहब बाहर आ गये। मैनेजर साहब ने बताया, "लगान के विषय में प्रान्त के मुख्य सैक्रेटरी से मिलना था। राजा साहब को सूचना भेज कर चला आया हूँ।"

"कब लौटने वाले हैं?"

"सैक्रेटरी साहब से मिल, बात कर आया हूँ। कल प्रातः काल लौट जाने कर विचार है। अब भगवती चरण को देख एक बात याद आ गयी है। मैंने इसे कहा था कि इसे यहाँ गिरजाघर के प्रौढ़ों के लिये श्रेणियों में भरती हो जाना चाहिए और अँग्रेज़ी पढ़ लेनी चाहिए। पाँच श्रेणियाँ हैं और पाँच वर्ष में एम॰ ए॰ तक की पढ़ाई का प्रबन्ध है। मैंने विचार किया कि यह लखनऊ में आया हुआ है तो इसे भरती करा दूँ। इससे कहा तो यह कह रहा है कि यह आपके साथ है। यदि आपका कल का कार्यक्रम दस बजे तक यहाँ रहने का हुआ है तो यह भरती होने जा सकता है।"

"परन्तु हम तो कल प्रातः छः बजे यहाँ से चल देंगे।"

"तब तो कठिन है और इस काम को आपके लौटने पर करना होगा।"

"मैं तो इसे अपने साथ रखने वाला था।"

"तो आप दोनों निश्चय कर लीजिये। इतना आप दोनों को समझ लेना चाहिए कि इसके जीवन का यह निर्माणात्मक काल है। इस काल में यह बहुत कुछ बन सकता है। बल्कि मैं तो यह कहूँगा कि आप इसका वजीफा लगा दीजिये, जिससे यह अपनी पढ़ाई जारी रख सके और नगर में रहने का खर्च चला सके।"

"पर गिरजाघर में पढ़ने से तो यह ईसाई हो जायेगा!" कुँवर साहब ने संशय प्रकट किया।

"मैं ऐसा नहीं समझता। जब तक वह यह न समझ लेगा कि ईसाई-धर्म हिन्दू धर्म से श्रेष्ठ है, तब तक ईसाई कैसे हो सकेगा?"

"ठीक है, जब हम दिल्ली से लौटेंगे तो विचार कर लेंगे।"

"तब तो ठीक है, इस विषय में फिर बात करेंगे।"

इतना कह हरिमोहन इधर-उधर की बातें करता रहा। आधा घण्टा बैठकर वह जाने को तैयार हो गया। भगवती उसको कोठी के बाहर मोटर तक छोड़ने आया तो मैनेजर ने कह दिया, "तुम्हारी माता हमारी कोठी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठहरी है। तुम प्रातःकाल सात बजे तैयार रहना। मैं जानता हूँ कि यह यहाँ से दस बजे से पहले नहीं जा सकेंगे। मैं तुमको तुम्हारी माँ से मिलाकर, तुम्हें स्कूल के डीन से मिला दूँगा। स्कूल में भरती करा, साढ़े आठ बजे और नौ बजे तक यहाँ छोड़ जाऊँगा। यदि तुम्हारे जाने का पता चल गया तो कोई बहाना बना देना। मैं समझता हूँ कि कुँवर साहब के तैयार होने से पहले तुम यहाँ पहुँच जाओगे।"

: 4 :

मिस्टर दास का अनुमान ठीक था। रात कुँवर साहब अपने नौकरों से शतरंज खेलते रहे। एक ओर कुँवर साहब थे और दूसरी उनका ड्राईवर महावीरसिंह और सेवक मुरली था। भगवती को शतरंज खेलने अथवा देखने में रुचि नहीं थी। वह अपने कमरे में बैठा भगवद्गीता पढ़ता रहा और पढ़ते-पढ़ते सो गया।

स्वभाववश वह प्रातः चार बजे उठा। उसने कोठी के रसोईघर में जा आग जलाई और जल गरम करने के लिए चूल्हे पर रख दिया। जल गरम होने तक शौचादि से निपट, स्नान करने जा पहुँचा। स्नान कर उसने पूजा और जप कर लिया। छः बजे तक अपने नित्य कर्मों से निपट वह गीता पढ़ने लगा। कोठी में घड़ी लगी थी। उसमें सात का घण्टा बजते ही वह कोठी के बाहर आ खड़ा हुआ। ठीक उसी समय मैनेजर साहब अपनी मोटर में आये और भगवती अपनी माँ से मिलने चल पड़ा।

मार्ग में भगवती ने बताया, "सुना है रात के ढाई बजे तक कुँवर साहब शतरंज खेलते रहे हैं। इससे मैं अनुमान करता हूँ कि वह नौ-दस बजे तक उठेंगे।"

मैनेजर साहब की कोठी गिरजाघर के समीप ही थी। मिस्टर दास भगवती को पहले वहीं ले गया। राधा भगवती की प्रतीक्षा कर रही थी। उसे रमणी दास ने कोठी के बगल के एक कमरे में ठहरा दिया था। राधा ने भगवती को वह कमरा दिखाया। एक बड़ा खुला कमरा था। एक कोने में सोने के लिए पलंग लगा था। दूसरे कोने में एक मेज़ रखी थी, जिसके ऊपर संगमरमर की पट्टी लगी थी। उस पर मिट्टी के तेल का नया चूल्हा और दो-तीन बर्तन नये खरीदे गये थे, करीने से रखे थे।

राधा ने बताया, "रात मैं यहाँ पलंग पर सोई थी। बराबर में गुसलखाना और शौचालय इकट्ठा हैं। और यह देखो, मैंने मेज़ पर अपनी रसोई बना ली थी। तुम्हारे आ जाने पर तुम भी यहाँ रह सकोगे। मुझे तो जगह पसन्द आ गयी है। मैंने पूछा रमणी बहन से इसका भाड़ा कितना लोगी?

"तो वह हँस पड़ी और बोली, 'भाड़ा तो बहुत कम है, परन्तु तुम से तो खूब लूँगी।' मैंने कहा, पहले बता दो, तो बोली, 'तुम्हारा स्नेह, बोलो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोगी या नहीं।'

"मैं इसका यह मतलब समझी हूँ कि वह कुछ भी भाड़ा नहीं लेगी। मैंने अपने को ईश्वर के अधीन छोड़ दिया है और यहाँ टिक गई हूँ।"

राधा अभी बता ही रही थी कि रमणी आ गयी और जब भगवती ने हाथ जोड़े तो वह कहने लगी, "तुम्हारी माँ ने मुझे मोहित कर लिया है और मैं इसको यहाँ ही रख रही हूँ। बताओ, तुम क्या चाहते हो?"

"माँ को रहना है, इस कारण ये स्वयं ही बता सकती हैं कि इनके लिए यह स्थान कैसा रहेगा।"

"इनको तो मैं मना लूँगी। अच्छा अब जाओ, नाश्ते का समय हो गया है। तुम्हारी माँ तो अपने घर से बनाकर लाये लड्डू खायेगी और हम मक्खन-रोटी खायेंगे।"

रमणी के दो बच्चे और मिस्टर दास पहले ही खाने के कमरे में पहुँचे हुए थे।

ब्रेक फास्ट के उपरान्त मिस्टर दास भगवती को गिरजाघर के पिछवाड़े में ले गया। वहाँ डाक्टर ब्राउन रहता था। भगवती को उससे मिलाकर दास ने उस समय वहाँ आने का प्रयोजन बताया। मिस्टर ब्राउन उसी समय गिरजाघर के बगल के कार्यालय में उनको ले गया और वहाँ भगवती का नाम दर्ज कर दिया। उसने यह भी बता दिया कि यह लड़का तीस रुपया महीना वजीफा तब तक पायेगा, जब तक इसके विवाह का प्रबन्ध नहीं हो जाता।

दास ने कह दिया, "आज तो यह भरती हुआ है, परन्तु अपने पहले मालिक के साथ दिल्ली जा रहा है। वहाँ से लौटते ही क्लास में हाजिर हो जायेगा।"

"आजकल पहली क्लास में कोई लड़का नहीं। मैं इस पर अधिक ध्यान दे सकूँगा।"

"डाक्टर ब्रॉउन, यह बहुत ही समझदार युवक है। मैं समझता हूँ यह शीघ्र ही आपकी दूसरी श्रेणी में चला जायेगा।"

इस प्रकार नाम रजिस्टर कराकर भगवती और मिस्टर दास वापस राजा बहादुर की कोठी में नौ बजे से पहले ही चले आये। कुँवर साहब जाग तो पड़े थे, परन्तु अभी स्नानादि से निवृत्त नहीं हुए थे। इस कारण कुँवर साहब को पता ही नहीं चला कि भगवती मैनेजर साहब के साथ स्कूल में भरती हो आया है।

स्नान के उपरान्त प्रातः का अल्पाहार लिया गया। भगवती तो खा चुका था। अतः जब वह कुँवर साहब के सामने बैठा तो खा नहीं सका। कुँवर साहब ने पूछा, "खा नहीं रहे भगवती?"

"महाराज, मैं खा चुका हूँ।"

"कहाँ ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैनेजर साहब आये थे। उनका खयाल था कि आप इतनी सुबह तो जाग सकते नहीं। इस कारण वे मुझको स्कूल में भरती कराने ले गये थे। भरती करा, अपने घर ले गये और वहाँ दूध-मक्खन, रोटी खा आया हूँ।"

भगवती ने माँ के वहाँ होने की बात नहीं बताई। कुँवर साहब ने पूछ लिया, "किस समय लौटे हो वहाँ से?"

"मैं पौने नौ बजे यहाँ वापस आ गया था।"

"तो स्कूल खुला था?"

"दास बाबू के कहने से स्कूल के डीन घर से गिरजाघर के कार्यालय में चले आये थे और मेरा नाम दर्ज कर मेरा हस्ताक्षर करवा लिये हैं।"

"तो तुम भी गये!"

"कहाँ गया?"

"ब्राह्मण जन्म से पतन की ओर।"

"नहीं महाराज! ऐसा नहीं हो सकता। आप आँशीर्वाद दीजिये। मैं सनातन-धर्म पर बहुत विश्वास रखता हूँ और मैंने धर्म का बहुत अध्ययन किया हुआ है, मैं मूर्ख नहीं बनाया जा सकता।"

"मूर्ख नहीं, परन्तु प्रलोभन में तो आ सकते हो?"

"उसी को तो मूर्खता कहते हैं।"

"पर यदि हम उठकर चलने के लिये तैयार हो जाते तो फिर क्या होता?"

"मुझे पता था कि आप रात के ढाई बजे तक शतरंज खेलते रहे थे। इस कारण आप जाग कैसे सकते थे? मुझे विश्वास था कि आपके जागकर तैयार होने से पहले ही वापस आ जाऊँगा।"

इस समय घड़ी ने दस बजाये। भगवती घड़ी की ओर देखकर मुस्करा दिया। कुँवर साहब लज्जित हो चुप रहे।

बहुत जल्दी करने पर भी वे ग्यारह बजे के लगभग ही चल सके और अगले दिन मध्याह्नोत्तर दो बजे ये कलकत्ता में बाबू बेनी माधोसिंह के मकान के नीचे जा पहुँचे।

कुँवर साहब ने लखनऊ से चलने के पहले एक एक्सप्रेस तार भेज दिया था। अतः इनके लिये ग्रीन होटल में दो कमरे रिज़र्व करा रखे थे।

बाबू साहब घर से निकले और इनके साथ मोटर में बैठ ग्रीन होटल में जा पहुँचे। वहाँ इनको होटल में ठहरा दिया गया। बेनी माधोसिंह ने कुँवर साहब से कहा, "आप स्नानादि से अवकाश पा लीजिये और फिर मैं आपको ले चलूँगा और विस्तार से बात करेंगे।"

बाबू साहब चले गये। कुँवर साहब तो एक कमरे में ठहर गये, दूसरे कमरे में भगवती और दोनों नौकर ठहर गये। सबने स्नान किया और मध्याह्नोत्तर की चाय मँगवा ली। कुँवर साहब के कमरे में भगवती और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुँवर साहब चाय पी ही रहे थे कि सुशीला देवी के साथ बाबू साहब आ गये। इनके लिये भी चाय मँगवा ली गयी। ड्राईवर और मुरली अपने कमरे में चाय पी रहे थे।

सुशीला ने नमस्ते करने के उपरान्त कहा, "मैंने तो आपको लिखा था कि सुविधा देख यहाँ आ जाइये और लेन-देन की बात आपसे होगी, उनसे नहीं, जिनका मेरे साथ कुछ अधिक सम्बन्ध नहीं रहने वाला। परन्तु आपने तो यह कृपा की कि अविलम्ब ही यहाँ चले आये। मैं आपकी इस कृपा पर फूली नहीं समाती। मध्याह्न बारह बजे तार मिला था और उसके बाद मैं व्याकुलता से आपकी प्रतीक्षा कर रही थी।"

"मैं समझता हूँ कि पहले बाबू साहब बतायें कि इस विषय में इनका क्या विचार है?" कुँवर साहब ने असल बात आते हुए पूछ लिया।

बाबू साहब के लिये भी चाय आ गयी। सुशीला चाय बनाने लगी तो बाबू साहब ने कह दिया, "मेरे लिये चार-पाँच लाख रुपया कुछ मतलब नहीं रखता। मैं निश्चय से कह सकता हूँ कि स्वराज्य आने के बाद जमींदारियाँ नहीं रहेंगी। कदाचित् आपके पास निर्वाह के लिये भी कुछ न रहे। इस कारण मैं समझता हूँ कि इतना कुछ आप किसी स्थान पर जमा करा दें तो सुगमता से तीन हज़ार रुपया महीने की आय हो सकेगी। यदि यह करें तो आपको अपने भाई साहब से माँगने के लिये हाथ पसारने नहीं पड़ेंगे। वह भी कुछ दे सकेंगे अथवा नहीं, कहा नहीं जा सकता।

"फिर भी मैं आपको राय ही दे सकता हूँ। यह सब रुपया मैं आपके हाथ में दे दूँगा। आप यह किसी को भी दें, मुझे इससे क्या? मैंने यह राय बहुत विचारोपरान्त दी है। यह स्वाभाविक है कि मैं आपकी सुख-सुविधा के विषय में विचार करूँ।"

सुशीला ने कह दिया, "यह मुझे ज्ञात है कि आपके पिता तथा भाई साहब को धन की आवश्यकता नहीं है। सब ईश्वर की कृपा है। यह तो एक प्रथा बना गयी है कि लड़के के विवाह पर दहेज लिया जाये। परन्तु मैंने पिताजी से कहा है कि यह रुपया आपको मिल जाये और आप जिसको चाहें दें।

"पिताजी का हमारे भविष्य के विषय में चिन्ता करना स्वाभाविक है और फिर आपको राज्य से गुज़ारा ही मिलेगा न? यदि राज्य न रहा तो गुज़ारा कहाँ से मिलेगा?"

कुँवर साहब ने प्रश्न कर दिया, "तो आप महाराज की माँग को पूरा करने से इनकार नहीं कर रहे?"

"जी नहीं, परन्तु इस प्रकार विवाह की स्वीकृति में, शर्त लगाना तो एक प्रकार से एक्सट्रॉक्शन हो जाता है। यह उत्पीड़न मेरा नहीं, वरन् आपका और आपकी पत्नी का है।"

भगवती देख रही थी कि बाबू बनी माधोसिंह के कथन का प्रभाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुँवर साहब पर हो रहा है। कुँवर साहब गम्भीरतापूर्वक बाबू साहब के कथन पर विचार कर रहे थे। कुछ देर तक चुपचाप चाय पी जाती रही। एकाएक कुँवर साहब ने कहा, "इसका अभिप्राय यह होगा कि मैं पिताजी और भाई साहब से विद्रोह कर दूँ।"

"इसमें विद्रोह तो कुछ नहीं, यह तो उनके उत्पीड़न का विरोध है। आप तो पढ़े-लिखे व्यक्ति हैं। आपको विदित होना चाहिए कि पिता लड़की को कुछ देता है तो इसलिये नहीं कि उसकी लड़की अपने पति के घर में बोझ बनकर जा रही है और उस बोझा को हल्का करने के लिये पिता को धन देना ही चाहिए। यह तो सम्पूर्ण स्त्री-जाति का घोर अपमान हो जायेगा।

"मैं इसका अभिप्राय केवल यह समझता हूँ कि लड़की और उसके पति के सुख-सुविधा में सहायक होने के लिये पिता अपनी इच्छा से अपनी सामर्थ्यानुसार देता है।

"यदि आपको अपनी भविष्य की स्थिति सुरक्षित प्रतीत होती है तो आप यह धन, जो मैं दे रहा हूँ, बाँट दीजिये। अपने पिताजी को तथा अन्य सम्बन्धियों को दीजिये अथवा कहीं धर्म-कार्य में लगा दीजिये। मैं तो यह धन आपको दे रहा हूँ।"

कुँवर साहब ने कहा, "अच्छा, मैं तो अभी यहाँ आया ही हूँ, एक-दो दिन रहूँगा। तब तक कुछ निर्णय हो जायेगा।"

भगवती यह समझा कि वे सुशीला देवी से पृथक् में राय करना चाहते हैं। बाबू बेनी माधोसिंह ने भी यही समझा, अतः उन्होंने कुँवर साहब को रात उनके घर भोजन का निमंत्रण दे दिया।

: 5 :

बाबू साहब और उनकी लड़की गयी तो कुँवर साहब ने भगवती को सम्बोधन कर पूछ लिया, "क्या समझे हो भगवती?"

भगवती ने कहा, "मैं इस सब वार्तालाप का अर्थ यह समझा हूँ कि बाबू साहब व्यापारी होने से अपने नाक से कुछ दूर तक देखने का यत्न कर रहे हैं।"

"पर हम तो व्यापारी नहीं हैं?"

"तो आप अपनी नाक से दूर तक मत देखिये। उन्होंने आपको विवश भी नहीं किया कि आप भी चार-पाँच वर्ष भविष्य में देखें। आपको जो कुछ भी मिलेगा, चाहें तो बाँट दीजिये। फिर भी मैं आपसे एक बात पूछता हूँ। यदि कोई भविष्य के अन्धकार में कुछ दूर तक देखने का यत्न करता है तो आप उसे मना कैसे कर सकते हैं?"

"परन्तु क्या भविष्य इतना अन्धकारमय है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"समाचार-पत्रों में एक समाचार छपा था। उस लेख में लिखा था कि यदि पंडित जवाहरलाल भारत के राष्ट्रपति बने तो वे हिन्दुस्तान को रूस बना देंगे। रूस में लेनिन ने सबसे पहले भूमि पर अधिकार कर छोटे-छोटे किसानों में बाँट दिया था, फिर छोटे-छोटे किसानों को भी हटाकर सरकारी फार्म बना लिये थे।"

"परन्तु," छोटे कुँवर साहब ने कह दिया, "लेनिन ने व्यापार और उद्योग-धन्धों को भी तो सरकार के हाथ में दे दिया है।"

"जी, परन्तु जो बुद्धिशील व्यापारी थे, वे तो अपना धन बटोर कर दूसरे देशों में चले गये थे। किन्तु जो भूमिपति थे भूमि को नहीं ले जा सके।"

"तो हमको हिन्दुस्तान छोड़ना पड़ेगा?"

"जी नहीं, आप अपने अधिकारों के लिये लड़ भी सकते हैं परन्तु लड़ने के लिये भूमि से नकद धन अधिक सहायक होगा।"

कुँवर साहब इतनी लम्बी बात नहीं समझ सके। वह इसे छोड़कर कहने लगे, "सरकार से अधिक मुझे राजा भैया से भय है। वह चाहते हैं कि मेरा विवाह यहाँ न हो। मैंने पूछा, तो कहाँ हो? इस पर वे बोले, हो जायेगा। तुम कोई जाली सिक्का तो हो नहीं, जो बाज़ार में चल नहीं सकता?"

"मैंने कहा, जाली सिक्का तो हूँ, राजा का लड़का हूँ, परन्तु केवल गुज़ारेदार। आप मुझे क्या देंगे, बताइये? इस पर राजा भैया मौन हो गये। यदि वे कुछ कहते तो मैं उनको कहता, लिख कर दे दीजिये। वह यह समझ गये थे, इस कारण मौन हो गये।

"मैं अब विचार करता हूँ यदि यह बाबू साहब का दिया धन मैं अपने पास रख लूँ तो कैसा रहे?"

भगवती ने कहा, "महाराज छत्तीस हज़ार वार्षिक आय तो निश्चित ही एक छोटी-मोटी ज़मींदारी के बराबर हैं।"

"पर कैसे होगा यह? इस पाँच लाख में विवाह पर भी तो खर्च होगा ही।"

"एक तरीका है, जिससे यह हो सकता है। आप अब यहाँ आये तो हैं, आप यह प्रस्ताव कर दीजिये कि विवाह कल हो जाये और आपको सब-की-सब रकम का चैक मिल जाये। न बारात हो, न स्वागत और न खाने-पीने में ही खर्च हो।"

"और माँ को भी न बुलाऊँ विवाह पर?"

भगवती जानता था कि छोटे साहब माँ से बहुत स्नेह रखते हैं। अतः वह माँ के विरुद्ध विद्रोह करने के लिये नहीं कह सका। साथ ही वह यह भी जानता था कि माँ छोटे साहब के इस स्थान पर, विवाह के विरुद्ध भी नहीं। इस कारण भगवती के उर्वरा मस्तिष्क में इस आपत्ति का उत्तर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकल आया। उसने कह दिया, "पहले आप बाबू साहब से यह स्वीकार करवाइये, बाद में माता-पिता और राजा भैया को यहाँ बुलाने का प्रबन्ध कर लेंगे।"

विचार-से-विचार पैदा होते हैं। जैसे दीपक-से-दीपक जलता है।

अतः कुँवर साहब का मस्तिष्क भी कार्य करने लगा। उन्होंने पूछ लिया, "तो तुम रात भोजन करने वहाँ चलोगे?"

"जी नहीं, आपको मिले निमंत्रण में आपके सेवक को सम्मिलित नहीं किया गया है।"

कुँवर साहब भी यही चाहते थे। परन्तु बात इससे भिन्न हुई। रात आठ बजे जब कुँवर साहब बाबू साहब के घर जाने की तैयारी कर रहे थे तो बाबू साहब की गाड़ी में सुशीला देवी स्वयं आ गयी और कुँवर साहब को चलने के लिये कह कर बोली, "आपकी गाड़ी तो लम्बी यात्रा के उपरान्त आराम और सफाई माँगती होगी। इसलिये मैं पिताजी की गाड़ी लेकर आपको लेने आयी हूँ।"

"मैं तो टैक्सी लेकर वहाँ पहुँचने वाला था।"

"तो चलिये और पण्डित भैया को भी ले चलिये।"

"वहाँ इसकी कुछ आवश्यकता है?"

"ये मेरे भाई बने हुए हैं। अतः ये आपका वहाँ स्वागत और सेवा करेंगे।"

कुँवर साहब हँस पड़े। हँसते हुए बाले, "चलो साला शरीफ पण्डित भगवती चरण जी महाराज।"

भगवती और सुशीला भी हँस पड़े। भगवती देख रहा था कि सुशीला विशेष श्रृंगार करके आयी है।

मार्ग में ड्राईवर के समक्ष कुछ विशेष बातें नहीं हुईं। परन्तु घर पर पहुँच कर भगवती को पता चला कि सुशीला देवी की माताजी नहीं हैं। उनका देहान्त हो चुका है। सुशीला को कोई भाई भी नहीं और घर में सुशीला देवी का राज्य है। वह अब समझा कि सुशीला देवी किस कारण नौगवाँ में अकेली आयी थीं।

छोटे साहब, भगवती, बाबू साहब और सुशीला ने इकट्ठे भोजन किया और फिर बाबू साहब तथा कुँवर साहब पृथक् में बातें करने चले गये। सुशीला भगवती से बातें करती रही। भगवती ने अपनी योजना सुशीला को भी बतायी कि विवाह अब कलकत्ता में हो जाना चाहिए। तार द्वारा राजा बहादुर तथा उनके परिवार और कुछ अन्य लोगों को निमंत्रण भेज दिया जाये।

सुशीला इस योजना पर आश्चर्य-चकित हो भगवती का मुख देखने लगी। भगवती ने अपनी योजना में युक्ति दे दी। उसने कहा, "रानी बहन! विवाह तो होना ही चाहिए। राजा भैया एड़ी से चोटी तक जोर लगायेंगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि यह विवाह न हो। इस कारण उनके द्वारा बाधा पड़ने से पूर्व ही विवाह हो जाना ठीक रहेगा।"

भीतर लगभग यही योजना कुँवर साहब बाबू साहब को बता रहे थे। भीतर पन्द्रह मिनट में ही बात निश्चय हुई तो सुशीला को भीतर बुला लिया गया। सुशीला भीतर गयी तो बाबू साहब ने कुँवर साहब को कह दिया, "आप यह योजना लड़की को समझा दें। मैं आपके भगवती चरण से बात कर लेता हूँ। वह लड़का सदा युक्तियुक्त बात करता है।"

कुँवर साहब तो जानते थे कि यह उसकी ही तो योजना है। इस कारण कुँवर साहब ने बाबू साहब को भगवती से बात करने के लिये बाहर चले जाने दिया।

सुशीला और कुँवर साहब को बात समझते-समझाते अधिक देरी लगी। पौन घण्टा के उपरान्त दोनों बाहर निकले तो भगवती ने देखा कि कुँवर साहब बहुत प्रसन्न थे और सुशीला देवी का मुख लाल हो रहा था।

भगवती समझ रहा था कि सुशीला देवी वैसा ही उत्पीड़न प्रयोग करती रही हैं, जैसा राजा भैया उसकी माँ पर कर रहा था। यह तो उसकी मन की अवस्था थी जो वह उस उत्पीड़न से भाग कर लखनऊ चली गयी है। वह जानना चाहता था कि छोटे साहब पर इस उत्पीड़न की क्या प्रतिक्रिया होती है।

कुँवर साहब ने कमरे से बाहर आते ही कह दिया, "बाबू साहब! हम दोनों सहमत हो गये हैं। मैं अभी तार-घर जाकर एक एक्सप्रेस तार दे देता हूँ कि उनकी शर्त पूर्णरूप से स्वीकार है। विवाह रविवार को यहाँ होगा और पिताजी, माताजी तथा सब परिवार के लोग कुछ आवश्यक सम्बन्धियों और कर्मचारियों के साथ यहाँ चले आयें। वह तार द्वारा सूचित करें कि कितने लोग आ रहे हैं; जिससे उनके निवास का प्रबन्ध हो सके। जितने कम लोग आयेंगे, उतना ही अच्छा प्रबन्ध होगा।"

"तो ठीक है, चलिये मैं आपके साथ तार-घर और फिर आपको छोड़ने होटल चलता हूँ।" बाबू साहब उठ खड़े हुए।

तार-घर से तार दे दिया गया और फिर बाबू साहब अपनी ही गाड़ी में इनको होटल लेकर पहुँचे। होटल में यह निश्चय हो गया कि रविवार को वहाँ के आर्यसमाज मन्दिर में विवाह होगा और वहाँ पर कुँवर साहब को पाँच लाख रुपये का ड्राफ्ट दे दिया जायेगा। यदि राजा बहादुर इत्यादि आये तो कुँवर साहब उनको लखनऊ चल कर रुपया बाँटने की बात कह यहाँ से चल देंगे और यदि वे नहीं आये तो कुँवर साहब अकेले ही अपनी पत्नी के साथ विदा हो जायेंगे।

कुँवर साहब का कहना था कि वे बनारस में जाकर अपनी कोठी में ठहरेंगे। जब तक माँ आकर बहू को साथ नहीं ले जायेगी, वे नौगवाँ नहीं जायेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबू साहब का कहना था, "आपको हम रविवार साढ़े चार बजे एक चाय-पार्टी देंगे। उस चाय-पार्टी में कलकत्ता के मेरे परिचित भी आयेंगे और आपकी ओर के सब लोग भी होंगे। उसी सायंकाल हम आपको यहाँ से विदा कर देंगे। आप तथा लड़की के लिये पंजाब मेल से एक 'कूपा' रिजर्व कर दिया जायेगा।"

: 6 :

छोटे साहब ने राजा बहादुर के नाम नौगवाँ में तार दिया था। इस प्रकार था : "पिताजी, माताजी, भाभी, बुआ, मौसी तथा आवश्यक कर्मचारी सहित आगामी शनिवार यहाँ पहुँच जाइये। मेरा सुशीला देवी से विवाह रविवार प्रातःकाल होगा। रुपया मिल गया है। कुँवर विजय बहादुर सिंह।"

छोटे साहब लखनऊ से सोमवार को चल मंगल के दिन कलकत्ता पहुँचे थे। मंगल रात को ही यह तार भेजा गया और बुध के दिन दस बजे यह कोट में जो डाकखाना से तीन मील के अन्तर पर था, मिल गया। डाकिया तार लाया तो रामचन्द्र शुक्ल उसको लेकर भीतर राजा साहब से बोला, "महाराज, आपके नाम का तार है।"

"पढ़ो, क्या है?"

रामचन्द्र ने तार खोल कर पढ़ा और फिर उसका अर्थ सुना दिया। राजा बहादुर तो स्तब्ध बैठे रह गये। राजा साहब के दरबारी भी सुन कर समझ नहीं सके कि महाराज को बधाई दें अथवा नहीं। कानों-कान बातें हो रही थीं कि इतना अधिक दहेज माँगा गया है कि बाबू साहब लड़की को लेकर भाग गये हैं। अब इस तार से तो यह पता चला था कि ध न मिल गया है और विवाह निश्चित हो गया है। इससे बधाई देनी ही चाहिए, परन्तु राजा बहादुर को मौन और गम्भीर भाव में बैठे देख, वे लोग समझ नहीं सके कि अच्छा हुआ है अथवा बुरा।

एकाएक महाराज ने रामहर्ष को आवाज़ दी। वह आया तो उसको कहा, "राजा भैया को बुलाओ। हम भीतर की बैठक में जा रहे हैं।"

इसका अर्थ था कि प्रातःकाल का दरबार समाप्त। राजा साहब भीतर गये तो लोग कहने लगे थे कि यह विवाह नहीं होगा। राजा बहादुर कुछ अन्य शर्त लगाने वाले हैं जिससे विवाह न हो। सब अपने-अपने अनुमान लगा रहे थे। एक बात पर सब सहमत थे कि लड़की बिना पर्दे के यहाँ चली आयी थी। अतः अवश्य ही छिनार रही होगी। यही कारण हो सकता है कि विवाह पसन्द नहीं किया जा रहा। परन्तु सब विस्मय करते थे कि ऐसी लड़की को यहाँ से अपमानित कर निकाल क्यों नहीं दिया गया?

भीतर राजा बहादुर के सामने राजा भैया पहुँचे तो राजा बहादुर ने तार दिखा दिया। राजा भैया ने तार पढ़ा तो एकदम बोल उठे, "यह जाली तार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है।"

"क्या मतलब?"

"यह तार बाबूजी ने दिया है।"

"पर नाम छोटे साहब का लिखा है।"

"तार के नीचे कोई नाम लिखकर दे सकता। छोटे साहब तो दिल्ली गये थे, वे कलकत्ते कैसे पहुँचे गये।"

राजा बहादुर ने राजा भैया की माँ, मौसी और बुआ को भी बुला लिया। राजा साहब की पत्नी भी आ गयीं और उस तार के विषय में बहस होने लगी। घर-भर में केवल रानी माँ ही थी जिसको विश्वास था कि तार असली है और छोटे साहब ने भेजा है।

रानी माँ ने कहा, "यह राजा भैया ने ही बात करायी है। यदि यह न कहते कि यहाँ विवाह नहीं होगा, तो छोटे साहब ऐसा न करते।"

"पर माँ!" राजा भैया ने पूछ लिया, "क्या प्रमाण है कि यह तार छोटे साहब ने ही भेजा है?"

"इसलिये कि और किसी को भेजने में कोई रुचि नहीं हो सकती। बाबू साहब को इस प्रकार का तार देने से क्या लाभ है और फिर यह कहते हैं कि रुपया मिल गया है।"

"मुझे विश्वास नहीं आता कि छोटे साहब इतने नालायक हो गये हैं।"

"इसमें नालायकी क्या है? उसे विवाह करना है। भला यह नालायकी है? मैं तो प्रसन्न हूँ।"

"वह बिना बताये वहाँ गया ही क्यों?"

"उसने लड़की को देखा था। वह उसे पसन्द आयी होगी। तुमने कहा कि विवाह नहीं होगा तो उसने कह दिया, मैं स्वयं ही करता हूँ।"

राजा बहादुर हँस पड़े। हँसते हुए बोले,, "मैं समझता हूँ कि कोई यहाँ से जाना चाहिए और सारी बात जान कर वहाँ से तार दे।"

"तो मैं जाती हूँ।" रानी माँ ने कह दिया।

"मुझे संदेह है कि यह जो कुछ हुआ है, माँ की राय से हुआ है।" राजा भैया ने कहा।

राजा बहादुर ने कहा, "तब तो तुम्हारी माँ ने बहुत चतुराई की बात की है। रुपया भी मिल गया और छोटे साहब की रुचि की लड़की भी मिल गयी है।"

"मैं नहीं जा रहा।" राजा भैया ने कह दिया।

"मैं जा रही हूँ।" रानी माँ ने कह दिया।

राजा बहादुर ने शान्ति रखने के लिये कह दिया, "मैनेजर साहब कलकत्ता जायें और वे सब बात जाँच कर वहाँ से तार दे दें। तब हम सब चलेंगे।"

राजा भैया नहीं बोले। राजा बहादुर ने इस चुप्पी को स्वीकारोक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझ, चुटकी को आवाज़ दे बुलाया और कह दिया, "देखो, माधवसिंह से कहो, मोटर लेकर जाये और मैनेजर साहब को तुरंत बुला लाये। बहुत आवश्यक कार्य है।"

चुटकी गयी तो राजा भैया उठे और बैठकघर से निकल गये। उनके पीछे-पीछे कुँवर रानी भी चली गयी। राजा बहादुर की पत्नी ने रानी माँ से कह दिया, "देखिये जी! मैनेजर को भेजिये और मैं उनके साथ जाऊँगी, यदि उनकी पत्नी साथ जाये तो बहुत अच्छा है। आखिर उनको सपत्नीक ही विवाह पर हम ले जानेवाले हैं, तो वे अभी ले चलें तो ठीक रहेगा। वहाँ जाकर हम आपको विस्तार से लिखेंगे।"

"अच्छा देखो! वे आते हैं तो बात करता हूँ। वैसे मैं बताता हूँ कि यदि यह तार ठीक है तो मैं प्रसन्न हूँ। मैं तो तब ही जाऊँगा, जब राजा भैया और उसकी पत्नी जायेगी। तुम चली जाओ तो ठीक है।"

मैनेजर आया तो उसको तार दिखा कर उसकी राय पूछी गयी। मैनेजर ने एक क्षण तक विचार किया और फिर राजा साहब को बधाई दे दी, "महाराज! छोटे साहब ने यह प्रबन्ध इस प्रकार कर बहुत ही अक्लमन्दी का कार्य किया है। सबसे बड़ी बात उन्होंने यह की है कि बिना किसी को कष्ट दिये यह प्रबन्ध कर दिया है।"

"पर मैनेजर साहब! बड़े साहब कहते हैं कि यह तार झूठा है। इसलिये मेरा यह कहना है कि आपको तो शादी पर जाना ही है। आप आज यहाँ से सपत्नीक चले जायें। वहाँ जाते ही पूरी बात जाँच कर तार दे दें कि हम कितने लोग आयें।"

"परन्तु राजा भैया को इस तार पर विश्वास क्यों नहीं?"

"यह तो वे ही बता सकते हैं। मैं तो आपको इस विचार से भेज रहा हूँ कि आप हमारे लिये सुविधाजनक रहने का प्रबन्ध कर छोड़ें। कुँवर साहब की माता आपकी पत्नी के साथ जायेंगी और अपने परिवार की प्रथा के अनुसार रीति-रिवाज का प्रबन्ध कर रखेंगी।"

मैनेजर समझ गया कि राजा बहादुर विवाह के प्रबन्ध से प्रसन्न हैं। अतः उसने कहा, "इस समय ग्यारह बजे हैं। दो घण्टा तो तैयार होने में लगेंगे ही। लखनऊ से डाक पकड़ने को समय नहीं रहेगा। रेलगाड़ी से तो कल ही जाया जा सकेगा।

"हाँ, यदि आप अपनी बड़ी गाड़ी दे दें तो मैं एक बजे यहाँ से चलकर कल सायंकाल तक कलकत्ता पहुँच सकता हूँ। मेरी गाड़ी तो इतनी लम्बी यात्रा कर नहीं सकेगी।"

राजा बहादुर ने कह दिया, "बहुत अच्छा। आप तैयारी करिये। पौने एक बजे रानी माँ एक नौकरानी के साथ बड़ी गाड़ी में आपके बँगले पर पहुँचेंगी। आज मंगलवार है। बृहस्पतिवार को प्रातः हमें तार द्वारा सब वृत्तान्त मिल जाना चाहिए, जिससे शुक्रवार के दिन हम लखनऊ से चलकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शनिवार कलकत्ता पहुँच सकें।"

मैनेजर साहब उसी समय अपने बँगले को लौट गये। राजा बहादुर भीतर गये तो राजा भैया माँ से झगड़ा कर रहे थे। राजा भैया का कहना था, "माँ! यह विवाह रुकना चाहिए।"

"क्यों?"

"कुँवर रानी को बाबू साहब की लड़की पसन्द नहीं है।"

"पर विवाह उसका हो रहा है अथवा उसके देवर का?"

"परन्तु घर में सदा के लिए दुविधा ठीक नहीं होगी।"

"मैं कलकत्ता जा रही हूँ और आज ही वहाँ जाकर लिखूँगी कि विवाह होगा अथवा नहीं। अपनी बहू से पूछकर बताओ कि वह उसे क्यों पसन्द नहीं करती? फिर मैं देखूँगी कि उसमें वह दोष है भी अथवा नहीं।"

"वह कहती है कि लड़की छिनार है, जो पर-पुरुषों के साथ बैठकर बातें करती है, भोजन करती है और बिना पर्दा किये घूमती है।"

"देखो बेटा! ज़माना बदल रहा है। यह लड़की कॉलेज में पढ़ी है, पर्दा करती तो पढ़ कैसे सकती थी। यदि पढ़ी है तो वह छिनार कैसे हो गयी?"

इस समय राजा बहादुर आ गये और बोले, "देखो रानी! तुरन्त तैयार हो जाओ। एक बजे से पहले मैनेजर के बँगले पर पहुँचना है। वे अपनी बीवी के साथ चलने को तैयार रहेंगे। कौन नौकरानी साथ जायेगी?"

"मैं तैयार हूँ। मैंने आपकी सब बातें पर्दे के पीछे खड़े-खड़े सुन ली थीं।"

रानी माँ तो साढ़े बारह बजे ही गाड़ी ले, मैनेजर के बँगले पर पहुँच गयीं। मैनेजर साहब और उनकी पत्नी जल्दी-जल्दी खाना खा रहे थे। गाड़ी में रानी माँ पहुँची तो मैनेजर ने नौकरों को सामान रखने को कह दिया।

रात को ये मुगल सराय के पास डाक बँगले में ठहरे और प्रातः वहाँ से चलकर सायं चार बजे बाबू बेनी माधोसिंह के मकान के नीचे जा खड़े हुए।

भीतर सूचना गयी तो बाबू साहब भागे-भागे बाहर आये और हाथ जोड़कर समधिन को भीतर आने का निमंत्रण दे दिया। बाबू साहब ने कहा, "छोटे साहब यहीं पर हैं। आपको तो घर पर ही ठहरना चाहिए। हाँ, मैनेजर साहब के लिए ग्रीन होटल में ठहरने का प्रबन्ध है।" कुँवर साहब और भगवती दोनों वहाँ आये हुए थे और रानी माँ के आने की सूचना पर बाहर आ गये।

बाबू साहब भगवती को मैनेजर को होटल में ले जाने के लिए कह ही रहा था कि रानी माँ को कुँवर साहब भीतर ले गये। बाबू साहब भी मैनेजर साहब के साथ जाने को तैयार हो गये। रमणी दास रानी माँ को भीतर छोड़ने और सुशीला से मिलने भीतर गयी तो रानी माँ ने जाते ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह दिया, "कुँवर साहब के साथ भोजन करने के उपरान्त मैं होटल में जाऊँगी और वहाँ बताऊँगी कि राजा बहादुर को क्या सूचना भेजनी है।"

मैनेजर और रमणी लम्बी यात्रा से थके हुए थे। अतः रानी माँ की बात सुन, वे ग्रीन होटल चल पड़े। मार्ग में बाबू साहब ने विवाह का कार्यक्रम बताया तो मैनेजर साहब ने पूछ लिया, "यह एकदम कैसे हो गया?"

"भगवती चरण ही बतायेगा। कुँवर साहब की यह तजवीज़ थी। मैंने इसे स्वीकार कर लिया है।"

"क्यों पडित! यह क्या चमत्कार किया है?" मैनेजर साहब ने भगवती से पूछा।

"हुजूर, मैंने कुछ नहीं किया है। यह तो बाबू साहब के रूपया देने और रुपया बैंक में रखने के गुण बताने की प्रतिक्रिया है।"

: 7 :

मैनेजर साहब के लिए होटल में एक पृथक् कमरा ले दिया गया। भगवती उनको वहाँ ठहरा कर बाबू साहब को लेकर कुँवर साहब के कमरे में चला गया। वहाँ बैठाकर उसने कहा, "आप जाइये और कुछ ऐसा प्रबन्ध करिये कि रानी माँ नाराज़ न हो। वे नाराज़ हो गयीं तो कुँवर साहब बदल भी सकते हैं। अब तो विवाह हो ही जाना चाहिए।"

बाबू साहब जानते थे कि भगवती सुशीला और कुँवर साहब में बन चुके सम्बन्ध के विषय में जानता है और यही कारण है कि वह विवाह स्थगित करने के पक्ष में नहीं है। रानी माँ के कुँवर साहब पर प्रभाव की बात सुन, बाबू साहब भागे-भागे अपने घर गये।

इधर मैनेजर साहब और उनकी पत्नी ने गरम जल से स्नान किया और भोजन के लिए तैयार हो गये। दोनों भगवती को साथ लेकर होटल के खाने के कॉमन-रूम में चले गये। भगवती वेजिटेरियन खाना खाता था। जब उसने अपने लिए आर्डर किया तो मैनेजर हँस पड़ा।

"तो तुम समझते हो वेजिटेरियन भोजन में हिंसा नही होती?"

"जी, यह बात नहीं। हम, मेरा अभिप्राय है कि मैं और मेरी माँ, भोजन के गुण-दोषों के आधार पर इनको स्वीकार करते हैं। हिंसा-अहिंसा का प्रश्न दूसरे पर है।"

"सब्ज़ियाँ शरीर में वह ताकत पैदा नहीं कर सकतीं, जो माँस और अण्डे पैदा कर सकते हैं।"

भगवती ने मुस्कराकर कहा, "ठीक है, जब मुझे शरीर से बोझा उठना होगा अथवा सेना में भरती हो, तीस मील नित्य चलना होगा तो मैं इस ताकतवर भोजन के प्रयोग करने पर विचार कर लूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुम सेना में भरती नहीं हो रहे?" हरिमोहन ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

"किसी ने आपको मेरे भरती होने के विषय में बताया है?"

"हाँ। उस दिन राजा बहादुर कह रहे थे कि भ्रमण से लौटते ही भगवती का विवाह रामचन्द्र शुक्ल की लड़की से होगा।"

"विवाह करना आप सेना में भरती होना मानते हैं?"

"विवाहित जीवन में सैनिक-कार्य से कम शक्ति की आवश्यकता नहीं होती।"

भगवती मुस्कराता रहा। मैनेजर ने पुनः कहा, "विवाह के पहले ही उसके लिए तैयारी करनी चाहिए।"

भगवती ने कह दिया, "मेरा विवाह रामचन्द्र की लड़की से नहीं हो रहा। मैं समझता हूँ कि विवाह मेरी अँग्रेज़ी की शिक्षा के उपरान्त होगा। तब मैं विचार कर लूँगा।

"पर हुजूर! शरीर की शक्ति के अतिरिक्त भोजन में एक अन्य गुण भी होता है। यह मन की प्रवृत्ति पर प्रभाव डालता है। प्रवृत्ति को स्वभाव कहते हैं और ये तीन प्रकार के हैं सात्विक, राजसी और तामसी। आमिष भोजन राजसी और तामसी प्रभाव उत्पन्न करते हैं। मैं अपना जीवन सात्विक बनाना चाहता हूँ।"

"वह क्या होता है?"

"हमारी एक धर्म-पुस्तक में लिखा है-

शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम्।।

"इसका अर्थ इस प्रकार है कि ब्राह्मण का स्वभाव है शान्त रहना, इन्द्रियों को वश में रखना, शुद्ध-पवित्र रहना। आचार-विचार में सरलता और परमात्मा में विश्वास, ज्ञान-विज्ञान का स्वामी, बाह्मण के स्वाभाविक कर्म हैं। हुजूर, मैं तो ब्राह्मण बनकर रहना चाहता हूँ।"

खाना आया तो खाते हुए भगवती ने अपनी माँ के विषय में पूछ लिया, "माँ का कोई समाचार है?"

"हम वहाँ से सोमवार को चले आये थे। हमारी लड़की विमला तो एक दिन में ही उनसे हिल-मिल गयी थी। वे प्रसन्न प्रतीत होती थीं।"

भगवती को इस समाचार से सन्तोष अनुभव हुआ। रमणी ने कहा, "मैं समझती हूँ कि वे वापस नौंगवाँ नहीं जायेंगी।"

भगवती इस बात को जानता था। इस कारण उसने कह दिया, "इच्छा तो वहाँ जाने की मेरी भी नहीं होती। इसी कारण मैं भूमि का पट्टा लेने में रुचि नहीं रखता था, परन्तु माँ की इच्छा थी। इसका परिणाम यह होगा कि वर्ष में कम-से-कम दो बार तो वहाँ जाना ही पड़ेगा।"

"छोटे साहब को अँग्रेजी स्कूल में भरती हो जाने की बात बताई है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी, बता दी थी। वे इसे पसन्द नहीं करते। फिर भी मैं पढ़ने जा रहा हूँ। परन्तु हुजूर, एक बात मैं आपसे कहना चाहता था। आपने डीन साहब को मेरे वजीफे के विषय में कहा है। मैं समझता हूँ कि इसकी आवश्यकता नहीं। मेरे और माताजी के निर्वाह का प्रबन्ध है। अभी तो भूमि भी है। इसके अतिरिक्त भी नगर में रहते हुए मैं कुछ न कुछ कर ही लूँगा।"

"ठीक है, मैंने उसे यह भी कहा था कि जब तक इसके निर्वाह का प्रबन्ध कहीं अन्य स्थान पर नहीं हो जाता।"

ये लोग खाना समाप्त कर अपने कमरे में आये ही थे कि कुँवर साहब अपनी माताजी को लेकर वहाँ आ पहुँचे। मैनेजर तो तार देने के लिए तार-घर जाने के लिए तैयार बैठा ही था।

रानी माँ ने कहा, "देखिये मैनेजर साहब! राजा बहादुर को तार दे दीजिए। यहाँ सब ठीक है, परिवार के अतिरिक्त दस अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों को लेकर शनिवार सायं तक पहुँच जायें।"

मैनेजर बाबू साहब की गाड़ी में ही, जिसमें रानी माँ और कुँवर साहब आये थे, जाकर तार दे आये। बृहस्पतिवार का दिन था। विवाह की तैयारी बाबू साहब की ओर से बहुत जोर-शोर से हो रही थी।

बाबू साहब ने लगभग पाँच सौ आदमियों को चाय पर आमंत्रित किया था। यह आशीर्वाद-समारोह रविवार सायंकाल पाँच बजे से सात तक होने वाला था। रात आठ बजे की गाड़ी से कुँवर साहब सपत्नीक बनारस के लिए जाने वाले थे। छोटे साहब ने रानी माँ से कह दिया था कि अपने गाँव में एक बहुत बड़ा ब्रह्मभोज और दावत का प्रबन्ध होना चाहिए। और जिस दिन यह प्रबन्ध होगा, उस दिन वह सुशीला देवी के साथ वहाँ पहुँचेगा और उनका स्वागत बाजे-गाजे के साथ होना चाहिए।

शुक्रवार मध्याह्न के समय मैनेजर साहब को एक तार मिला। यह नौगवाँ से आया था। तार में लिखा था "तुरंत चले आओ। एक घटना हो गयी है और राजा भैया पकड़े गये हैं। राजा बहादुर।"

इस तार को प्राप्त कर बहुत देर तक मैनेजर विचार करता रहा। बाद में उसने छोटे कुँवर साहब के कमरे में जाकर तार दिया। भगवती भी वहाँ बैठा था।

जब छोटे साहब ने तार पढ़ा तो तार भगवती को सुना दिया। भगवती भी एक क्षण तक कुछ नहीं समझ सका। मैनेजर ने कह दिया, "मैं समझता हूँ। कि यह तार राजा भैया ने स्वयं दिया है। विवाह रोकने का यह एक प्रयास है।"

"पर हम कुछ नहीं कह सकते, यह सत्य भी हो सकता है।"

"तो क्या करना चाहिए?"

"तुरन्त रानी माँ जी के पास चलना चाहिए और उनसे राय करनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए।"

तीनों उठे और बाबू बेनी माधोसिंह के घर को चल पड़े। रानी माँ वहाँ ठहरी थी। इस समय तो रमणी दास भी वहाँ गयी हुई थीं। वे वहाँ पहुँचे और रानी माँ को पृथक् में बुलाकर परिस्थिति से अवगत कराया। रानी माँ के मुख से एकदम निकल गया, "यह धोखा है। राजा भैया इस प्रकार की बातें करने का अभ्यस्त है।"

भगवती ने कह दिया, "रानी माँ का कहना ठीक ही प्रतीत होता है। फिर भी मेरी राय यह है कि किसी-न-किसी को जाना चाहिए।"

"परन्तु विवाह नहीं रुक सकता।" रानी माँ का यह आदेश था।

मैनेजर साहब ने कह दिया, "आप कहें तो मैं अभी मोटर-गाड़ी से चला जाता हूँ।"

"और भगवती आपके साथ जायेगा। यह कोट के भीतर जाकर और राजा बहादुर से मिलकर असल बात जान सकेगा। रमणी जी मेरे साथ रहेंगी।

"हम तो रविवार को विवाह कर के ही यहाँ से चलेंगे। आप तार से यहाँ सूचित करियेगा। भगवती विस्तार से पत्र के द्वारा बनारस सूचना भेजेगा।"

मैनेजर साहब ने रमणी से पूछ लिया, "तुम क्या चाहती हो?"

"मेरी तो अभी कल की यात्रा की थकावट भी नहीं निकली।"

"तो ठीक है, तुम विवाह के उपरान्त रेल से चली आना।"

आधे घण्टे में हरिमोहन दास और भगवती चरण राजा बहादुर की बड़ी ब्यूक गाड़ी में आसनसोल की ओर चल पड़े। मार्ग में मैनेजर ने पूछ लिया, "भगवती! क्या समझते हो, क्या सत्य ही कोई मुसीबत नौगवाँ में खड़ी हो गयी है?"

"इसमें अचम्भा करने की कोई बात नहीं है। राजा भैया का व्यवहार सदा इतना अयुक्तिसंगत रहता है कि कुछ भी हो सकता है।

"देखिये साहब, मैं जानता हूँ कि कुँवर रानी अपने घर पर कोई सन्तान न होने के कारण पूर्ण संसार से द्वेष करने लगी हैं। उनको न तो कोई अन्य स्त्री भाती है, न ही किसी के घर में बाल-बच्चे। वे सदा राजा भैया से रूठी रहती हैं और राजा भैया उनमें किसी प्रकार का आकर्षण और सुख न पाकर इधर-उधर हाथ-पाँव मारते हैं। उन्होंने कुछ खराबी कर दी होगी, जिससे पकड़े गये हों तो विस्मय करने की बात नहीं हो सकती।"

अब तो मैनेजर को भी किसी प्रकार की दुर्घटना की बात समझ में आने लगी थी। वे रमणी से राजा भैया का राधा से व्यवहार सुन चुके थे। अब वह समझने लगे थे कि सम्भव है, किसी अन्य स्त्री पर हाथ उठाया हो और कोई हत्या होने पर वे पकड़ लिये गये हों।

शुक्रवार तीसरे प्रहर के कलकत्ता से चले हुए ये शनिवार सायंकाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौगवाँ कोट में पहुँच गये। भीतर सूचना पहुँचते ही इनको बुला लिया गया। राजा बहादुर कोट की भीतरी बैठक में बैठे थे। जब ये सलाम कर सामने खड़े हुए तो राजा बहादुर ने इनको बैठने को संकेत कर पूर्ण वृत्तान्त बता दिया।

: 8 :

जिस दिन रानी नौगवाँ से गयीं, राजा भैया बहुत ही उदास और निराश अवस्था में बैठे थे। चुटकी ने उनके सामने उपस्थित हो कहा, "बेनी लखनऊ से लौट आया है।"

राजा भैया उत्तेजित हो उठ खड़े हुए और अपने बाहर के कमरे में चले आये। बेनी वहाँ खड़ा था।

"क्या खबर लाये हो?"

"महाराज, भगवती की माँ मैनेजर साहब की लखनऊ की कोठी में है। मैं उससे मिलकर आया हूँ।"

"तुमने वहाँ पहुँचने का क्या कारण बताया था?"

"मैंने कहा, मैं भगवती का पता करने आया हूँ।' वह बोली, 'वह तो यहाँ है नहीं।' मेरे पूछने पर उसने कहा कि 'वह नहीं जानती कि भगवती कहाँ गया है। वह तो उससे मिला तक नहीं।' पर महाराज, कोठी से पता चला है कि भगवती मैनेजर के साथ उनकी कोठी पर गया था।"

"ये सब महा धूर्त हैं।"

राजा भैया अब क्रोध से उबल पड़े। "अच्छा, तुम जाओ। शंकर को बुलाओ।"

बेनी गया और दस मिनट में शंकर को बुला लाया। शंकर जाति का कहार और व्यवसाय से डाकू था। वह सलाम कर सामने खड़ा हुआ तो राजा भैया ने कह दिया, "राधा को जानते हो?"

"जी जानता हूँ।"

"उसके घर और खेतों को फूँक देना चाहिए।"

"कब?"

"जितनी जल्दी हो सके।"

"तो महाराज, यह कल राजा हो जायेगा।"

"ठीक है, तुम सब उसके खेतों के समीप इकट्ठे हो जाना। हम उसकी होली होते देखने आयेंगे।"

"और तेल तथा इनाम?"

"ठहरो।" राजा भैया उठकर भीतर गये। थोड़ी ही देर बाद लौट आये और पाँच सौ रुपया शंकर को देते हुए बोले, "काम होने पर और इनाम मिलेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह मंगलवार था, बुधवार की रात को राधा के मकान को फूँक डाला गया। तारा, बीरू और उसके कुछ सम्बन्धियों ने विरोध किया। घमासान लड़ाई हुई। बीरू का लड़का सोहनू मारा गया और बीरू बुरी तरह घायल हो अचेत पड़ा रह गया। डाकुओं ने घर को तो फूँक डाला, परन्तु खेतों को आग नहीं लग सकी। पुलिस पहुँच गयी थी। डाकुओं के इस शौर्य के कार्य में राजा भैया स्वयं और उनका ड्राईवर सुमेरसिंह भी सम्मिलित थे। सुमेर तो लौट नहीं सका और राजा भैया लँगड़ाते हुए वहाँ पहुँचे, जहाँ एक फर्लांग के उत्तर पर मोटर खड़ी की हुई थी। शंकर ने पूछ लिया, "आपको चोट आयी है क्या?"

"चोट तो नहीं आयी। मेरा पाँव फिसला तो मैं गिरा। परन्तु उसी समय वहाँ किसी 'लाश' ने जाँघ पर इतने जोर से काटा कि वहाँ का माँस ही उखाड़कर ले गया है।"

"परन्तु सुमेर दिखाई नहीं देता।"

इस पर राजा भैया को चिन्ता होने लगी, परन्तु घाव की पीड़ा के कारण उन्होंने गाड़ी में बैठते हुए कहा, "सुमेर आये तो उसे कोट में पहुँचा देना।" वह स्वयं गाड़ी चलाकर ले गये।

डाका डालने वालों में भी कई घायल हुए थे। उनको उनके घरों में पहुँचा दिया गया। राजा भैया भी लँगड़ाते हुए कोट के अन्तःपुर में चले गये।

बीरू को कोट के ही किसी भले आदमी ने सचेत कर दिया था कि पण्डिताइन के घर पर डाका पड़ने वाला है। वह ठीक दिन और समय नहीं बता सका। बीरू ने थाने में रिपोर्ट लिखाई तो उससे यह पूछा गया, "कब तक डाके की आशा करते हो?"

यह बीरू बता नहीं सका, इस कारण पुलिस ने रिपोर्ट तो लिख लीं, परन्तु कुछ कार्यवाही नहीं हो सकी। पुलिस वालों ने यह विचार किया था कि अगले दिन वे जाँच-पड़ताल करेंगे। परन्तु डाका तो उसी रात पड़ गया। जब लड़ाई का हो-हल्ला हुआ और और मकान धू-धू कर जलने लगा तो पुलिस घटना-स्थल पर पहुँची। पुलिस को देखते ही डाकू भागे और बच जाने में सफल हो गये।

घटना-स्थल पर तीन लाशें मिलीं। इनमें एक लाश बीरू के पुत्र सोहनू की थी। एक लाश सुमेरसिंह की थी। बीरू भी लाश-समान ही पड़ा था। बीरू और सुमेर तो होश में आ गये और एक मरा हुआ पहचाना गया। यह बीरू का लड़का सोहनू था। बीरू और सुमेरसिंह को हस्पताल पहुँचाया गया। मरहम-पट्टी के बाद बीरू को छोड़ दिया गया और सुमेर को ज़िला हवालात में भेज दिया गया।

बीरू के कहने पर कोट के मुलाजिमों की जाँच-पड़ताल आरम्भ कर दी गई। जो-जो [illegible] मिला, पकड़ लिया गया। डाके की रिपोर्ट ज़िला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थाने में भेजी गई तो वहाँ से एक मैजिस्ट्रेट तहकीकात के लिये आ गया। साथ ही वहाँ सुमेरसिंह को धमकाया गया तो वह सरकारी गवाह बन गया। उसने बता दिया कि योजना राजा भैया की बनायी हुई थी और वे स्वयं भी डाके में सम्मिलित थे।

बृहस्पतिवार प्रातःकाल कलकत्ता से तार आया तो राजा बहादुर ने राजा भैया को तार के विषय में राय करने के लिये बुलाया। परन्तु समाचार आया कि वे बीमार हैं और कमरे से बाहर नहीं आ सकते। राजा बहादुर लड़के के कमरे में चले गये।

"क्यों साहब! क्या बात है?" राजा बहादुर ने कमरे में प्रवेश करते हुए पूछा। उनकी पत्नी जाँघ पर घी और हल्दी की पट्टी कर रही थी।

राजा भैया ने कहा, "कुत्ते ने काट खाया है।"

"पलंग पर पड़े-पड़े? रात तो तुम ठीक थे?" राजा बहादुर ने पूछा।

"सुबह जरा घूमने गया था।"

"किस वक्त?"

राजा भैया ने उत्तर नहीं दिया। कुँवर रानी चुपचाप छोटा-सा घूँघट निकाले पलंग के पास खड़ी थी। राजा साहब ने कहा, "तुम्हारी माँ का तार आया है। लिखा है, सब ठीक है। परिवार के सब लोग दस अन्य लोगों के साथ शनिवार सायंकाल तक पहुँच जाओ।"

"मैं नहीं जा सकूँगा।"

"तो और कौन जायेगा?"

"सायंकाल तक विचार करेंगे। जाना हुआ तो यहाँ से लखनऊ चलकर गाड़ी पकड़ लेंगे।"

"नौगवाँ से डाक्टर बुला लो, कहीं कुत्ता हलकाहा न हो।"

"हलकाहा नहीं था।"

राजा बहादुर जाते-जाते कुँवर रानी को कह गये, "कलकत्ता चलने की तैयारी ठीक रखो।"

परन्तु बाहर स्थिति द्रुत-गति से बदल रही थी। जब कोट के कर्मचारियों में से घायल पकड़े जाने लगे तो कोट में घबराहट फैलने लगी। बीरू के बयान थे कि उसने किसी की जाँघ पर बहुत जोर से काटा है। उसकी खोज होने लगी। शंकर भाग कर कोट के अन्तःपुर में छुप गया। कुँवर साहब ने उसको वचन दिया कि रात के समय उसे लखनऊ पहुँचा देंगे। ग्यारह बजे के लगभग जिला थाने का मैजिस्ट्रेट आया और सुमेरसिंह के बयानों पर राजा भैया के वारन्ट जारी हो गये।

राजा भैया को विवश किया गया कि बाहर निकलें। जब वे लँगड़ाते हुए बाहर निकले तो बीरू के बयानों का समर्थन पा, उनको पकड़कर ज़िला जेल भेज दिया गया।

इस पर राजा बहादुर ने कलकत्ता में मैनेजर को तार दिया। यह तार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगले दिन ग्यारह बजे तक पहुँचा।

मैनेजर साहब शनिवार सायं छः बजे तक पहुँचे और सीधे कोट में गए। भगवती और हरिमोहन दोंनो अन्तपुर की बैठक में राजा बहादुर के सामने पहुँचे तो राजा बहादुर ने बताया, "परसों राधा के घर डाका पड़ा था। उसके सम्बन्ध में यहाँ पकड़-धकड़ हुई है। लगभग बीस आदमी पकड़े गये हैं और उनमें बड़े साहब भी हैं।"

जब यह बात भगवती और मैनेजर ने सुनी तो तुरन्त उनकी समझ में आ गया कि डाका राजा भैया ने डलवाया है और पुलिस को संदेह हो गया है। अतः राजा भैया पकड़े गये हैं।

"तो बड़े साहब इस वक्त कहाँ हैं?"

"सुना है जिला जेल में है।"

"महाराज! मैं अभी पुलिस से सम्पर्क बनाता हूँ और पता करता हूँ।"

"इसीलिये तो आपको बुलाया है।"

डाके के समाचार से भगवती का मुख विवर्ण हो गया था। वह समझ गया कि माँ कितनी बची है, इस दैत्य-स्वभाव के व्यक्ति से। मैनेजर चुप था और जाने के लिए छुट्टी माँगने लगा।

राजा बहादुर ने पूछ लिया, "भगवती! कलकत्ता कैसे पहुँच गये थे?"

"महाराज!" भगवती ने भर्राई हुई आवाज़ में कहा, "मुझे स्वयं मालूम नहीं। हम लखनऊ से चले तो मार्ग में जाने-पहचाने स्थान आने लगे तो पता चला कि हम कलकत्ता जा रहे हैं। कुँवर साहब से पूछा तो वे हँस पड़े और हम कलकत्ता पहुँचे गये।"

"अब वे कहाँ हैं?"

"इस समय तो वे वहाँ ग्रीन होटल में ठहरे हुए हैं। रानी माँ बाबू साहब के घर पर हैं। विवाह के उपरान्त बनारस पहुँच जायेंगे।"

"और उनकी माँ?"

"वे भी साथ आयेंगी।"

राजा बहादुर ने दीर्घ निःश्वास छोड़ा और चुप रहे। ये दोनों कोट से बाहर निकले तो हरिमोहन ने पूछा, "भगवती, अब कहाँ जाओगे?"

"बीरू से मिलना चाहिए। उससे सब बात पता चल जायेगी।"

दोनों भगवती के खेतों के किनारे बीरू औरं तारा के झोंपड़ों पर जा पहुँचे। मोटर की आवाज़ सुन, बीरू बाहर आया तो भगवती को देख संताप कर सामने खड़ा हो गया।

"क्या हुआ, बीरू?" भगवती ने पूछा।

बीरू ने पूर्ण घटना की कथा सुनाई और फिर बता दिया, "राजा भैया का ड्राईवर सुमेरसिंह बच गया है और राजा भैया के खिलाफ डाका और हत्या तथा आग लगाने का मुकदमा तैयार किया जा रहा है।"

"बहुत बुरा हुआ है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, हुजूर! सौ बार चोर की तो एक बार साधु की भी आती है। राजा भैया बहुत संगीन मुजरिम हैं।"

भगवती ने कहा, "मैं कल तक माँ से मिलने जाऊँगा। उन्हें सब बात बताऊँगा। सोहनू के लिये बहुत शोक है। तुम बताओ, किस प्रकार की सहायता चाहते हो?"

"राजा बहादुर ने रामचन्द्र शुक्ल को भेजा था। वह कह गया है कि मैं अपने बयान उसके वकील के कहने के अनुसार दूँ तो एक सौ रुपया देंगे।"

"और तुमने क्या कहा है।?"

"मैंने कहा है खून का बदला खून से ही मिल सकता है।"

उत्तर मैनेजर साहब ने दिया दिया, "शाबाश, बीरू! डटे रहो। अच्छा मैं तुमसे कल मिलूँगा।"

मैनेजर ने पुनः बँगले की तरफ चलते हुए कहा, "मैं समझता हूँ, राजा भैया को फँसा देना चाहिए।"

"यह हमारे बस की बात नहीं है।"

"तुम देखते जाओ, यह दुष्ट अब फँस गया है। इसे अपने किये का दण्ड मिलना चाहिए।"

भगवती दया और सहानुभूति का व्यवहार रखता था।

फिर भी वह चुप रहा। बँगले पर पहुँच, उसने कह दिया, "यदि आप स्वीकृति दें तो मैं लखनऊ चला जाऊँ। माँ से मिलना भी चाहता हूँ और यहाँ की घटना का वृतान्त बताना चाहता हुँ।"

"अच्छी बात है, तुम रात की गाड़ी से चले जाओ। मैं तो प्रातःकाल पुलिस से मिलकर इस मुकदमे की स्थिति जानना चाहता हूँ।"

"मैं समझता हूँ कि इस व्यक्ति को छुड़ाने का यत्न करिये।"

"तनिक अपनी माँ से भी पता करना, वह क्या कहती है?"

: 9 :

दिन के आठ बजे भगवती लखनऊ में मिस्टर हरिमोहन दास के बँगले पर जा पहुँचा तो द्वार भिंचा हुआ था। भगवती ने द्वार को धीरे-से धकेला तो वह खुल गया। भीतर माँ एक चौकी पर बैठी अति मीठे स्वर से रामचरित मानस पढ़ रही थी। इसके सामने यूरोपियन पहरावा पहने बारह वर्ष की एक लड़की बैठी, उसे सुन रही थी। माँ पढ़ रही थी-

सठ सुधरहि सत्संगति पाई। पारस परस कुधात सुहाई।।
विधिबस सुजन कुसंगत परहीं। जनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं।।

इस समय भगवती भीतर आया तो माँ और लड़की दोनों भगवती को देखने लगीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँ ने सामने बैठी रमणी की लड़की विमला को कह दिया, "आज बस।"

विमला के मुख से निराशा टपकने लगी। उसने हाथ जोड़ भगवती को नमस्कार की तो भगवती ने भी नमस्ते कह दी और पूछ लिया, "तो तुमको इसके सुनने में रस आता है?"

"जी, बहुत। विशेष रूप में मौसी की व्याख्याओं में। अच्छा मौसी, अब खाने के वक्त मिलूँगी।"

विमला गयी तो भगवती माँ के सामने चटाई पर, जहाँ पहले विमला बैठी थी, बैठ गया। उसने नौगवाँ की पूर्ण घटना, जैसी बीरू से सुनी थी, कह दी।

"बहुत अफसोस है।" माँ के मुख से निकला।

"माँ, मैनेजर साहब और मैं कल सायंकाल ही कलकत्ता से लौटे थे। इस घटना को सुन मैंने उचित समझा कि तुमको बता दूँ।"

"जी तो कहता है कि सोहनू के निधन पर शोक प्रकट करने वहाँ जाऊँ। परन्तु अब तो वहाँ जाने से चित्त डरता है।"

"माँ, तुम मत जाओ। मैं दिन-भर यहाँ आराम करूँगा और कल प्रातःकाल सब पता करने जाऊँगा। राजा बहादुर राजा भैया के विपरीत गवाहों को रिश्वत देकर तोड़ रहे हैं।"

"हाँ, वे तो करेंगे ही।"

"बीरू को भी सौ रुपया देने को कहा था।"

"ठीक है, उनको करना ही चाहिए।"

"तो माँ, राजा भैया को छुड़ाने का यत्न करना चाहिए?"

"तुम क्या यत्न करोगे?"

"साक्षियों को समझा-बुझाकर बयान बदलवाने का यत्न किया जा सकता है।"

"तुम क्यों करोगे?"

"मैं राजा बहादुर का अभी नौकर हूँ।"

"तो नौकरी छोड़ दो। झूठ बोलने और बुलाने के लिए नौकरी नहीं की है।"

"वैसे तो मैनेजर भी कहता था कि राजा भैया को पूरा दण्ड मिलना चाहिए।"

"वे जानें और उनका धर्म-ईमान जाने। क्यों तुम ब्रह्मण होकर झूठ बोलोगे और बुलाओगे?"

भगवती भौचक्का हो मुख देखता रह गया। फिर कुछ विचारकर वह बोला, "माँ, धर्म-दया का क्या हुआ?"

"दया उन पर की जाती है जो अपने किये पर पश्चात्ताप करें और उसका प्रायश्चित्त करना चाहें। अभी तक तो उसने यह किया नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सामने मौत खड़ी देख तो पश्चात्ताप और प्रायश्चित कर ही देगा।"

"तो तब उसको छुड़ाने का यत्न कर देना।"

"जेल में कैसे प्रायश्चित करेगा, माँ?"

"प्रायश्चित तो वह जेल में भी कर सकता है। हाँ, पश्चात्ताप उसे गवर्नर अथवा वाइसराय के सामने करना चाहिए। तब वे दया कर देंगे। हमें न्याय के मार्ग को अवरुद्ध करने का अधिकार नहीं। चाहिए तो यह कि जिसकी इसने सबसे अधिक हानि की है, वह उसको दण्ड दिलवाने का यत्न करे।"

भगवती चुप रहा। वह उठा और स्नान करने चला गया। स्नानोपरान्त उसने अपना पूजा-पाठ किया और फिर अल्पाहार के लिए तैयार हो गया। राधा ने कहा, "खाना तो मैं अपने हाथ से बना लेती हूँ, परन्तु खाना बच्चों के साथ मेज़ पर बैठकर होता है। एक बात माननी पड़ेगी कि रमणी दास ने अपने किचन में बहुत सफाई रखी है। रसोइये भी बहुत साफ-सुथरे रहते हैं।"

"इस समय क्या खाती हो?"

"मैंने उड़द के पिसान को भून कर लड्डू बनाये हुए हैं। साथ में दूध लेती हूँ। मध्याह्न के समय दाल-भात बनाकर अपने कमरे में खाती हूँ। सायंकाल बच्चों के साथ दालमोठ लेती हूँ। वह मैं बाज़ार से ले आयी हूँ। रात को पूरी बना लेती हूँ।"

"यहाँ तो सब वस्तुएँ पैसे से मिलती हैं। बहुत खर्चा बैठता होगा।"

"अब जो भी बैठे? नौगवाँ के बनिये के पास हमारा दस सहस्र से ऊपर जमा है। तुम्हारे पढ़ने तक काफी है।"

"पर माँ! मैं यहाँ कुछ काम भी करूँगा।"

"मैं समझती हूँ कि तुमको शीघ्रातिशीघ्र पढ़ना चाहिए। मैं तो अपने जीवन का अन्त करने वाली थी। केवल तुम्हारे पढ़-लिखकर योग्य होने तक यहाँ पड़ी हूँ।"

"पर माँ, क्या यहाँ से जाना आवश्यक है?"

"यह ईश्वर के अधीन है। क्या जाने तुम्हारी बहू ऐसी आ जाये, जिसके मोह में फँस, यहाँ बैठी रह जाऊँ।"

भगवती भौचक्का हो मुख देखता रह गया। घड़ी में नौ बजे तो माँ अपने लड्डूओं का मटका ले खाने के कमरे में जा पहुँची। वहाँ दास बाबू का नौ वर्ष का लड़का चितरंजन खड़ा मिल गया। वह बहन के आने की प्रतीक्षा कर रहा था।

चितरंजन ने भगवती को देखा तो बोला, "गुड मार्निंग ब्रदर।"

"नमस्ते! भैया चितरंजन, मैं अभी अँग्रेजी नहीं जानता। इसलिए मैं हिन्दी में नमस्कार कर रहा हूँ।"

"पापा कह रहे थे कि तुम अँग्रेजी पढ़ोगे। कब पढ़ोगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राधा के मटके में से एक-एक लड्डू विमला और चितरंजन ने ले लिया। चार लड्डू राधा ने और चार उसने भगवती को दे दिये। दूध बैरा ने गिलासों में डाल सामने रख दिया। बच्चे साथ में एक-एक अंडा और पोरेज तथा टोस्ट-मक्खन लेते थे।

नाश्ता समाप्त होते ही बच्चे जाने की तैयारी करने लगे। वे कोठी के बाहर खड़े हो जाते थे। पौने दस बजे बस आती थी और उनको स्कूल ले जाती थी। दोनों एक स्कूल में पढ़ते थे।

भगवती खाने के उपरान्त सोया तो मध्याह्न के भोजन के समय भी नहीं उठ सका। वह सीधा सायं की चाय पीने गया। सायंकाल का खाना बनाते समय विमला माँ का हाथ बटाने लगी थी। उसने पूछ लिया, "विमला! तुम यह क्यों करती हो?"

"हम रात को पूरी और प्रातः को मौसी से लड्डू जो लेते हैं।"

"तो तुम उसका मूल्य चुकाती हो?"

"नहीं जी! मूल्य नहीं, यह तो अपने हिस्से का बनाती हूँ।"

भगवती ने विस्मय में पूछ लिया, "अपना घी, पिसान भी बीच में डालती हो?"

"वाह! भैया, मौसी से पूछो। हम से घी-शक्कर का दाम लेंगी? भाई साहब, ये मौसी हैं और मैं इनकी लड़की हूँ।"

राधा और विमला हँसने लगीं। भगवती समझ गया कि लड़की रमणी की तरह ही सुन्दर और समझदार है।

अगले दिन भगवती रेल के स्टेशन को जाने लगा तो माँ ने उसे आदेश के रूप में कह दिया, "राजा बहादुर की नौकरी छोड़ दो।"

"माँ, छोड़ दूँगा।"

भगवती मध्याह्न के पौने एक बजे नौगवाँ जा पहुँचा। स्टेशन से वह सीधा मैनेजर साहब की कोठी को गया। मैनेजर साहब वहाँ नहीं थे।

भगवती ने कुछ आराम किया और फिर बाज़ार में जा पूरी बनवा लीं। पूरी ले बँगले में आकर बरामदे में बैठ वह खाने ही लगा था कि मैनेजर साहब आ पहुँचे। इस समय तक दो बज गये थे।

"यह पूरी कहाँ बनाई हैं?"

"बाज़ार से बनवाई हैं।"

"और बावर्ची से क्यों नहीं कहा?"

"वे पूछते तो ज़रूर कह देता।" दोनों हँस पड़े। मैनेजर ने बावर्ची को बुलाया, "नन्दू, ओ नन्दू?"

बावर्ची आया तो मैनेजर ने पूछा, "पंडित जी को खाने के लिए क्यों नहीं पूछा?"

"मैं डर रहा था कि खायेंगे या नहीं।"

"अरे मूर्ख! कलकत्ता के बाबू साहब को साथ से तुम्हारा बना खाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाते रहे हैं या नहीं?"

"उस समय की बात दूसरी थी।"

भगवती हँसते हुए बोला, "यह ठीक कहता है, हुजूर! उस समय मैं नौकरी में था। और नौकर के कर्मों का फल उसके मालिक को मिलता है।"

"और अब तुम नौकर नहीं रहे?"

"मैं आज राजा बहादुर को अपना त्याग-पत्र देने जा रहा हूँ।"

"किसलिए?"

"माँ की आज्ञा है।"

"ठीक है, तुमको तो अब लखनऊ चलकर रहना है। फिर भी मैं चाहता हूँ कि कुँवर साहब के मुकदमे तक हमको यहाँ रहना चाहिए।"

"इसी के लिए तो माँ तुरन्त नौकरी छोड़ने के लिए कह रही है। उसका कहना है कि नौकर रहते हुए राजा बहादुर कहेंगे कि गवाहों को समझा-बुझाकर राजा भैया को बचाया जाय। यदि मैं साक्षियों को झूठ बोलने को कहूँगा तो ब्रह्मण-जन्म को हानि पहुँचाऊँगा। और यदि नहीं कहूँगा तो मालिक का हुक्म न मानकर हराम की कमाई खाऊँगा। इस कारण मुझे नौकरी छोड़ देनी चाहिए।"

"और साक्षियों को खूब भड़काना चाहिए।"

"नहीं, वे यह भी नहीं चाहतीं। उनका कहना है कि ईश्वरीय न्याय को अपना कार्य करने दूँ।"

"पर जानते हो, इन दो दिनों में मैंने क्या किया है? मैंने रुपये को पानी की भाँति बहाकर राजा भैया को ज़मानत पर छुड़ा दिया है।"

"माँ का कहना है कि आप जानें और आपका धर्म-ईमान जाने।"

हरिमोहन हँस पड़ा। हँस कर बोला, "मेरा धर्म-ईमान तो कहता है कि ईश्वरीय न्याय में सहायक होना चाहिए।"

"परन्तु उनको जमानत पर छुड़वाना कैसे ईश्वरीय न्याय में सहायक हो सकता है?"

"मेरे ईश्वर ने मुझे यही बताया है। परमात्मा इस व्यक्ति को प्राणदण्ड नहीं दिलवाना चाहता। प्राणदण्ड तो दूसरों के लिए भय का कारण हो सकता है, परन्तु अपराधी प्राण-दण्ड एक क्षण में ही काट देता है। मैं इनको आजन्म कैद का दण्ड दिलवाना चाहता हूँ।

"इसके लिए इनको बाहर लाना आवश्यक है और इनसे रुपया व्यय करवाना ठीक है।"

: 10 :

भगवती भोजन कर मैनेजर साहब के साथ ही मोटर में बैठ, कोट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को चल पड़ा। वहाँ वह मुर्दनी छायी हुई नहीं थी, जो दो दिन पहले थी। राजा बहादुर के कर्मचारी यह समझ रहे थे कि धन एक बहुत बड़ी शक्ति है। इसके बल-बूते पर मनुष्य परमात्मा को भी अँगूठा दिखा सकता है। उन सबको विदित था कि राजा भैया महान् अपराधी हैं। वह यह भी जानते थे कि डाका क्यों डलवाया गया। अब राधा की कहानी कोट में विख्यात हो चुकी थी। विशेष रूप में उन दो रातों की करतूत, जब भगवती स्टेशन पर गया हुआ था और जब छोटे साहब राधा से मिलने गये थे। राधा के मैनेजर के साथ लखनऊ भाग जाने को भी कई रंग दिये जा रहे थे।

भगवती द्वार पर पहुँचा और भीतर अपनी इत्तला कराई तो भीतर आने की स्वीकृति में देरी होने लगी। इस समय पंडित रामचन्द्र शुक्ल बाहर आ गया। वह अपने घर को जा रहा था। इनको वहाँ खड़ा देख वह विस्मित रह गया। मैनेजर ने जिलानगर से राजा भैया को ज़मींदारी की मोटर गाड़ी में कोट को भेज दिया था और स्वयं अपनी कोठी में चला गया था। भगवती जब पूरी खा रहा था तो दास बाबू ने अपने लिए चाय-टोस्ट इत्यादि बनवा लिए थे। उसने मध्याह्न का खाना नहीं खाया था। दोनों खा-पीकर ही कोट आये थे। वहाँ भीतर बुलाये जाने में देरी होती देख विस्मय में खड़े थे कि रामचन्द्र उनको वहाँ देख, उनके सामने खड़ा हो गया।

मैनेजर साहब ने पूछ लिया, "राजा बहादुर क्या आज दरबार नहीं कर रहे?"

"नहीं, भीतर के बैठक-घर में राजा भैया से बातें कर रहे हैं।"

"पर भगवती पण्डित, तुम यहाँ किसलिए आये हो?" रामचन्द्र ने उससे पूछा।

"तो मेरा यहाँ आना मना हो गया है?"

"तुमको जान प्यारी है तो भीतर मत जाओ।"

यह सुन मैनेजर को क्रोध आ गया। वह भगवती से बोला, "चलो चलें।" दोनों मैदान में खड़ी गाड़ी की तरफ चले तो रामहर्ष भीतर से आया और भागता हुआ मैनेजर साहब के समीप पहुँच कर बोला, "राजा बहादुर बुला रहे हैं।"

मैनेजर साहब ने कुछ विचार किया और भगवती से कहा, "तुम बाहर सतर्क हो कर ठहरो। मैं अभी आता हूँ।"

मैनेजर ने अपने कोट की भीतरी जेब से पिस्तौल निकाल, उसका खटका खोल बाहर की जेब में रखा, और भीतर कोट में चला गया। भगवती चिन्ता-ग्रस्त पुनः कोट द्वार पर आ खड़ा हुआ। रामचन्द्र शुक्ल अभी वहीं पर खड़ा था। उसने भगवती से पूछ लिया, "तुम्हारी माता जी कहाँ हैं?"

"लखनऊ में हैं, मैं उनसे ही मिलने गया था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैनेजर साहब की कोठी में हैं?"

"जी।"

"बस यही तो खराबी की जड़ हुई है।"

"क्या खराबी है इसमें?"

"राजा भैया का कहना है कि यह ईसाई का बच्चा तुम्हारी माँ को भगाकर ले गया है।"

"इसलिए उसका मकान फूँक देना चाहिए था, यही कहते हैं न?"

"वह उनकी प्रेमिका थी।"

"तो मैनेजर को मार डालना चाहिए था, न कि अपनी प्रेमिका को। उनके सामान को फूँकना चाहिए था न कि अपने एक गरीब वफादार नौकर के सामान को?"

"देखो भगवती, तुम भीतर मत जाना। अब तुम्हारा यहाँ कुछ काम नहीं।"

"पण्डित जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।"

"मैं एक दिन तुम्हारी माँ से मिलने आऊँगा।"

"कुछ काम है?"

"सरस्वती के विषय में बात करनी है।" सरस्वती पण्डित रामचन्द्र की लड़की थी और उसी के साथ भगवती के विवाह की चर्चा हो रही थी।

"पण्डित जी! अभी मेरा विवाह नहीं होगा।"

"कौन कहता है?"

"छोटे साहब ने कहा है कि पच्चीस वर्ष की आयु से पहले विवाह नहीं होना चाहिए।"

"तो तुम भी आर्यसमाजी हो गये हो?"

"जी।"

अभी दोनों बातें ही कर रहे थे कि मैनेजर साहब बाहर चले आये। वे कुछ परेशानी अनुभव कर रहे थे। भगवती प्रश्न-भरी दृष्टि से उनकी ओर देखने लगा। एकाएक हरिमोहन दास बोला, "भगवती, चलो! राजा बहादुर तुमको भीतर बुला रहे हैं, परन्तु मेरा विचार है कि हमको लौट चलना चाहिए।"

दोनों कोट द्वार से मैदान में खड़ी मोटर की तरफ चल पड़े। वे अभी आधा मार्ग ही गये थे कि कोट के द्वार पर किसी के हल्ला करने का शब्द हुआ। भगवती और मैनेजर घूम कर देखने लगे कि क्या हुआ है। राजा भैया द्वार पर खड़े वहाँ चौकीदार और अन्य कर्मचारियों को कह रहे थे, "पकड़ो!! जाने न पाये।"

मैनेजर और भगवती मोटर की ओर भागे और लपक कर मोटर में चढ़ गये। मैनेजर ने ड्राईवर को कह दिया, "भगाओ, भगाओ!"

मोटर अभी स्टार्ट ही हो रही थी कि एक चौकीदार की लाठी मोटर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाड़ी पर पड़ी। गाड़ी का ब्रिंड-स्क्रीन टूट कर चूर-चूर हो गया। मैनेजर ने जेब से पिस्तौल निकाल हवा में फायर कर दिया था। इससे लठैत आक्रमण करने वाले मोटर से दूर हुए तो ड्राईवर ने मोटर भगा दी।

पिस्तौल चलने का शब्द भीतर राजा बहादुर ने भी सुना और वे भागे-भागे कोट द्वार पर आये। उनको भय था कि कहीं मैनेजर ने राजा भैया पर गोली न चला दी हो।

भीतर बात इतनी दूर तक नहीं पहुँची थी, जितनी बाहर कोट द्वार पर पहुँची थी। जब मैनेजर साहब कोट की भीतरी बैठक में पहुँचे थे, राजा बहादुर और राजा भैया ही वहाँ बैठे थे।

मैनेजर साहब ने भीतर पहुँचते ही कहा, "राजा भैया! मुबारिक हो। अभी तो आप ज़मानत पर छूटे हैं और अब मुकदमा उठवाने का यत्न तो लखनऊ में होगा।"

छूटते ही राजा भैया ने पूछ लिया, "इसके लिये कितना रुपया व्यय किया है?"

"मैं खजानची से बीस हज़ार ले गया था। उसमें से कुछ ही सौ मेरे पास बचे हैं।"

"और इसमें से कितना अपनी जेब में रखा है?"

इस प्रश्न का अर्थ समझने में कुछ देरी लगी। इसे समझते ही मैनेजर साहब ने हँसते हुए कह दिया, "महाराज! सारा-का-सारा ही मेरी जेब में है। परिणाम यह है कि आप जेल से बाहर खुली हवा में खड़े हैं।"

"बहुत बेईमान हो तुम!"

"जी!" मैनेजर ने बात बदलने के लिये राजा बहादुर की ओर देख-कर कह दिया, "महाराज! पिछले सप्ताह की भाग-दौड़ से मैं बहुत थक गया हूँ। अब इजाज़त चाहता हूँ। पूरे चौबीस घण्टे आराम करूँगा, उसके बाद इस रुपये का हिसाब श्रीमान् की सेवा में उपस्थित कर दूँगा।"

इतना कह मैनेजर ने सलाम की और चलने लगा तो राजा भैया ने पूछ लिया, "भगवती की इत्तला भी तो आपकी इत्तला के साथ आयी थी?"

"जी, वह बाहर खड़ा है।"

"उसको भीतर भेज दो।"

मैनेजर इसको उत्तर नहीं देना चाहता था और बैठक से निकलने लगा तो उसने राजा बहादुर की आवाज़ सुनी, "भगवती को भेजने की आवश्यकता नहीं। हम भी बहुत थक गये हैं और आराम कर रहे हैं।"

मैनेजर ने वहाँ ठहरना उचित नहीं समझा और बाहर को चल दिया। राजा भैया ने राजा बहादुर से कहा, "आपने भगवती को आने से रोक क्यों दिया है?"

"अभी जेल से छूट कर आये हो, ज़रा आराम करो।"

"मैं भगवती को कोठे में तब तक रखना चाहता हूँ, जब तक उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँ यहाँ नहीं आ जाती।"

राजा बहादुर ने कहा, "अभी एक झगड़े से तो जान बचाओ। फिर दूसरा आरम्भ कर देना।"

परन्तु राजा भैया ने राजा बहादुर की बात अनसुनी कर दी और वह मैनेजर के साथ कोट द्वार की ओर चल पड़ा।

बाहर द्वार पर उक्त घटना घट गयी।

राजा भैया ने तो भगवती को पकड़ने के लिये कहा था, परन्तु चौकीदारों ने दोनों को पकड़ने का आदेश समझा था और दोनों को मोटर पर सवार होते देख, मोटर पर लाठी चला दी थी। इस पर मैनजर ने गोली चला कर मोटर का मार्ग खुलवाया, मोटर भगाकर नौगवाँ में आ गये। मैनेजर ने वहाँ थाने में रिपोर्ट लिखवाई और उसमें यह लिखवा दिया कि राजा भैया के कहने पर चौकीदारों ने लाठियों से आक्रमण किया और उसकी मोटर का ब्रिंडस्क्रीन तोड़ डाला। हवा में फायर कर मार्ग बना वह सीधा यहाँ चला आया है।"

रिपोर्ट लिखवा, मैनेजर और भगवती कोठी में पहुँचे। मैनेजर ने गाँव से मूलसिंह और अपने पेशकार को बुलाकर अपने आफिस का चार्ज मूलसिंह को दे दिया और रजिस्टरों में हस्ताक्षर करवा लिये। तत्पश्चात् उसने अपने कपड़ों को सूटकेस में रखवाया और भगवती के साथ पाँच बजे की गाड़ी से लखनऊ को चल पड़ा।

मोटर का ब्रिंड-स्क्रीन टूटने के कारण उससे लम्बी यात्रा करनी असम्भव थी। ड्राईवर को कह दिया कि अगले दिन वह गाड़ी को आहिस्ता-आहिस्ता चलाता हुआ ले आये। उसने बावर्ची और बैरा को कह दिया, "सब सामान रेलगाड़ी से लेकर लखनऊ चले जाओ।"

रेलगाड़ी में बैठ, निश्चिन्त हो मैनेजर साहब बोले, "मैंने भूल की जो इस पागल शख्स को जेल से बाहर लाने में भाग-दौड़ की। अब मुझे उलटे पाँव अपनी भाग-दौड़ करनी पड़ेगी।"

"आप भी यहाँ की नौकरी छोड़ दीजिये।"

"वह मैं तुमसे पहले करने वाला हूँ।"

"मेरा मतलब है इस भाग-दौड़ को इधर अथवा उधर, दोनों तरफ बन्द कर दें।"

"तो मैं ब्राह्मण बन जाऊँ?"

भगवती अपना कथन अयुक्तिसंगत मानता था। परन्तु स्वभाववश उसने कह दिया, "राजा भैया को ईश्वर पर छोड़ दीजिये।"

"नहीं भगवती, इसने मेरी हत्या करने की कोशिश की है।"

"मैं समझता हूँ यह मेरे लिये था।"

"दोष अपने पर लेना भी क्या ब्राह्मण का स्वभाव है?"

भगवती हँस पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 11 :

कुँवर विजय बहादुरसिंह का विवाह सम्पन्न हुआ और उसी दिन बाबू साहब द्वारा दी गयी चाय-पार्टी के बाद पति-पत्नी, दोनों पंजाब मेल से चल पड़े। रानी माँ और रमणी दास भी साथ थीं। नौकर और रानी माँ की नौकरानी मोटर से आये।

ये लोग रविवार दस बजे के लगभग बनारस पहुँचे। वहाँ मिस्टर दास का एक्सप्रेस तार आया पड़ा था कि राधा का मकान फूँक दिया गया। डाके में एक आदमी मारा गया और राजा भैया डाका और कत्ल के आरोप में पकड़े गये हैं।

इस समाचार से तो रानी माँ घबरा उठी। उसकी घबराहट तो इस कारण थी कि वह राजा बहादुर की जान भी खतरे में समझती थी। बनारस की कोठी के कर्मचारी तो बाज़ार से उनके लिये पूरी इत्यादि लेने चले गये और छोटे साहब तथा रानी माँ विचार करने लगे कि क्या करना चाहिए।

छोटे साहब तो यह कह रहे थे कि, "भगवती के पत्र की प्रतीक्षा करनी चाहिए, अन्यथा वहाँ जाना ठीक नहीं।"

रमणी ने कहा, "साहब वहाँ पहुँच गये हैं और इनका रसूख इतना है कि कुँवर साहब कल तक छूट जायेंगे।"

रानी माँ राजा बहादुर के दुःख की चिन्ता कर रही थी। सुशीला ने कह दिया, "यह सब झगड़ा हमारे विवाह में रुकावट डालने के लिये किया गया प्रतीत होता है। यद्यपि इसकी प्रतिक्रिया राजा भैया के विपरीत ही हुई है, परन्तु मैं वहाँ नहीं जाऊँगी। जब तक राजा भैया का दिमाग ठीक नहीं हो जाता।"

बहुत विचार-विमर्श के उपरान्त यह निश्चय हुआ कि मिसेज दास और रानी माँ उसी दिन मोटर से नौगवाँ चली जायें और छोटे साहब और बहू की चरण-वन्दना राजा बहादुर को दें। रानी माँ वहाँ जाकर लिखें कि क्या स्थिति है। तब वे वहाँ आने का निश्चय करेंगे।

उसी दिन अर्थात् सोमवार के दिन मध्याह्न का भोजन कर, बारह बजे के लगभग रानी माँ और रमणी देवी मोटर से नौगवाँ को चल पड़ीं। ये लोग कोट में उस समय पहुँचीं, जब मैनेजर और भगवती लखनऊ के लिये रवाना हो चुके थे और राजा भैया को राजा बहादुर शान्त कर भीतर ले जा चुके थे। रमणी और रानी माँ मोटर से उतरीं और कोट में पहुँचीं। अन्तःपुर में पहुँचते ही उनको समाचार मिला कि राजा भैया छूट आये हैं। मैनेजर साहब ने उनको छुड़वाया है।

रानी माँ ने नौकरानी के हाथ अपने पहुँचने का समाचार बाहर की बैठक में भेज दिया। वहाँ राजा बहादुर अभी भी राजा भैया को समझा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे थे कि इस नये झगड़े के करने की उपेक्षा पहले झगड़े से बचने का यत्न करना चाहिए।

इस समय समाचार मिला कि रानी माँ आ गयी हैं और भीतर अन्तःपुर में गयी हैं।

"साथ कौन है?" राजा बहादुर ने पूछ लिया। उनका अभिप्राय था कि छोटे साहब और नव-वधू भी आयी है अथवा नहीं। चौकीदार ने बताया, "केवल मैनेजर साहब की पत्नी हैं।"

"ओह!" राजा बहादुर के मुख से निकल गया। यह 'ओह' सन्तोष का सूचक था। वे प्रसन्न थे कि नव-वधू अभी नहीं आयी।

राजा बहादुर और राजा भैया भीतर रानी माँ के कमरे में जा पहुँचे। रानी माँ ने पति के चरण-स्पर्श किये और राजा भैया की पीठ पर हाथ फेरा। प्यार देकर दोनों को बैठा दिया। इस समय कुँवर रानी भी आ गयीं और सास के चरण-स्पर्श कर उनकी बगल में बैठ गयीं। रमणी रानी माँ के पीछे बैठी थी।

राजा बहादुर ने पूछ लिया, "कहाँ से आ रही हो?"

"बनारस में छोटे साहब और उनकी बहू को छोड़ आई हूँ। मध्याह्न मैनेजर साहब का तार मिला था। उसके उपरान्त वर-वधू के वहाँ रहने का ठीक प्रबन्ध कर, यहाँ चली आयी हूँ।"

"मिसेज़ दास को तो बँगले पर जाना होगा? जल-पान करा दो और भेज दो।" राजा भैया ने कहा।

राजा बहादुर मैनेजर साहब से हुई घटना की बात बताना चाहते थे, जिससे रमणी दास जाकर अपने पति को बता सके कि झगड़ा भगवती के कारण हुआ है, उनके प्रति कोई द्वेष नहीं है। परन्तु वे नहीं जानते थे कि बिना घटना की भूमिका बताये कैसे अगली बात समझा सकेंगे। आखिर उन्होंने कहा, "आप मैनेजर साहब को बता देना कि हम कल प्रातः काल उनसे मिलेंगे और फिर सब बात समझा देंगे।"

इस समय रमणी के लिये मिठाई और दूध आ गया। रमणी ने मध्याह्न के खाने के उपरान्त जल तक नहीं पिया था। अतः वह खाने लगी। पन्द्रह-बीस मिनट इसमें भी लग गये। रानी माँ और राजा बहादुर दूसरे कमरे में चले गये।

रमणी ने जल-पान किया और जाने के लिये उठ खड़ी हुई। इस समय तक रानी माँ ने राजा बहादुर से कलकत्ता का वृतान्त संक्षेप से बता दिया था। नौकरानी ने आकर बताया, "मैनेजराइन जा रही हैं।"

रानी माँ उठकर बाहर आ उसको विदा करती हुई बोलीं, "आपको विवाह के उपलक्ष में कुछ दे नहीं सकी।"

रमणी ने बात बीच में ही काटकर कह दिया, "सुशीला देवी ने एक सोने का हो लड़ का लॉकेट और साहब के लिए ... पाँच सौ रुपया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दिया है।"

"सत्य? उसने बताया नहीं।"

"मुझे विदाई मिल गयी है।"

रमणी मोटर में बैठ बँगले पर पहुँची तो दास बाबू तथा भगवती जा चुके थे। मूलसिंह स्टेशन से मैनेजर साहब को विदा कर आया तो उनकी पत्नी को खड़े देख, आगे बढ़ सलाम कर बोला, "साहब तो अभी-अभी रेलगाड़ी से लखनऊ के लिये चले गये हैं। वे अपने नौकरों को आज्ञा दे गये हैं कि सब सामान बाँधकर लखनऊ चले आयें।"

"क्यों?"

"ऐसा प्रतीत होता हैं कि वे नौकरी छोड़ गये हैं। मुझे यहाँ का चार्ज दे गये हैं।"

रमणी को राजा बहादुर के कथन का अर्थ समझ में आने लगा था। उसने कह दिया, "मैं भी शीघ्र चली जाऊँगी।"

एकाएक उसको भगवती का विचार आया। राजा बहादुर ने उसके विषय में भी कुछ कहा था। उसने पूछ लिया, "भगवती उनके साथ था क्या?"

"जी, वह भी उनके साथ ही लखनऊ गया है।"

रमणी ने बावर्ची को रात का खाना तैयार करने के लिये कह, स्वयं दो-तीन घण्टे सो जाने का निश्चय कर लिया, परन्तु पलंग पर लेटने पर भी नींद नहीं आयी।

रात की गाड़ी से रमणी भी लखनऊ के लिये चल पड़ी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

रानी माँ और रमणी दास जब नौगवाँ के लिए विदा हो गये और जब पति-पत्नी को एकान्त मिला, तो कुँवर साहब ने सुशीला से कह दिया, "माँ कह रही थी कि मैनेजर की पत्नी को सन्देह है कि हमारा सम्बन्ध नौगवाँ में ही बन गया था।"

सुशीला ने कहा, "माँ जी ने मुझसे भी यही बात पूछी थी। विवाह के उपरान्त, कलकत्ता में ही, जब मैं चाय-पार्टी के लिये कपड़े पहन रही थी, माँ जी ने मुझसे कहा था, अब तो तुम्हारा विवाह हो गया है। इस कारण जो कुछ अनियमित था, नियमित हो गया है। सच बताओ, तुमने छोटे साहब से नौगवाँ में सम्बन्ध बना लिया था।'

"मैंने मुस्कराते हुए कहा था, माँ जी! अब तो आप माँ बन गयी हैं। आपसे कोई बात छुपाऊँगी तो पाप हो जायेगा। इसलिये सत्य ही कहती हूँ कि हाँ भी और न भी। इस हाँ और न का अर्थ परस्पर आलिंगन करने तथा एक ही पलंग पर लेटना और मुख इत्यादि चूमना वहाँ तक ही। और यदि इसका अर्थ इससे अधिक अर्थात् सहवास से लें तो न।,

"ऐसा प्रतीत होता है कि माँ जी को मेरे उत्तर से सन्तोष नहीं हुआ, जो उन्होंने आपसे भी यही प्रश्न कर दिया।"

"मैंने भी इसी प्रकार की बात कही है। वह कहने लगीं, 'अब मैं समझ गयी हूँ कि क्यों तुमने विवाह के लिये इतनी हलबली मचाई है।'

"उनको कहना था, 'यह लड़की अति चतुर मालूम होती है और यह तुमको अपने मोहजाल में फँसाकर तुमसे कुछ भी करा सकती है। इसको औरतों द्वारा पतियों का उत्पीड़न कहा जाता है।'

"मैंने कह दिया था, 'माँ! तुम चिन्ता न करो। यह बिलकुल गऊ की भाँति विनीत और निरीह बनी रहेगी।'

"माँ बोली, यह तो ठीक है, परन्तु तुम बैल की भाँति बुद्धि-विहीन न बने रहना, यही कह रही हूँ।"

सुशीला ने प्रेम-भरी दृष्टि से देखते हुए हुआ, "माँ जी ने ठीक ही कहा है। अभी तक जो हुआ सो हुआ। आगे से न तो मैं गाय का और न ही आप बैल का अभिनय करें। आइये, हम मनुष्यों की भाँति रहें।"

"उससे क्या अन्तर पड़ जायेगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह आप पशुओं के जीवन और मनुष्यों के जीवन का अध्ययन कर समझ सकते हैं। मैं तो इतना ही बताती हूँ कि पशु एक ही बार मिलते हैं तो उनके बच्चे बनने लगते हैं और मनुष्य में तो ऐसा होता देखा नहीं जाता। और फिर पेट में बच्चा हो जाने पर भी वे परस्पर मिलते रहते हैं।"

"इससे तो गाय और बैल बनना ही ठीक रहेगा।"

दोनों हँसने लगे। मंगल के दिन भगवती का पत्र आया। पत्र लखनऊ से रविवार को लिखा गया था : "मैनेजर साहब ने आपको तार द्वारा असल बात की सूचना दे दी होगी, उस घटना की व्याख्या लिखकर स्याही और कागज़ खराब नहीं करना चाहता।

"मैंने मन में यह निश्चय कर लिया है कि अब राजा बहादुर की सेवा नहीं करूँगा। माँ मैनेजर साहब की लखनऊ की कोठी में रह रही हैं। मैं इस समय उनके पास कमरे में बैठा लिख रहा हूँ। मैं अब लखनऊ में रहते हुए अंग्रेजी पढ़ूँगा और यदि यहाँ कुछ घण्टे करने को कुछ काम मिल गया, तो वह भी करूँगा।

"मैं नौगवाँ जा रहा हूँ। वहाँ राजा बहादुर की सेवा में अपना त्याग-पत्र उपस्थित कर, शीघ्रातिशीघ्र लौट आऊँगा। रानी बहन को मेरी नमस्ते कहियेगा। कभी लखनऊ आयेंगे तो आपके दर्शन करने का यत्न करूँगा।

"यद्यपि नौगवाँ की सेवा छोड़ रहा हूँ, फिर भी कभी आपको तथा बहन जी को मेरी सेवा की आवश्यकता पड़ेगी तो यथासम्भव करने का यत्न करूँगा।"

इसके उपरान्त एक पत्र बुधवार को मिला। उसमें भगवती ने लिखा "मैं नौगवाँ गया था। कोट में राजा बहादुर की सेवा में उपस्थित होने के लिये सूचना भेजी थी। कितनी ही देर तक प्रतीक्षा करता रहा। भीतर बुलाया नहीं गया। बाद में राजा भैया जो जमानत पर छूट गए हैं, यह कहते हुए आए, 'पकड़ो-पकड़ो। भाग न जाय।'

"मैनेजर साहब ने हवा में पिस्तौल का फायर कर आक्रमण करने वालों को भगाया। फिर भी उन्होंने मैनेजर साहब की मोटर के शीशे फोड़ दिये। मैंने अब राजा बाहदुर को लिखकर, नौकरी छोड़ने का विचार, बता दिया है।

"अभी तक मैनेजर साहब की कोठी में ठहरा हूँ। और भविष्य में कहाँ रहना है, एक-दो दिन में निश्चय कर लूँगा।"

इस पत्र के मिलने पर सुशीला ने कहा, "हम लखनऊ चल कर नहीं रह सकते क्या?"

"अब हम कहीं भी चल कर रह सकते हैं। मैं चाहता था कि माँ का पत्र आ जाता तो पता चल जाता कि भैया से कुछ आशा रखनी है अथवा नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सुशीला! मैंने बैंक में अपना खाता खोल, उसमें साढ़े चार लाख का ड्राफ्ट जमा करा दिया है। उस रुपये में से मैंने अभी एक पाई नहीं निकाला। अभी तक खर्चा अपनी जेब से कर रहा हूँ।

"ड्राफ्ट की रकम के अतिरिक्त पिताजी ने पचास हज़ार नकद दिया है। वह बैंक में जमा नहीं करा सकते। कारण यह कि वह रकम हिसाब-खाते से बाहर की है। उसको भी अभी छूने की आवश्यकता नहीं पड़ी ।

"मैंने माँ से कहा है कि यदि मुझे तीन लाख के मूल्य से अधिक की जमींदारी दी जाती है तो मैं वह सब-कुछ जो पिताजी ने आपके पिताजी से माँगा था, देने को तैयार हूँ। अन्यथा मैं अपने को राजा भैया की दया पर छोड़ने का विचार नहीं रखता। माँ इस विषय में लिखने वाली थीं। वे यहाँ के पते पर ही लिखेंगी।"

"देखिये जी," सुशीला ने कहा, "मुझे पक्का विश्वास है कि राजा भैया स्वयं न तो कुछ देंगे और न ही वे राजा बहादुर को कुछ देने देंगे। फिर भी उनकी परीक्षा की जा सकती है। हमें माताजी को कुछ समय देना चाहिए। वर्तमान पारिवारिक स्थिति में कुछ निर्णय तो हो नहीं सकेगा। परन्तु हम चिरकाल तक रुपये को चालू खाते में रख नहीं सकते। इसको कहीं लगाना पड़ेगा। जिससे मूल को खर्च किये बिना मज़े में जीवन निर्वाह कर सकें।

"इसके लिये हमें लखनऊ चलना चाहिए और वहाँ ही माताजी के पत्र की प्रतीक्षा कर यंहाँ से चल दें।"

इस प्रकार बात निश्चय हो गयी। शनिवार को कुँवर साहब पत्नी सहित लखनऊ कोठी में जा टिके।

सुशीला ने वहाँ पहुँचते ही कोठी के नवीनीकरण की योजना बना डाली। ठेकेदार को बुलाकर खर्चे का अनुमान लगवा लिया। कोठी का फाटक बड़ा करने की भी योजना थी। फाटक के साथ नौकरों के रहने के लिये कमरे बनवाने थे। टट्टी-गुसलखाना नये ढंग के बनवाने थे। कोठी में कुआँ तो था। उसमें पम्प लगवा कर कोठी की छत पर टंकी लगवा कर कोठी-भर में नल लगवाने थे। सब फ़र्श मार्बल चिप्स के बनवाने थे। सबका खर्चा बीस हज़ार रुपया कूता गया। अब सुशीला ने कहा, "आप राजा साहब को लिख दीजिये कि इतना रुपया इस कोठी को रहने योग्य बनने में खर्च होगा। वह रुपया ज़मींदारी से मिलना चाहिए।"

अभी ये योजनाएँ बन ही रही थीं कि माताजी की एक लम्बी चिट्ठी लिखी मिली। चिट्ठी में कुँवर साहब के पुनः पकड़े जाने की सूचना थी।

रानी माँ ने लिखा था, "मैं और रमणी यहाँ सोमवार सायंकाल पहुँचे थे। हमारे पहुँचने से पहले ही मैनेजर साहब से और भगवती से झगड़ा हो चुका था। बड़े साहब भगवती को पकड़ कर कोठ में कैद कर रखना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहते थे, जब तक उसकी माँ राधा राजा भैया की दासी बन, यहाँ आ नहीं जाती। भगवती भाग गया और पकड़ा नहीं गया। मैनेजर उसके सहायक हो गये थे। इस सहायता करने में उनकी मोटर गाड़ी के शीशे चूर-चूर हो गये हैं।

"उसके दो दिन बाद मैनेजर का पत्र मिला। उसमें उन्होंने अपनी मैनेजरी से त्याग की बात लिखी थी। उसमें कारण यह दिया है कि राजा भैया ने उनकी जान लेने का यत्न किया। इस पत्र की नकल उन्होंने प्रान्तीय गवर्नर सरकार के सैक्रेटरी, कमिश्नर और ज़िला मैजिस्ट्रेट को भेज दी है।

"इसी पत्र की प्रतिक्रिया आज हुई है। राजा भैया की ज़मानत रद्द हो गयी है और वे पुनः जेल में डाल दिये गये हैं।

"राजा बहादुर इस घटना पर शोक-ग्रस्त हो बीमार पड़ पलंग पर लेट गये हैं। कोई सहायक नहीं है। इलाहाबाद से वकील आये हैं। परन्तु वे तो कानूनी चाराजोही करने को कहते हैं। सिफारिश और रिश्वत की बात उनको ठीक नहीं लगी। वे आज लौट गये हैं।

"तुम यहाँ आ सको तो ठीक है। साथ ही मैनेजर मिस्टर दास लखनऊ में हैं, उनसे मिल लो। कदाचित् कोई उपाय निकल सके।

"कम-से-कम उत्तर अवश्य देना। तुमको जमींदारी से कुछ मिलने की बात अभी नहीं हो सकी।"

सुशीला की सम्मति थी कि उनको अविलम्ब मिस्टर दास से मिलना चाहिए और फिर नौगवाँ चलना चाहिए।

छोटे साहब ने मोटर निकलवाई और सुशीला को लेकर दास बाबू से मिलने चल पड़े।

वे लखनऊ में शनिवार सायंकाल पहुँचे थे और रविवार को कोठी ठीक-ठीक कराने की योजनाएँ बनाते रहे थे। सोमवार ग्यारह बजे की डाक में रानी माँ का पत्र आया था और ये भोजन कर, दो बजे मिस्टर दास की कोठी पर पहुँच जाये।

नौकरों से पता चला कि दास बाबू किसी काम से इलाहाबाद गये हुए हैं। उन दिनों गवर्नर बहादुर इलाहाबाद में थे। इससे छोटे साहब को अनुमान था कि गवर्नर से मिलने गये होंगे। कदाचित् किसी अन्य ज़मींदारी में नौकरी का इन्तजाम कर रहे होंगे। नौगवाँ में भी वे गवर्नर बहादुर की सिफारिश पर रखे गये थे।

सुशीला ने नौकरों से पूछा, "मिसेज दास कहाँ हैं?"

"दो सप्ताह से उनकी एक बहन यहाँ आई हुई हैं। राधा जी उनका नाम है। मिसेज दास उनके साथ प्रायः बाज़ार जाया करती हैं। वह चार बजे से पहले लौट आयेंगी। उस समय बच्चे स्कूल से लौटते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 2 :

कुँवर साहब और सुशीला देवी कोठी के बाहर अपनी गाड़ी में बैठे-बैठे मिसेज दास की प्रतीक्षा करने लगे। पौने चार बजे मिसेज दास, राधा और भगवती तीनों मैनेजर की मोटर गाड़ी में लौटे। रमणी ने इनको देखा तो आगे बढ़कर नमस्कार कर, सुशीला की बाँह-में-बाँह डाल, कोठी के ड्राइंग-रूम में ले गयी। राधा उनके साथ थी। भगवती ने झुककर कुँवर साहब को सलाम की और पूछा, "कब आये यहाँ?"

"दो दिन हो गये हैं। कल कोठी के विषय में ठेकेदार बगैरा से बातचीत करते रहे हैं। आज नौगवाँ से सूचना आयी है कि राजा भैया की जमानत रद्द हो गई और वे पुनः जेल में डाल दिये गये हैं।

"हमारा विचार नौगवाँ जाने का था। जाने से पूर्व मैनेजर साहब से मिलने वाले थे। परन्तु पता चला है कि वे तो इलाहाबाद गए हैं।"

इस समय ये भी ड्राइंग-रूम में जा पहुँचे थे। कुँवर साहब ने राधा को हाथ जोड़कर नमस्ते कह दी। राधा ने भी अभिवादन का उत्तर देते हुए पूछ लिया, "रानी माँ का कोई समाचार आया है?"

"हाँ, उनका एक पत्र आज मिला है। हम नौगवाँ जा रहे हैं। भगवती ने मुझे लिखा था कि वह भी पिताजी की नौकरी छोड़ आया है।"

"वह ज़बानी कहने गया था, परन्तु राजा भैया ने बात करने का अवसर ही नहीं दिया। उन्होंने उसे वहाँ से भगा दिया। इस कारण विवश हो, यहाँ आकर पत्र लिखना पड़ा है।"

"मैं आज वहाँ जा रहा हूँ। सुशीला भी मेरे साथ जायेगी। यदि जमींदारी का प्रबन्ध मुझे करना पड़ा तो मुझे योग्य सहायकों की आवश्यकता पड़ेगी। इसी कारण मैं दास बाबू से मिलने आया था।"

"वे तो हैं नहीं।"

"भगवती अब वहाँ नहीं चल सकता क्या?"

"यह वहाँ जायेगा तो मकान बनवाना होगा। अब तो वहाँ भूमि भी है। परन्तु अभी वहाँ जाने को वह तैयार नहीं होगा।"

"क्यों?"

"बहुत कठिन है।"

"मैं वहाँ जाकर राजा बहादुर से बात करके लिखूँगा।"

"लिख दीजिएगा। जो कुछ तब उचित समझा जायेगा, करेगा।"

जब कुँवर साहब रमणी दास से दास बाबू का कार्य-क्रम पूछने लगे तो सुशीला ने भगवती को कह दिया, "पण्डित भैया! बहन की सहायता के लिए क्या कर सकते हो?"

"रानी बहन को क्या कठिनाई अनुभव होने लगी है? और उसमें मैं क्या कर सकता हूँ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो नौगवाँ जाकर पता चलेगा। मैं समझती थी कि एक बुद्धिशील कार्यकुशल भाई पाकर नौगवाँ में सुखी रहूँगी। परन्तु यह क्या हो गया है?"

"देखिये, बहन जी! बहन के घर की, भाई वेतन-युक्त नौकरी नहीं कर सकता। निःशुल्क सेवा तो कर सकता है। अब बहन को देखना है कि भाई को अपने घर आवश्यकता पर ही बुलाये। वह तो उसके घर को जल-पान भी नहीं करेगा?"

"तो अब नौगवाँ में नौकरी नहीं करेंगे?"

"बहन की नौकरी नहीं कर सकता। नौगवाँ के मालिक से जान बचाने के लिये मैं पृथक् ही रहना चाहता हूँ।"

"पर वे अब जेल में हैं न?"

"उनको छुड़ाने का यत्न हो रहा है। दास बाबू इसी मतलब के लिये इलाहाबाद गये हुए हैं।"

"सत्य? उनकी अब इसमें क्या रुचि है?"

"यह तो मैं नहीं जानता। उन्होंने अपने नौगवाँ से त्यागपत्र की एक नकल गवर्नर बहादुर को भेजी थी। उसके सम्बन्ध में गवर्नर बहादुर की चिट्ठी आई थी। दास बाबू को उन्होंने बुलाया है। जाते समय वे कह रहे थे कि यदि उनका वश चला तो राजा भैया को जेल से बाहर ज़मानत पर छुड़ाने का यत्न करेंगे।"

"वे कुछ कर भी सकेंगे क्या?" सुशीला देवी का प्रश्न था।

"उनका विचार था कि इतना कुछ तो वे कर ही सकेंगे। मुकदमा उठवाया जाना सम्भव नहीं। हाँ, दण्ड कम कराया जा सकता है।"

"तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

"मैं अंग्रेजी पढ़ने के लिये एक स्कूल में भरती हो गया हूँ। स्कूल सायं पाँच बजे से आठ बजे तक चलता है। दिन-भर में कुछ काम करने का विचार कर रहा हूँ।"

"क्या काम करोगे?"

"एक काम मैंने विचार किया है। समाचार-पत्र बेचा करूँगा।"

"इससे क्या बनेगा?"

"अभी कुछ बनाने का विचार नहीं। इस समय तो खाली समय में कुछ करने का विचार है। मेरे कार्य और योजना को मिसेज दास ने तो पसन्द किया है। निर्णय दास बाबू के आने पर होगा।"

"मुझे यह काम सुशीला के भाई के लिये शोभायुक्त प्रतीत नहीं हुआ! मेरे पिताजी आने वाले हैं। मैं उनसे तुम्हारे विषय में बात करूँगी।"

"एक बात निश्चय है कि मैं अब अंग्रेजी पढ़ूँगा। एक ही सप्ताह में मैंने वर्णमाला स्मरण कर प्रथम पुस्तक पढ़नी आरम्भ कर दी है। यहाँ पर पढ़ाने वाले रेबरेण्ड डाक्टर ई॰ ब्राउन बहुत ही योग्य शिक्षक हैं। मैं समझता हूँ जो बालक के पाँच वर्षों में पढ़ना चाहते हैं, मैं दो वर्ष में ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाप्त कर लूँगा।"

कुँवर साहब रमणी दास से केवल यह ही पता पा सके कि मिस्टर दास गवर्नर के बुलाने पर इलाहाबाद गये हैं। कदाचित् वे इनको किसी काम पर लगायेंगे।

परन्तु कोठी को लौटते हुए जब सुशीला ने भगवती से प्राप्त सूचना बताई तो वे विस्मय में मुख देखते रह गये।

"तब तो भगवती से फिर मिलना चाहिए।" कुँवर साहब ने कहा।

"जी नहीं। अब नौगवाँ चलने की तैयारी करनी चाहिए। मैं समझती हूँ कि दो दिन वहाँ रह कर और पिताजी को सांत्वना दे, हमें मैनेजर से मिलने आना चाहिए।"

उसी रात दस बजे वे नौगवाँ जा पहुँचे। राजा बहादुर ज्वरग्रस्त, शैया पर पड़े थे। कुँवर साहब और नव-वधू महाराज के कमरे में पहुँचे तो सुशीला ने पहले महाराज की चरण-वन्दना की और फिर रानी माँ के चरण-स्पर्श किये।

इसके उपरान्त वह पाँवों की ओर खड़ी हो गयी। उसकी आँखें भूमि की ओर लगी थीं।

"तो यह है तुम्हारी बहू?" राजा बहादुर ने छोटे साहब से पूछ लिया।

"जी।"

"पसन्द है। परन्तु हमसे पर्दा नहीं करती।"

"पिताजी पर्दा तो करती है, केवल घूँघट नहीं करती।"

"यह किसलिये?"

"मैंने इसे कहा था। यह बोली, पिता से पुत्री घूँघट क्यों करें?"

"तो यह किससे घूँघट करेगी?"

"राजा भैया से।"

"तो वह भाई नहीं है?"

"यह तो उन्होंने ही प्रकट किया है कि वे इसका यहाँ आना पसन्द नहीं करते। जब से इसे यह पता चला है, तब से ही यह उनसे पर्दा करने का विचार रखती है।"

"अच्छा बहू, जाओ। कमरे को रहने योग्य बनाओ।"

रानी माँ बहू को लेकर छोटे साहब के कमरे में ले गयी। कुँवर साहब ने पूछा, "इलाज किसका हो रहा है?"

"हकीम बहाजुद्दीन आये थे और कुछ गोलियाँ दे गये हैं। हमने खाई नहीं।"

"क्यों?"

"हमें उस पर विश्वास नहीं रहा।"

"तो लखनऊ से किसी वैद्य या डाक्टर को बुलाया जाये?"

"जिलानगर से एक होम्योपैथ आये हुए हैं। वे मुझ पर जिरह कर मेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बयान लिखकर ले गये हैं और कह गये हैं कि प्रातःकाल औषधि देंगे।"

"आपको नींद आती है अथवा नहीं?"

"जब से राजा भैया पकड़े गये हैं, एक झपकी भी नहीं आई है।"

"राजा भैया पुनः जेल से बाहर आने वाले हैं। उसके लिए यत्न आरम्भ हो गया है।"

"सत्य? कौन कर रहा है?"

"सुशीला देवी के धर्म-भाई बने लखनऊ में हैं। उनसे बात हुई थी तो उन्होंने एक ऐसा स्रोत बताया है, जिससे गवर्नर को राजी किया जा सकता है और राजा भैया को ज़मानत पर छुड़ाया जा सकता है।"

"कौन हैं वे?"

"वे अभी गुमनाम रहना चाहते हैं।"

इस समाचार से राजा बहादुर को सांत्वना मिली और वे सुख अनुभव करने लगे।

"तो कब तक पता चल जायेगा?"

"आपका ज्वर ठीक हो जाये तो उनके निवास पर मिलकर पता करना होगा। अभी तो वह गवर्नर बहादुर से मिलने के लिये इलाहाबाद गये हैं। तीन दिन में लौटेंगे। तब तक मैं तथा सुशीला जायेंगे और उनसे मिलकर पता करेंगे कि क्या हुआ।"

राजा बहादुर को इस रात कई रातों के उपरान्त नींद आयी। ज्वर जो कई दिन से आ रहा था, मिट गया।

प्रातः होम्योपैथिक डाक्टर आया और राजा बहादुर का ज्वर उतर रहा देख, चकित रह गया। उसकी किताब तो कहती थी कि ज्वर मियादी है और सप्ताह तक रहेगा।

फिर भी उसने एक जल की भाँति की औषध दे दी और दिन में तीन बार दो-दो बूँद जल में डाल कर लेने के लिये कह दिया। साथ ही यह कह दिया, "जब तक यह औषध ली जाये, न तो हुक्का पीना है, न ही तम्बाकू चबाना है। पान भी नहीं लेना।"

डाक्टर को फीस दे, विदा किया गया। दवाई नाली में फेंक दी गयी और राजा बहादुर ने चार दिन के उपरान्त हुक्का पिया। तदनन्तर पान चबाया। इससे उनका ज्वर बिलकुल उतर गया।

जब राजा बहादुर स्नान आदि कर अपने नित्य-कर्म में लीन हुए, तो सुशीला के काल्पनिक भाई से मिलने की तैयारी होने लगी।

छोटे साहब अपनी पत्नी सहित पुनः लखनऊ कोठी में जा पहुँचे, कुँवर साहब ने बताया कि कैसे उन्होंने राजा बहादुर के चित्त को सांत्वना दी थी और वे शान्तचित्त हो सोये तो उनका ज्वर उतर गया।

"तो आपने मेरे भाई का नाम भी बताया है?" सुशीला ने पूछ लिया।

"नहीं। मैंने यह कहा है कि वे गुमनाम रहना चाहते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपने पिताजी को स्वस्थ तो कर दिया, परन्तु उनकी आशा पूर्ण न हुई तो प्रतिक्रिया पहले से भी प्रबल होगी और फिर औषधि से भी ठीक करना कठिन हो जायेगा।"

"इसी कारण तो यहाँ आया हूँ। हमको दास बाबू से मिलकर उनको प्रसन्न करना चाहिए। ऐसा प्रतीत होता है, भगवती की माँ का दास बाबू पर बहुत प्रभाव है। यह भी सम्भव है कि वे उनकी पत्नी बन चुकी हों। इस कारण हमको राधा और भगवती के द्वारा भैया को छुड़ाने का यत्न करना चाहिए।"

इस विचार से सुशीला देवी विचार-मग्न हो गयी। उसे इस बात का विश्वास नहीं आया। इस पर भी वह देखना चाहती थी कि राधा का कितना प्रभााव है दास बाबू पर। कुँवर-साहब को तो उसने इतना कहा, "दास बाबू काफी बड़ी आयु के प्रतीत होते हैं। उनकी पत्नी अभी छोटी आयु की है। और एक और पत्नी रखकर वे मृत्यु का आलिंगन करेंगे? इससे विश्वास नहीं आया। फिर भी चलना चाहिए। आशा है, दास बाबू लौट आये होंगे।"

सांयकाल की चाय के समय ये दास बाबू की कोठी पर जा पहुँचे।

: 3 :

दास बाबू ने नौगवाँ की मैनेजरी से त्याग-पत्र दिया तो उन्होंने उस त्याग-पत्र की प्रतियाँ कई सरकारी अधिकारियों को भी भेज दी। सरकारी मशीनरी हरकत में आयी। कुँवर साहब के विपरीत मुकदमे की पहली पेशी हुई। पुलिस ने घटना का संक्षिप्त वर्णन और बीरू के बयान तथा बड़े कुँवर साहब की जाँघ पर चिह्न बताकर कहा, "यह डाका अग्नि-काण्ड और कत्ल का मुकदमा है। इस कारण इसमें ज़मानत हो ही नहीं सकती।" मजिस्ट्रेट ने स्वीकार किया। ज़मानत रद्द हो गयी और पुलिस को पन्द्रह दिन की रिमाण्ड मिल गयी।

जब कुँवर साहब पकड़कर जेल में डाल दिये गये तो यह सूचना राधा को भी मिली तो उसने रमणी से कहा, "मैनेजर साहब ने व्यर्थ का पाप मोल लिया है।"

इसका परिणाम यह हुआ कि उसी रात के खाने के समय मेज़ पर बैठे ही रमणी ने बात आरम्भ कर दी। उसने अपने पति से कहा, "राधा बहन का विचार है कि आपने अपने त्याग-पत्र की प्रतियाँ भिन्न-भिन्न हाकिमों को भेजकर व्यर्थ का पाप अपने सिर लिया है।"

"परन्तु, राधा बहन!" दास बाबू ने राधा से कह दिया, "मेरी नौकरी इन अफसरों की सहायता से लगी थी और मुझे उनको बताना आवश्यक था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रमणी बहन ने कहा है कि गवर्नर के आदेश से ही आपको नौकरी मिली थी। तब भला डिप्टी-कमिश्नर और कमिश्नर को पत्र की प्रतिलिपियाँ भेजने में क्या प्रयोजन था?"

दास बाबू ने कुछ विचार किया और कहा, "हाँ, मन से तो मैं चाहता था कि कुँवर साहब की ज़मानत रद्द हो जाय। मैं समझता हूँ कि पागल आदमी को जेलखाने में बन्द रहना चाहिए।"

"आपका विचार ठीक है। परन्तु आपने इसमें सहायता देकर तो कुँवर साहब को दण्ड दिलवाने का उत्तरदायित्व अपने पर ले लिया है, यह ठीक नहीं हुआ।"

"तो आप चाहती हैं कि राजा भैया पकड़े न जाते?"

"नहीं, यह बात नहीं। आपको अपने त्याग-पत्र की नकल गवर्नर बहादुर को तो भेजनी चाहिए थी। इन छोटे अफसरों को नहीं। कदाचित् कुछ दिन के उपरान्त होता यही कुछ, जो अब हुआ है। ऐसे कातिल की ज़मानत नहीं होती। यह ज़मानत रद्द होती ही, परन्तु इसकी जिम्मेदारी आप पर तो न होती।

"देखिये! मैं आपको अपने शास्त्र की बात बताती हूँ। एक पुरुष अपने कर्मफल से प्रेरित होकर मौत के मुख में जा रहा है। बीच में एक अनधिकारी कूद पड़ता है और उसको मारने के लिये नियुक्त नहीं था, उसने मारा तो वह हत्या का अपराधी बन गया। यही बात आपने की है।"

हरिमोहन इस विचार से काँप उठा। उसे एक मुकदमे की बात याद आ गयी। वह जौनपुर में एक डाके के मुकदमे को सुन रहा था। डाका डालने वाले के खिलाफ गवाही हो रही थी। एक गवाह ने डाके की आँखों-देखी कहानी अदालत में सुनाई। कहानी रोंगटे खड़ी करने वाली थी। इस कहानी को सुन एक युवक, जो मुकदमा सुनने आया हुआ था, जोश में आ गया और अदालत में ही उसने उस डाकू के पेट में छुरा घोंप दिया, जिससे वह वहीं अदालत में मर गया। उस युवक पर हत्या का मुकदमा हुआ। हाईकोर्ट तक मुकदमा गया। विशेष परिस्थिति और युवक की अल्प आयु के नाम पर दया माँगी गयी। फिर भी उसको सात वर्ष को कठोर दण्ड दिया गया।

हरिमोहन का मुख विवर्ण हो गया और वह मौन तथा गम्भीर विचार में मग्न हो गया। राधा ने दास बाबू को चुप देख कह दिया, "यह काम न्यायाधीश का था कि वह कुँवर साहब की ज़मानत रद्द करता। आप तो इस काम के लिए नियुक्त नहीं थे। भैया, यह काम आपने वैसा ही अनियमित किया है, जैसा रुपया देकर उसको ज़मानत पर छुड़ाया था।"

"तो राजा भैया को छुड़ाना भी उचित नहीं था और छुड़ाने के बाद अब पकड़वाने का यत्न भी उचित नहीं। दो परस्पर विरोधी काम कैसे समान हो गये?" हरिमोहन ने राधा को अपनी ही युक्ति में फँस गयी समझ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर कहा।

"भैया! ये दोनों परस्पर विरोधी बातें नहीं हैं। जहाँ तक आपका सम्बन्ध है, आपने दोनों बार अनधिकार हस्तक्षेप किया है। दोनों बार अपने प्रभाव को कानून भंग करने के लिये प्रयोग किया। दोनों बार आपने पाप किया। परिणाम भिन्न-भिन्न हुए, परन्तु करने वाले ने रुपये के बल से और फिर अपने व्यक्तिगत प्रभाव के बल से कुछ कराया, जो कराना आपका अधिकार नहीं था।"

"पर राधा बहन, आप यह क्यों नहीं समझतीं कि भगवती पर घातक आक्रमण करने वाले को मैंने पुनः जेल में डलवाकर पुण्य का कार्य किया है।"

"तो क्या इसका यह उपाय था, जो आपने किया है? इसी प्रकार एक रईस को पुलिस की रिमाण्ड के दिनों में ज़मानत पर छुड़वाना तो ठीक है, परन्तु उसको रिश्वत देकर ही छुड़वाना उपाय था क्या?"

युक्ति में राधा की बात ठीक थी। हरिमोहन ने अपने रसूख से और एक बार राजा बहादुर के धन से कानून को खण्डित करने का यत्न किया था। उसे फिर युवक की बात स्मरण हो आयी। जिसने उसकी ही अदालत में एक कातिल की हत्या कर दी थी। उसने स्वयं उस युवक पर आरोप लगाया था कि उसने कानून हाथ में लेकर एक अपराधी पर न्यायिक जाँच नहीं होने दी। बात आगे नहीं चल सकी। परन्तु एकान्त में दास बाबू ने अपनी पत्नी से कहा, "ऐसा प्रतीत होता है कि राधा के मन में राजा भैया के प्रति कहीं प्रेम छुपा हुआ अभी भी मौजूद है।"

"मैं ऐसा नहीं समझती। भगवती के साथ उसके वार्तालाप को मैंने सुना है। भगवती को भी वह यही कह रही थी। भगवती ने पूछा था, 'यदि नौगवाँ के थाने में पुलिस हमारी जाँच करती है और मुझे बुलाती है तो मैं क्या करूँ?' राधा का स्पष्ट उत्तर था, 'तुम वहाँ जाओ और सत्य-सत्य बात निर्भीक होकर वर्णन कर दो।'

"भगवती ने यह भी पूछा कि , 'यदि पुलिस पूछे कि राजा भैया मुझे किस मतलब के लिए कोट में रोकना चाहते थे तो क्या कहूँ?'

"राधा का स्पष्ट कहना था, 'कह देना कि राजा भैया तुम्हारी माँ को अपनी रखैल बनाने के लिये गाँव में बुलाना चाहते हैं और इसके लिये तुमको कैद करना चाहते थे।'

"मैं तो राधा को अपनी लज्जा की बात कहते सुन, संकोच अनुभव कर रही थी। परन्तु उसने पीत मुख लड़के की आँखों में देखते हुए कहा था, 'भगवती! सत्य कहने में न तो लाज अनुभव करनी चाहिए, न ही भय। मैं तो केवल यह कह रही हूँ कि पुलिस की जाँच के अभाव में तुम स्वयं न्यायकर्त्ता बन, अभियुक्त को दण्ड नहीं दे सकते। उसका कारण यह है कि तुम न्यायाधीश नहीं हो। पुलिस कर्मचारी भी नहीं हो। यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुलिस तथा न्यायाधीश न्याय न करें तो उसको हटाने का यत्न करो। यह नहीं कि जिन पर अभी आरोप मात्र हैं, उनको दण्ड देने लगो।"

हरिमोहन कहने लगाा "ये माँ-पुत्र ऐसे युक्ति करते हैं, मानो ये फिलासफी में एम॰ ए॰ पास किये हैं। वैसे अंग्रेजी का एक अक्षर भी नहीं जानते।"

"आपको यह बात किसने बताई है कि अंग्रेजी के अतिरिक्त अन्य किसी भाषा में ज्ञान-विज्ञान नहीं है?"

"सब स्कूल-कॉलेजों में यही पढ़ाया जाता है। हिन्दी को तो अभी देश की कौमी भाषा का पद देने पर भी लोग डरते हैं। ज्ञान-विज्ञान की बात दूसरी रही।"

"पर देख लीजिये। उन सब लोगों की बात गलत है न? यह राधा पहले अपने पिता से और फिर पति से हिन्दी और उसके साथ कुछ संस्कृत पढ़ी है। उसमें इसने दो-तीन शास्त्र भी पढ़े हैं। उनके बलबूते पर ही वह वकीलों की भाँति अथवा फिलासफरों की भाँति बात करती है।"

हरिमोहन भौंचक्का रह गया। रमणी ने पुनः कह दिया, "मैं बी॰ ए॰ पास कर एक दिन कान्ट की फिलासफी पर एक निबन्ध पढ़ रही थी। कि घर में चौका-बासन करने वाली किसी काम से मेरे पास आयी। मैं पढ़ने में लीन थी। वह कितनी ही देर तक समीप खड़ी रही और फिर मेरा ध्यान आकर्षित करने के लिए खाँसी। मैंने उसकी ओर देखा तो पूछने लगी, 'बीबी जी! क्या पढ़ रही हो, जो गरीबों की ओर दृष्टि ही नहीं जाती।'

"मेरी हँसी निकल गयी। मैंने कहा, 'तोती, तुम नहीं समझ सकतीं। इसमें लिखा है कि कैसे यह संसार बिना परमात्मा के काम करता है।'

"वह बोल उठी, 'बस? यह तो सब मूर्ख कहते हैं। पर बीबी ऐसा है नहीं। एक तिनका भी उसकी मर्जी के बिना नहीं हिलता। और यह सूरज-चाँद तो बहुत बड़े-बड़े पदार्थ हैं।'

" 'पर वे हिल तो रहे हैं और उनको हिला रहा कोई दीख नहीं रहा।

" 'और यह बात इस ग्रन्थ में लिखी है?

" 'हाँ।' मैंने कहा।

" 'बीबी! अपना जीवन व्यर्थ गवाँ रही हो। क्या अब किसी काम के करने वाला दिखाई न दे तो वह होता ही नहीं? देखो बीबी इस बिजली के हण्डे को जलाने के लिये भी तो स्विच को दबाने वाला चाहिए।

" 'गुरु महाराज ने कहा है कि भगवान की निन्दा करने वाले के कराज पूरे नहीं होते।'

"बताइये, वह अनपढ़ कहारिन कान्ट को मूर्ख सिद्ध गई थी। तब भी मैं जानती थी कि बिना कॉज़ (कारण) के इफ़ेक्ट (कार्य) नहीं होता। और सबका कारण कोई इन्टेलिजेण्ट और इच्छा रखने वाला होना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यूरोपियन फिलासफी तो इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकी। वहाँ कहा जाता है कि इन्द्रियाँ जिसे देखती नहीं, वह नहीं है। परन्तु यह तो गलत है।

"वह कहारिन कहाँ से सीख गयी है? मैं समझती हूँ कि जहाँ से वह सीखी थी, वहीं से राधा ने सीखा है।"

"पर दूसरे हिन्दी-उर्दू पढ़े तो इतनी बारीकी में जा नहीं सकते।"

"मज़ेदार बात तो यह है कि आप अंग्रेजी पढ़े भी तो वहाँ तक नहीं जा सके।"

मिस्टर दास को अगले दिन गवर्नर का तार मिला, 'आकर मिलो।' जाते समय उसने भगवती को कहा था, "तुम्हारी माँ ने रात मेरे पूर्ण प्रयास को ही गलत और पाप-कर्म सिद्ध कर दिया है। राजा भैया को प्रयास कर ज़मानत पर छुड़ाने का और अब उसकी ज़मानत रद्द करने का, दोनों को ही गलत बताती है। इससे अब मैं पुनः अपने कर्म को सुधारने जा रहा हूँ।"

यही आधार था जिस पर भगवती ने सुशीला देवी से कहा था कि मिस्टर दास यत्न करेंगे कि उनको छुड़ाया जा सके।

: 4 :

कुँवर विजय बहादुरसिंह और सुशीला भगवती से मिलने आये तो मिस्टर दास गर्वनर बहादुर से मिलकर आ चुके थे।

भगवती अपने स्कूल में पढ़ने जा चुका था। सुशीला ने रमणी तथा राधा से बातचीत आरम्भ कर दी। बच्चे चाय इत्यादि पीकर कोठी की लॉन में खेलने चले गये थे।

भगवती होता तो सुशीला उससे पूछती कि दास बाबू के प्रयास का क्या प्रभाव हुआ? उसने भगवती की माँ से केवल इतना कहा, "पण्डित भैया कहाँ है?"

"पढ़ने गया है।"

"उसे कहना, कल प्रातः आठ बजे से दस के भीतर कोठी में आकर मिले।"

"कह दूँगी। परन्तु वह अब व्यवसाय करने लगा है। इससे वह बारह बजे से एक बजे के भीतर ही मिलने आ सकता है।"

"क्या व्यवसाय कर लिया है?"

"उसने हजरतगंज में न्यूज़ एजेन्सी खोल ली है। एक स्थान पर एक कोना ही मिला है। वहाँ समाचार-पत्र-पत्रिकाएँ रख कर, बेचता है। दास भैया उसका पथ-प्रदर्शन कर रहे हैं।

"प्रातः वह लोगों के घर पर दैनिक पत्र पहुँचाने जाता है। प्रातः छः बजे से आठ बजे तक यह काम करता है। आठ बजे वह दुकान पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जा बैठता है। ग्यारह बजे तक दुकान खुली रहती है। ग्यारह से बारह बजे तक भोजन करता है फिर दो बजे तक आराम करता है और तीन से पौने पाँच बजे तक वह दुकान पर बैठता है। उसकी अनुपस्थिति में एक स्कूल का विद्यार्थी चालीस रुपये मासिक पर दुकान पर बैठता है और रात के आठ बजे यह उससे हिसाब देख उसे छुट्टी दे देता है और फिर दुकान बन्द कर घर आ जाता है। रात को वह स्कूल का पाठ स्मरण करता है।"

"इसमें कुछ लाभ होने लगा है?"

"अभी इतनी जल्दी तो कुछ कहा नहीं जा सकता। एक सप्ताह भी काम आरम्भ किये नहीं हुआ। पचास रुपये दुकान का किराया, चालीस रुपये सहायक का वेतन, बिजली इत्यादि पाँच रुपये। इस प्रकार सौ रुपये का खर्च है। भिन्न-भिन्न पत्रिकाओं और पत्र वालों के पास दो हज़ार से ऊपर ज़मानत जमा करनी पड़ी है।"

"माँ जी! उससे कहियेगा कि वह भोजन हमारे यहाँ करे।"

"कह दूँगी, परन्तु वह क्या करेगा अथवा क्या नहीं करेगा, कह नहीं सकती।"

"अच्छी बात है, कह दीजिये।"

परन्तु कुँवर साहब और मिस्टर दास में बात हो गयी। कुँवर साहब ने पूछ लिया, "सुना है आप गवर्नर बहादुर से मिलने गये थे।"

"हाँ, मैंने अपने त्याग-पत्र की नकल उनके पास भेजी थी। उन्होंने उसी के सम्बन्ध में बुलाया था।"

"उस त्याग-पत्र पर वे क्या कहते हैं?"

"वे पूछने लगे कि घटना किस प्रकार हुई। मैंने राजा भैया के राधा के घर दो बार डाका डलवाने की बात भी बता दी। भगवती को पकड़ने के यत्न का कारण भी बात दिया। इस पर वे बहुत गम्भीर विचार में लीन हो गये। कुछ देरी तक विचार कर बोले, 'हिन्दुस्तान में राज्य-परिवर्तन का काल आ रहा है और जिनके कन्धों पर अंग्रेज़ी राज्य चलता रहा है, जाते समय उनको प्रसन्न कर जाना चाहते हैं।

" 'अंग्रेज़ी राज्य के तीन स्तम्भ थे। एक बड़े-बड़े रईस, राजे, जमींदार। दूसरे, मुसलमान और तीसरे, ईसाई। हमारी पार्लियामेंट राज्य छोड़ने से पहले इनके हक-हकूक की हिफाज़त करके ही यहाँ का राज्य छोड़ना चाहती है।

" 'ऐसी अवस्था में अपने प्रान्त के एक रईस के विपरीत इस प्रकार के संगीन आरोप हमारे पक्ष को दुर्बल कर देंगे। मैं समझता हूँ कि आप इस कुँवर साहब को समझाओ। अगर वह दो बातें करे तो हम उसके विपरीत मुकदमा उठवा लेंगे। एक तो, जिस-जिसकी जो भी हानि हुई है, वह पूरी कर उनको सन्तुष्ट कर दे और दूसरे, वह भविष्य में अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाल-चलन को पाक-साफ रखने का वचन दे। अगर उसके विपरीत कुछ शिकायत हमारे पास आयी तो हम उसको आजन्म कैद का दण्ड दिलवा देंगे।'

"मैंने गवर्नर बहादुर से कहा, 'मैं उनसे मिलने जाऊँगा तो भारी झगड़ा होगा। वह औरत इस समय मेरे संरक्षण में है और यह बात कुँवर साहब जानते हैं।'

"उन्होंने कहा, 'कि कुँवर साहब स्वयं मेरे पास आयेंगे और वे आपसे सभ्यतापूर्वक बात करने पर विवश किये जायेंगे।'

"मैं अब प्रतीक्षा कर रहा था कि कब वे छूटते हैं। कल जिला मजिस्ट्रेट आये थे और कह रहे कि प्रान्तीय सरकार की आज्ञा है कि राजा भैया को जेल में इतना कष्ट दिया जाये कि वे जीवन-भर याद रखें कि जेल का जीवन कितना दुःखमय होता है।

"अतः मैं स्वयं देख रहा हूँ कि उनको खूब कष्ट दिया जा रहा है। उनको जुँओं और पिस्सुओं वाली खाट दी गयी है। जेल-वार्डन कैदी ही हैं। वे जब रात को सो नहीं सकते तो उनको गालियाँ देते हैं। कल ऐरंड के पत्तों का साग और काले आटे की रोटियाँ दी थीं और रातभर वे टट्टियाँ करते रहे हैं। आज सुबह मैं उनको देखने गया था। डाक्टर भी साथ था और वे रो रहे थे।

"छोटे कुँवर साहब!" मैनेजर साहब ने अन्त में अपनी सम्मति बता दी, "मैं समझता हूँ, ये कष्ट उनके छूटने की भूमिका है। पर एक बात बताऊँ, जाने से पूर्व मेरी राधा से बात हुई थी और उसने कहा था कि यह मेरा काम नहीं कि मैं कुँवर साहब को अपने मन में दण्ड देने की योजनाएँ बनाता रहूँ। यह काम सरकार का और न्यायाधीश का है। इस कारण मैंने गवर्नर साहब के कहने में किसी प्रकार की मीन-मेख नहीं निकाली।"

"तो राधा जी अब क्या कहती हैं?"

"कुछ नहीं। न तो वे प्रसन्न हैं और न नाराज़। वह समझती हैं कि यह बात उनके विचार की नहीं कि राजा भैया को दण्ड मिलता है अथवा पुरस्कार मिलता है।"

कुँवर साहब बोले, "राजा बहादुर को कुँवर साहब के कष्ट की बात देख बहुत दुःख हो रहा है। वह रात-रात भर जागते और सोचते रहते हैं।"

"उनको एक बात करनी चाहिए।"

"क्या?"

"राजा भैया का गुज़ारा बाँध गाँव से बाहर निकाल देना चाहिए।"

"यह बहुत कठिन है।"

"यह बात यकीन जानिये कि उनके जीवन के अन्तिम दिन भारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसीबत से निकलेंगे।"

"यह बात मैं तो उनको कह नहीं सकता। मेरे मुख से यह शोभा भी नहीं देती।"

"आपकी माँ तो एक समझदार औरत प्रतीत होती हैं। उनको इस दिशा में यत्न करना चाहिए।"

इस प्रकार छोटे साहब सन्तोष प्रकट करते हुए कोठी में लौटे। मार्ग में ही उन्होंने दास बाबू से हुई पूर्ण बात बता दी। सुशीला देवी को एक बात पसन्द नहीं आयी। वह थी राजा भैया को बेदखल करने की। उसने कह दिया, "और सब बातें ठीक हैं, परन्तु मैं यह पसन्द नहीं करती।"

"किस लिए?"

"मुझे किसी ने बताया है कि रानी बनने में इतना रस नहीं, जितना साधारण लोगों की भाँति जीवन व्यतीत करने में है।"

"धन की बात तो है। ज़मींदारी से अनायास ही आय हो जाती है।"

"आप जानते हैं कि भगवती भैया क्या कर रहा है?"

"अंग्रेज़ी पढ़ रहा है।"

"हाँ। परन्तु व्यवसाय भी करने लगा है।"

"क्या?"

"समाचार-दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्र-पत्रिकाएँ बेचता है।"

"घूम-घूम कर?"

"घूम-घूम कर भी और हजरतगंज में एक दुकान का कोना भी ले लिया है।"

"तो इसको तुम व्यवसाय कहती हो?"

"मेरे पिता जी बताते थे कि वे दसवीं कक्षा पास कर रंगून गये और वहाँ पर पेन्सिल, कापियाँ, बाइसिकल के पीछे बाँध कर स्कूलों के बाहर खड़े हो, बेचा करते थे। यह बात आज से पचास वर्ष पहले की है। इन पचास वर्षों में पाँच रुपये पूँजी की दुकान से पचास लाख रुपये की पूँजी का कारोबार कर रहे हैं। यदि वह व्यवसाय नहीं था तो क्या था?"

छोटे साहब तो इस प्रकार की बातों की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। वे सुशीला का मुख देखते रह गये। सुशीला ने आगे कहा, "मैं उसकी माता जी को कह आयी हूँ कि वे उसको कल मध्याह्न के भोजन के लिए भेज दें।"

"तो उन्होंने क्या कहा है?"

"वे कहती थीं कि वे कह देंगी। भगवती मानेगा अथवा नहीं, वे नहीं जानतीं।"

"वह क्यों नहीं मानेगा?"

"वह मुझे अपनी बहन कहता है और कदाचित् वह बहन के घर का नहीं खायेगा। राधा जी के कहने का यही अर्थ मैं समझती हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर मैं तो कल गाँव लौट जाना चाहता हूँ।"

"भोजन के उपरान्त चलेंगे।"

अगले दिन भगवती चरण ठीक बारह बजे कोठी पर जा पहुँचा। सुशीला प्रतीक्षा कर रही थी। छोटे साहब आशा नहीं करते थे। जब भगवती आया तो सुशीला ने कह दिया, "पण्डित भैया! बहुत-बहुत धन्यवाद।"

"बहन, तुम बुलाओ तो मैं समुद्र पार कर भी आता। बताओ किसलिए स्मरण किया है।"

"तो माँ ने बताया नहीं?"

"बताया था। परन्तु तुम तो जानती हो कि भाई बहन के घर का अन्न नहीं ले सकता।"

"भगवती! तुम इनके पहले भाई हो अथवा हमारे साथ कोई सम्बन्ध पहले रहा है?" कुँवर साहब ने पूछ लिया।

"महाराज! उस सम्बन्ध से उन्नति हो गई है। आपने भी तो इस सम्बन्ध को कलकत्ता में मुझे साला शरीफ कह कर स्वीकार किया था। अब मुझे इस पदवी से नीचे मत गिराइये। उसी दिन मैंने निश्चय कर लिया था कि अब बहन के घर नौकरी भी नहीं करूँगा।"

"खैर! यह क्या काम कर लिया है तुमने?"

"बहुत मज़ेदार काम है। इस समय तक तीस प्रकार के पत्र-पत्रिकाएँ मँगवाने लगा हूँ। अभी स्थान छोटा है। अन्यथा काम तो बहुत बढ़ाया जा सकता है।

"कितनी आय हो जाती है?"

"एक सौ रुपये महीने का तो चालू खर्च है। इससे तो अधिक मिलेगा ही?"

"हम तुम्हारे लिए एक काम विचार रहे थे।"

"जी, अब तो हो गया। नाव मँझधार में छोड़ दी है।"

"परन्तु · · ·!" छोटे साहब ने कुछ कहना चाहा।

"परन्तु पार करने की आवश्यकता नहीं। मँझधार में ही तैरने का आनन्द आता है। ज्यों-ज्यों काम बढ़ेगा, त्यों-त्यों यह अधिक और अधिक रसयुक्त होता जायेगा।"

कुँवर साहब इसे कुलियों का काम मानते थे, परन्तु सुशीला विचार कर रही थी वह किस प्रकार इस युवक की सहायता कर सकती है?

कुँवर साहब और सुशीला ने भोजन किया और भगवती समीप बैठा बताता रहा, "मुझे यह काम एक ब्राह्मण के काम के समकक्ष लगा है। मैं यह ज्ञान प्रसार का काम ही कर रहा हूँ।"

"मैं इसे कुली का काम मानता हूँ। जैसे ऊँट पर केसर लाद दिया जाय तो केसर बाँटने का पुण्य उसको नहीं मिल सकता। यही बात तुम्हारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है।"

भगवती इस उपमा पर हँस पड़ा और बोला, "महाराज, यह उपमा ठीक होती, यदि मैं ऊँट की भाँति पशु होता। मैं उस केसर की गन्ध न ले सकता, जिसको उठा-उठाकर दूसरों तक पहुँचाता हूँ।"

"तो तुम पढ़ लेते हो, जो उसमें लिखा होता है?"

"सब कुछ तो जानने की सामर्थ्य अभी नहीं आई है। उसके आने में अभी समय लगेगा। परन्तु जब कोई बात जानने तथा समझने की रुचि होती है तो मिस्टर दास से जाकर पूछ लेता हूँ। 'यह किसका चित्र और क्या लिखा है?' वे जब भी खाली होते हैं, बताते हैं। इस प्रकार उस केसर की सुगन्धि लेने का यत्न करता हूँ, जो बाँटता हूँ।

"हाँ, एक बात और है। दास बाबू की एक लड़की है। वह भी मुझे पढ़ कर अर्थ बताती रहती है।"

"कितनी बड़ी है वह लड़की?"

"बारह वर्ष की है। सातवीं श्रेणी में पढ़ती है।"

"तो तुम उसी कोठी में रहने का विचार कर रहे हो?"

"माँ अभी निर्णय नहीं कर पा रही है। रमणी देवी जी एक योजना बना रही हैं, जिससे वे माता जी को वहाँ ही बाँध लें, परन्तु माता जी अभी मान नहीं रहीं।"

"क्या योजना है?"

"वे माँ को बच्चों की संरक्षिका नियुक्त करना चाहती हैं। माँ कह रही है कि वह एक देहात की रहने वाली इस काम के योग्य नहीं।"

कुँवर साहब हँस पड़े। हँसते हुए बोले, "यह रमणी दास बहुत ही चतुर औरत प्रतीत होती है। मैं तो यह समझ पाया हूँ कि जब तुम अंग्रेजी पढ़ने-लिखने के योग्य हो जाओगे वह तुमको ईसाई बना अपना दामाद बना लेगी और तुम्हारी माँ को विवाह के लिये तैयार कर उसे किसी ईसाई के साथ नत्थी कर देगी।"

"यदि ईश्वर को यही मंजूर है तो फिर इसे कौन रोक सकता है? अभी तक तो यही कहा जा सकता है कि हमारे मन में ऐसा करने का कोई विचार नहीं।"

"अच्छा! हम किसी दिन तुम्हारी दुकान देखने आयेंगे। क्या नाम रक्खा है दुकान का?"

" 'अरुणोदय पुस्तक केन्द्र'। इसका अंग्रेजी में नाम है, 'राइजिंग सन बुक सेंटर।' "

भगवती अपनी बाईसिकल पर आया था और वह ठीक पौने दो बजे बाईसिकल पर चला गया। इसके तुरन्त ही बाद कुँवर साहब और सुशीला देवी भी अपनी मोटर में नौगवाँ को चल दिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 5 :

दो दिन के उत्पीड़न ने ही कुँवर साहब को रुला दिया। वे सो नहीं सके। दिन में गन्दी स्वादहीन साग और बासी रोटी होती थी। जिस रात उनको जुलाब लगे थे, उनको कोठरी में ही टट्टी-पेशाब करना पड़ा था। कोठरी अति गन्दी हो गई थी। फिर सुबह उनसे ही साफ कराई गई। वे कष्ट से दिन-भर रोते रहे थे।

एक दिन छोटे साहब उन्हें जेल में मिलने आये। जेल का दरोगा उनके साथ था। राजा भैया केवल कच्छा पहने और सब कपड़े उतारे हुए धूप में बैठे थे।

छोटे साहब सामने जा खड़े हुए तो कुँवर साहब ने रोते हुए कहा, "मैं जेलर को बीस बार कह चुका हूँ कि पिस्सू, जूएँ और मच्छर रात को तंग करते हैं। मक्खियाँ दिन-भर पीछे पड़ी रहती हैं। रात को पेशाब-टट्टी कमरे में ही करना पड़ता है। और बदबू से नाक सड़ता रहता है। मैं इनको कहता हूँ कि मैं तो 'हवालाती' कैदी नहीं हूँ, अभी से मुझे कष्ट क्यों देते हो। ये कुछ उत्तर नहीं देते। हँस देते हैं।"

"भैया, अब सहन करो।"

"मेरी ज़मानत की अर्जी हाई कोर्ट में होनी चाहिए।"

"वह रिजेक्ट हो चुकी है। इलाहाबाद के मिस्टर चुक ऐडवोकेट ने अर्जी की थी और वह स्वीकार नहीं हुई।"

"तब तो मैं एक सप्ताह में बिना मुकदमा के ही मर जाऊँगा।"

"मिस्टर दास आपके लिए गर्वनर बहादुर से मिलने गये हैं।"

"वह बेईमान है। मैं समझता हूँ कि यह सब कष्ट वह अपने दोस्त डिप्टी-कमिश्नर को कह कर दिलवा रहा है।"

"नहीं भैया! वह तो आपको छुड़वाने के लिये भाग-दौड़ कर रहा है।"

"मुझे विश्वास नहीं आता।"

"आप धीरज रखिये। हम सब आशा कर रहे हैं कि आपकी शीघ्र ज़मानत हो जायेगी और फ़िर मुकदमा उठा लिया जायेगा।"

"तो यह कब होगा? जब मैं मर जाऊँगा।"

"मैं तो समझता हूँ इस हवालात में रहने से फाँसी पर लटकाया जाना अधिक ठीक है।"

"पर हम भाभी रानी को विधवा होने देना नहीं चाहते।"

राजा भैया मौन हो गये।

इसके अगले दिन जेल के डाक्टर की रिपोर्ट पर कि कुँवर महेन्द्र प्रताप सिंह सख्त बीमार हैं, उनको इलाज के लिए पन्द्रह दिन के पैरोल पर छोड़ने की आज्ञा आ गई।

पैरोल की जमानत एक लाख की माँगी गई और वह नौगवाँ के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामचरण से भरवा दी गई। राजा भैया बाहर आये तो उसे जिला के डिप्टी-कमिश्नर ने कान में कह दिया, "मिस्टर हरिमोहन दास से तुरन्त मिलिये। प्रान्तीय सरकार की, आप पर से मुकदमा उठाने की, शर्तों को आप उनसे जान जायेंगे।"

राजा भैया का मस्तिष्क चकराने लगा था। वह जो समझ रहे थे, उससे उलट हो रहा था। वह अपने-आपको प्रान्त के अधिमानयुक्त वर्ग का व्यक्ति मानते थे। अपने तोशखाने में सोने-चाँदी का अम्बार देखकर उनका मस्तिष्क आकाश में उड़ने लगता था और वह अनुभव करने लगते थे कि दुनिया का कोई काम नहीं, जो वे नहीं कर सकते। परन्तु पिछले एक सप्ताह के जेल के जीवन ने उनको दूसरे ढंग पर सोचने के लिए विवश कर दिया था। वह समझने लगे थे कि वह क्या हैं? एक मच्छर की भाँति उन्हें मसल कर रख दिया जा सकता है। उनका धन, उनका रुत्बा और मेल-जोल किसी भी काम की वस्तु नहीं।

जब वे कोट में पहुँचे तो राजा बहादुर को विश्वास आया कि सत्य ही सुशीला देवी को कोई धर्म का भाई है, जिसने यह चमत्कार कर दिखाया है। बड़े साहब की ज़मानत रद्द होने पर उनको किंचित् मात्र भी आशा नहीं रही थी कि वे अपने सबसे बड़े और लाड़ले लड़के को पुनः जीवित देख सकेंगे। छोटे साहब ने यह विश्वास दिलाया था कि राजा भैया को छुड़ाने का यत्न किया जा रहा है।

जब राजा भैया आराम कर चुके तो राजा बहादुर ने बताया, "छोटी बहू रानी के एक धर्म के भाई हैं। उसने ही भाग-दौड़ करके तुम्हारे छुड़ाने की एक योजना बनाई है। इस योजना का प्रथम अंग उसने पूरा कर दिया है। तुम पुनः ज़मानत पर बाहर खुली हवा में बैठे हो। योजना का अगला चरण तुम्हारी सहायता बिना नहीं हो सकता। उनका कहना है कि तुम तुरन्त हरिमोहन दास से मिलो और जैसा वह कहे करो। कदाचित् वह तुमको लेकर गवर्नर बहादुर से भेंट करायेगा। यह भी हो सकता है कि वह कुछ उपाय बताये।"

Central Library Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar 167973

"बहू के भाई का नाम-धाम क्या है?"

"वह प्रकट में नहीं आना चाहता।"

"मुझे सन्देह हो रहा है कि यह सब धोखा है। हमसे रुपया ऐंठने के लिए यह कियां गया है।"

"बड़े साहब!" राजा बहादुर ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा, "देखो, मैं तो पूर्ण जमींदारी तुम पर न्योछावर करने को तैयार हूँ और तुम दस-बीस हज़ार की बात कर रहे हो। अपने दिमाग का सन्तुलन ठीक रखो। बिना जबरदस्त सिफारिश के यह चमत्कार हो नहीं सकता था। फिर भी यह हुआ है और बिना एक भी पैसा व्यय किये। अब तुम उस आदमी की ईमानदारी पर सन्देह करते हो। बुद्धि को ठीक करो और कल लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाओ। हरिमोहन से अपनी गुस्ताखी के लिये क्षमा माँगो। वह तुम्हारी नौका पार लगा देगा।"

राजा बहादुर के कहने का कुछ प्रभाव होता अथवा नहीं, कहा नहीं जा सकता, परन्तु राजा भैया की पत्नी कमला ने कह दिया, "यदि आप छोटे साहब का कहा नहीं मानेगे, तो मैं भूखी रह कर प्राण त्याग दूँगी।"

यह बात अपनी पत्नी के मुख से सुन, राजा भैया स्तब्ध बैठे रह गये। अभी तक तो वह सदा छोटे साहब के विपरीत रहा करती थी। जो कुछ वह चाहा करता था, कुँवर रानी उससे विपरीत ही जाया करती थी। जब से विवाह कर वह आयी थी, उसकी एक दिन भी छोटे साहब से बनी नहीं थी। अतः राजा **भैया उसका** आग्रह सुन कर पूछने लगे, "तुमको क्या हो गया है? भला तुम **क्यों मरोगी** और तुम दास बाबू के विषय में क्या जानती हो?"

"मैं एक बात जान गयी हूँ कि आपको किसी ने फाँसी के तख्ते से नीचे उतार लिया है। उस आदमी का नाम-धाम नहीं जान पाई अन्यथा उसके चरण माथे से लगा कर उसकी पूजा करती। यदि आपको **एक दिन** मेरी चिता को प्रज्ज्वलित नहीं करना हो तो जाइये दास बाबू से मिल, अपने पाप-कर्मों का प्रायश्चित्त करिये।"

विवश राजा भैया लखनऊ पहुँचे। हरिमोहन दास की कोठी के बाहर मोटर खड़ी कर वे कोठी में प्रविष्ट हो रहे थे कि बैठक के बाहर राधा को खड़ी देख चकित रह गये। उन्हें यह लगा कि राधा का सौन्दर्य पहले से द्विगुण हो गया है। राधा राजा भैया को आया देख अपने कमरे की ओर चली गयी और भीतर से द्वार की चिटकनी चढ़ा, अन्दर बैठ गयी। राजा भैया उसे भागते देख, खड़े हो गये। जब भीतर से चिटकनी चढ़ने का शब्द आया तो वह बैठक की ओर घूमे।

सामने हरि मोहन खड़ा दिखाई दिया। वह अपने स्टडी-रूम में बैठा एक पुस्तक पढ़ रहा था। वहाँ बैठे-बैठे ही उसने राजा भैया को कोठी में आते देखा था। राधा रमणी के कमरे में उससे वार्तालाप कर रही थी। बच्चों के स्कूल से आने का समय हो गया था। इस कारण दोनों मध्याह्नोत्तर की चाय के लिये तैयार होने के लिए उठी थीं। राधा अपने खाने के पदार्थ लेने के लिए अपने कमरे को जा रही थी कि राजा भैया उधर ही आते दिखाई दिए। उसे राजा भैया की आँखों में कामुकता दिखाई दी तो यह समझी कि कहीं उसका अपहरण न हो जाय, वह अपने कमरे में भाग गयी थी।

हरिमोहन यह देख रहा था। राजा भैया का राधा की ओर रुचि-पूर्वक देखना उसे पसन्द नहीं था। अतः उसने कुछ डाँट के भाव में कह दिया, "कुँवर साहब! अभी फाँसी की रस्सी ज्यों-की-त्यों ही लटकती दिखाई दे रही है। आपको सावधान हो जाना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुँवर साहब ने सतर्क होते हुए कहा, "इसी कारण तो आपके पास आया हूँ।"

"तो इधर आइये।" वह उनको अपने स्टडी-रूम में ले गया। हरिमोहन छोटे साहब से सुन चुका था कि सुशीला देवी के एक भाई की कल्पना इस कारण की गई थी कि राजा बहादुर को सांत्वना मिले। वास्तव में भगवती के संकेत पर ही राजा बहादुर को आशा बँधाई गयी थी। अतः हरिमोहन ने इस भ्रम को बनाये रखने का निश्चय किया हुआ था।

हरिमोहन ने राजा भैया को बैठाकर मेज पर रखी घंटी बजा दी। बैरा आया तो उसने कह दिया, "बच्चे आ गये हैं, उनके लिए ड्राइंग-रूम में चाय लगा दो और मेरे तथा बड़े साहब के लिए यहाँ ले आओ।"

राजा भैया समझ गये कि उनको राधा से पृथक् रखने के लिए ही यह प्रबन्ध किया गया है। परन्तु अब उसने अपने को नियन्त्रण में कर लिया था। उसने मतलब की बात तुरन्त आरम्भ करने के लिए कहा, "सुना है, छोटी कुँवर रानी का कोई धर्म का भाई है। उसने मेरी बहुत बड़ी सिफारिश कर, मुझे पैरोल पर छुड़वाया है।"

हरिमोहन ने कुँवर साहब के विषय में अपनी अनभिज्ञता प्रकट करते हुए कहा, "कितने दिन के पैरोल पर हैं?"

"पन्द्रह दिन का था। इसमें से तीन दिन व्यतीत हो चुके हैं।"

"तो आपको किसी ने कहा नहीं कि आप मुझसे मिलें?"

"डिप्टी-कमिश्नर ने कहा था, परन्तु जेल में पिछले एक सप्ताह भर इतना कष्ट मिला कि उसके प्रभाव से मुक्ति प्राप्त करने में तीन दिन लग गए।"

"खैर, अभी बारह दिन हैं। आप ऐसा करिये, आज रात की गाड़ी से इलाहाबाद चलने के लिए तैयार हो जाइये। गवर्नर बहादुर आजकल वहाँ पर हैं। आपकी उनसे भेंट करवा दूँगा। आप उनके सामने अपनी अर्जी करियेगा।"

"क्या अर्जी करूँ?"

"आपके मुकदमे की फाइल वहाँ जा चुकी है। इस कारण आपके पूर्ण अत्याचार की कहानी उनको विदित है। यह तो सुशीला देवी के भाई की सिफारिश का परिणाम समझिये कि आपको पैरोल पर छोड़ने का प्रबन्ध हुआ है। यह इसलिए कि आप इस काल में अपने किये पर पश्चात्ताप और प्रायश्चित करें तो आप पर से मुकदमा उठवाने का प्रबन्ध किया जा सके।"

"आखिर यह तो बताइये कि मुझको क्या कहना चाहिए।"

"इसमें मैं क्या बता सकता हूँ? यह समझिये, कि आपको फाँसी चढ़ाने का दण्ड हो चुका है और आप वाइसराय से रहम के लिये प्रार्थना कर रहे हैं। अपना अपराध स्वीकार करिये और फिर रहम के लिये कहिये और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनः वैसा न करने का वचन दीजिये। कदाचित् वे आपसे कुछ शर्तें लिखायेंगे, जो आपको मान जानी चाहिए।"

"तो कब चलेंगे?"

"मैं तो दो दिनों से आपकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ। आज रात की गाड़ी से चलना ठीक रहेगा।"

"क्या मैं सुशीला देवी के भाई से नहीं मिल सकता?"

"क्या करेंगे मिलकर?"

"मैं उनका धन्यवाद करना चाहता हूँ।"

"धन्यवाद कहने का अभी समय नहीं आया है। जब आप दोषों से सर्वथा मुक्त हो जायेंगे, उसका समय आयेगा।"

"समय आने पर उसका धन्यवाद करने मैं भी चलना चाहता हूँ।"

"तो मैं रात साढ़े आठ बजे वहाँ पहुँच जाऊँगा।"

"आ जाइयेगा।"

: 6 :

भगवती को न्यूज पेपर स्टाल चलाते हुए एक वर्ष हो गया था। कैपिटल सिनेमा के एक 'विंग' में पचास रुपये महीना किराये पर उसने एक कोना लिया था। कोने पर दीवार में एक अलमारी बनी थी। उस अलमारी के आगे एक घड़ी थी। वह प्रातः आठ बजे से ग्यारह बजे तक वहाँ बैठता था। आठ बजे से पहले लगभग एक सौ ग्राहकों को समाचार पत्र घर पर पहुँचाता था। ग्यारह बजे से तीन बजे तक वह पुनः स्टाल पर जा बैठता था। उसकी दुकान पर एक विद्यार्थी साढ़े चार बजे से आठ बजे तक काम करने आता था और उस समय वह गिरजाघर में प्रौढ़ लोगों की श्रेणी में पढ़ने जाता था। रात को आठ बजे वह दुकान पर आता था और फिर वहाँ से लड़के से हिसाब ले, उसे छुट्टी दे, दुकान बन्द कर नौ बजे घर आ जाता था।

एक वर्ष में ही उसने चार घण्टे के लिये सहायक रखने के स्थान पर एक सौ रुपया महीना पर दिन-भर के लिये एक आदमी रख लिया था। वह आदमी प्रातः ग्राहकों के घर पर समाचार-पत्र पहुँचाता था और फिर खाना खाने चला जाता था। वह खाना खाकर ग्यारह बजे आता था और फिर सायंकाल आठ बजे तक दुकान पर बैठता था। भगवती स्वयं अपना स्नान-ध्यान, पूजा-पाठ तथा प्रातः का अल्पाहार लेकर आठ बजे स्टाल खोलता था। ग्यारह बजे उसका सहायक आ जाता था। अतः वह घर पुनः जाता था। ग्यारह बजे से तीन बजे तक वह घर पर स्वाध्याय करता था। तीन बजे से पौने पाँच बजे तक स्टाल पर रहता था और फिर पढ़ने चला जाता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक वर्ष का हिसाब-किताब देखकर ही पूरे समय के लिये सहायक रखा गया था। साथ ही यह अनुभव किया था कि इस अलमारी से काम नहीं चल नहीं सकता। अतः वह किसी बड़ी दुकान की खोज में था।

इस समय तक राजा भैया पर से मुकदमा उठा लिया गया था और वे अब ज़मींदारी की बनारस वाली कोठी में रहते थे। उसके लिये नौगवाँ में आना मना था। गवर्नर बहादुर ने मुकदमा उठवाने की शर्तों में एक शर्त नौगवाँ छोड़ जाने की रखी थी। दूसरी बात यह थी कि सब पीड़ितों को रुपयों में प्रतिकार दिया जावे। उन सबकी सूची बनायी गयी थी, जिनको राधा के घर पर डाके में हानि पहुँची थी। इनमें राधा और बीरू मुख्य थे। राधा के मकान और सामान का दाम, जो जल गया था, बीस हज़ार दिलवाया गया। अन्य सबको जितनी-जितनी चोटें आयी थीं, उसके अनुसार एक सहस्र से पचास रुपये तक प्रतिकार दिलवाया गया था।

राजा भैया तो बनारस चले गये और छोटे साहब को जमींदारी का काम चलाने के लिये मिस्टर दास को पुनः मैनेजर नियुक्त करना पड़ा। इसका परिणाम यह निकला कि राधा लखनऊ में दास बाबू के बच्चों की संरक्षिका के रूप में रहने लगी। भगवती भी वहीं कोठी में ही रहता था। रमणी दोनों स्थानों पर रहती थी। नौगवाँ में भी और लखनऊ में अपने बच्चों के पास भी।

सुशीला कभी लखनऊ जाती तो कुँवर साहब को घसीट कर भगवती की दुकान पर ले जाती और उससे मिल आती तथा उसकी दुकान से कुछ क्रय कर लाती। ऐसे ही एक अवसर पर सुशीला और छोटे साहब भगवती की दुकान पर खड़े थे और देख रहे थे कि क्या-क्या नयी मैगज़ीन वहाँ आने लगी हैं। लन्दन पिक्चर्ज, न्यूयार्क और अमेरिका के अन्य स्थानों से समाचार-पत्र आते थे। एक पत्र अंग्रेज़ी में टोकियो से भी आता था।

सुशीला ने कह दिया, "अब तो यह स्थान छोटा पड़ने लगा है।"

"हाँ, रानी बहन! क्या करूँ कोई समीप उपयुक्त स्थान मिल नहीं रहा।"

"कितना भाड़ा व्यय कर सकते हो भैया?"

"दो सौ रुपया मासिक तक।"

"कम है। चार सौ तक तैयार हो जाओ तो एक स्थान मिल सकता है।"

"अभी तक मेरा इस दुकान में पाँच हज़ार रुपया लगा है। चार सौ की दुकान लूँगा तो रुपया तीस हज़ार लगाना पड़ेगा। इतना मेरे पास नही हैं।"

"तो किसी से उधार ले लो।"

"पर बहन और बहन के घरवाले से नहीं लूँगा।"

"क्यों?" छोटे साहब ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

"इसलिये कि कहीं दिल बेईमान हो गया अथवा दुकान का दीवाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

निकल गया तो बहन का रुपया न दे सकने का शोक बना रहेगा और आत्मा का भी पतन हो जायेगा।"

"अच्छी बात है। भैया की आत्मा की चिन्ता भी तो करनी होगी।" सुशीला का कहना था। उसने फिर पूछा, "उस रुपये का क्या हुआ, जो जमींदारी की ओर से मकान के प्रतिकार के रूप में मिला था।"

"वह रुपया माँ का है। उस रुपये से वे नौगवाँ में अपना मकान बनवा रही हैं।"

"और तुम यह सब रुपया कहाँ से लाये हो?"

"माँ से दो सहस्र उधार लिया था। वह माँ को वापस कर दिया है और अब पाँच हज़ार अपनी पूँजी है।"

सुशीला ने जाने से पूर्व फिर कहा, "भैया! आपकी दुकान पर आकर बैठने को एक स्टूल भी नहीं मिलता। यहाँ स्टूल रखने का स्थान भी नहीं है।"

"बहुत मजबूरी है, रानी बहन।"

दोनों मुस्कराते हुए चले गये। इसके दो-तीन दिन उपरान्त उसके स्टाल के सामने एक कैडलैक गाड़ी आ कर खड़ी हुई। उसका सहायक कर्मचारी नारायण दत्त थड़ी के एक कोने पर बैठा था और भगवती चरण समीप खड़ा उस दिन का समाचार-पत्र पढ़ रहा था। अब वह अंग्रेज़ी का समाचार-पत्र पढ़ और समझने लगा था। भगवती ने गाड़ी में से बाबू बेनी माधोसिंह को उतरते देखा तो आगे बढ़, हाथ जोड़ नमस्ते कह दी।

"सुनाओ पण्डित जी, कैसे हो? मैं गाड़ी में जा रहा था कि तुमको यहाँ खड़े देख लड़की का कहना स्मरण आ गया कि तुमने न्यूज स्टाल चलाया है। मैंने विचार किया है कि जरा देखूँ कि क्या करते हो?"

भगवती ने अपने कारोबार की बात बताई। उसने बताया, "सब प्रकार के दुकान के खर्चे निकालकर चार-पाँच सौ प्रतिमास बच जाते हैं।"

"यह तो बहुत ठीक है, परन्तु यह दुकान बहुत छोटी है। कोई बड़ी दुकान क्यों नहीं ले लेते?"

"कोई उचित स्थान उचित किराये पर मिल नहीं रहा।"

बेनी माधोसिंह ने कहा, "आओ, मैं दुकान दिखाऊँ। पसन्द करो तो आज ही मिल सकती है।"

"दिखा दीजिये।"

बेनी माधोसिंह उसे अपनी मोटर में बैठा, वहाँ से एक फर्लांग के अन्तर पर एक नई बनी इमारत के नीचे ले गया। भगवती उस मकान की दुकानों में से एक देख चुका था। उसमें तीन दुकानें थीं। दो छोटी-छोटी और एक बहुत बड़ी थी। वह एक छोटी दुकान के विषय में पता कर चुका था। मकान के जमादार ने बताया था कि दस हज़ार पगड़ी और पाँच सौ महीना भाड़ा। यह उसकी सामर्थ्य से बाहर की बात थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह मुस्कराता हुआ बाबू साहब के साथ गाड़ी से उतरा तो वही जमादार जिससे उसकी बातचीत हो चुकी थी, मकान में से निकला और झुककर सलाम कर सामने खड़ा हो गया।

भगवती को सन्देह हो गया कि कहीं मकान के मालिक बाबू साहब ही न हों। इस कारण वह प्रश्न-भरी दृष्टि से बाबू साहब का मुख देखने लगा। बाबू साहब ने कह दिया, "मेरे विचार से तुमको यह दुकान ले लेनी चाहिए।" बाबू ने बड़ी दुकान की ओर संकेत कर दिया।

भगवती हँस पड़ा। हँसते हुए उसने कहा, "बाबू साहब हँसी करने लगे हैं?"

"नहीं। इसमें हँसी की कौन-सी बात है। 'अरुणोदय पुस्तक केन्द्र' इसमें चलेगा। देखो भगवती, तुम्हारी रानी बहन ने मुझे आज से छः मास पहले लिखा था कि मेरी लड़की का धर्म-भाई सड़क के किनारे खड़ा हो, जीविकोपार्जन करता है। उस समय मैं रंगून में था। वहाँ भी राज्य परिवर्तन हो रहा है और मेरा मन कहता है कि वहाँ किसी हिन्दुस्तानी का रह सकना सम्भव नहीं। इसलिये उस समय से ही अपना काम समेट रहा था। यहाँ अपना एजेन्ट भेज, यह मकान बनवा लिया है। अतः वहाँ से काम छोड़ यहाँ आ गया हूँ। मेरा यह निश्चय है कि मैं और तुम दोनों, तुम्हारे वाला व्यवसाय करेंगे और आधे-आधे के भागीदार होंगे। पूँजी मेरी होगी, प्रबन्ध तुम्हारा। और फिर मैं तो कुछ और काम भी करूँगा। यह काम तुम करोगे।

"देखो भगवती! कल से यहाँ फरनीचर बनने लगेगा। बढ़ई आ जाये तो तुम उसको समझा देना कि किस प्रकार क्या-क्या बनाये।"

"पर बाबू साहब, इसके लिये माँ से पूछना होगा।"

"कहाँ है तुम्हारी माँ?"

"यहीं मिस्टर दास की कोठी में रहती हैं।"

"तो चलो। मैं ही उनसे पूछ लेता हूँ।"

"आप क्या पूछेंगे?"

"यही कि मुझको अपने पुत्र से साझीदारी करने की स्वीकृति दे दें।"

भगवती चरण मुस्करा कर बोला, "आपको कष्ट करने की आवश्यकता नहीं। असल बात यह है कि सुशीला बहन मुझ पर बहुत एहसान कर रही हैं। मुझे और माँ को यह विचार करना है कि बहन के आभार को वहन करने की हममें सामर्थ्य है अथवा नहीं। यह आपकी उपस्थिति में हम नहीं कर सकेंगे।"

"एक बात बताऊँ?"

"हाँ, बताइये।"

"यह आभार सुशीला का नहीं है। इसमें यदि कुछ है तो मेरी ही सब कार्य है। यह मेरे अपने लिये ही है। यदि इस मेरे कार्य का लाभ उठा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकोगे तो मुझे बहुत प्रसन्नता होगी। एक सही दिमाग, सुशीला और कार्यकुशल युवक की भाँति मेरे परिवार में सम्मिलित होने के इस अवसर को हाथ से मत जाने दो।"

"कुछ भी हो। बिना माताजी की स्वीकृति के, मैं इस दिशा में आगे नहीं चल सकता।"

बाबू बेनी माधोसिंह गम्भीर विचार में लीन खड़े रह गये। एकाएक उन्होंने कह दिया, "ठीक है। माँ से पूछ लो। यदि किसी कारण से तुम मेरे इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं कर सकते, तो वह कारण बताना। मैं उसको दूर करूँगा।"

भगवती रात के समय जब अंग्रेज़ी की पढ़ाई कर घर पहुँचा तो दास बाबू और रमणी उसकी प्रतीक्षा में बैठे हुए थे। वह उनसे मिला तो दास बाबू ने पूछ लिया, "सुशीला के पिता मिले थे तुमसे?"

"जी। आपको कैसे पता चला है?"

"मैं उनके साथ ही नौगवाँ से लखनऊ आया हूँ। रास्ते में वे तुम्हारे विषय में कुछ कह रह थे। पहले तुम बताओ कि वे तुम्हारे पास क्या करने आये थे?"

: 7 :

भगवती उनके सामने स्टडी-रूम में बैठा था। भगवती ने बताया, "वे दुकान पर आये थे और बोले, 'यह बहुत छोटा स्थान है।' जब मैंने कहा कि उचित स्थान उचित भाड़े पर मिल नहीं रहा, तो वे बोले, 'एक स्थान मेरी दृष्टि में है। आओ दिखाऊँ।'

"मैं उनके साथ चल पड़ा। वे मुझे लायड बैंक के साथ नये बने मकान में ले गये। वहाँ की बड़ी दुकान दिखाकर बोले, 'यह दुकान तुम्हारे काम के लिये अच्छी रहेगी।'

"मेरा कहना था, 'यह मेरी सामर्थ्य के बाहर है। इस पर उन्होंने कहा, 'मुझे अपना भागीदार बना लो। रुपया मेरा लगे और काम तुम करोगे। आधी-आधी का साझापन रहेगा।' मैं उस समय इस बात का अर्थ समझ नहीं सका। इस कारण मैंने कह दिया, 'माँ से पूछकर बताऊँगा।' "

"माँ से पूछा है?" दास बाबू ने पूछ लिया।

"जी अभी नहीं। आपको पहले नमस्ते करने चला आया हूँ।"

"मैं लखनऊ आने की तैयारी कर रहा था कि बाबू साहब कोट से बँगले पर आ पहुँचे। बोले, 'राजा बहादुर से पता चला है कि आप भी लखनऊ चलने वाले हैं। इस कारण विचार आया कि इकट्ठे ही चले चलें तो ठीक रहेगा। एक विषय में आप से राय भी करनी है।'

"मैं तैयार हो गया। मेरी मोटर-गाड़ी बूढ़ी होती जाती है। मैं डर रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था कि कहीं मार्ग में ही न रह जाये। एक बात मैंने पूछी, 'आप कब तक लौट रहे है?"

"बाबू साहब बोले, 'काम तो पाँच मिनट का है परन्तु, इसमें अधिक समय भी लग सकता है?'

"मैं तो तैयार ही था। हम दोनों चल पड़े। मार्ग में उन्होंने बताया, 'मैंने लखनऊ हजरतगंज में लायड बैंक के पास डेढ़ लाख रुपया लगा कर एक मकान बनाया है। वह मकान मैंने एक व्यक्ति के नाम गिफ्ट (भेंट) कर दिया है। आज मकान उसके चार्ज में देने जा रहा हूँ।'

"मैंने पूछ लिया, 'यह डेढ़ लाख की सम्पत्ति किसको दे दी है।'

"वह बोले, 'एक पंडित भगवती चरण हैं। सुशीला के भाई बने हुए हैं। पिछली बार जब सुशीला अपने पति के साथ कलकत्ता आयी थी तो उन्होंने ही यह सुझाव दिया था। आप तो जानते हैं कि लड़की के साथ बहुत स्नेह रखता हूँ। उसकी बात को टाल नहीं सकता। अतः मैंने मकान की रजिस्ट्री उसके नाम कर दी है।'

"मैंने पूछा, 'आपने वह मकान सुशीला जी को क्यों नहीं दे दिया? छोटे साहब की आर्थिक स्थिति यह है कि बड़े साहब उनको जमींदारी का मालिक बनने नहीं देंगे। कुछ ही महीने में राज्य बदलने वाला है और नयी बनने वाली सरकार से मिल-मिलाकर बड़े साहब छोटे साहब को निकालने में सफल हो जायेंगे।'

उन्होंने बताया, ' मुझे सब मालूम है। मैंने उनको पर्याप्त दे रखा है। उसमें से उन्होंने कुछ सम्पत्ति खरीदी है और उस सम्पत्ति की आय इतनी है कि यदि वे चाहें तो मज़े में जीवन निकाल सकते हैं। मैंने छोटे साहब को व्यापार में घसीटने का यत्न भी किया है, परन्तु उनका दिमाग इस ओर चलता नहीं। वे अपने देहाती चाटुकारों से घिरे रहने में ही मज़ा अनुभव करते हैं। इस पर भी, सुशीला यदि चाहेगी तो और भी दे सकता हूँ। मैं अपना सब काम कलकत्ता में ले आया हूँ।' "

भगवती ने कह दिया, "यह तो एक दूसरी ही बात निकली है। मैं विचार करता हूँ कि उनकी इस भेंट को क्यों स्वीकार करूँ?"

"परन्तु उनसे साझे में काम करने में कुछ हानि है क्या?"

"हानि नहीं। भय है कि जब काम जम जाये तो मुझको छुट्टी कर दें।"

"और तुम मूर्ख बन कर निकल जाओगे। यही भय है न?"

"तो उनसे झगड़ा करूँ?"

"नहीं भगवती! तुमने एक वर्ष में इस छोटे-से काम में चमत्कारिक उन्नति की है। यदि तुम उस दुकान पर काम करोगे तो तुम अपनी पूँजी निर्माण नहीं कर सकोगे क्या? यदि पाँच वर्ष भी साझेदारी रही तो तुम इतनी सामर्थ्य उत्पन्न कर लोगे कि अपना पृथक् काम कर सकोगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"माँ से राय करूँगा।"

माँ से बात हुई। रात के भोजनोपरांत माँ-पुत्र अपने कमरे में पहुँचे तो भगवती ने बात कर प्रारम्भ दी, "माँ!" उसने माँ के सामने बैठ कर कहा, "आज सुशीला देवी के पिता आये थे?"

"क्या कहते थे?"

"वे एक किताबों और समाचार पत्र-पत्रिकाओं की दुकान स्वयं करना चाहते हैं। वे चाहते थे कि मैं उनसे साझीदार हो जाऊँ। पूँजी उनकी होगी और काम मैं करूँगा। आय में बराबर-बराबर के भागीदार होंगे।"

"तो तुमने क्या कहा है?"

"मैंने कहा है, माँ से पूछ कर बताऊँगा।"

"मैं व्यापार और व्यवसाय में क्या राय दे सकती हूँ?"

"माँ, यदि केवल व्यापार की बात होती तो कदाचित् स्वयं निश्चय कर भी लेता। परन्तु इसमें तो व्यापार से कुछ अधिक सम्बन्धों की बात है।"

"मैं समझती हूँ कि बाबू साहब से उन सम्बन्धों में भी किसी प्रकार की हानि की सम्भावना प्रतीत नहीं होती।"

"तो कर लूँ साझेदारी?"

"साझेदारी का शब्द कानों में खटकता है। तुम उनका काम कर लो। साझेदारी का विचार कर लेंगे, जब वर्ष के उपरान्त हिसाब गिना जायेगा। जो देंगे ले लेना।"

"पर दास बाबू एक अन्य बात कह रहे हैं।"

"वह बात तीन-चार दिन हुए, सुशीला मुझको बता गयी थी। वह कह गयी थी कि उसके पिताजी तुमको एक मकान भेंट में देने वाले हैं। मैंने पूछा, तो वह बोली, 'पण्डित भैया के मेरे प्रति बहन का स्नेह अनुभव करने पर मैं भी उनसे भाई जैसा आदर और प्यार अनुभव करने लगी थी। मेरी भावना का विचार कर पिता जी भी भैया के प्रति पुत्र की वात्सल्यता अनुभव करने लगे हैं। यह उस वात्सल्य का प्रथम प्रसाद प्रतीत होता है। माँ जी! दिये से दिया जलता है। मानव समाज में यही रीति है।'

"मैं चुप लगा गयी। मैं भला किसी के मन की भावनाओं का क्यों अनादर करती। फिर भी मैंने मन में विचार किया है कि अपना व्यवहार मानवों का-सा रखते हुए ईश्वर-परायण होकर रहना चाहिए।

"यही व्यवहार में रमणी बहन के प्रति रख रही हूँ। अपनी लड़की को मेरे अधीन छोड़ कर जाने में उसने बाबू साहब के इस मकान देने की अपेक्षा अधिक स्नेह का प्रदर्शन किया है। उसने मुझ अनपढ़ स्त्री के संरक्षण में लड़की देकर कितना विश्वास प्रकट किया है मुझ पर।

"अब एक बात और होने जा रही है। उसके कुछ-कुछ लक्षण प्रतीत होने लगे हैं। परन्तु वह अभी सन्देह की परिधि में ही है। इस कारण अभी मौन हूँ। परन्तु जो ईश्वर को स्वीकार है, उसको मैं इन्कार कैसे कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकती हूँ।"

भगवती कुछ-कुछ समझ रहा था कि माँ के अपने जीवन की कुछ बात है। इस कारण उसको जानने का उसने यत्न नहीं किया, यद्यपि वह उस बात के होने पर, जिसकी वह आशंका करने लगा था, अपने जीवन पर भारी प्रभाव पड़ने वाला समझ रहा था। फिर भी वह उसे जानना और उसमें हस्तक्षेप करना अपने अधिकार से बाहर की बात समझ कर मौन था।

माँ ने सोने की तैयारी करते हुए कह दिया, "अपने को भाग्य पर छोड़ दो। भाग्य का विरोध तब तक ठीक नहीं जब तक वह हानिकर अथवा धर्म-विरुद्ध प्रेरणा देने वाला समझ में न आये। अब सो जाओ।"

माँ का आदेश सुन, भगवती ने कपड़े बदले और अपनी खाट पर सो गया।

अगले दिन दस बजे के लगभग बाबू बेनी माधोसिंह दुकान पर आए, और पूछने लगे, "माँ ने क्या कहा है?"

भगवती ने मुस्कारते हुए, "वे कहती हैं कि अपने को ईश्वर के अर्पण कर दूँ।"

"तो कर दिया है ईश्वरार्पण?"

"जी।"

"तुम्हारे ईश्वर ने क्या कहा है?"

"यह कि आपके आश्रय हो जाऊँ।"

"बहुत अच्छा है तुम्हारा ईश्वर।" दोनों हँसने लगे।

अगले दिन ही से नई दुकान के बाहर 'अरुणोदय पुस्तक केन्द्र' का नाम-पट्ट लग गया। फरनीचर लगने लगा और अब एक ही दुकान दो स्थानों पर लगने लगी। एक अन्य आदमी पूरे समय के लिये नियुक्त करना पड़ा।

एक महीने बाद सिनेमा हाल के बाहर अलमारी वाली दुकान इस नई दुकान में आ गई।

अब भगवती की भाग-दौड़ और भी कम हो गयी। भगवती दुकान पर मेज़-कुर्सी लगा, पुस्तकें मँगवाने और उनके बेचने का प्रबन्ध करने लगा। पत्र-पत्रिकाओं का कार्य गौण हो गया। मुख्य कार्य पुस्तक-विक्रय का हो गया।

भगवती को घर पर रहने का भी और अधिक समय मिलने लगा था। परिणामस्वरूप उसका दास बाबू के बच्चों से अधिक सम्पर्क बनने लगा।

लतीफ बैरा बदला जा चुका था। उसके स्थान पर एक ईसाई गणपति ब्राउन काम करने लगा था। लतीफ को गए कुछ ही दिन हुए थे। गणपति भगवती के स्कूल का विद्यार्थी था। उसे तीन वर्ष हो गये थे, दूसरी श्रेणी वह पास नहीं कर सका था। डाक्टर ब्राउन ने उसे स्कूल से छुट्टी दे दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और ब्राउन की सिफारिश पर ही उसे रमणी ने लतीफ के स्थान पर रख लिया था।

अब तक राधा अपनी रसोई भी दास बाबू के किचन में ही ले गयी थी। राधा को दुहरा प्रबन्ध पसन्द नहीं था। बच्चे आमिष भोजन करते थे, परन्तु वह पृथक् बनता था। राधा अपना और पुत्र का खाना स्वयं बनाती थी। बनाती तो वह उसी रसोई में थी, जिसमें बच्चों का खाना बनता था।

प्रातःकाल का अल्पाहार किया जा रहा था। बच्चों के सामने उबले हुए अण्डे रखे गये थे। चितरंजन तो अपने भाग के दो अण्डे खा गया। विमला ने आज अण्डे छुए नहीं। राधा ने विमला से पूछ लिया, "विमला, अण्डा नहीं लिया?"

"नहीं मौसी।"

"क्यों?"

"मौसी, चित्त नहीं किया।"

"स्वास्थ्य तो ठीक है?"

"बिलकुल ठीक है। मैं इस प्रकार के खाने को छोड़ने का अभ्यास करने लगी हूँ।"

"पर क्यों?"

"इसमें पाप दिखाई देने लगा है।"

"पर अपनी मम्मी से राय करोगी तो वे ऐसा नहीं मान सकतीं।"

"तो क्या पाप-पुण्य का निर्णय माता-पिता से पूछ कर किया जाना चाहिए?"

"बड़ों से राय तो करनी चाहिए।"

"मेरे लिए आप दोनों बड़े हैं। आपकी राय मुझे पसन्द आई है।"

"मैं तो तुम्हारी माँ से कम पढ़ी हूँ। आयु में भी कम हूँ।"

"मैं कुछ और समझी हूँ।"

"क्या?"

"मौसी मम्मी से अधिक पढ़ी हैं और आयु में भी अधिक हैं।"

"अरे?" राधा ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "यह किसने बताया तुमको?"

"हमारी टीचर ने ही बताया है। वे कल पढ़ा रही थीं कि मनुष्य बड़ा-छोटा अपने आयु से नहीं ज्ञान से होता है। इसमें मौसी माँ से बड़ी हैं।"

गणपति बोला, "ईसाइयों के लिए सब भोजन हलाल करार दिये हैं।"

विमला हँस पड़ी। हँसकर बैरा से पूछने लगी, "गिरजाघर में डाक्टर ब्राउन ने बताया है न?"

"हाँ, मिस साहब।" गणपति अपनी बात का प्रमाण बताते हुए कहने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विमला ने कह दिया, "तो इन्सान का माँस क्यों नहीं खाते।"

भगवती समझ गया कि विमला अपनी मौसी की भाँति युक्ति करने लगी है। विमला ने बैरा को कह दिया, "सब खाये जा सकते हैं का यह अर्थ नहीं कि सब खाये ही जायें। हाँ, जो ज़रूरी हो और जिसके खाये बिना निर्वाह न हो, वही खाना चाहिए।"

गणपति तो बेचारा चुप रहा किन्तु भगवती ने कह दिया, "विमला बहन की बुद्धि में विकास हो रहा है।"

"एक विकास की बात और बताऊँ! विमला ने कहा।

"हाँ, वह भी बात दो?"

"अच्छा फिर बताऊँगी। आज एक बात ही काफी है।"

राधा समझ गई कि विमला अब कौमार्यावस्था पार कर युवती होती जाती है। इसके विचारों में दृढ़ता और स्पष्टता आती जाती है।

भगवती की रुचि नहीं थी कि विमला से बहुत सवाल-जवाब करे। पहले वह उससे अंग्रेज़ी की पत्रिकाओं में से भाषा के कठिन अंश पूछा करता था। वह बहुत लगन से बताती थी। अब भगवती अच्छी-खासी अंग्रेज़ी पढ़ने-लिखने लगा। शब्द-कोश की सहायता से वह बहुत कुछ अर्थ स्वयं लगा लेता था। आज विमला ने कहा था कि उसके मन में एक विकास और हुआ है, परन्तु वह बताना नहीं चाहती, फिर बतायेगी। भगवती जानना तो चाहता था कि वह क्या बात है, जो बताना नहीं चाहती। किन्तु उसने पूछने का यत्न नहीं किया।

: 8 :

विमला ने उसी दिन स्वयं बताया। गर्मी की ऋतु थी और विमला स्कूल से ग्यारह बजे आ जाया करती थी। भगवती मध्याह्न को भोजन कर संस्कृत के ग्रन्थ पढ़ने लगा था। वह पढ़ रहा था कि विमला आ गयी। राधा तो इस समय सो जाया करती थी। भगवती ने प्रश्न-भरी दृष्टि से विमला की ओर देखा तो विमला ने पूछ लिया, "यह क्या पढ़ रहे हैं आप?"

"हमारे साहित्य में कुछ ग्रन्थ हैं, जिन्हें उपनिषद् कहते हैं। वे हैं तो बहुत, परन्तु उनमें प्राचीन और प्रमाणित ग्यारह हैं। यह उन ग्यारह में से एक है। इसका नाम है, 'श्वेताश्वतर उपनिषद्'।"

"क्या?" विमला ने नाम न समझते हुए पूछ लिया।

"एक ऋषि हुए हैं।"

"क्या लिखा है?"

"यह जगत् जिसे अंग्रेजी में युनिवर्स कहते हैं, तीन पदार्थों से बना है। प्रकृति जिसे 'मैटर' कहते हैं, जीवात्मा जिसे अंग्रेज़ी में 'सोल' कहा है, और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमात्मा जिसे 'गॉड' कहते हैं।

"आप यह अंग्रेज़ी में अनुवाद किसलिये करते हैं। मैं हिन्दी के शब्द समझती हूँ। मौसी ने मुझे सब समझाये हैं।"

"सत्य? तब तुम तुरन्त समझ जाओगी। इसमें लिखा है कि जगत् एक बहुत बड़ा चक्र है। चक्र का अभिप्राय यह है कि जैसे किसी चक्के का आदि अन्त नहीं होता उसी प्रकार इस संसार का आदि अन्त नहीं है। यह अनन्तकाल से बनता-बिगड़ता चला आ रहा है। इस चक्र में प्राणी भी हैं। ये पैदा होते हैं, मरते हैं और फिर पैदा होते हैं। यह चक्र है।

"जैसे नदी के भँवर में कोई हंस फँस जाये, वैसे ही जीवात्मा इस ब्रह्म चक्र में फँसा हुआ चक्कर काट रहा है। जन्म के समय बनता तो शरीर है और मरता शरीर है। परन्तु आत्माएँ इन शरीरों में फँसी हुई हैं; जैसे हंस एक भँवर से निकल कर दूसरे में फँस जाये और उससे निकल तीसरे में फँस जाये।

"इन हंसों और भँवरों से पृथक् परमात्मा है। उसे इस ग्रन्थ के लिखने वाले ने देव कहकर लिखा है। ये तीनों, भँवरयुक्त नदी, हंस और परमात्मा अनादि और अनन्त हैं। इनको इस पुस्तक में अक्षर अर्थात 'न नाश होने वाला' लिखा है। जो नाश नहीं होता, उसका कभी जन्म भी नहीं होता।

प्रकृति के ये रूप पैदा हुए हैं जो हम आँखों से देखते हैं। और ये रूप ही नष्ट होते हैं। इनमें जो मैटर है, वह मूलतः न बनता है और न बिगड़ता है। इस कारण इसको सत् और असत् दोनों कहते हैं। सत् रूप है मूल प्रकृति का; और असत् है इस दिखाई देने वाले जगत् का। इसे कार्य-जगत् कहते हैं।

"अन्त में यह लिखा है कि भँवरों में फँसा हंस जब परमात्मा को जान, समझ और उसके आश्रय हो जाता है तो इनसे बाहर निकल सकता है।

"बताओ, कुछ समझी हो?"

"इतना तो समझ गयी हूँ, परन्तु इससे पूर्ण समाधान नहीं हुआ।"

"हाँ, तो पूछो। यदि पता होगा तो बता दूँगा।"

"तो कुछ ऐसा है जो आप भी नहीं जानते?"

"मैं तो बहुत कम जानता हूँ। कल डाक्टर ब्राउन मुझे यही कह रहे थे कि यदि मैं सब कुछ नहीं जानता तो फिर किसी दूसरे को गलत क्यों कहता हूँ।"

"मैंने कहा था, 'यदि मैंने किसी को गलत कहा है तो मैं क्षमा-याचना करता हूँ, परन्तु कुछ लोग ऐसे हो गये हैं जो दूसरों को कह गये हैं कि कुछ नहीं जानते। वे चोर और ठग हैं।'

"डाक्टर साहब पूछने लगे, 'कौन है वह?'

"मैंने बताया, 'बाइबल में लिखा है कि हजरत ईसा थे।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह सुन डाक्टर का मुख लाल हो गया और बोले, 'प्रभु यीशु मसीह ने ठीक ही कहा है। जितने पीर-पैगम्बर उनसे पहले हुए हैं चोर और ठग थे।'

"मैंने हँसते हुए कहा, 'प्रभु यीशु मसीह और भगवान कृष्ण अपने आप निपट लेंगे कि कौन चोर है और कौन ठग है। मैं उन दोनों में निर्णायक नहीं हूँ। डाक्टर साहब, मैं तो यह कहता हूँ कि जो बात मैं कहता हूँ वह अक्ल मानती है और जो बात अंजील की पुस्तक में लिखी है, उसे अक्ल नहीं मानती। जैसे अंजील में लिखा है कि मरने पर आत्मा कब्र में दबी रहेगी और कयामत के दिन उठेगी।'

"इसमें अक्ल के न मानने की बात क्या है?' डाक्टर साहब ने पूछा।

"मैंने बताया, 'अंजील में ही कहा है कि रूह तो परमात्मा का श्वास-मात्र है। मरने पर वह परमात्मा में ही क्यों नहीं मिल गया?'

"डाक्टर साहब नाराज़ हो गये और बोले, 'प्रभु की बातों में तुम मीन-मेख नहीं निकाल सकते।'

"मैंने पूछ लिया, 'परन्तु डाक्टर साहब आप मेरे मन को मनन करने से कैसे रोक सकते हैं?"

"बस, बोलो नहीं। तुम कुछ नहीं जानते।' उन्होंने कहा कि मैं बहुत कम जानता हूँ। इसी कारण दिन-रात पढ़ता रहता हूँ कि जितना जान सकूँ, जान लूँ।"

इस समय इन दोनों की बातों की आवाज़ से राधा जाग गयी। विमला ने कहा, "अच्छा, अब देरी हो गयी है। वह फिर पूछूँगी।"

इतना कह वह उठकर चल दी। राधा ने चारपाई से नीचे उतरते हुए पूछ लिया, "यह क्या कह रही थी, जो मुझे देखते ही भाग गयी है?"

"कुछ पूछना चाहती थी। परन्तु तुमको जागते हुए देख, पूछ नहीं सकी।"

"देखो भगवती!" माँ ने भगवती के समीप चटाई पर बैठते हुए कहा, "लड़के और लड़कियाँ परस्पर बहुत कुछ पूछना चाहते हैं। परन्तु इस पूछने-बताने में मर्यादा की रेखा रहनी चाहिए। उसका उल्लंघन नहीं होना चाहिए।"

"वह मर्यादा की रेखा क्या है, माँ?"

माँ ने विचारकर नपे-तुले शब्दों में कह दिया, "मर्यादा है बहन और भाई की। माँ और पुत्र की। पुरुष के लिये प्रत्येक स्त्री बहन अथवा माँ होती है। केवल एक ही एक के लिये पत्नी हो सकती है। उसमें ही मर्यादा की रेखा पार होती है। तुम तो अब अठारह वर्ष के हो और तुम इतना तो समझ गये होगे कि वह रेखा क्या है?"

भगवती मन में विचार कर रहा था कि विमला ने क्या वह रेखा पार की है अथवा क्या वह इस रेखा को पार करने का यत्न कर रही थी?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह अपने विषय में तो जानता था कि उसने कभी भी न तो इस रेखा को पार करने का मन में विचार किया है, न ही यत्न किया है।

राधा भगवती को चुप देख कहती गयी, "बहन अथवा माँ को स्पर्श नहीं किया जाता। दूर से हाथ जोड़ नमस्कार ही किया जाता है।"

"ठीक है, माँ! मैं यह सब जानता हूँ, परन्तु मैं तो यह विचार करता हूँ कि वह कुछ अन्य बात पूछने आयी थी। हम डाक्टर ब्राउन के विषय में बातचीत कर रहे थे।"

"मैं समझी हूँ कि वह ऐसा कुछ नहीं पूछना चाहती थी। यदि यही बात होती तो मुझे देख, भाग न जाती। आज प्रातः के अल्पाहार के समय भी उसने कहा था, 'मेरे मन का एक अन्य विकास हुआ है पर वह फिर बताऊँगी' उस समय भी मैं सामने थी।"

"अच्छा माँ, तुम चिन्ता मत करो। मैं मर्यादा की रेखा पार नहीं करूँगा और न ही उसको पार करने दूँगा।"

"मुझे सन्देह हो रहा है कि विमला अपनी आयु से पहले ही युवती होती जा रही है। वह इस समय पन्द्रह पार कर चुकी है और विवाह की इच्छा करने लगी है। परन्तु उसके माता-पिता उसका विवाह अभी नहीं करेंगे। इससे उसके मन में संघर्ष चल रहा प्रतीत होता है। इस संघर्ष की लपेट में तुम स्वयं नहीं आ जाना। हो सके तो उसको भी उससे परास्त नहीं होने देना।"

भगवती के दुकान पर जाने का समय हो गया था। दुकान किये दो वर्ष हो चुके थे। देश में क्रान्ति हो चुकी थी। देश को हिन्दू-मुसलमानों में बँटवारा हो चुका था। स्वराज्य मिल गया था और जिनको देश ने अपना समझा हुआ था, देश की राज्य-सत्ता उनके हाथ में जा चुकी थी।

नगर में चहल-पहल बढ़ने लगी थी। गाँव उजड़ने लगे थे और नगर वृद्धि पाने लगे थे। अतः व्यापार और उद्योग-धंधों में वृद्धि होने लगी थी।

इन सब परिवर्तनों का भगवती के जीवन पर भी प्रभाव पड़ा था। उसकी दुकान खूब चलती थी। वह हिन्दी, अंग्रेजी और सीमित संख्या में बँगला साहित्य का विक्रय करता था।

दो वर्ष का हानि-लाभ का चिट्ठा भगवती ने तैयार कर लेखा-निरीक्षक से ठीक करवा लिया था और वह बाबू बेनी माधोसिंह को लिख रहा था कि उनके हिसाब में पहले वर्ष का दस सहस्र और दूसरे वर्ष का पन्द्रह सहस्र का लाभ रखा है, जहाँ कहें वहाँ भेज दूँ।

भगवती अब आय-कर देता था और अपने लाभ पर उसने कर अधिकारियों को दिखा, कर दे दिया था। बाबू साहब का प्रथम वर्ष तो उत्तर ही नहीं आया था और दूसरे वर्ष बाबू साहब स्वयं लखनऊ आ पहुँचे।

उस दिन भगवती तीन बजे दुकान पर पहुँचा तो बाबू साहब उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेज़ के सामने कुर्सी पर बैठे उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। बाबू साहब ने पूछा, "कितने घण्टे मध्याह्न की छुट्टी करते हो?"

"तीन घण्टे की। यहाँ से बारह बजे जाता हूँ और तीन बजे लौट आता हूँ।"

"और कितने घण्टे काम करते हो?"

"नौ घण्टे दुकान पर और कभी-कभी एक-दो घण्टे घर पर भी।"

"इन दो वर्षों में आय कुछ अधिक नहीं हुई।"

"जी। उस सिनेमा हाउस से बाहर वाली दुकान के अनुपात में तो कम है। वहाँ मैंने डेढ़ वर्ष में सात हज़ार पैदा किया था और यहाँ इतनी बड़ी दुकान पर मैंने पहले वर्ष में बीस हज़ार और इस वर्ष तीस हज़ार बनाया है।"

बाबू बेनी माधोसिंह मन में तो यह समझते थे कि उन्नति संतोषजनक है, परन्तु जिस मतलब के लिये वे आये थे, वह उसी प्रकार सम्पन्न होता दिखायी देता था। अतः वे बोले, "हाँ, उन्नति तो हुई है, परन्तु इस दुकान में कितने का 'स्टाक' है?"

"इस समय स्टाक तो अस्सी हज़ार से ऊपर है। पचपन हज़ार तो अपना रुपया ही इसमें है और शेष प्रकाशकों को देना है।"

"देखो, मैं एक प्रस्ताव लेकर आया हूँ।"

"बताइये?"

"मैंने यह मकान तुमको गिफ्ट किया हुआ है।"

भगवती को स्मरण था कि दो वर्ष पूर्व मिस्टर दास ने कुछ ऐसी ही बात बतायी थी। फिर भी भगवती ने बाबू साहब से इस विषय पर कभी बात न होने के कारण अपने को अनभिज्ञ ही बताया। उसने पूछ लिया, "कब से किया हुआ है?"

"दो वर्ष से ऊपर हो गये हैं।"

"परन्तु आपने कभी बताया नहीं। यदि आप बताकर करते तो मैं आपको किसी अन्य के नाम गिफ्ट करने का सुझाव करता।"

"सुशीला के नाम कहते हो न?"

"जी नहीं। परन्तु अब आप कर चुके हैं तो यह बात यूँ ही कर दूँगा, जो आपको करनी चाहिए थी।"

"खैर, तुम्हारी इच्छा है। मैंने तो यह मकान तुम्हारे नाम पर इसके बनते ही कर दिया था। यह तुमसे साझेदारी करने से बहुत पहले था।"

"परन्तु मैंने तो अपने आय के चिट्ठे में इसका किराया खर्चे में डाल दिया है। मेरी आय का निश्चय होकर उस पर 'कर' भी गिना जा चुका है, जो मैंने बैंक में जमा करा दिया है।"

"कुछ हानि नहीं हुई। इन दो वर्षों में मैं यह आय तुम्हारे नाम आगामी वर्ष में दे दूँगा। वह तुम उस वर्ष की आय में दिखा देना। पर मैं तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कहने आया हूँ कि मैंने तुमको दुकान में डालने के लिये पन्द्रह हज़ार दिया है। उसका तुम मुझे ड्राफ्ट दे दो। मेरे भाग का पच्चीस हज़ार लाभ मैं सुशीला के लड़के के नाम लिख देना चाहता हूँ। वह तुम उसे भेज दो। भविष्य में मैं तुम्हारा पत्तीदार नहीं रहना चाहता। तुम जानो तुम्हारा काम जाने। मेरा पन्द्रह हज़ार और सुशीला के लड़के नरेन्द्रपाल को लाभ का रुपया तुम थोड़ा-थोड़ा करके दे देना।"

"भविष्य में भी आप अपने भाग को नरेन्द्रपाल को ही क्यों नहीं दिलवा देते?"

"परन्तु, मैं अपनी शर्त पूरी नहीं कर रहा। साथ ही मैंने कहा था कि रुपया मैं लगाऊँगा और मैं अपना सब रुपया निकाल रहा हूँ।

"यह भी एक कारण था कि मैंने पहले बताया नहीं था। मैं चाहता था कि देखूँ तुम इस दुकान का किराया निकाल सकते हो अथवा नहीं। तुम इस सब को पाकर प्रमादी भी हो सकते थे। किन्तु तुम नहीं हुए। इससे मुझे प्रसन्नता हुई है। अब मैं इस विषय में सब लिखा-पढ़ी करने के लिये वकील को कह रहा हूँ। तुम जगदीश प्रसाद ऐडवोकेट से मिल लेना। अब मुझे दुकान के लाभ-हानि के विषय में पत्र नहीं लिखना।"

"आप मेरे लिये इतना कुछ किसलिये कर रहे हैं? मैं कुछ समझ नहीं सका।"

"परन्तु भगवती चरण, यह तो अभी आरम्भ ही है। शेष सुशीला तुम्हारी माता जी से मिलेगी और बात करेगी।"

बाबू साहब उठ खड़े हुए और बोले, "कभी कलकत्ता आओ तो तुम को कुछ अन्य बात समझाऊँगा।"

"आऊँगा। पिछले मास सुशीला बहन भी आयी थी और कह रही थी कि मुझे कभी-कभी आप से मिलते रहना चाहिए।"

: 9 :

बाबू साहब को विदा कर भगवती दुकान में लौटा तो एक अलमारी के सामने उसने विमला को देखा। वह उसके पास जा पूछने लगा, "कौन-सी पुस्तक देख रही हो?"

"देख तो रही हूँ कोई नावल। परन्तु आयी हूँ आपसे मिलने के लिये।"

भगवती को माँ की मर्यादा वाली बात स्मरण हो आयी। वह सतर्क हो कर बोला, "तो पहले नावल ढूँढोगी अथवा मुझसे मिलोगी?"

"नावल बाद में देखूँगी। फिर आप से कोई मिलने आ जायेगा।"

"तो आओ।" वह उसे अपनी मेज़ के समीप कुर्सी पर बैठाकर पूछने लगा, "चाय मँगवाऊँ?"

"मैं चाय पीने नहीं आयी। मैं आपसे एक बात पूछना चाहती थी। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौसी के सामने पूछ नहीं सकी।"

"तो कुछ माँ के विषय में है?"

"नहीं। वह आपके विषय में है।"

"मेरी कोई बात माँ से छुपी नहीं है। मैं तो यह चाहूँगा कि यदि मेरे विषय में पूछनी है तो मौसी के सामने ही पूछो।"

"किसलिये? क्या आप दुकान की बातें भी मौसी के सामने ही करते हैं?"

"दुकान की बातें मेरी नहीं होतीं, वह दुकान की होती हैं। परन्तु मैं तो माँ का एक अभिन्न अंग हूँ।"

"पर उसमें कुछ मेरी भी बात है। मुझे उनके सामने वह बात करने में लज्जा आती थी।"

"तो ऐसी लज्जा की बात मुझसे कैसे कर सकोगी?"

"उसका सम्बन्ध आपसे ही है। इसलिए आपसे तो करनी है।"

भगवती अब देख रहा था कि विमला अब अपनी बात को युक्ति सहित करती है। परन्तु वह अभी युक्ति में परास्त नहीं हुआ था। उसने कह दिया, "देखो विमला! मैंने बताया है कि मैं और माँ अभिन्न अंग हैं। दूसरे मेरी कोई बात उनसे चोरी नहीं है।"

"मैंने कब कहा है कि उनसे चोरी रखिये। आप बता दें। परन्तु आप मुझे क्यों कहते हैं कि मैं बताऊँ?"

इसने भगवती का मुख बन्द कर दिया। उसने कह दिया, "अच्छा, बताओ बहन! तुम युक्ति में मुझसे आगे निकल गयी हो।"

"मैं कई दिन से विचार कर रही हूँ कि आपसे यह कहूँ, परन्तु किन शब्दों में कहूँ और फिर आप क्या कहेंगे तथा उस कहे का मैं क्या उत्तर दूँगी? यह सब मैं विचार कर चुकी थी। इसीलिये आपको निरुत्तर कर सकी हूँ।"

भगवती ने मुस्कारते हुए कहा, "अच्छा, बताओ! कहीं फिर यहाँ कोई माँ तुल्य न आ जाये।"

"मैं आपसे विवाह करना चाहती हूँ।"

"कैसे करोगी विवाह? तुम तो बहन हो न?"

"आज से बहन नहीं रहूँगी।"

"तो मैं जब बहन कहूँगा तो क्या तुम मेरा मुख बन्द कर दोगी?"

"नहीं। आपकी बात का उत्तर नहीं दूँगी। मैं मानूँगी आप किसी विमला बहन से बात कर रहे हैं, जो मैं नहीं हूँ।"

भगवती की हँसी निकल गई। परन्तु तुरन्त ही गम्भीर हो उसने कहा, "अभी तो तुम्हारा विवाह हो नहीं सकता। तुम्हारी माँ अभी तुम्हारा विवाह नहीं करेंगी।"

"मैं यत्न करूँगी। पहले आप बताइये। आपको क्या आपत्ति है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपत्ति तो कुछ नहीं है। केवल एक बात है।"

"क्या?"

"जब तक विवाह नहीं होता, तब तक बहन-भाई बने रहें तो ठीक है। और फिर मुझे तो यह सम्बन्ध बहुत ही मधुर प्रतीत होता है। और फिर उसमें कुछ शर्तें भी हैं।"

"हाँ, बताइये?"

"यही कि माता-पिता की स्वीकृति से ही यह सम्बन्ध होगा।"

"यदि आपकी माता जी न मानें तो?"

"जब तुम सज्ञान हो जाओगी, तुम्हारे माता-पिता स्वीकार कर लेंगे तो वे मान जायेंगी।"

"परन्तु जब मैं सज्ञान हो जाऊँगी, तब भी माता-पिता की स्वीकृति आवश्यक है क्या?"

"हाँ। वह इसलिए कि मनुष्यों में यह व्यवस्था है कि परिवार के विषय में, आयु और अनुभव में बड़ों का कहा मानना चाहिए।"

"यह तो हमारी स्वतन्त्रता पर आघात हो जायेगा। आप तो बहुत उदार विचार के प्रतीत होते थे।"

"मैं उदार तो उस सीमा तक ही हूँ, जहाँ तक बुद्धि स्वीकार करती है। मैं यह समझता हूँ कि माता-पिता परिवार में सदा माननीय होते हैं।"

"और यदि वे कुछ ऐसा करने को कहें, जो आपको स्वीकार नहीं? मेरा मतलब है, जिसको आपकी बुद्धि नहीं मानती तो क्या करेंगे।"

"पहिले तो मैं उनको समझाऊँगा और यदि वे नहीं माने तो सत्याग्रह कर दूँगा।"

"वह कैसे?"

"निष्क्रिय होकर। मतलब यह कि अपने नकारात्मक व्यवहार से। उदाहरण को मान लो मेरा विवाह किसी लड़की से पसन्द नहीं किया जाता। इसमें प्रश्न उपस्थित होगा कि कौन पसन्द नहीं करता। मेरी माता जी अथवा लड़की के माता-पिता जी। अपनी माता जी को मैं समझा सकता हूँ और यदि समझाने पर मेरी माता जी हठ कर मेरी बात नहीं मानतीं तो मेरा नकारात्मक व्यवहार यह होगा कि मैं विवाह नहीं करूँगा।"

"तो इससे आपके माता-पिता जी को क्या हानि पहुँचेगी?"

"मैं हानि पहुँचाने की बात नहीं कर रहा। मैं अपने-आप पर बन्धन लगा रहा हूँ और माँ के वंश की वृद्धि से, जो मेरा भी वंश है, इनकार कर रहा हूँ।

"हाँ। यदि लड़की के माता-पिता स्वीकार नहीं करते तो मेरा नकारात्मक व्यवहार यह होगा कि मैं उसकी प्रतीक्षा करूँ और जब भी वह आना चाहे, उसे स्वीकार कर लूँ।"

विमला इस सुझाव से प्रसन्न प्रतीत होती थी; परन्तु उसने पूछ लिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यदि आपको लड़की के माता-पिता के मरने तक प्रतीक्षा करनी पड़े तो आप क्या करेंगे?"

"निःसन्देह प्रतीक्षा करूँगा। परन्तु एक बात तुम समझ लो कि प्रतीक्षा लड़की की करूँगा। अपने विवाह की नहीं।"

विमला गम्भीर हो गयी। उसने पूछा, "क्या मतलब है आपका? आप विवाह कर लेंगे और यदि लड़की लम्बी प्रतीक्षा के उपरान्त आयेगी तो उससे भी विवाह कर लेंगे?"

"हाँ, मेरा यही मतलब है।"

"तो आप दो विवाह करेंगे?"

"मैं इसमें हानि नहीं समझता। एक प्रेम का विवाह होगा और दूसरा वंश चलाने के लिये।"

"देखो विमला! मेरी बात को तुम इस प्रकार समझ सकोगी। मान लो मैं लड़की हूँ। मेरा नाम भगवती देवी है और मेरा विवाह, जहाँ मैं चाहूँ, माँ नहीं करती अथवा नहीं करना चाहती, तो मैं विवाह ही नहीं करूँगी।

"हाँ, यदि मेरी माँ तो स्वीकार करती है, परन्तु उस लड़के के माता-पिता पसन्द नहीं करते, जिससे मैं विवाह करना चाहती हूँ, तो भगवती देवी लड़के की प्रतीक्षा करेगी। रही बात उस प्रतीक्षा के समय में किसी अन्य से विवाह करने की, सो वह दूसरा उद्देश्य पूरा कर सकेगी तो कर लेगी। समझती हो?"

विमला नहीं समझी। और भगवती का मुख देखती रह गयी। भगवती समझ गया कि वह नहीं समझ सकी। इस कारण उसने कह दिया, "देखो, भगवती देवी दूसरा विवाह तब करेगी, जब उस विवाह से वह अपना वंश चला सकेगी। यह तुम जानती हो कि लड़की से वंश नहीं चलते। यदि भगवती देवी किसी पुरुष से वंश चलाने का विचार करेगी तो वह भूल करेगी। कारण यह कि वंश तो लड़के का चलेगा। लड़की का नहीं।"

"तो माँ का सन्तान पर कुछ अधिकार नहीं?"

"मैं सन्तान और अधिकार की बात नहीं कर रहा। वंश पिता से पुत्र में और पुत्र से पौत्र में चलता है। लड़की का नाम वंश में नहीं चलता।"

"यह क्यों?"

"यह आज के वार्तालाप का विषय नहीं है।"

"तो क्या विवाह यौन-इच्छाओं की पूर्ति के लिए नहीं होता?"

"वह तो विवाह के अतिरिक्त भी पूरी हो सकती है। अधीर लोग करते ही हैं। वह एक सर्वथा पृथक् बात है। विवाह का मुख्य उद्देश्य परस्पर प्रेमपूर्वक रहना, एक-दूसरे के सुकृत कार्यों में सहायक होना है और वंश चलाना है। दोनों एक ही पत्नी से न हो सकें, तो दो अथवा दो से अधिक विवाह भी किये जा सकते है।"

"मैं तो यौन-इच्छाओं से प्रेरित हो कर यह बात करने आई हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो अति क्षुद्र भावना है।"

"पर जब यह कष्ट देने लगे तो क्या किया जाये?"

"इस पर नियन्त्रण करने का उपाय किया जाये। माँ से बात करोगी तो वह तुमको बतायेगी कि यह कैसे किया जा सकता है।"

"एक दिन मैंने मौसी से कहा था मैंने विवाह की बात नहीं कही। केवल यह ही कहा था कि मेरी ऐसी इच्छा होती है। तो वे बोलीं, 'माँस, मछली और अण्डा खाना बन्द कर दो।'

"मैंने इस दिशा में यत्न आरम्भ कर दिया है। परन्तु मन में विचार आया कि विवाह ही क्यों न कर लूँ। इस मतलब के लिये मेरा मन आप पर स्थिर हो चुका है। आज से नहीं, पिछले तीन वर्षों से। इस कारण ही आपसे बात करने चली आई हूँ।"

"विमला! तुम बहुत अच्छी हो। तुम से विवाह करना मेरे लिए सौभाग्य की बात होगी। इस विवाह में मेरी माता जी बाधक नहीं होंगी। मैं उनके स्वभाव को जानता हूँ। परन्तु मैं समझता हूँ कि तुम्हारे माता-पिता इसे पसन्द नहीं करेंगे।"

"क्यों? वे तो सदा आपकी प्रशंसा करते रहते हैं।"

"मैं ठीक-ठीक कारण कह नहीं सकता। परन्तु मेरा मन कहता है।"

"आप उनसे पता करिये?"

"अभी नहीं।"

"क्यों?"

"तुम अभी अल्पायु हो। तुमको संयम से रहना चाहिए। तब तक तुम मेरे लिए बहन ही रहोगी। जब तुम अपनी शिक्षा समाप्त कर लोगी, तब यदि तुम्हारी इच्छा मुझसे विवाह की हुई तो मैं तुम्हारे पिता जी से पूछ लूँगा। और उसके उपरान्त के व्यवहार की बात मैं बता चुका हूँ।"

"मैं इस वर्ष मैट्रिक की परीक्षा दूँगी। इसके उपरान्त क्या पढ़ूँ, यह निश्चय नहीं कर सकी। हमारे समुदाय में लड़कियाँ जीविकोपार्जन के लिये पढ़ती हैं। मेरे लिये यह समस्या नहीं। कुछ लड़कियाँ इसलिये स्कूलों-कालिज़ों में जाती हैं, क्योंकि उनको करने के लिये कुछ काम नहीं होता। मेरे पास तो करने को बहुत काम है।"

"सत्य! तब तो बहुत अच्छी बात है। मैं विमला बहन को बधाई देता हूँ कि उसके पास जीवन में करने के लिए काम है।"

"हाँ। परन्तु मैं आपको बताऊँगी नहीं।"

"क्यों?"

"आप मेरी हँसी उड़ायेंगे। जब मैं वह काम करके दिखाऊँगी, तब आप मेरी प्रशंसा करेंगे।"

भगवती विचार करने लगा था कि यह लड़की तो बहुत ही रोचक होती जाती है। फिर उसने यह जानने का यत्न नहीं किया कि उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मस्तिष्क किस काम में व्यस्त रहता है। इतना तो वह समझ गया कि यह बुद्धिशीला जीव है।

: 10 :

इस वार्त्तालाप के उपरान्त विमला ने आमिष भोजन का सर्वथा त्याग कर दिया। मिर्च-मसाले भी खाने कम कर दिये। वह बहुत प्रातःकाल उठ कर राधा के साथ स्नान-ध्यान में लीन होने के लिए आने लगी। इसके साथ भगवती चरण ने भी एक बात की। उसने दुकान की ऊपर की मंज़िल पर एक कमरा अपने सोने के लिए फिट करा लिया। मकान के ऊपर की दो मंज़िलें भाड़े पर दी हुई थीं। उनका भाड़ा तीन सौ रुपया महीना आता था। उनमें एक कमरा था, जो पहले दुकान का टूटा-फूटा सामान रखने के लिए प्रयुक्त होता था। इसे खाली करा, इसके साथ गुसलखाना-टट्टी बनवा ली और पहले मध्याह्न के समय और फिर रात के समय भी वहाँ रहने का उसने प्रबन्ध कर लिया।

भगवती के इस प्रबन्ध से राधा को सन्तोष हुआ। एक दिन भगवती ने माँ को दुकान पर ले जाकर वह कमरा दिखाया तो माँ ने पूछा, "इसे भी किराये पर दोगे?"

"नहीं माँ! यह मैंने अपने लिए तैयार कराया है। मध्याह्न के समय तो यहीं आराम करता हूँ। अब रात को भी यहाँ रहने का विचार है। इससे मेरे स्वाध्याय में बहुत सहायता मिलेगी।"

राधा ने कह दिया, "मुझे ये प्रबन्ध पसन्द है। सुना है दास बाबू नौगवाँ की नौकरी छोड़ना चाहते हैं। वे केवल छोटे साहब के आग्रह पर वहाँ रह रहे हैं। वे आ जायेंगे तो मैं भी अपने संरक्षण कार्य से मुक्ति पा जाऊँगी। चितरंजन कुछ कष्ट देने लगा है।"

"और विमला?"

"वह तो अपनी लड़की ही प्रतीत होती है। अब तो वह बहुत ही सादा भोजन करती है। सादे कपड़े पहनती है और दिन-रात पढ़ने में लीन रहती है। अगले मास उसकी परीक्षा है और वह कह रही है कि वह कालेज में नहीं पढ़ेगी।"

"क्यों?"

"वह चित्रकार बनने का यत्न कर रही है। परन्तु वह कहती है कि उसकी इस बात को अभी प्रकट न किया जाये, परीक्षा के उपरान्त वह इस दिशा में विशेष शिक्षा लेना चाहेगी।"

"कहाँ से?"

"यह तो उसने नहीं बताया। परन्तु एक बात उसने और कही है। मैंने उसको उसमें भी आशीर्वाद दे दिया है। परन्तु मैं समझती हूँ कि बेचारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की वह अभिलाषा पूर्ण नहीं होगी।"

"उसके विवाह की बात करती हो माँ?"

"हाँ।"

"मुझसे भी उसने बात की थी। और मैं समझता हूँ कि मेरे यहाँ आने का यह भी एक कारण है।"

"फिर भी भोजन तुम वहाँ ही किया करना। वहाँ से इस स्थान तक पाँच मिनट का ही तो रास्ता है।"

"यह तो है ही।"

इस प्रकार माँ और पुत्र पृथक्-पृथक् रहने लगे। विमला की परीक्षा हो रही थी कि नौगवाँ के राजा बहादुर का देहान्त हो गया। भगवती भी शोक प्रकट करने वहाँ गया। राजा भैया भी वहाँ आये हुए थे। भगवती राजा भैया से मिला तो उसे समझ आया कि पिता के देहान्त पर राजा भैया प्रसन्न हैं। वह अनुमान लगाने लगा था कि सुशीला और उसके घर वाले को अब ज़मींदारी से निकलना पड़ेगा।

वह कुँवर विजय बहादुरसिंह से पृथक् में मिला तो उसने पूछ लिया, "अब राजा भैया का आपसे व्यवहार कैसा है?"

"मैंने मैनेजर साहब की राय से एक सहस्र एकड़ का एक फार्म अपने नाम करा लिया है। उस फार्म के किनारे, रहने का एक मकान सुशीला देवी जी की इच्छानुसार बनवा लिया है। राजा भैया को जमींदारी सौंप, स्वयं फार्म पर चला जाऊँगा।"

"राजा भैया इस बात में किसी प्रकार की बाधा खड़ी नहीं करेंगे?"

"अभी तक तो उनका व्यवहार बहुत ही सहृदयतापूर्ण रहा है। परन्तु कह नहीं सकता कि यह कब तक रहेगा।"

"एक निवेदन मैं करूँ?"

"हाँ, बताओ।"

"आप स्वेच्छा से ज़मींदारी का काम छोड़ दीजियेगा। यह रहेगी नहीं। हाँ, फार्म के विषय में कुछ पायदारी है।"

"कुछ जमींदार कह रहे हैं कि संविधान में जो नागरिक के मूलभूत अधिकार निश्चित हुए हैं, उनकी उपस्थिति में ज़मींदारी ली नहीं जा सकेगी।"

"वे लोग कानून और कानून के आधार को नहीं समझते। यह उनकी भूल है।"

"तो तुम समझने लगे हो?"

"मैं कुछ पढ़ा हूँ। शेष मन से विचार करके बात कह रहा हूँ।"

"अच्छा, हमारे फार्म वाले मकान पर कभी आओगे?"

"अब मैंने एक मोटरगाड़ी खरीद ली है। इससे सुगमता से किसी रविवार के प्रातः आकर, रात तक लखनऊ लौट सकूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवती तो एक दिन के लिए ही शोक प्रकट करने आया था और वह मिस्टर दास के बँगले पर रहा था। वह रात की गाड़ी से लौट जाने वाला था। रात के भोजन के समय मिस्टर दास ने भी राजा भैया की चर्चा चला दी। उसने कहा, "मुझे विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि राजा भैया राजा बहादुर के तेरहवें के उपरान्त छोटे साहब को ज़मींदारी से निकालने वाले हैं।"

"उनके फार्म से भी?"

"कानून से तो वे ऐसा कर नहीं सकते। कानून से तो वह तुम्हारे नाम का पट्टा भी रद्द नहीं कर सकते, परन्तु वे जो कुछ भी कर दें, सम्भव है।"

"आपने छोटे साहब से बात की है?"

"छोटे साहब तो बात उगल देंगे। इस कारण रमणी सुशीला से मिलकर बता आयी है। मुझे कुछ ऐसा समझ में आ रहा है कि यहाँ फौजदारी हो जायेगी।"

भगवती ने लखनऊ जाकर सुशीला देवी को एक पत्र लिखा और उसे उस बात की सम्भावना बताई, जिसका उल्लेख मिस्टर दास ने किया था। साथ ही अपना सुझाव उपस्थित कर दिया कि वह अपने पति और बच्चों के साथ लखनऊ में आकर रहने लगे तथा फार्म पर एक सुपरिन्टेन्डेण्ट मुकर्रिर कर दे। वह वहाँ पर ऐसे ही जाते रहें, जैसे वह अपनी पच्चीस बीघा भूमि को देखने नौगवाँ आया करता है।

परन्तु स्थिति द्रुत-गति से बदली। तेरहवें के एक दिन बाद राजा भैया ने छोटे साहब और उसकी पत्नी को एक तिनका भी लिए बिना कोट से निकाल दिया। वह सब नौकर-चाकर, जो छोटे साहब के सहायक और अनुकूल थे, एक दिन पहले ही उन सब को निकाल दिया गया था।

छोटे साहब की मोटर भी जब्त कर ली गयी। अतः वे पैदल ही अपने फार्म पर गये। परन्तु उनके बने मकान के बाहर राजा भैया के पचास सिपाही बैठे थे और उनको वहाँ रहने नहीं दिया गया।

फार्म कोट से दो मील के अन्तर पर था। वे वहाँ से बैरंग लौट आये। उनका विचार था कि स्टेशन पर जायें । मार्ग में वह दास बाबू के बँगले पर पहुँचे तो पता चला कि दास बाबू उपनी पत्नी के साथ मध्याह्नोत्तर तीन बजे ही मोटर-गाड़ी में चले गये हैं। छोटे साहब अपनी पत्नी के साथ स्टेशन पर चले गये और वहाँ स्टेशन मास्टर के क्वार्टर में रात की गाड़ी के समय तक ठहरे।

अगले दिन प्रातःकाल छोटे साहब, सुशीला देवी और दो बच्चे लखनऊ में दास बाबू की कोठी पर आ गये। दास बाबू ने उनको वहाँ स्नान इत्यादि करने को कहा। उन्होंने बताया, "अभी अल्पाहार के समय भगवती भी आ रहा है। तब आप अपने रहने का प्रबन्ध कर सकेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रातःकाल के अल्पाहार के समय भगवती दास बाबू की कोठी पर पहुँचा तो छोटे साहब और उनके परिवार को देख हँस पड़ा। वैसे उसे यह सब दास बाबू ने पहले ही बता दिया था। इस समय उसको नई बात यह पता चली कि राजा भैया ने अपने छोटे भाई को फार्म वाले मकान में भी नहीं रहने दिया।

"अब क्या करेंगे, कुँवर साहब?" उसने पूछ लिया।

"यदि राजा भैया मुझे अपने फार्म पर रहने देते तो मैं उनके हमसे सब-कुछ छीन लेने को भूल जाता। मैं उनसे झगड़ा करना नहीं चाहता, परन्तु इस अवस्था में बात विचारणीय हो गयी है।"

"आप अपने भाई पर दावा करेंगे तो आपको फार्म और मकान मिल सकते हैं, परन्तु इसमें पाँच वर्ष लग जायेंगे।"

"यही तो सुशीला कह रही है। परन्तु एक बात यह भी है कि उन्हें इस प्रकार ज़बरदस्ती करने देना भी तो पाप हो जायेगा। मैं न तो महात्मा गांधी हूँ, न ही उनकी नीति को ठीक समझता हूँ। इस कारण भैया के साथ मुकदमा होगा।"

"परन्तु आपने तीन वर्ष से अधिक काल तक वहाँ रहते हुए भी अपने साथी तैयार नहीं किये, जो राजा भैया को ऐसा करने से रोक सकते।"

"मैं तो यह आशा करता था कि यह ज़मींदारी मेरी नहीं हो सकेगी। इसी कारण यह फार्म ले लिया था, परन्तु वहाँ से निकालते समय तो भैया ने मुझे मेरा हजामत का सामान भी लेने नहीं दिया। मेरे बैंक के कागज़ और चेक-बुक भी वहाँ है।"

"मैंने तो," दास बाबू ने कह दिया, "अपना त्याग-पत्र आज से पाँच दिन पहले ही दे दिया था। उसमें यह भी लिखा था कि वे तुरन्त अपना आदमी भेज, चार्ज ले लें। मैंने अपने वहाँ से चले आने का दिन और समय भी लिख दिया था।

"मुझे भय था कि मेरे साथ किसी प्रकार का बल प्रयोग किया जायेगा। मैंने इसका प्रबन्ध डिप्टी-कमिश्नर और थानेदार को कह, कर रखा था। पिछले चार दिन से दस पुलिस कॉन्सटेबल बन्दूकों के साथ बँगले पर बैठे रहते थे।

"मेरे आने के साथ ही वे गये हैं।"

नाश्ता समाप्त होने तक भगवती ने कह दिया, "सुशीला बहन! हजरतगंज वाले मकान में पहली मंजिल, सिवाय एक कमरे के, सब खाली पड़ी है। आप अभी वहाँ चलकर रह सकती हैं।"

"और उस कमरे में कौन रहता है?"

"सुशीला देवी जी का छोटा भाई वहाँ पढ़ता-लिखता और सोता है।"

रमणी ने पूछ लिया, "तो तुम यहाँ माँ के पास नहीं रहते? मैं समझी थी कि आज रात के लिए ही तुम वहाँ गये हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी, मैं पिछले छः मास से वहाँ रह रहा हूँ। मेरा स्वाध्याय यहाँ ठीक नहीं हो सकता था। मैं खाना खाने यहाँ आया करता था।"

सुशीला ने अपने पति से पूछ लिया। इस प्रबन्ध को सबसे ठीक समझ, वे वहाँ जाने को तैयार हो गये। सुशीला ने अपने पिता को तार दे, लखनऊ बुला लिया और भगवती कुँवर साहब को लेकर वकील से नोटिस तैयार कराने चल पड़ा।

: 11 :

बाबू बेनी माधोसिंह लखनऊ आये तो सरकारी अधिकारियों से मिलने लगे। जब वह राज्य के मुख्यमंत्री से मिले तो उनकी बात सुन, वह चकित रह गया। बाबू साहब ने राजा भैया का पूर्ण इतिहास बताकर यह कहा, "अपने पिता के मरते ही उसने गाँव में पहुँच, उत्पात मचाना आरम्भ कर दिया है।"

मुख्यमंत्री अति विवेकी व्यक्ति थे। वे गम्भीर हो बोले, "इसमें व्यक्ति का दोष नहीं। यह सामाजिक व्यवस्था का दोष है। हम इक्का-दुक्का व्यक्ति को लेकर सुधार नहीं कर सकते। हम तो समाज को इस वर्तमान दुर्व्यवस्था से सुधारने का यत्न करना चाहते हैं।"

"पर साहब, उसमें तो समय लगेगा। तब तक तो गाँव के ज़मींदारी के सहस्रों व्यक्ति पीड़ित रहेंगे।"

"यह ठीक है। व्यक्तिगत मामलों के लिए न्यायालय खुले हैं। हम तो इस सब दुर्व्यवस्था का डंक ही निकालने का यत्न कर रहे हैं। न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी।"

बाबू साहब समझे कि यह व्यक्ति कुछ अधिक पढ़ा-लिखा आदमी नहीं है। देहातों में स्वराज्य-आन्दोलन करता-करता मुख्यमंत्री बन गया है। उसने विचार किया कि एक-दो शिक्षा और अनुभव की बातें इस साहब को भी दे दें तो ठीक रहेगा। उसने पूछ लिया, "डंक से आपका क्या अभिप्राय है?"

"वास्तविक बात यह है कि जब और जहाँ सीमा से अधिक धन एकत्रित होता है, तब वहाँ अन्याय और अत्याचार होने लगते हैं, इस कारण हम सबको सीमा के भीतर ले आना चाहते हैं। ये बड़ी-बड़ी ज़मींदारी नहीं रहेंगी। और ये हरामखोर ज़मींदार स्वयमेव न्यायप्रिय हो जायेंगे।"

"तो आप ज़मींदारी की सब आय गरीब जनता में बाँट देंगे?

"इससे क्या लाभ होगा? गरीब की जेब में रुपया गया तो वह शराब पीने लगेगा, भाँग-चरस का सेवन करने लगेगा हम इस रुपये से देहातों में स्कूल खोलेंगे, हस्पताल चलायेंगे और अन्य सामाजिक सुविधाएँ जनता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को देंगे।"

"यह तो बहुत ही कल्याण का कार्य होगा। परन्तु श्रीमान, पाप और अधर्म तो एक मन की स्थिति का नाम है। उसके लिए आप क्या करेंगे? यदि मन कलुषित रहे तो कम आय में भी तो पाप हो सकते हैं।"

"नहीं, ऐसा नहीं है। सब पाप की जड़ धन को एक स्थान पर एकत्रित हो जाना है।"

बाबू बेनी माधोसिंह ने कहा, "परन्तु देखने में तो यह आता है कि निर्धन लोग शराब अधिक पीते हैं। चरस, अफीम और अवैधानिक यौन-सम्बन्ध अधिकतर निर्धनों में ही देखे जाते हैं।"

"यह इसलिये कि उनको शिक्षा नहीं मिली। निर्धनता के कारण उनके मनोरंजन के साधन सीमित होने से वे इस प्रकार के दुर्व्यसनों में फँस जाते हैं।"

"यही तो मैं अर्ज कर रहा था कि अन्याय, अत्याचार, पाप, अधर्म ठीक शिक्षा न मिलने से होते हैं। इसमें धन, होना न होना, कारण नहीं है। आप धनियों को निर्धन बनाने के स्थान पर, उनको शिक्षित क्यों नहीं बनाते?"

"यह हम कैसे कर सकते हैं?"

"जैसे निर्धनों को शिक्षा देंगे, वैसे धनियों को भी तो ठीक शिक्षा दी जा सकती है। स्वेच्छा से तो निर्धन भी अपने बच्चों को पढ़ने के लिये नहीं भेजेंगे।"

"क्यों नहीं भेजेंगे? जब उनको पता लगेगा कि उनके बच्चे मैट्रिक पास करने पर सौ रुपये मासिक वेतन पर रखे जायेंगे, तो भेजेंगे। अजी साहब, स्कूलों में भीड़ लग जायेगी। हमको स्कूल दिन-रात चलाने पड़ेंगे। यहाँ भी फैक्टरियों की भाँति ही चार-पाँच शिफ्ट चलेंगी।"

बेनी माधोसिंह स्वयं शिक्षित व्यक्ति था। उसने पैंसिल-कापियाँ बेचते-बेचते लाखों की सम्पत्ति बनायी थी और वह समझ रहा था कि उसका दिमाग इस धन एकत्रित होने से खराब हो गया है क्या? उसने मुख्यमन्त्री महोदय को एक अन्तिम सीख देने के विचार से कह दिया, "क्षमा करें श्रीमान! आपका कीमती समय एक अनपढ़ आदमी ले रहा है। पर मैं जाने से पहले एक बात कहना चाहता हूँ कि शराबखोरी और अन्य प्रकार के व्यभिचार जहाँ निर्धनों में अधिक हैं, वहाँ ये मैट्रिक, एफ॰ ए॰ और बी॰ए॰ पासों में उनसे भी अधिक हैं। मेरी बात का प्रमाण चाहते हैं तो वकील, डाक्टरों और इन्जीनियरों में गणना करा कर देख लीजिये। शराब और व्यभिचार इनमें अनपढ़ों से कुछ अधिक ही हैं।

"आप किसी काल्पनिक चोर को पकड़कर उसकी पिटाई कर रहे हैं। इससे देश और समाज का भला नहीं होगा।

"मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। मैं अभी बालक ही था, तो एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात पिताजी ने हल्ला करना आरम्भ कर दिया, 'चोर-चोर'। बस फिर क्या था, घर के और पड़ोस के लोग लाठियाँ लेकर घर में घुस आये और जिस कोने में पिताजी ने संकेत किया, वहाँ लाठियाँ चलने लगीं। लाठियाँ खट-खट चलीं। वे किसी पर ऐसे पड़ती रहीं, जैसे किसी हट्टे-कट्टे मनुष्य पर पड़ रही हैं। परन्तु लाठियाँ खाने वाले ने चूँ तक नहीं की। आखिर पिताजी ने कहा, 'बस करो। यह तो मर गया मालूम होता है।'

"इस समय माँ अपने कमरे में दीपक जलाने के लिये दियासलाई ढूँढ रही थी। चोर से डर जाने के मारे वह भूल ही गयी थी कि सोने के पहले दियासलाई कहाँ रखी थी। आखिर दियासलाई मिली। काँपते हाथों से उसने दिया जलाया। दिया लेकर वह डरती-डरती उस कमरे में गयी जहाँ चोर की पिटाई हो रही थी। तब तक लाठियाँ ले चोर की मरम्मत करने आये लोग चोर के मर जाने की आशंका से भयभीत, वहाँ से खिसकने लगे थे। माँ कमरे में दाखिल हुई। प्रकाश में देख, माँ हँसने लगी। सायंकाल हमारा सेवक रामदास एक बोरे में उपले लाया था और माँ ने वह बोरा उस कमरे के एक कोने में रखा लिया था। चोर पकड़ने आये लोगों की लाठियों से सब उपले चूर-चूर हो चुके थे।

"माँ ने अपने पति देवता से पूछ लिया, 'यह आपने क्या किया है? यह तो उपलों का बोरा था।'

"सब लोग हँसते हुए अपनी मूर्खता पर लज्जित हो, चल दिये।"

बाबू बेनी माधोसिंह उठ खड़ा हुआ। हाथ जोड़ नमस्कार कर चलने की छुट्टी माँगने लगा, तो मुख्यमंत्री ने कह दिया, "देखो, बाबू साहब! मैं और पण्डित जवाहरलाल तथा उनसे भी ऊपर कार्लमार्क्स और लेनिन आपके पिता की भाँति गँवार और अनपढ़ नहीं हैं। आपको यह समझ लेना चाहिए कि आज भी मैं जब लैक्चर में कहीं जाता हूँ तो लाखों लोग मेरी बात सुनने के लिये एकत्रित हो जाते हैं। आपके पिता की बात कौन सुनने आता था। यह कहानियाँ आप बच्चों को सुनाया करिये।"

बेनी माधोसिंह बिना अपनी बात समझाये लौट आया। उसने प्रान्त के राज्यपाल से भी समय लिया हुआ था। वह उनसे भी मिला और वहाँ भी राजा भैया के कारनामे सुना, उसने कहा, "सन् 1946 में गवर्नर बहादुर ने इस आदमी को ज़मींदारी में घुसने पर प्रतिबन्ध लगा रखा था।"

राज्यपाल सब कथा सुन बोले, "हमने यह एक गुर बना रखा है कि जो कुछ अंग्रेज़ करते थे, वह राष्ट्रवादियों को पीड़ित करने के लिये करते थे। यदि तब गवर्नर ने अपने हुक्म से नौगवाँ के राजकुमार को ज़मींदारी से निकाला था तो कुँवर साहब अवश्य देशभक्त रहे होंगे। इस कारण हमारी उनसे सहानुभूति ही हो सकती है।

"सिद्धान्त है कि शत्रु का शत्रु मित्र होता है। अंग्रेज़ हमारा शत्रु था, उसका शत्रु हमारे मित्र के अतिरिक्त कुछ हो ही नहीं सकता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबू बेनी माधोसिंह ने राज्यपाल की नीति की बात को झुठलाने में लाभ नहीं समझा। इस कारण इस वाद-विवाद में न पड़ उसने कह दिया, "आप जाँच करवाकर देख लीजिये कि यह अंग्रेज़ी काल का अंग्रेज़ों का शत्रु, राज्य के अनुकूल है क्या?"

"मैं कैसे जाँच करा सकता हूँ। मैं कानून और व्यवस्था के विषय में कुछ नहीं कर सकता।"

"आप क्या कर सकते हैं?"

"कुछ नहीं। जो मुख्यमंत्री कहें। वह मुझको मानना होता है।"

"मैं मुख्यमंत्री से मिल आया हूँ वे कहते हैं कि यह सब दुर्व्यवस्था अनायास धन के एक स्थान पर एकत्रित हो जाने के कारण है।"

राज्यपाल महोदय हँस पड़े। परन्तु मुख्यमंत्री के इस सैद्धान्तिक कथन का खण्डन नहीं कर सके। वह पाँच हज़ार रुपया मासिक वेतन पा रहे थे। एक विशाल कोठी, नौकर-चाकर, टेलिफोन, बिजली और अनेक प्रकार की सुख-सुविधाओं का भोग कर रहे थे। यह सब वह मुख्यमंत्री और फिर देश के प्रधानमंत्री की कृपा के कारण ही समझ रहे थे। वह यह भी समझते थे कि अंग्रेज़ी काल में छः-सात बार जेल-यात्रा का यह प्रतिकार था। फिर भी वह यह सब अनायास ही मानते थे।

वह मन में विचार करने लगे थे कि क्या वह भी इसी ज़मींदार की भाँति आततायी हो जायेंगे? उन्हें राज्यपाल बने दो वर्ष से ऊपर हो चुके थे, उनका बैंक में जमा धन दो वर्षों में पैंतालीस रुपये पाँच आने से बढ़ कर डेढ़ लाख से ऊपर हो गया था। वे अब रात के समय एक-दो पैग ऐक्शा नम्बर एक के लेने लगे थे। साथ ही उनको अपनी पत्नी का वियोग, जिसको मरे बीस वर्ष से ऊपर हो चुके थे, सताने लगा था।

अनायास आये धन की बात से ये सब विचार उनके मन में उठने लगे थे। इन विचारों से बाबू साहब ने उनको बाहर निकालने का यत्न किया। वे बोले, "मैं उनसे भी कहता हूँ और आप से भी कहता हूँ, यह सिद्धान्त मिथ्या है। लोग धनी होते हैं भाग्य के कारण, मानसिक वृत्ति आती है कुशिक्षा के कारण। पाप-पुण्य सामाजिक कर्म नहीं। यह व्यक्तिगत व्यवहार से उत्पन्न होते है। इस कारण समाज को पीटने के स्थान, असली चोर अर्थात् कुशिक्षा को दूर करने से सुधार होगा। विकृत मानसिक प्रकृति वाला धनी, यदि असीम हानि कर सकता है तो श्रेष्ठ मानसिक प्रकृति वाला धनी, अमित कल्याण भी पहुँचा सकता है।"

राज्यपाल महोदय को यह सिद्धान्त चित्त को शान्ति देने वाला समझ में आया। उसे भी अपनी अनायास आय भाग्य के कारण समझ आने लगी। वह प्रसन्न हो गया। पूछने लगा, "आप क्या चाहते हैं?"

"मैं चाहता हूँ कि अपने राज्य-पद का सदुपयोग करते हुए नौगवाँ के छोटे कुँवर साहब को दिया गया फार्म दिलवा दें। उनका माल-मकान जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनियमित ढंग से छिन गया है, वापस दिलवा दें। आप एक बार बड़े साहब को बुलाकर जरा डाँट दें तो बात बन सकती है।"

"परन्तु इसके लिए आप न्यायालय का द्वार क्यों नहीं खटखटाते?"

"वहाँ चारागोई की जा रही है, परन्तु वहाँ निर्णय होते-होते दस वर्ष भी लग सकते हैं। तब तक धन, समय और परिश्रम व्यर्थ जायेगा।"

"बात तो ठीक है। हम यत्न तो कर ही सकते हैं। अच्छा, मैं अपने सैक्रेटरी को बुलाता हूँ। आप उसे सब लिखा दीजिये। फिर गुत्थी को सुलझाने का यत्न करेंगे।"

राज्यपाल महोदय ने घंटी बजायी तो एक सुन्दर युवक कमरे में आ गया। राज्यपाल ने कहा, "मिस्टर आनन्द! इनके मामले के नोट ले लो और हमको बाद में समझा देना।"

इतना कह, राज्यपाल महोदय ने बेनी माधोसिंह को मिस्टर आनन्द के साथ दूसरे कमरे में भेज दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ परिच्छेद

उच्च-स्तरीय ईसाइयों की एक सभा हो रही थी। भारत में स्वराज्य प्राप्ति से सबसे बड़ा धक्का ईसाई मज़हब का प्रचार करने वालों को लगा था। वे समझे थे कि स्वराज्य सरकार एक हिन्दू सरकार होगी और हिन्दू सब मज़हबों की भाँति राज्य-बल से अपने मज़हब को संरक्षण देंगे और उसका संवर्धन करेंगे। पाकिस्तान तो स्पष्ट रूप से एक इस्लामी राज्य बनने जा रहा था। उसका निर्माण ही इस्लाम को आधार मान कर किया गया था। इसका आवश्यक परिणाम यह समझा जा रहा था कि भारत हिन्दू राज्य होने जा रहा है।

अंग्रेज़ी सरकार इस देश से 1947 अगस्त के महीने में निकली तो यहाँ पर कांग्रेस सरकार स्थापित हो गयी। कांग्रेस के कुछ नेताओं, विशेष रूप में महात्मा गांधी के आग्रह पर कांग्रेस के अतिरिक्त भी कुछ दलों के लोग अन्तरिम सरकार में सम्मिलित कर लिए गये। इस आधार पर ऐंग्लो-इण्डियन समुदाय का एक प्रतिनिधि भी सम्मिलित किया गया।

फिर भी भारतीय ईसाई समुदाय, जो अंग्रेज़ी सरकार के दिनों में सुविधाएँ भोगा करता था, स्वराज्य काल में भी वैसे भोग की आशा नहीं करता था, परन्तु कांग्रेस सरकार ने अपने-आपको धर्मनिरपेक्ष घोषित किया। इससे ईसाइयों को, विशेष रूप में भारतीय ईसाइयों को सांत्वना मिली। इससे उत्साहित हो, भारतीय ईसाइयों की एक कान्फ्रेंस का आयोजन हुआ। मिस्टर हरिमोहन दास इस कान्फ्रेंस के स्वागताध्यक्ष बने और कान्फ्रेंस बन्द कमरे में की गई। लगभग एक सौ वरिष्ठ भारतीय ईसाई एकत्रित हुए और उसमें कुछ निर्णय किये गए। इन निर्णयों की पृष्ठभूमि यह थी कि भारतीय ईसाइयों की संख्या देश में बहुत कम है और वे विशेष सुरक्षा के आकांक्षी हैं यदि इनको सरकार की ओर से संरक्षण न दिया गया तो इस समुदाय का अस्तित्व ही मिट जायेगा।

मिस्टर ब्राउन पिछले बीस वर्ष से हिन्दुस्तान में कार्य कर रहे थे और सरकारी क्षेत्रों में बहुत मान पाते थे। वे अपने को उस सब मान-प्रतिष्ठा से वंचित हो जाने की आशंका करते थे, परन्तु वे हिन्दू नेताओं की ईसाइयों और ईसाई-धर्म के प्रति सहृदयता देख, अब वैसे ही हाथ-पैर चलाने लगे थे, जैसे वे अंग्रेज़ी सरकार के काल में चलाया करते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यद्यपि मिस्टर जोन्ज़ ब्राउन भारतीय ईसाई नहीं थे, परन्तु वे अपने को इस समुदाय का स्वाभाविक संरक्षक मानते थे और वे आरम्भ से अन्त तक इस कान्फ्रेंस की आत्मा की भाँति इसमें कार्य करते रहे।

हरिमोहन दास इस प्रकार के आन्दोलन में किसी प्रकार की अभिरुचि नहीं रखता था, परन्तु अपने समुदाय में अपनी आर्थिक अवस्था के कारण और उच्च सरकारी पद पर रहते हुए रिटायर होने के कारण विशेष मान-प्रतिष्ठा रखता था। वह अपने सजातियों के विशेष आग्रह पर ही इस कान्फ्रेंस का स्वागताध्यक्ष बना था।

मिस्टर ब्राउन की समझ में आया कि मिस्टर दास अपने समुदाय की हीन अवस्था देखकर उसमें पूर्व से अधिक अभिरुचि लेने लगा है। इससे उत्साहित हो, वह अपने मन में चिरकाल से उठ रही बात उसको कहने के लिए तैयार हो गया।

कान्फ्रेंस समाप्त हो चुकी थी और बाहर से आये हुए डेलिगेट विदा किये जा रहे थे। हरिमोहन मद्रास-कोचीन के दो डेलिगेटों को विदा कर, रेल के स्टेशन से लौटने लगा तो ब्राउन भी उसके साथ ही मोटर-गाड़ी पर वापस आ गया।

यह सुअवसर देख, ब्राउन ने कहा, "मिस्टर दास मैं बहुत दिनों से आपसे एक विषय पर बात करने वाला था। मैं समझता हूँ कि आप बुरा नहीं मानेंगे।"

दास विचार कर रहा था कि वह रविवार के दिन गिरजाघर न आने के विषय में कहने वाला है, इससे वह अपनी सफाई देने की विचारित बात कहने के लिये उद्यत हो गया। परन्तु ब्राउन साहब ने बात दूसरी ही आरम्भ कर दी। उसने कहा, "आपके घर में एक हिन्दू औरत रहती है। वह अपने को आपके बच्चों की गवर्नेस कहती है। मुझे विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि वह आपके बच्चों की सत्यधर्म में निष्ठा को कम कर रही है।"

दास बाबू समझ गया कि ब्राउन राधा के विषय में कह रहे हैं। इस कारण उसने कह दिया, "मुझे ऐसी कोई बात समझ में नहीं आ रही। यह ठीक है कि वह औरत हमारी होली बाइबिल नहीं पढ़ी हुई, परन्तु मैंने उसे बच्चों को बाइबिल पढ़ाने के लिए घर पर नहीं रखा है। जब तक मैं नौकरी करता था, मुझे अपनी पत्नी के साथ स्थान-स्थान पर जाना पड़ता था और पीछे बच्चों की देखरेख के लिए मैंने उसे एक विश्वस्त स्त्री समझ, घर में रखा हुआ था। अब तो एक वर्ष से ऊपर हो गया है कि मैं कहीं आ-जा नहीं रहा और वह औरत स्वयं मेरे यहाँ से जाने की बात कह रही है। कठिनाई यह हो रही है कि बच्चे उस औरत से इतनी मुहब्बत करने लगे हैं कि वह उसे जाने नहीं देते।"

"आप उसको कितना वेतन देते हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वेतन नहीं देता। वह नौकरी नहीं करती। वह अपना खाना-पीना भी अपने खर्चे पर करती है। उसका लड़का हजरतगंज में एक बहुत बड़े बुक स्टाल का मालिक है।"

"बहुत विचित्र है कि आप उस 'हीदन' औरत को अपने बच्चों में रखे हुए हैं। वह अपने ज़ाहिल मज़हब का प्रचार करती रहती है।"

"सत्य? यह आपको किसने बताया है?"

"उस दिन चितरंजन बता रहा था।"

"पर उसे आपको बताने से पहले मुझे बताना चाहिए था। मुझे इस बात का बिलकुल इल्म नहीं कि वह औरत हीदन है और बच्चों में अपने ही मज़हब का प्रचार कर रही है। मैं चितरंजन से पता करूँगा।"

"परन्तु आपको इतना तो स्वयं ही पता चल जाना चाहिए था कि वह एक हीदन औरत है।"

"मुझे तो यह पता है कि वह एक खुदादोस्त औरत है। वह परमात्मा से डरती है। बुराइयों से दूर रहती है। खुदाई दस आदेशों का मुझसे ज्यादा पालन करती है।"

"परन्तु वह प्रभु यीशु मसीह को खुदा का बेटा नहीं मानती। यह चितरंजन ने बताया है।"

"वह अपने को खुदा की पुत्री मानती है और कहती थी कि इस नाते प्रभु यीशु मसीह उसका भाई हुआ। मगर वह तो अब है नहीं। परमात्मा ने उसे अपने घर में बुला लिया है, परन्तु उसकी बहन तो है और उसके सब न सही, कुछ गुण तो उसमें हैं ही।"

ब्राउन गम्भीर हो, इस विषय में विचार करने लगा था। इसी समय मोटर ब्राउन के मकान, जो गिरजाघर के पिछवाड़े में था, के सामने जा पहुँची। मिस्टर ब्राउन ने दास को चाय पर आमंत्रित कर लिया। दास भी समझता था कि बात समाप्त नहीं हुई। इस विषय में ब्राउन को भली प्रकार सूचित कर देना ठीक ही रहेगा। इस कारण उसने ब्राउन साहब का निमंत्रण स्वीकार करते हुए कहा, "और इस रुचिकर वार्तालाप को और सुनने को सौभाग्य आज मिला है, तो आपसे शेष बात भी जान सकूँगा।"

ब्राउन भी वास्तव में आज अपने मन की बात कहने का निश्चय किये हुए था। उसने दास बाबू को भीतर मकान के ड्राइंग-रूम में बैठाते हुए कहा, "मैं तो इस विषय में आपसे बात करने का विचार तब से ही कर रहा था जब से यह औरत और इसका सुन्दर लड़का आपके घर में आये थे। आरम्भ में तो मैंने यह समझा था कि यह आपकी कोई मिस्ट्रेस है, परन्तु बच्चों से और आपके बैरे लतीफ से बहुत पूछ-ताछ करने पर यह समझ गया था। कि ऐसी कोई बात नहीं। साथ ही वह इतनी सादा पोशाक में रहती थी कि उसके मिस्ट्रेस होने पर विश्वास नहीं हो सका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन मैंने आपकी मिसेज़ से भी कुछ पूछा था और उसके उत्तर से भी मैं इसी परिणाम पर पहुँचा था कि ऐसी कोई बात नहीं।

"इससे तो इसके आपके घर में रहने पर और भी अधिक विस्मय हुआ। आजकल आपका बैरा गणपति मेरा बपतिस्मा दिया हुआ है। इस कारण वह मेरे सामने झूठ नहीं बोल सकता।

"उसका कहना था कि आपकी लड़की विमला दास इस औरत के प्रभाव में है और वह लगभग 'एथीस्ट' हो चुकी है। इसी सूचना पर मैं आपसे आज बात कर रहा हूँ।"

दास इस लम्बी बात को धैर्य से बैठा सुनता रहा। मिस्टर ब्राउन का बैरा चाय ले आया था। साथ बिस्कुट थे। ब्राउन ने दोनों के लिए चाय बनाई और पीते हुए अपनी बात कहता गया, "यदि वह लड़की कहीं हिन्दू देवी-देवताओं की पूजा करने लगी, तो हमारे समुदाय पर गहरा प्रभाव पड़ेगा।"

आखिर दास ने कहा, "मुझको यह सब पता है। मैं समझता हूँ कि आपको उसके विषय में चितरंजन और गणपति से पूछने के स्थान पर, मुझसे ही पूछना चाहिए था।

"खैर, अभी भी देरी नहीं हुई। मैं आपको एक-दो, सच्ची-सच्ची बातें बताता हूँ। इस औरत के मेरे घर में आने से पहले मैं ईसाई-धर्म पर विश्वास खो चुका था। मैं न तो परमात्मा को मानता था, न ही हज़रत यीशु मसीह को परमात्मा का बेटा। यह जगत प्रकृति का खेल है और इसके अतिरिक्त किसी भी वस्तु के अस्तित्व पर मुझे विश्वास नहीं था।

"उसकी बातों से मेरा परमात्मा पर पुनः विश्वास होने लगा है। इतना अन्तर है कि परमात्मा का स्वरूप वह नहीं रहा, जो बाइबिल पढ़ने से मन में बना था।"

"तो अब आप परमात्मा के सिर पर मोर-मुकट और कानों में कुण्डल, पीले वस्त्र और उसे पाँव से नंगा मानने लगे हैं। अब परमात्मा को राधा के साथ नाचता हुआ देखने लगे हैं?"

मिस्टर दास हँस पड़ा और हँसते हुए बोला, "मिस्टर ब्राउन! परमात्मा का यह स्वरूप कोई मानता है तो वह वैसे ही समझो, जैसे कोई यह मान ले कि आरम्भ में ईश्वर की आत्मा पानी पर चलती थी।"

"पर यह तो बिलकुल ठीक है।"

"हाँ, और हिन्दुओं के विष्णु भगवान क्षीर सागर पर विचरते थे। दोनों में कुछ अन्तर है तो चित्रकार के रंग भरने का है, चित्र एक ही है।"

मिस्टर ब्राउन दास का मुख देखने लगे। फिर एकाएक बोले, "आप तो अब बूढ़े हो गये हैं। आपकी चिन्ता करनी व्यर्थ है। परन्तु आपकी लड़की के विषय में चिन्ता अवश्य है। वह इन देवी के आगे बकरे चढ़ाने वाली बन जायेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दास हँस पड़ा।

चाय समाप्त हुई तो दास ने कह दिया, "मिस्टर ब्राउन, आप कभी-कभी घर आकर अपने डिविनिटी के ज्ञान का लाभ मेरी पत्नी और बच्चों को दे जाया करें तो मैं बहुत प्रसन्न हूँगा। सायंकाल चाय के समय आप जब भी आयें, आपका स्वागत होगा।"

: 2 :

मिस्टर ब्राउन के वार्तालाप का उल्लेख हरिमोहन और रमणी में आया तो रमणी पर इसका प्रभाव भिन्न प्रकार का हुआ। पूर्ण बात सुनकर रमणी ने कह दिया, "मुझे तो विस्मय इस बात पर हुआ है कि गड़रिया अपनी दुर्बलता की शिकायत भेड़ों से करने लगा है। मैंने भगवती को इस गड़रिये की देखरेख में रखा। भगवती अंग्रेज़ी तो पढ़ गया, परन्तु ईसाई मत उसे छू तक नहीं गया। विमला उनके ही संरक्षण में दस वर्ष तक पढ़ती रही और वह अब गिरजाघर नहीं जाती। मैंने उससे पूछा था कि वह क्यों नहीं जाती, तो वह कहने लगी कि उसे वहाँ किसी प्रकार रस नहीं आता। उसे राधा की पूजा-पाठ में रस आता है।

"मैं समझ रही हूँ कि डाक्टर ब्राउन रात-भर सोता रहता है, स्वाध्याय करता नहीं और किसी भी समझदार व्यक्ति को बाइबल समझा नहीं सकता।"

दास ने कह दिया, "मैं एक दिन भगवती के साथ चाय पी रहा था कि वह बोला, 'बाइबल के पुराने एहदानामे की उत्पत्ति का प्रकरण बहुत गज़ब का है। उसमें सृष्टि-उत्पत्ति की एक सर्वथा वैज्ञानिक बात लिखी है। यह सृष्टि कैसे उत्पन्न हुई, यह उसमें संकेत में लिखी है।'

"मैं उसको बाइबल की तारीफ करते सुन, विस्मय में उसका मुख देखता रह गया। परन्तु जो उसने वर्णन किया, वह चकित कर देने वाला था।

"वह मुझे बाइबल के उत्पत्ति-विभाग के प्रथम अध्याय की प्रथम आयत के अर्थ समझाने लगा।

"उसने बताया कि, heaven का 'H' नहीं है, छोटा है। इसका अभिप्राय है कि हेवन से स्वर्ग और पृथ्वी का अर्थ नहीं है। इसके विशेष अर्थ यह हैं कि आकाश और नीचे के स्थान।

"फिर लिखा है कि, And the earth was without form, and void' अर्थात् इसका कोई रूप नहीं था। अर्थात् यह गोल नहीं थी, ठोस नहीं थीं। यह लम्बी-चौड़ी नहीं थी। यह बहुत सूक्ष्म थी।

"साथ ही लिखा है कि, 'darkness was upon the face of the deep and the spirit of God moved upon the face of the waters.'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उसने बताया कि deep और waters का अभिप्राय जल नहीं हो सकता। कारण यह कि उस समय earth का रूप तो था ही नहीं। तो पानी और समुद्र कहाँ हो सकता था।

"इसके बाद उसने अपने शास्त्र में से इस संसार के बनने की प्रक्रिया बताई और उसको सुनकर मुझे बाइबल की, कम-से-कम इस बात की सच्चाई पर विश्वास हो गया। परन्तु जब मैंने पूछा, 'भगवती, तुमने ये सब अर्थ इन शब्दों में से कैसे जान लिये हैं?' तो उसने बताया, 'अंजील को लिखे गये तीन और चार सहस्त्र के बीच काल व्यतीत हो चुका है। परन्तु मैंने एक ग्रंथ पढ़ा है, जिसको हमारे यहाँ दस-बीस सहस्त्र वर्ष पुराना सहज ही कहा जा सकता है। उसमें यह वृत्तान्त बहुत ही व्याख्या से लिखा गया है। इससे यह सिद्ध होता है कि बाइबल के लिखने वाला उस ग्रंथ से परिचित था और उसका बहुत संक्षेप में ही वर्णन उसमें मिलता है।

"बताओ, यह डाक्टर ब्राउन क्या जानता है?" रमणी आश्चर्यवत् दास का मुख देखती रह गयी। दास ने पुनः कहा, "पर मैं परेशान इस बात से हूँ कि लड़की भगवतीचरण से प्रेम करती प्रतीत होती है और उससे विवाह हो गया तो वह ईसाई नहीं रहेगी।"

"तो फिर क्या होगा? वह इन्सान तो रहेगी?"

"मैं इस स्थिति को अभी मन से स्वीकार नहीं कर सका। हमारी यह सब मान-प्रतिष्ठा जो इस कान्फ्रेंस में हुई, मिट्टी में मिल जायेगी। एक बात तो मैं यह भी देख रहा हूँ कि मैं अपने भारतीय ईसाई समुदाय में बहुत पढ़ा-लिखा और योग्य माना जाता हूँ। परन्तु हिन्दू समुदाय में चला जाऊँ तो एक साधारण रिटायर्ड 'सिविल सर्विस ऑफ दी इंगलिश टाइम्ज' रह जाऊँगा। इस समुदाय में मेरी कुछ गणना ही नहीं रहेगी।"

"इसका अर्थ मैं यह समझी हूँ कि हमको अपनी स्थिति बनाये रखने के लिए न केवल ईसाई बने रहना चाहिए, वरन् हमें ईसाइयों की इस संस्था को भी विख्यात करना चाहिए। इस संस्था का पोलिटिकल स्टेटस् होना चाहिए। इसके बनाने में आपको कुछ करना चाहिए।"

"यह तो मैं कर सकता हूँ। परन्तु कहीं विमला ने भगवतीचरण से विवाह कर लिया तो फिर क्या होगा?"

"तो उसके लिए कोई उचित वर ढूँढ़िये।"

दास बाबू ने कह दिया, "परन्तु यदि भगवतीचरण के साथ लड़की का लगाव हुआ तो वह इनकार कर देगी और उसकी माँ के यहाँ रहते, यह लगाव बढ़ेगा, कम नहीं होगा।"

"तो पहले उसकी माँ को यहाँ से निकालना चाहिए। परन्तु इसमें मैं नहीं कहूँगी। आप कोई ऐसा ढंग चलाइये, जिससे वह अपने-आप चली जाय।"

"ठीक है। मैं पहले डाक्टर ब्राउन को यहाँ बुलाता हूँ। वह इसको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो-चार जली-कटी सुनायेगा तो बात बन जायेगी।"

"करिये। परन्तु ऐसा न मालूम हो कि यह सब-कुछ हमारे करने से ही हो रहा है।"

विमला मैट्रिक में फर्स्ट डिवीजन में उत्तीर्ण हुई थी, परन्तु उसने माँ को कह दिया था कि वह कॉलेज में नहीं पढ़ेगी। माता-पिता को इस पर बहुत विस्मय हुआ। माँ ने उसे बुलाकर पूछा, "विमला, कॉलेज में प्रवेश क्यों नहीं लिया?"

"क्या करूँगी और पढ़कर?"

"तो क्या करोगी?"

"एक काम तो कर रही हूँ। मैं चित्रकला का अभ्यास कर रही हूँ। मेरी एक सहेली है निर्मला माथुर। वह यह अभ्यास किया करती है। मैं भी उसके घर जाकर अभ्यास करने लगी हूँ। एक काम और करना है।"

"वह क्या?"

"विवाह करूँगी।"

"कब?"

"जब योग्य वर मिलेगा।"

"अच्छी बात है।" मिस्टर दास ने कह दिया, "मुझे अपने अभ्यास के चित्र दिखाया करो, जिससे मैं देख सकूँ कि तुम उन्नति कर रही हो अथवा नहीं।"

विमला ने उसी समय अपना बनाया हुआ एक चित्र माता-पिता को दिखा दिया, उसने अभी तक कई महीने के प्रयत्न से यीशु मसीह की सूली पर चढ़े होने की तस्वीर बनायी थी। तस्वीर देख, दास बाबू चकित रह गये। बहुत लोगों ने इस दृश्य को चित्रित किया है, परन्तु इस चित्र में कुछ ऐसा प्रतीत होता था कि हज़रत मसीह का शव सूली पर कीला हुआ है। उनका सिर ढुलक गया है और नीचे सूली के, पाँव के समीप उनके कुछ शिष्य बैठे है। हज़रत का मुख उनको देखता हुआ मुस्करा रहा है।

उसके नीचे कुछ संस्कृत भाषा और रोमन लिपि में लिखा था। मिस्टर दास ने समझा कि यह हैब्र्यू भाषा है। इस पर विस्मय करते हुए उसने पूछ लिया, "यह हैब्र्यू है क्या?"

"जी नहीं, यह संस्कृत है।"

"जरा पढ़ो तो इसको।"

विमला ने पढ़ दिया, लिखा था-

न जायते म्रियते वा कदाचिन्,
नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोएयं पुराणो,
न हन्यते हन्यमान शरीरे॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या मतलब है इसका?"

'यह तो अज है नित्य सनातन,
शाश्वत ही इसको मानो तुम।
नाश नहीं होता है इसका,
नाशवान तन ही जानो तुम॥'

"यह 'कपलैट' किसने बताया है तुमको?"

"मौसी ने एक किताब में से पढ़कर सुनाया था। मैंने तस्वीर उनको दिखाई तो उन्होंने यह बोल दिया। मुझे पसन्द आया। मैंने रोमन अक्षरों में लिखा तो निर्मला सहेली ने इसका हिन्दी में अनुवाद कर दिया। यह भी कविता में है।"

दास बाबू लड़की के मन की भावना समझ, तरल नेत्रों से लड़की की पीठ पर हाथ फेर कहने लगा, "बहुत अच्छा है। चित्त लगा कर करो। यह काम भी अच्छा है।"

माँ ने पूछ लिया, "अब कौन-सा चित्र बना रही हो?"

"मदर मेरी का।"

माता-पिता ने आशीर्वाद दे दिया। और विमला अपने अभ्यास में लीन हो गयी। लड़की के भावों पर राधा का शुभ प्रभाव जान, वे प्रसन्न थे।

एक दिन रमणी ने भगवतीचरण की तस्वीर बनती देखी। विमला अपने कमरे बैठी बना रही थी। माँ ने पूछ लिया, "तो अब निर्मला के घर जाकर नहीं बनातीं?"

"माँ, उसका विवाह हो गया है और वह ससुराल चली गयी है।"

"और यह किसका चित्र बन रहा है?"

"यह अभी पहचाना नहीं जाता?"

"पहचान तो गयी हूँ। परन्तु प्रभु यीशु मसीह और मदर मेरी के उपरान्त यह कुछ जँचा नहीं।"

"बात यह है कि मैं तस्वीर उसकी बनाती हूँ, जिसका चित्र मानस-पट पर बन जाता है। जो आँखें मूँदने पर आँखों के सामने आने लगे, उसका ही चित्र मैं बना सकती हूँ।"

"तो यह तुम्हारे मन पर अंकित हो रहा है?"

"हाँ माँ! जब भी मैं आँखें मूदँती हूँ तो कुछ इसी प्रकार का सामने आ जाता है।" कहते हुए विमला के गाल सुर्ख हो गये।

"इसका कोई फोटोग्राफ है? जरा मिलाकर देखूँ।"

"नहीं माँ! तब तो यह फोटोग्राफ की नकल हो जाती। यह मेरा ढंग नहीं है। मैं तो उन वस्तुओं अथवा लोगों के चित्र खींचती हूँ, जिनका मन पर बहुत गहरा प्रभाव होता है।"

माँ लड़की की इस बात से ही अनुमान लगाने लगी थी कि वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवतीचरण से प्रेम करने लगी है। इन दिनों ईसाइयों का सम्मेलन हो रहा था और उसके अन्तिम दिन ही उक्त वार्त्तालाप हुआ था।

हरिमोहन अपने को ईसाइयों का नेता समझने लगा था और रमणी को इस नेतागिरी में राधा एक बाधा दिखायी देने लगी थी। अतः पति-पत्नी ने लड़की के विरुद्ध साज़िश का विचार कर लिया।

: 3 :

अगले दिन प्रातःकाल नाश्ते पर डाक्टर ब्राउन आ पहुँचे। हरिमोहन ने उन्हें आदर के साथ अपने पास बैठा लिया। तत्पश्चात् डाक्टर साहब का राधा से परिचय करा दिया। परिचय में दास बाबू ने बताया, "डाक्टर साहब ही भगवती को अंग्रेज़ी पढ़ाने की कृपा कर रहे हैं।" राधा ने हाथ जोड़, डाक्टर साहब का धन्यवाद कर दिया।

हरिमोहन ने मुस्कराते हुए कहा, "पर भगवतीचरण तो कहता है कि बहुत-सा साहित्य जो अंग्रेज़ी-भाषा में है, वह अविद्या है। और राधा बहन! इस पर भी तुम डाक्टर साहब का धन्यवाद करती हो?"

डाक्टर ने विस्मय से पूछ लिया, "अविद्या क्या होती है?"

हरिमोहन ने ही डाक्टर साहब के प्रश्न का उत्तर दे दिया। उन्होंने कहा, "अविद्या 'इगनोरेंस' को कहते हैं।"

"तो भगवतीचरण कहता है कि अंग्रेज़ी में अविद्या ही है, तब तो राधा जी को मुझे 'कर्स' करना (गाली देना) चाहिए।"

"नहीं नहीं।" राधा ने कहा, "हमारे शास्त्र में स्पष्ट लिखा है कि केवल अविद्या को पढ़ने वाले नरक में जाते हैं। और केवल विद्या में ही लीन रहने वाले भी नरक के ही भागी होते हैं। दोनों के अपने-अपने गुण हैं। वह मनुष्य, जो अविद्या को जान कर, इसका त्याग करता है, वह इस संसार को पार कर जाता है और फिर वह विद्या को पढ़ता है तो वह स्वर्ग प्राप्त करता है।[1]"

"यदि इस संसार की बात जानकर त्याग ही करना है तो फिर उसको जानने की क्या आवश्यकता है?" डाक्टर साहब का प्रश्न था। राधा ने मुस्कराते हुए कहा, "किसी वस्तु को प्राप्त किये बिना और उसके गुण-दोषों का अनुमान किये बिना, वस्तुओं को न लेना तो उन वस्तुओं से वंचित रहने के समान है। त्याग तो उस अवस्था में ही कहायेगा, जब संसार को

1. अन्धन्तमः प्रविशन्ति ये विद्यामुपासते।
तातो भूय इव ते तमो य उ विद्याया रताः।।
अन्यदेवाहुर्विद्ययान्यदाहुदविद्यया।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे।।
विद्यां चाविद्यां च यस्तभैदीभय सह।
अविद्यया मृत्युं तीत्त्वां विद्याउमुतमश्नुते।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानते हुए, इसके स्वादों को अनुभव करते हुए और इनको प्राप्त करने की सामर्थ्य रखते हुए, मनुष्य इनको छोड़ दे। वह छोड़ेगा तब ही, जब वह समझ जायेगा कि वास्तव में ये न तो सुखकारक हैं, न ही स्वादु हैं।

इस समय विमला बोल उठी, "बताइये, डाक्टर साहब! यदि अब भी समझ न आया हो तो मैं अंग्रेज़ी में समझाऊँ?"

"यह सब बागाडम्बर है।" डाक्टर साहब कहने लगे, "यह संसार भी परमात्मा ने बनाया है। उसकी इच्छा है कि हम इसका भोग करें।"

"और मौसी ने भी तो यही कहा है कि भोग करें और जब भोग करते हुए समझ यह जायें कि ये तो दुःखकारक हैं और व्यर्थ का झंझट हैं, तब मनुष्य इनको छोड़ देगा। तब यह त्याग कहायेगा। इसको अंग्रेज़ी में 'सेक्रिफाइस' कहते हैं।"

"विमला! तुम तो 'हीदन' होती जाती हो।" डाक्टर ने कह दिया।

विमला ने उत्तर नहीं दिया। चाय आ गयी और विमला सबके लिए चाय बनाने लगी थी। वह मुस्करा रही थी। डाक्टर विमला की अवहेलना सहन नहीं कर सका। उसने अपनी चाय का प्याला उठा, विमला की ओर देखते हुए पूछ लिया, "तो तुम मेरा कहना स्वीकार करती हो?"

विमला ने सबके सामने उबले और छिले अण्डे रख दिये। केवल अपने और मौसी के सामने नहीं रखे। विमला ने डाक्टर साहब के कहने का केवल यह उत्तर दिया, "बड़ों की गाली आशीर्वाद ही होती है।"

इतना कह विमला अपने और मौसी के लिए टोस्टों पर मक्खन लगाने लगी। डाक्टर रमणी और हरिमोहन अण्डा खाने लगे और चाय की सुरुकियाँ लगा-लगाकर उसे गले से नीचे उतारने लगे।

एकाएक डाक्टर ने विमला की प्लेट को देखा और पूछ लिया, "तो तुम अण्डा नहीं खा रहीं?"

"जी नहीं।"

"क्यों?"

"व्यर्थ प्रतीत हुआ है और यह मेरे काम में बाधा भी डालता है।"

"यह तो बहुत ही ताकत की खुराक है।"

"मैं इसको पिछले तीन वर्ष से नहीं खा रही और अपने को किसी प्रकार से भी दुर्बल नहीं समझती। और साथ ही यह मस्तिष्क में शैतान के लिए घर बना देता है। तब वह शैतान परमात्मा से झगड़ा करने लगता है। इस शैतान और परमात्मा के झगड़े में मेरी नींद हराम हो जाती है। जब मैं सो नहीं सकती तो फिर अपना दिन-भर का काम नहीं कर पाती।"

"और क्या काम करती हो?"

"मैं अपना पूर्ण ध्यान अपनी चित्रकला को श्रेष्ठ बनाने में लगा रही हूँ। मैंने देखा है कि जब से मैंने अण्डा, मांस, मछली इत्यादि खाना छोड़ दिया है, शैतान मेरे मस्तिष्क में घुस ही नहीं पाता और यदि कभी-कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोये-सोये में आ भी जाता है, तो परमात्मा उसे तुरन्त निकालने में सफल हो जाता है।"

सब बड़े बैठे समझ रहे थे कि विमला क्या कह रही है। वे मौन थे। हरिमोहन समझ रहा था कि लड़की ने बातें करने का ढ़ंग सीख लिया है।

परन्तु डाक्टर ब्राउन वार्तालाप की दिशा से सन्तुष्ट नहीं था। इस कारण उसने चितरंजन से पूछ लिया, "और चितरंजन! तुम्हारे दिमाग में शैतान नहीं आता क्या?"

चितरंजन इस समय सोलह वर्ष का हो चुका था और एक बार मैट्रिक की परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो चुका था। वह पूछे जाने पर बोल उठा, "बहन कहती है कि यह शैतान ही है, जिसने मुझे अनुत्तीर्ण कराया है।"

"अरे! तो तुमको भी शैतान तंग करने लगा है?"

"डाक्टर साहब! मैं नहीं जानता कि वह शैतान है या खुदा है। पर है बहुत मज़ेदार।"

"तो तुम भी अपनी मौसी के शार्गिद हो?"

"शार्गिद होता तो मैं भी साग-भाजी ही खाता। यह तो विमला कह रही है कि यह शैतान है, जो मेरा पढ़ने में चित्त लगने नहीं देता और शैतान इन अण्डों में बैठा रहता है। मैंने तो कहा है कि शैतान हो या कुछ और हो, है वह बहुत मज़ेदार।"

"क्या मजा है उसमें?"

"डाक्टर साहब कहें तो मैं 'कन्फेस' करने गिरजाघर में आ जाऊँ।"

"जरूर आओ।"

"मिस्टर दास!" डाक्टर ने उसे सम्बोधित करते हुए कहा, "मैं समझता हूँ कि आपके घर में बहुत बड़ा झगड़ा खड़ा होने वाला है। इसमें कारण राधा होने वाली है। मेरा तो यह कहना है कि एक प्रभु यीशु मसीह की भेड़ को यह हर कर ले जाती प्रतीत होती है।"

रमणी ने कह दिया, "राधा बहन तो जाने के लिए कई बार कह चुकी हैं। यह तो हम ही इनको जाने नहीं देते।"

"क्यों जाने नहीं देते?"

"हमारा इनसे स्नेह हो गया है।"

"हमारा का मतलब किस-किस से है?"

"मेरा, विमला का और एक सीमा तक चितरंजन का भी।"

"और बाबू हरिमोहन का नहीं?"

"यह तो ये ही बतायेंगे। इनके विषय में मैं क्या बता सकती हूँ।"

"यह सब डैबलिश है।"

राधा समझ रही थी कि विमला के विवाह का प्रश्न अब आने ही वाला है। वह अठारह वर्ष की आयु पार कर चुकी थी और इसी झगड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की ओर डाक्टर ने संकेत किया है। इस कारण उसने मन में निश्चय कर लिया कि वह रात ही इस घर को छोड़ जायेगी। इस कारण वह चाय समाप्त कर मुस्कराती हुई बैठी थी। अन्य सब मौन बैठे थे।

एकाएक डाक्टर उठा और बोला, "मिस्टर दास! कल किसी समय मुझसे मिलना। हमको कान्फ्रेन्स में पारित प्रस्ताव उचित लोगों और संस्थाओं के पास भेजना है।"

"आऊँगा।" हरिमोहन कहता हुआ उठा और डाक्टर को बाहर बरामदे तक छोड़ने गया। दूसरों के सुनाई देने के अन्तर से दूर होकर हरिमोहन ने कहा, "डाक्टर ठीक है। तुम्हारे कहने का प्रभाव हो जायेगा। परन्तु यह काम यही समाप्त नहीं होगा। कल चाय के समय ही मिस्टर क्राफर्ड को ले आना। उसको समझा देना कि लड़की को होशियारी से हैण्डल करे।"

मिस्टर क्राफर्ड राज्य के चीफ इन्जीनियर का लड़का था। वह ठेकेदारी करता था।

डाक्टर और हरिमोहन ड्राइंग-रूम से निकले तो राधा भी उठ खड़ी हुई। रमणी अभी बैठी थी। विमला उठ, मौसी के साथ जाने वाली थी कि रमणी ने उसे रोक लिया। उसने कहा, "विमला! ठहरो, मुझे तुमसे काम है।"

विमला बैठ गयी। रमणी ने चितरंजन से पूछ लिया, "देखो, तुम अपनी जिन्दगी खराब कर रहे हो। पढ़ जाओगे तो अपने पापा की भाँति नाम कमाओगे। नहीं तो भूखे मरोगे।"

"मम्मी! मैं यत्न बहुत करता हूँ, परन्तु मुझे कुछ याद ही नहीं रहता।"

"फिर भी यत्न करो, बार-बार सबक को याद करो। आखिर तो याद होगा ही। अच्छा जाओ, अपने कमरे में जाकर पढ़ो।"

"पर मैं तो पिक्चर देखने जा रहा हूँ। आज ही 'बेदिंग ब्यूटी' लगी है।"

"तभी तो तुम पढ़ नहीं सकते। 'बेदिंग ब्यूटी' को क्या करना है?"

"मेरे सब दोस्त देखने जा रहे हैं।"

माँ चुप रही तो चितरंजन अपने कमरे में कपड़े बदलने चला गया। विमला माँ के पास बैठी थी। हरिमोहन डाक्टर को विदा कर भीतर आ गये। विमला माँ की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देख रही थी। रमणी ने पूछ लिया, "आज से दो वर्ष पूर्व तुमने कहा था कि तुम दो काम करना चाहती हो। एक चित्रकार बनना और दूसरे,...। क्या बताया था।" रमणी ने उसके मुख से ही कहलवाने के लिये पूछ लिया।

विमला ने बता दिया, "दूसरा काम जीवन का है, विवाह करना।"

"तो वह कब तक करोगी?"

"माँ, तुम ही बताओ, मैं तो अब विवाह के लिये अपने को तैयार समझती हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो अभी तक उसके लिये तैयारी कर रही थीं? क्या तैयारी कर रही थीं?"

"मैं अपने पार्टनर को तैयार कर रही थी।"

"कौन है तुम्हारे जीवन का पार्टनर, जिसे तुम तैयार कर रही थीं?"

"मौसी के पुत्र।"

"उससे तो विवाह नहीं हो सकता।"

"क्यों?"

"तुमको विदित होना चाहिए कि तुम्हारे पिता 'इण्डियन क्रिश्चियन ब्रदरहुड' के प्रधान हैं। यदि तुम किसी नॉन क्रिश्चियन से विवाह करोगी तो उनकी बहुत बदनामी होगी।"

"क्रिश्चियनिटी का विवाह से क्या सम्बन्ध है। मैं अब सज्ञान हो गयी हूँ। मैं जिससे चाहूँ विवाह कर सकती हूँ।"

"और हमारी स्वीकृति के बिना भगवतीचरण तुमसे विवाह कर लेगा क्या?"

"नहीं। वे कहते हैं कि मुझे अपने माता-पिता को राज़ी करना चाहिए। जब वे मान जायेंगे, तब ही वे मुझसे विवाह करेंगे।"

"तो हम राज़ी नहीं हो सकते।" हरिमोहन ने कह दिया।

"तो मेरा विवाह नहीं होगा।"

"पर किसी दूसरे स्थान पर तो हो सकता है।" रमणी का सुझाव था।

"बहुत कठिन है, माँ।"

"यह बात हो सकती है। उसे कहो वह बपतिस्मा ले ले।"

"वह क्या होता है।"

"ईसाई-धर्म की प्रवेश की दीक्षा।"

"बिना ईसाई-धर्म पर ईमान लाये?"

"ईमान बाद में आता रहेगा। तुम्हारे पापा की इज़्ज़त बच जायेगी और तुम्हारा विवाह भी हो जायेगा।"

"बहुत कठिन है। फिर भी मैं यत्न करूँगी।"

हरिमोहन ने कह दिया, "हमने तुम्हारे लिये एक अन्य युवक ढूँढ़ा है। वह ईसाई है, ठेकेदार है। एक बड़े इन्जीनियर का लड़का है।"

"पर पापा, मेरा मन तो मौसी के लड़के को पसन्द कर चुका है।"

"तो उसे कहो ईसाई हो जाये।"

विमला मौन हो गयी। कुछ समय तक मौन रह वह बोली, "मुझे आशा नहीं कि वे मानेंगे। फिर भी मैं उनसे पूछकर बताऊँगी।"

"मेरी राय है कि उससे पूछने के पहले इस नये लड़के को भी देख लो।"

"मैं आवश्यकता नहीं समझती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रमणी ने पूछ लिया, "पर यदि वह ईसाई होने के लिये तैयार न हुआ तो?"

"तो आप बताइये कि मुझे विवाह की स्वीकृति देंगे अथवा नहीं?"

"हम अपने मुख से तो नहीं कह सकते कि तुम एक नॉन क्रिश्चियन से विवाह करो।" हरिमोहन का यह निश्चित मत था।

"तो मेरा विवाह नहीं होगा। मम्मी! मैं घर से भाग कर विवाह नहीं करूँगी। अभिप्राय यह है कि मैं कुँवारी रहूँगी।" यह व्यंग्य था अपनी माँ पर।

"तो क्या भगवतीचरण भी जीवन-भर अविवाहित रहेगा?"

"मैंने उनसे पूछा था। वे कहते थे कि पुरुष के लिये यह आवश्यक है कि वह अपने पिता का वंश चलाये। यदि उनका कोई दूसरा भाई होता तो कदाचित् वह विवाह न करते। परन्तु उनके कोई भाई नहीं है और यदि माताजी ने कहा कि उन्हें वंश चलाने के लिये विवाह करना है तो वह करेंगे। फिर भी वह मेरी प्रतीक्षा करेंगे।"

"क्या?" हरिमोहन ने चौंककर पूछ लिया, "क्या वह दो विवाह करेगा?"

"वह इसमें बुराई नहीं देखते। हिन्दुओं में यह वर्जित नहीं।"

"परन्तु एक-विवाह की प्रथा का तो सरकार की ओर से कानून बनने वाला है।"

"जब बनेगा तब विचार कर लेंगे।"

"परन्तु तुम बताओ कि यदि उसने किसी अन्य लड़की से विवाह कर लिया तो फिर क्या करोगी?"

"मैं यथासम्भव अविवाहित रहूँगी।"

"तुम भी विवाह कर लेना और फिर अवसर मिलने पर तलाक देकर उससे विवाह कर लेना।"

"यह भी विचार कर लूँगी। यदि अपने ऊपर संयम नहीं रख सकी तो विवाह कर लूँगी। पर माँ, अभी तो इसकी आवश्यकता अनुभव नहीं हो रही। मौसी ने मुझे संयम से रहने का ढंग सिखाया है और मैं अभी तक सफल हो रही हूँ।"

"देखो विमला!" हरिमोहन ने कहा, "पहले कल आने वाले को देख लो, फिर भगवती को ईसाई होने की प्रेरणा दो। यह उसके तुम्हारे प्रति प्रेम की परीक्षा होगी।"

रमणी ने अपने पति की बात में संशोधन करते हुए कहा, "मैं इससे उलट बात कह रही हूँ। पहले भगवतीचरण को ईसाई होने के लिए समझाओ। यदि वह नहीं माने तो नये प्रत्याशी को देख लो। उससे विवाह कर लो। जब इस नये से मन न मिले तो इसे तलाक दे देना और भगवती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरण के पास जाकर रहने लगना।"

विमला अपने बड़ों की बात को अनर्गल मानती थी। वह उठी और ऊपर की मंजिल पर अपने कमरे को चल पड़ी। अभी वह सीढ़ियाँ चढ़ ही रही थी कि मौसी की याद आ गयी। उसका विचार था कि डाक्टर ने उसका अपमान किया है। मौसी वैसे तो सदा की भाँति मुस्कराती हुई बैठी रही थी। फिर भी वह उससे मिल, उसके चित्त की प्रतिक्रिया जानना चाहती थी।

वह आधी सीढ़ियाँ चढ़, वापस नीचे उतर आयी और मौसी के कमरे में चली गयी।

: 4 :

राधा ने बिस्तर और शेष थोड़ा-सा सामान बाँध लिया था। उसने रसोईघर में रखे बरतन बटोरने आवश्यक नहीं समझे। एक सूटकेस में उसके पहनने के कपड़े थे। इतना कर वह कमरे को बुहार कर साफ करने लगी। इसी समय विमला आ पहुँची। विमला ने मौसी को बुहारी करते देखा तो पूछने लगी, "मौसी! इस समय सफाई?"

"हाँ!" राधा ने सफाई में लीन रहते हुए कहा, "मैंने विचार किया है कि जाने से पूर्व कमरा साफ-सुथरा करके जाऊँ।"

"तो अभी जा रही हो?"

"तुम क्या समझती हो कि कब जाना चाहिए?"

"मैं भी मौसी के साथ जाना चाहती थी।"

राधा बुहारती-बुहारती रुक गयी और बुहारी भूमि पर रख विमला का मुख देखने लगी। मौसी को आश्चर्य-चकित देख, मुस्कराते हुए विमला ने कहा, "मौसी! घर से भाग नहीं रही। तुमको छोड़ने जाना चाहती हूँ।"

"तो चल सकती हो।" राधा ने पुनः बुहारी उठा ली और काम करने लगी। विमला ने कहा, "मैं कपड़े बदल कर आती हूँ। मेरी प्रतीक्षा करना।"

"अभी तो मैं रमणी बहन को बताने जाऊँगी। तुम वहीं आ जाना।"

राधा ने भी बुहारी दे, हाथ-मुख धोया और फिर कपड़े बदले। जाने के लिए तैयार हो, वह रमणी से मिलने चल पड़ी, रमणी अभी भी ड्राइंग-रूम में बैठी अपने पति से बातें कर रही थी। हरिमोहन ने कहा, "मैं समझता हूँ कि क्राफर्ड को देखकर विमला के विचारों में परिवर्तन आ जायगा। इसी कारण मैंने उससे मिलने के लिए पहले कहा था।"

"मैंने क्राफर्ड को देखा है। मेरा विचार है कि वह स्वीकार नहीं होगा।"

"क्यों? क्या दोष उसमें?"

"शब्दों में वर्णन नहीं कर सकती। मन से अनुभव करती हूँ। देखिये, मैं स्मरण कराती हूँ, जब आज से छः वर्ष पूर्व मैंने भगवती को पहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बार नौगवाँ के बँगले में देखा था, तो मैंने उसमें कुछ आकर्षण पाया था। आपने पूछा था, 'क्या देख रही हो, इस देहाती लड़के में?'

"मैंने कहा था, 'लड़का अति सुन्दर है।' आपने पूछा था, 'तो इससे विवाह करोगी?

"मेरी हँसी निकल गयी थी। मैंने आपसे कहा था कि क्या सब लड़कों अथवा पुरुषों से विवाह ही किया जाता है? और फिर विवाह तो बूढ़ों से भी किया जाता है। आप समझ गये थे। जब मैं अपने विवाह के लिए माता-पिता का घर छोड़कर आपके पास आयी थी, आपकी आयु चालीस वर्ष से ऊपर थी। मैं भी उस समय पचीस वर्ष की हो चुकी थी। फिर भी मैं आपके पास आयी थी। आपकी सूरत-शक्ल मेरे स्वप्नों में आती रहती थी। यही मैंने आपको बताया था। परन्तु इस भगवती के प्रति कुछ वैसी भावना नहीं थी। यह तो मुझे पुत्र की भाँति प्रिय लग रहा था।

"कुछ दिन हुए मैं विमला के कमरे में गयी थी। वह आजकल भगवती का चित्र बना रही है। मैंने पूछा, 'इसको किसी फोटोग्राफ से बना रही हो?'

"उसका कहना था, 'नहीं। इनकी रूप-रेखा मन में ऐसी जम गयी है कि जब भी आँखें मूँदती हूँ तो ये मन में स्पष्ट दिखाई देने लगते हैं, इस कारण फोटोग्राफ की आवश्यकता नहीं पड़ती। जब-जब भी कहीं गाड़ी अटकती है, मैं आँखें मूँद लेती हूँ और फिर मेरे चित्र की गाड़ी चलने लगती है।'

"मैं समझी हूँ कि इसके मन की स्थिति कुछ वैसी ही है, जैसी मेरी थी, जब मैं आपके पास आयी थी।"

"मगर विमला तो कहती है कि तुम्हारी भाँति माता-पिता के घर से भागेगी नहीं।"

"यह राधा की संगति का परिणाम है। एक बात उसने और भी कही है कि वह संयम से रहना जान गयी है।"

"यह असम्भव है। वह अभी बच्ची है। उसका यौवन-काल तो अभी आने वाला है। मैं समझता हूँ कि यौवन विवाह करने के लिए विवश कर देगा। तब वह भी किसी के पास भाग जायेगी।"

"वह भगवतीचरण के पास ही जायेगी। मेरा मन यही कहता है। ऐसी अवस्था में क्या यह ठीक नहीं होगा कि हम उसे कह दें कि पहले ही वह हमारा मकान छोड़, किसी स्वतन्त्र मकान में रहने लगे और फिर वह कोर्ट में जाकर विवाह कर ले?"

"यह भी हो सकता है। मैं इतना भगवती से नहीं डरता, जितना ब्राउन के बच्चे से डरता हूँ। यह स्वयं बहुत ही हीन आचरण का है और अपने को ईसाइयों के आचरण को संरक्षक प्रकट करता है। यह ही हमको बदनाम कराने का यत्न करेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह भय तो मुझको भी है। परन्तु लड़की की दयनीय अवस्था का अनुमान लगाकर मैं तो ब्राउन साहब को अगूँठा दिखाने का विचार कर रही हूँ।"

इस समय ड्राइंग-रूम के द्वार पर राधा आ खड़ी हुई। उसने द्वार पर से आवाज़ दी, "रमणी बहन?"

"हाँ, आ जाओ। क्या बात है?"

राधा कमरे में आ गयी और एक कुर्सी पति-पत्नी के समीप खिसका कर, उस पर बैठ कहने लगी, "बहन! मैंने यह विचार कर लिया है कि अभी आपकी कोठी का अपने वाला कमरा खाली कर दूँ।"

"और कहाँ चली जाओगी?"

"भगवती को जाकर कहूँगी कि मेरे रहने का प्रबन्ध कर दे।"

"यही तो कह रही हूँ कि अभी तक सुशीला ऊपर के फ्लैट में रह रही है, वहाँ तो तुम्हारे रहने को स्थान नहीं है।"

"यह तो पुत्र का काम है कि माँ के रहने का प्रबन्ध करे। वह कर देगा।" राधा ने विश्वास से कहा।

"देखो राधा बहन! हम तो चाहते थे कि मरणोपर्यन्त हम तुम्हारी संगति में रहें। विमला को तो तुम्हारी संगति का भारी लाभ हुआ है। परन्तु हमारा भी एक समुदाय है और इस विमला ने डाक्टर ब्राउन को किसी प्रकार रुष्ट कर दिया है। इससे वह उसके सुधार के पीछे पड़ा है। उसने आज विमला के विवाह के विषय में संकेत किया है। हम नहीं जानते कि वह क्या चाहती है?"

"खैर, ये बातें तो बाद में होती रहेंगी। यदि आप दम्पति की कृपा बनी रही तो आपसे फिर भी मिलती रहूँगी। अब तो मैं जा रही हूँ। जाने से पूर्व यह आवश्यक था कि आपकी कृपा के लिए धन्यवाद करूँ। उस समय मैं एक अंधे कुएँ में गिरती चली जा रही थी। आपने हाथ पकड़ कर मुझे बचाया था। यह मैं जन्म-जन्मान्तर नहीं भूलूँगी।

"दास बाबू! इस छोटी बहन के दोषों को भूल, इस पर कृपा-दृष्टि बनाये रखना। मैं अभी जा रही हूँ। जरा गणपति को भेज दीजिए कि एक रिक्शा ले आये। मैं अपना बिस्तर और ट्रंक ले जा रही हूँ।"

"तो अभी जा रही हो?"

"मैं सामान बाँध आयी हूँ।"

इसी समय विमला आ गयी। वह अब अपनी स्कर्ट और ब्लाउज़ उतार साड़ी और चोली पहन आयी थी। उसने सैंडल पहने थे और माथे पर बिन्दी लगाई हुई थी।

"तुम किधर जा रही हो?" माँ ने पूछा।

"मौसी को छोड़ने।"

"ये तो रिक्शा में जा रही हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो मैं अपनी बाइसिकल पर साथ-साथ जाऊँगी।"

"और कब तक लौटोगी?"

"भोजन के समय से पहले ही आ जाऊँगी।"

"ठीक है। जरा बाइसिकल पर जाकर तुम ही एक रिक्शा पकड़ लाओ।"

विमला बाहर निकल गयी। उसके चले जाने पर रमणी ने राधा से कहा, "यह भगवतीचरण से विवाह करने का प्रस्ताव करने जा रही है। मेरी योजना है कि भगवती प्रकट रूप में ईसाई-धर्म स्वीकार कर ले। मन से जो चाहे बना रहे। इससे हम प्रकट रूप में अपनी लड़की दे सकेंगे।"

"पर बहन! आप विमला को क्यों नहीं समझातीं? भगवती में कौन-सा सुरखाब का पर लगा हुआ है। जहाँ तक भगवती का प्रश्न है, मुझे विश्वास है कि वह कोई ऐसी बात नहीं करेगा जो कृतघ्नता का सूचक हो अथवा ईमानदारी के विपरीत हो। फिर भी आपका संदेश उसे दे दूँगी।"

रिक्शा तो कोठी के बाहर ही मिल गयी थी। उसमें बिस्तर-ट्रंक के साथ राधा बैठ गयी और विमला बाइसिकल पर उसके साथ कोठी से निकल गयी।

भगवती की दुकान पर यह काम का समय होता था। ग्राहकों की भीड़ रहती थी। कालेजों के विद्यार्थी भी इस समय आते थे। दुकान पर तीन अन्य नौकर थे और भगवती स्वयं काम में लीन रहता था।

इस समय विमला साड़ी में उसके सामने आ खड़ी हुई तो वह विस्मय में उसका मुख देखता रह गया। विमला ने कुछ भी कहे बिना दूकान के बाहर रिक्शा में बैठी मौसी की ओर संकेत कर दिया।

भगवती ने बिस्तर, सूटकेस के साथ माँ को रिक्शा में बैठे देखा तो समझ गया कि माँ रहने के लिये आयी है। वह लपक कर दुकान से निकला और रिक्शा के समीप जा पूछने लगा, "माँ, आ गयी हो?"

"हाँ।"

उसने जेब से चाबी देते हुए कहा, "अभी कमरे में चलो, मैं चपरासी से यह सामान ऊपर भेजवा देता हूँ।"

राधा ने चाबी ले ली और भगवती से रिक्शा वाले को पैसे दे देने को कह, विमला के साथ दुकान की बगल में सीढ़ियों की ओर चल पड़ी। भगवती ने चपरासी को माँ का सामान ऊपर ले जाने को कह रिक्शा वाले को छः आने पैसे दिये और दुकान में जा, काम में लग गया।

: 5 :

रात के आठ बजे भगवती अपने कमरे में आया। विमला अभी भी बैठी थी। उसने भगवती से पूछ लिया, "बहुत समय लगा दिया है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दुकान का यही समय होता है। इस समय ग्राहकों की भीड़ रहती है।"

"मैं आपसे एक विशेष बात करने आयी थी?"

"हाँ बताओ?"

"वह यह कि मौसी को किसी ऐसे मकान में ठहराइये, जहाँ मैं उनके पास आकर रह सकूँ।"

"वह तो करना ही होगा। मैं सुशीला बहन को जाने के लिये नहीं कह सकता। दूसरी मंज़िल पर तीन कमरे हैं। वह मैं माँ के लिये ठीक नहीं समझता। अभी तो माँ इस कमरे में ही रहेगी। एक-दो दिन में पृथक् मकान का प्रबन्ध हो जायेगा।"

"आप समझे नहीं। मैं तो यह कह रही हूँ कि मैं मौसी जी के साथ आकर रहना चाहती हूँ परन्तु आपके साथ नहीं।"

"ओह, क्या हुआ है?"

"माता-पिता का कुछ व्यवहार ऐसा हो रहा है जो असह्य है।"

"क्या हुआ है? यही तो पूछ रहा हूँ।"

"कल मेरी देखनी के लिये कोई आ रहा है? मैं इसे पसन्द नहीं करती।"

"परन्तु मैं पूछता हूँ कि तुम बाजार इत्यादि जाती हो तो तुमको कोई देखता है अथवा नहीं? तुम्हें किसी के देखने के लिये आना अथवा तुम्हारा अनायास किसी को दिखाई दे जाने में क्या अन्तर पड़ जाता है? किसी से विवाह करने की इच्छा तो बाजार चलते भी हो सकती है।"

"पर मेरी इच्छा तो बन चुकी है न? यह तो मेरी इच्छा को मिटाने के लिये किया जा रहा है।"

"यदि इच्छा का पात्र बदल जाये तो बताओ दुःख क्यों होगा? यह तो सुख का मूल ही हो सकता है। कारण यह कि यह तो विवाह से पहले ही हो रहा है न? विवाह के बाद इच्छा बदलना तो ठीक नहीं होगा।"

"आप समझे नहीं। मुझे भय लग रहा है कि मुझसे विवाह के लिये बल प्रयोग किया जायेगा। प्रलोभन तो अभी से दिये जाने लगे हैं।"

"क्या प्रलोभन हैं। कुछ मुझे भी बता दो तो कल्याण होने की सम्भावना है।"

विमला मुख देखती रह गयी। फिर कुछ विचार कर बोली, "एक इन्जीनियर का बेटा लाखों के ठेके लेने वाला ठेकेदार खूबसूरत ईसाई नौजवान मुझे देखने आ रहा है।"

भगवती हँस पड़ा और हँसते हुए बोला, "ये प्रलोभन तो पहले भी थे। एक सुन्दर लड़की को जरा क्लबों के चक्कर काटने चाहिए। लाखों उस पर निछावर करने वाले निकल आयेंगे। देखो विमला, इस संसार में धन, बल और छल स्त्री-धन को लूटने के लिये सदा से प्रयुक्त होते रहे हैं। इससे डर कर लड़कियों के अभिभावकों ने छोटी आयु में उनका विवाह,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्दा और स्त्रियों में पतिभक्ति इत्यादि कई उपाय बनाये थे। इनसे उक्त प्रलोभन कुछ कम हुए थे अथवा नहीं, कहना कठिन है। मैं तो समझता हूँ कि ये प्रलोभन इन सब उपायों से कुछ बड़े ही हैं। इन उपायों का विरोध एक सीमा तक केवल एक ही उपाय से हुआ है और वह है मनोबल। स्त्रियों में, मनोबल में वृद्धि ही इन धन, बल, छल का विरोध कर सकी है।

"पति में निष्ठा, जो मनोबल से युक्त नहीं, कुछ अधिक लाभ नहीं पहुँचा सकी। मनोबल ही का तुमको आश्रय लेना चाहिये। बताओ, तुम्हारे पास यह पूँजी है? यदि नहीं, तो तुमको वह दुकान बता दूँ, जहाँ पर यह मनोबल मिलता है?"

"एक दुकान का तो पता चला था। वहाँ से कुछ खरीद कर लायी भी हूँ। परन्तु उस पर अथवा उतने मनोबल पर विश्वास नहीं रहा। इस कारण अपने को परीक्षा में न डाल, पर्दे में घुस जाने को ही मन चाहता है।"

"पर्दे में?"

"हाँ, मेरा अभिप्राय है छुप जाने में।"

"तो मौसी के आँचल में छुप जाना चाहती हो?"

"यही विचार कर के आयी हूँ। आप बिना मेरे माता-पिता की स्वीकृति के विवाह तो करेंगे नहीं।"

"तुम्हारे माता-पिता के हम पर इतने एहसान हैं कि मैं उनसे कृतघ्नता नहीं कर सकता।"

"तो एक उपाय माँ जी ने बताया है। आप प्रकट रूप में ईसाई हो जायें। तब गिरजाघर में आपका मुझसे विवाह हो जायेगा। पापा और मम्मी उस रस्म के समय उपस्थित होंगे।"

"यह तो एक अन्य प्रकार का उत्पीड़न होगा। इसमें, और साक्षी को पुलिस द्वारा मार-पीट कर झूठे बयान देने पर विवश करने में, मैं कोई अन्तर नहीं समझता।"

"यह मैं आपको नहीं कह रही। यह मम्मी का प्रस्ताव है। यूँ तो मेरे सामने पापा की बदनामी का भय दिखाना अथवा किसी धनी बाप के धनी बेटे को लाकर बैठा देना भी, मैं उत्पीड़न ही मानती हूँ। ऐसी अवस्था में मैं आप पर उत्पीड़न को कैसे पसन्द कर सकती हूँ।"

अब राधा ने बात में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "देखो, विमला! एक बात मेरी भी सुन लो। मैं स्वयं एक इसी प्रकार के उत्पीड़न का शिकार रही हूँ। मैं तो एक उपाय से इससे बच सकी हूँ।

"जैसे तुम कह रही हो कि जो मनोबल तुम किसी दुकान से खरीद कर लायी हो, उस पर विश्वास कम हो गया है, वैसा ही अविश्वास मेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन में भी उत्पन्न होता रहा है। ऐसे अवसरों पर अपने मनोबल को पुष्ट करने के लिये मैं मनोबल के एक महान् स्रोत पर पहुँच, अपने मनोबल को पुष्ट करती रही हूँ। वह तुम भी कर सकती हो।"

"क्या करूँ? बताओ मौसी!"

"ईश्वर अपार बल का स्रोत है। उसकी शरण में चली जाओ। वह तुम्हारी आत्मा को बचाने में समर्थ है। उत्पीड़न का तुम्हारी बुद्धि, मन और आत्मा पर कुछ भी प्रभाव नही हो सकेगा।"

विमला गम्भीर हो गयी। राधा ने अपना कहना जारी रखा, "मन और आत्मा सदा साथ-साथ रहते हैं। बुद्धि मन और आत्मा का पथ-प्रदर्शन करती है। बुद्धि सात्विक हो तो मन और आत्मा अतुल शक्ति के स्वामी हो जाते हैं।

"यह सब मैंने तुमको बता रखा है। उस उपाय का आश्रय लो। ईश्वर की शरण में अपने को छोड़ दो।

"मैं तुम्हारी माताजी से मिलती रहूँगी और उनको सुमति देने का यत्न करती रहूँगी। पर इसमें समय लगेगा। तब तक तुम मन से दृढ़ रहो।"

वह कोठी में पहुँची तो रमणी उसकी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रही थी। वह आशा करती थी कि उसका और विमला के पिता का एहसान भगवती और राधा पर इतना है कि वह नाम-मात्र का ईसाई बनना स्वीकार कर लेगा। वह अपने प्रस्ताव की प्रतिक्रिया जानने की इच्छुक थी।

मिस्टर दास अपने स्टडी-रूम में था। रमणी ड्राइंग-रूम में बैठी थी। विमला वहाँ पहुँची तो वह उतनी उदास नही थी, जितनी जाते समय। उसके मुस्कराते हुए माँ के समीप सोफा पर बैठने पर तो रमणी को आशा बँध गयी कि कोई उचित योजना बन गयी है।

वह मन से भगवती और विमला का सम्बन्ध चाहती थी। वह तब से ही इसकी इच्छा कर रही थी, जब से भगवती अंग्रेज़ी सीखने में द्रुतगति से उन्नति करने लगा था। इस विचार का वह अपने मन में वर्षों से पालन कर रही थी। इस पर तुषार पड़ा था भारतीय ईसाई-जगत् में बढ़ रही मिस्टर दास की ख्याति से। इस ख्याति को लाल झंडी दिखाई थी डाक्टर ब्राउन ने। इस समय वह मन के चिर-संचित विचारों और अपने समुदाय में अपनी ख्याति से, भय में डूबी थी।

विमला बैठी तो उसने पूछ लिया, "तो बना काम?"

"हाँ, माँ! मार्ग दिखाई देने लगा है।"

"क्या?"

"मौसी के सुपुत्र न तो ईसाई बनेंगे, न ही वे पापा और मम्मी को रुष्ट कर, मुझसे विवाह करेंगे। मेरा मार्ग अब स्पष्ट हो गया है।"

"क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"त्याग और तपस्या का। मैं विवाह नहीं करूँगी, जब तक आप मौसी को मेरी सास बनाने की स्वीकृति नहीं देतीं। तपस्या यह है कि मैं मन को बलवान करने का यत्न करूँगी।"

"मन बलवान करने से क्या होगा?"

"कभी शरीर और इन्द्रियाँ दुर्बल पड़ेंगी और लोभ तथा मोह में फँस गयीं, तब मन और बुद्धि उसे पराजित होने से बचा लेंगे।"

"तो तुम उस इन्जीनियर के लड़के को देखने से पहले ही रिजेक्ट कर रही हो?"

"मम्मी! एक सफल ठेकेदार की तुलना एक ज्ञान के भण्डार के स्वामी से कैसे की जा सकती है? कहावत है न, 'कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगू तेली'।"

"तो वह क्राफर्ड तेली के समान है?"

"अभी तक तो यही समझ में आया है।"

"यह समझ कभी बदल भी सकती है?"

"यह जगत् परिवर्तनशील है।"

"तब तो आशा की जा सकती है।"

"इसलिए तो चित्त में शान्ति और सुख है। मन में एक निश्चय कर लिया है। यह सम्भव है कि निश्चय को गलती होने की समझ आ जाये और यह भी सम्भव है कि मम्मी और पापा को समझ आ जाये कि वे अपनी सज्ञान लड़की पर अन्याय कर रहे हैं। कुछ हो, ठीक सूझबूझ के लिये त्याग और तपस्या का मार्ग स्वीकार कर लिया है।"

अब माँ ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "पर इस तेली के बच्चे क्राफर्ड से मिलोगी अथवा नहीं?"

"मम्मी! त्याग और तपस्या का यह नियम है कि किसी दूसरे से घृणा नहीं करनी चाहिए।"

मम्मी को इससे संतोष हुआ। वह मन में विचार करती थी कि यदि क्राफर्ड सफल नहीं होता तो यह किसी दूसरे का दोष नहीं होगा। उसमें उसकी अपनी ही अयोग्यता होगी। विमला भी प्रसन्न थी।

खाने के समय उसने यह शुभ-समाचार अपने पति को बता दिया कि विमला मिस्टर क्राफर्ड से मिलेगी और उसको पूर्ण अवसर देगी कि वह इसके मन को जीतने का यत्न करे।

मिस्टर दास भी इस सूचना को शुभ लक्षण ही समझता था। उसने अपनी बेटी को आशीर्वाद दे दिया। चितरंजन ने पूछ लिया, "पापा, सिस्टर विवाह करेगी?"

"तुम समझे थे कि नहीं करेगी?"

"यह डाक्टर ब्राउन के सामने कह रही थी कि शैतान को अपने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घुसने नहीं देती। शैतान ही तो है, जो मन में विवाह का विचार पैदा करता है।"

रमणी हँस पड़ी। हँसकर बोली, "तो तुम विवाह की बात सोचा करते हो?"

"मम्मी, करोगी मेरा विवाह?"

"किससे करोगे?"

"एक लड़की है। गिरजाघर में रविवार के दिन आया करती है। कहो तो तुमको दिखा दूँ।"

"पर वह तुम-जैसे नालायक लड़के से विवाह करना स्वीकार करेगी?"

"वह मान चुकी है। मैं समझता हूँ, उसके दिमाग में भी शैतान हलचल मचा रहा है।"

"अच्छी बात है। लड़की दिखाना। तब उसके माता-पिता से बात करूँगी।"

"उसके माता-पिता तो पापा को बहुत धनी समझते हैं। इस कारण यदि पापा कहेंगे तो वे मान जायेंगे।"

"तो तुम यही पढ़ाई करते रहते हो?"

"पापा! क्या बिना पढ़े जीविकोपार्जन नहीं हो सकता?"

"हो सकता है। परन्तु उसमें भी शैतान का आश्रय छोड़कर परमात्मा का आश्रय लेना पड़ेगा।"

"बिना परमात्मा के काम नहीं हो सकता?"

"वह भी हो सकता है। देखो चितरंजन! यदि तुम इस वर्ष भी उत्तीर्ण न हुए तो तुमको अपने एक मित्र के कारखाने में नौकर करा दूँगा। वहाँ तुम खराद पर काम करोगे। और जब तुम वेतन लाने लगोगे तो तुम्हारे विवाह का प्रबन्ध कर दूँगा।"

"उससे पहले नहीं?"

"उसे खिलाओगे कहाँ से?"

"पापा का घर उसके रहने के लिए होगा और पापा उसे लड़की बना, खाने-पहरने को भी देंगे।"

: 6 :

जब राधा भगवती के कमरे में पहुँची तो सुशीला और कुँवर साहब कहीं भ्रमण के लिए गये हुए थे। वे रात के खाने के समय आये। भगवती का कमरा मंजिल के शेष कमरों से पृथक् था, परन्तु साढ़ियाँ चढ़ते ही सामने पड़ता था। अतः जब सुशीला आयी तो भगवती के कमरे में बत्ती जली, बाहर से ही आवाज़ देने लगी, "पण्डित भैया! आज भोजन करने नहीं गये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय भगवती प्रायः माँ के साथ भोजन करने के लिए दास बाबू की कोठी पर गया होता था। राधा भीतर बैठी थी। उसने सुशीला की आवाज़ सुनी तो उत्तर दे दिया, "सुशीला बेटी! मैं हूँ राधा।"

सुशीला भीतर आ गयी और राधा को नमस्ते कर बोली, "तो आप आज यहाँ आयी हैं? भैया कहाँ है?"

"वह मेरे लिए बाज़ार से पूरी लेने गया है। मैं दास बाबू की कोठी छोड़ आयी हूँ।"

कुँवर साहब ने भी राधा को नमस्ते कही और कह दिया, "भीतर बैठक में आ जाइये। यहाँ खाने का स्थान ठीक नहीं है।"

"तब आइये माँ जी" सुशीला ने समर्थन कर दिया, "हम तो आज भोजन घर से बाहर कर आये हैं।"

राधा उठी और दरवाज़े को भींचकर सुशीला के साथ बैठक में चली गयी। वहाँ कुँवर साहब ने एक सोफा पर बैठते हुए कहा, "आप तो इस घर में कभी आयी नहीं। इस कारण यहाँ के सब जीवों से आपका परिचय नहीं होगा। करेंगी परिचय?"

"तो इस समय वे जाग रहे होंगे?"

"हाँ," कुँवर साहब ने बिजली का बटन दबा घण्टी बजाई। दो बच्चे भागते हुए चले आये। एक लड़का था और दूसरी लड़की।

कुँवर साहब ने लड़के को राधा के सामने खड़ा कर कहा, "यह है नरेन्द्रपाल। इस समय पाँच वर्ष का है, और यह है," उसने लड़की को आगे कर कह दिया, "सरिता। तीन वर्ष की है।"

"सुशीला कहती है बस और अधिक नहीं।"

"क्यों सुशीला बेटी, थक गयी हो?"

सुशीला चुप रही और आँखें नीची किये बैठी रही। राधा ने बात बदल दी। उसने पूछा, "आपके फार्म का क्या हुआ?"

"ज़मींदारी तो विघटित हो गयी है। हमने सरकार से फार्म माँगा है और गुज़ारे के लिए प्रार्थना-पत्र दिया है।"

अब सुशीला बोली, "मैंने तो इनको कहा है प्रार्थना करना बहुत ही छोटे दर्जे का काम है। इसी वक्त के लिए तो पिताजी ने रुपया दिया था। वह रुपया तो अब छः लाख से ऊपर हो गया है। ये चाहें तो कोई बड़ा उद्योग चलाया जा सकता है थोड़े दिन पहले पिताजी आये थे और उन्होंने इनको एक छापाखाना खोलने की राय दी थी। परन्तु ये माने नहीं।"

"क्यों भैया, क्यों नहीं माने?"

"मैं जानता हूँ कि नगरों की सम्पत्ति भी अब सरकार अपने हाथ में ले लेगी। चाहे वह छः लाख हो और चाहे पचास लाख हो। फिर व्यर्थ में मेहनत कर खून-पसीना एक कर, धन में वृद्धि किसलिए करूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या यह सम्भव नहीं कि नगरों की सम्पत्ति जब्त ही न हो?"

"समाजवादी विचार जब बना है और राज्य सर्वसाधारण के हाथ में आ गया तो यह विचार चलेगा। यह तक चलेगा, जब तक पूर्ण मानव नंगा और अकिंचन नहीं हो जाता।"

"मैं समझती हूँ।" राधा ने कह दिया, "नगरों की सम्पत्ति सरकार नहीं लेगी। कारण यह कि प्रायः विधायक नगरों के रहने वाले हैं। ये लोग दूसरों की सम्पत्ति छीनेंगे, विधायक अपनी छिनने नहीं देंगे।"

"नहीं माँ जी! सब कुछ जायेगा। इसलिए मैंने रुपया बैंक में रखा हुआ है। ज्यों ही धाँधली मचेगी, मैं रुपया निकाल कर सोना खरीद लूँगा और भूमि में गाढ़ के रखूँगा। तदुपरान्त थोड़ा-थोड़ा निकाल कर जीवन चलाऊँगा।"

राधा हँस पड़ी। कहने लगी, "बहुत हो चुके हैं आप-जैसे पूर्व काल में। उनका धन अब भी किसी टूटे-फूटे मकान में अथवा खण्डहर में से निकल आता है। ऐसे ही आप भी किसी भावी पीढ़ी के अज्ञात व्यक्ति के भाग्य का संचय कर जायेंगे। गढ़ा धन किसी काम नहीं आयेगा।"

"देखो भैया! धन के दो ही उपयोग हैं एक भोग और दूसरे धर्मयुक्त कामों में व्यय करना। भोगों की बात सुन लो। इनकी सीमा नहीं। सब-का-सब धन खर्च होने पर भी भोग समाप्त नहीं होते। अन्त में होता यह है कि भोग वाला समाप्त हो जाता है, परन्तु भोग और भोगों की इच्छा बनी रहती है। धन समाप्त हो जाता है, परन्तु भोग लिप्सा का अन्त नहीं होता।

"जब यह बात है तो भोगों को आवश्यकताओं तक सीमित कर दें तो अति सुख की प्राप्ति होगी। फिर दान-दक्षिणा में व्यय करो तो असीम आनन्द प्राप्त होता है।"

इस समय भगवती पूरी लेकर ऊपर चला आया। उसने कमरा भिंचा हुआ देखा तो समझ गया कि सुशीला बहन माँ को अपने कमरे में ले गयी होगी। उसने बाहर से आवाज़ दे दी, "माँ, भीतर हो?"

"आ जाओ। भगवती!" माँ ने कह दिया। भगवती बड़े से डोंने में पूरी, चटनी, अचार तथा मिठाई लिये हुए वहाँ आ पहुँचा। सुशीला ने घंटी बजाई तो नौकरानी ने द्वार के भीतर आ पूछ लिया, "हाँ सरकार।"

"देखो, यह ले जाओ।" सुशीला ने भगवती के हाथ में पूरी की ओर संकेत कर कह दिया, "और दो थालों में लगा कर भेज दो। जल ले आना।"

नौकरानी भगवती के हाथ से डोंना लेकर चली गयी तो भगवती ने बता दिया, "कुँवर साहब! आज आपकी भविष्यवाणी आंशिक रूप में सिद्ध हो गयी है। मुझे नोटिस आ गया है कि यदि मुझे किसी ईसाई की लड़की से विवाह करना है तो मुझे ईसाई हो जाना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुँवर साहब और सुशीला हँस पड़े। सुशीला ने पूछा, "दास बाबू ने कहा है?"

"मुझे तो उनकी लड़की विमला कह गयी है कि माँ कहती है कि मैं आपसे विवाह तब करूँ, जब आप ईसाई होने को तैयार हो जाते हैं।"

"यह तो होना ही था।" कुँवर साहब ने मुस्कराते हुए कह दिया, "और हमारे ब्राह्मण देवता ने क्या उत्तर दिया है?"

भगवती ने उस वार्तालाप का आशय संक्षेप में सुना दिया, जो कुछ वर्ष पूर्व उसके और विमला के मध्य हुआ था। उसने बताया, "लड़की समझ गयी थी और आप सज्ञान होने की प्रतीक्षा कर रही थी। अब वह अट्ठारह वर्ष से बड़ी हो चुकी है। आज उसके घर उसके विवाह की चर्चा हुई तो मेरा भी उल्लेख आया और मेरे लिये इस शर्त का उद्घोष कर दिया गया है।

"आज से लगभग दो मास पूर्व विमला मेरे पास आयी थी और मुझे बताने लगी कि वह मेरे साथ विवाह करने की घोषणा करने वाली है। मैंने उसे कह दिया था कि मैं मज़हब और विवाह को पृथक्-पृथक् मानता हूँ। हाँ, धर्म और विवाह का सम्बन्ध है। मैंने अपना मतलब समझा दिया था कि दो अथवा अधिक व्यक्तियों का परस्पर व्यवहार धर्म के अन्तर्गत आता है। विवाह में भी दो व्यक्तियों का सम्पर्क धर्म के अन्तर्गत आता है। विवाह में भी दो व्यक्तियों का सम्पर्क बनता है। अतः इनका परस्पर व्यवहार धर्मानुसार होना आवश्यक है। परन्तु मज़हब में वह भी स्वतन्त्र रहेगी और मैं भी स्वतन्त्र रहूँगा।

"उसने पति-पत्नी में धर्मयुक्त व्यवहार के अर्थ पूछे और मैंने पति का वंश चलाना, पंच महायज्ञों का विधि-विधान और दस सनातन धर्मों के पालन की बात बता दी है।

"रीति-रिवाज, पूजा-पाठ, मान्यताएँ और विश्वास मज़हब के अन्तर्गत हैं। हमारे (हिन्दू) समुदाय में इन बातों में प्रत्येक को स्वतन्त्रता होती है।

"मैंने विमला को बताया कि मज़हबी बातों का राजनीति में हस्तक्षेप करना और राजनीति का मज़हब में दखल देना उचित नहीं। हाँ, राजनीति धर्म के अन्तर्गत आती है। कारण यह कि इसमें भी आचरण किया जाता हैं, जिसमें एक-एक अधिक लोगों का वास्ता पड़ता है।"

"व्यापार तथा ज़मींदारी किसके अन्तर्गत आती हैं? धर्म अथवा मज़हब के?"

कुँवर साहब की नौकरानी चार थालों में पूरी लगाकर ले आयी। सुशीला हँस पड़ी और नौकरानी से पूछने लगी, "ये चार किनके लिये लगाकर लायी हो?"

"हुजूर! चार प्राणी बैठे देख गयी थी। मैंने विचार किया कि चार के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो तो हो सकते हैं, परन्तु कहीं दो के चार करने पड़े, तो कठिनाई हो जायेगी।"

चारों हँसने लगे। भगवती ने समस्या का समाधान कर दिया, "देखो, एक थाली और ले आओ। जिसने कम अथवा न खाना हो, वह अपने में से निकाल, उसमें रख देगा।"

नौकरानी थाली लेने चली गयी। भगवती और राधा उठे और बाहर शैंक में हाथ धोने चले गए।

जब ये भीतर आकर बैठे और नौकरानी पाँचवाँ थाल ले आयी तो भगवती ने नरेन्द्र को कहा, "अच्छा भैया, तुम बताओ कौन-सी मिठाई खाओगे?"

"हम तो गुलाब-जामुन खायेंगे।"

"तो तुम और सरिता रानी इस पाँचवें थाल के पास आ जाओ।"

सुशीला ने अपनी और कुँवर साहब की थाली में से एक-एक पूरी और एक-एक गुलाब-जामुन बच्चों के सामने रख दिया और अपने तथा कुँवर साहब के थाल में दो-दो पूरी रहने दीं। शेष माँ-पुत्र के थालों में रख दीं। सुशीला ने कहा, "हम पेट भर आये थे, परन्तु अब भैया बहन को दे तो भरे पेट पर भी लिया जा सकता है।"

सब पूरी और मिठाई खाने लगे तो भगवती ने धर्म और मज़हब के सूत्र को फिर पकड़, कहना आरम्भ कर दिया, "उद्योग, व्यवसाय और व्यापार तो धर्म के अन्तर्गत आते हैं। कारण यह कि आज के समाज में आर्थिक व्यवस्था एक से अधिक से सम्पर्क रखती है।"

"तो यह ज़मींदारियाँ जो सरकार लेकर किसानों को दे रही है, धर्म हुआ अथवा अधर्म?"

"इस समय तो धर्म ही हुआ है। यद्यपि करने वालों ने इसको धर्म-अधर्म के विचार से नहीं किया। मेरा मतलब है कि ज़मींदार यह समझ रहे थे कि उनको इतनी अधिक भूमि का प्रबन्ध इस कारण मिला है कि वे किसी के बेटे अथवा किसी के नाती थे। यह बात नहीं थी। उनको ज़मींदारी मिली थीं कुछ कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए। उन कर्त्तव्यों में भूमि की दशा, बीजों की नस्ल और खेती-बाड़ी के यन्त्रों में उन्नति और विकास देना भी था। उन्होंने अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं किया और उनसे ज़मींदारियाँ छिन जानी धर्म ही है।

"ज़मींदारों के इन प्रयासों का फल मिलना चाहिए था गरीब किसानों को। यह मिल नहीं रहा था। अतः यदि भूमि उनमें बँट गयी है तो धर्म ही हुआ है।

"परन्तु ज़मींदारियाँ छीनने वाले इसे इस कारण नहीं छीन रहे कि ज़मींदार ने जिन कर्त्तव्यों की अवहेलना की है, उनकी पूर्ति करनी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनका उद्देश्य तो यह है कि धन, भूमि और सम्पत्ति का एक स्थान पर संचय नहीं होना चाहिए, यह मिथ्या सिद्धान्त है और यह अधर्म है।

"इनका संचय तो एक स्थान पर होगा। होगा यह कि राज्य में छः-सात सौ ज़मींदारों के हाथ में संचय न होकर एक संस्थान अर्थात् राज्य के हाथ में हो गया है। साथ ही प्रजा के हाथ में संचय न होकर राजा के हाथ में संचय हुआ है। राज्य शक्ति का केन्द्र है और ऐसे शक्तिशाली संस्थान के हाथ भूमि, धन और सम्पत्ति का संचय हो गया तो एक बहुत बड़े पशु के हाथ में असीम शक्ति के समान हो जायेगा और वह पशु, जिस को चाहे, सींग मार कर समाप्त कर देगा।"

इस समय सब पूरी खाने लगे थे। भगवती अपनी बात समझा रहा था, "यही बात उद्योग-व्यापार के विषय में हो सकती है। धन और सम्पत्ति को संचय तो होगा। और राज्य के हाथ में आर्थिक प्रपंच देने का वही हाल होगा, जैसे शक्तिशाली दैत्य के हाथ में लाठी के आगे लोहा लगवा देना है।"

: 7 :

कुँवर साहब बोले, "बात तो ठीक ही प्रतीत होती है। मैं और सुशीला कृषि-मंत्री से फार्म के सम्बन्ध में बातचीत करने गये थे। उसके अगले ही दिन एक बहुत सुन्दर सुनहरी किनारे वाला निमंत्रण पत्र सुशीला देवी को मिला। यह कृषि-मंत्री महोदय के साथ रात के खाने के लिए था। सुशीला समझ नहीं सकी थी कि यह किस उपलक्ष में है। सायंकाल सुशीला ने मंत्री महोदय से टेलिफोन पर पूछ लिया कि यह निमंत्रण किस उपलक्ष में है?

"मंत्री महोदय बोले, 'आपके फार्म के सम्बन्ध में आपसे एक अत्यावश्यक बात करनी है। अतः आपको भोजन के समय ही आमंत्रित कर लिया है। मेरे पास इसके अतिरिक्त अन्य समय नहीं था।'

"सुशीला ने पूछ लिया, 'तो कुँवर साहब को भी साथ लेती आऊँ?'

"इस पर श्रीमान बोले, 'उस ईडियट का इस बात से क्या सम्बन्ध हो सकता है?'

"सुशीला ने कहा, 'फार्म तो उनको ही मिलना है?'

"कृषि-मंत्री ने कह दिया, 'बात आपसे ही करनी है। आप आइये। आपकी समस्या का समाधान, विचार किया है।'

"सुशीला जी इस दैत्यराज के पास गयीं और हमारा फार्म हमको मिला नहीं। हम कुछ ऐसा समझे हैं कि जैसे राजा भैया ने भगवती का पट्टा रोक रखा था, उसी प्रयोजन से हमारे फार्म का पट्टा रुका हुआ है।"

"यह संसार ही दुःखों का कारण है।" राधा ने दीर्घ श्वास छोड़ते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह दिया।

भगवती का कहना था, "स्वतन्त्रता ही सुखों का साधन हो सकती है।" कुवर साहब हँस पड़े और बोले, "जैसे स्वराज्य सुखों का साधन हो रहा है?"

"यह स्वराज्य स्वतन्त्रता का प्रतीक नहीं है। यदि तो इसका संविधान ऐसा होता कि व्यक्तिगत स्वतन्त्रता होती विस्तृत, और नियंत्रण होते सीमित, तो यह सुखों का प्रतीक होता है। वर्तमान राज्य में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता है नगण्य और राज्य का नियंत्रण है अगाध। इस अवस्था में सुख कैसे हो सकता है? जो कुछ प्राप्त हुए हैं, अतः यह स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं हुई है। प्रत्युत नियंत्रण प्राप्त हुआ है।"

भोजन समाप्त हुआ तो सुशीला ने बात बदल दी, "पण्डित भैया! माता जी को इसी कमरे में रखोगे?"

"नहीं रानी बहन! एक-दो दिन में ही एक पृथक् मकान की खोज करूँगा।"

"तो यहीं इस मंजिल में दो कमरे क्यों नहीं ले लेते?"

"माँ लड़की के मकान में नहीं रहेगी।"

"पर मकान तो तुम्हारा है।"

"वह भाड़े पर बहन को दिया हुआ है।"

"और क्या भाड़ा लेते हो?" कुँवर साहब ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

"पर बाबू जी कलकत्ता से भेज देते हैं। यदि जानने की इच्छा हो तो उनसे पता कर सकते हैं?"

"पता किया था।" सुशीला ने कह दिया, "उन्होंने लिखा है कि वे भेजना सदैव भूल जाते हैं और अब बहुत इकट्ठा हो गया है। कभी आयेंगे तो सब दे जायेंगे।"

कुँवर साहब ने बात बदल दी। उसने राधा से पूछ लिया, "आपकी भूमि बीरू के पास ही है क्या?"

"है तो। परन्तु अब वह पुराना बीरू नहीं रहा। जब अन्न बहुत सस्ता था तो बीरू ईमानदार और प्रसन्नवदन और सुखी प्रतीत होता था। अब गेहूँ है बीस रुपये मन, चावल है पचीस रुपया मन, परन्तु बीरू हमारे भाग की पैदावार देते हुए कष्ट और दुःख अनुभव करता है। गुड़, गेहूँ, चावल और अरहर जो अपने खाते में जमा कराई थी, वह पाँच सहस्र रुपये के दाम की थी और मेरे नाम उसने बारह सौ रुपये की फसल जमा कराई थी। मैंने जब पूछा तो बोला, खेती-बाड़ी पर खर्चा बढ़ा है। इस कारण चार हिस्से उसने ले लिए हैं और एक हिस्सा हमको दिया है। साथ ही उसका कहना था, आपको तो जो कुछ मिलता है फोकट में ही मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बाद में यह भी पता चला कि बनिये के पास बेचने के अतिरिक्त उसने अपने घर में भी दुकान लगा दी थी और उसका हिसाब-किताब तो दिया ही नहीं।"

भगवती ने कह दिया, "यह तो वर्तमान परिस्थिति में दूसरा पग ही है। पहला पग था ज़मींदारी निःशेष करना, दूसरा पग है पट्टे-बाजी समाप्त करना। तीसरा पग होगा सहकारी फार्म खोलना और फिर सरकारी फार्म चलाना। इसमें किसान मालिक नहीं रहेगा। वह राज्य कर्मचारी हो जायेगा।

"इसी कारण मैंने एक पत्र बीरू को लिखा है। मैं अपनी भूमि की मालकियत बेचना चाहता हूँ। यदि उसको चाहिए तो लखनऊ में आ जाये और लिखा-पढ़ी कर ले। उसका अभी उत्तर नहीं आया।"

उस रात भगवती ने माँ के लिए अपने कमरे में ही स्थान बना दिया। अगले दिन भगवती ने अपनी दुकान से कुछ अन्तर पर एक मकान भाड़े पर ले लिया और मध्याह्नोत्तर उसमें माँ को ले जाकर रख दिया। अब मकान में फर्नीचर और अन्य सुख-सुविधा का सामान जुटाने लगे।

सुशीला ने उसी रात कुँवर साहब से बात की, "अब हमको अपने लिए कहीं अन्यत्र मकान ले लेना चाहिए। यह ठीक नहीं प्रतीत होता कि मालिक तो भाड़े के मकान में रहे और हम उसके मकान में बिना भाड़ा दिये ही रहें।"

"पर वह तो कहता है कि बाबू साहब भाड़ा देते हैं।"

"मैंने पिता जी को लिखा था कि, 'वह मुझसे भाड़ा नहीं लेता। आप दे दीजिए।' पिता जी ने लिखा था, 'वह मुझसे भी नहीं लेता।'

"भगवती ने पिता जी को लिखा है, 'गोली किसके और गहने किस के। किससे किस बात का भाड़ा लूँ?'

"पिता जी का अभिप्राय यह है कि वे बहन और भाई के सम्बन्धों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे। यह तो मैं कह रही हूँ कि हमको अब यहाँ से चल देना चाहिए।"

परन्तु अगले दिन मध्याह्नोत्तर राधा को मकान बदलते देख, वह चकित रह गयी। उसने यह समझ लिया था कि भगवती विद्युत की-सी तेजी से विचार करता है और फिर तेजी से कार्य करता है।

वह अपने पतिदेव की बात विचार करती थी कि उनके खाली बैठे अनुपार्जित आय पर निर्वाह करने का यह परिणाम है कि वह आलसी, प्रमादी और दीर्घसूत्री हो गये हैं। वह अपने और अपने बच्चों के विषय में विचार करती थी कि क्या वे भी नमक की खान में नमक हो जायेंगे?

सायंकाल वह उस मकान पर जा पहुँची जो भगवती ने अपने रहने के लिए लिया था। पहली मंजिल पर पाँच कमरों का एक सैट था। दो सोने के कमरे और उनके साथ दो शौचालय और स्नानागार थे। एक बैठक थी। दो अन्य कमरे थे और एक रसोई-घर था। ढाई सौ रुपया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महीने पर लिया था। एक वर्ष का किराया अग्रिम दिया गया था।

ये सब बातें राधा ने सुशीला को बतायीं। दोनों मकान के बैठकघर में बैठी थीं। बैठक-घर में नारियल की कारपेट और उस पर दो सोफासैट तथा एक दीवान, कार्नर टेबल और फूलदान, नये-नये लगाये हुए रखे थे।

सुशीला ने पूछा, "माँ जी! यह सामान मकान के साथ ही है?"

"नहीं रानी जी! यह भगवती ने अभी-अभी खरीदा है। मैंने तो कहा था, धीरे-धीरे खरीदा जा सकता है। परन्तु वह बोला, 'माँ, इस सब कुछ खरीदने की और लगाने की तो मेरी योजना दो वर्ष से बन रही है और तब से ही मैंने इसके लिए रुपया पृथक् रखा हुआ था।"

"पर उस योजना में," सुशीला ने पूछ लिया, "गृहिणी का स्थान तो रिक्त ही है?"

राधा ने मुस्कराते हुए कहा, "योजना में तो रिक्त नहीं है। योजना में तो भगवती की बहू इस मकान को लेने से पहले ही उपस्थित थी। आज से छः वर्ष पूर्व मैं दास बाबू के बँगले में आयी तो मेरी दृष्टि विमला पर पड़ी। वह मुझे उचित पतोहू समझ में आयी। उसमें कुछ बातें थीं, जो भगवती की बहू के लिए ठीक प्रतीत नहीं हुईं। मैंने उसको अपने अनुकूल करने का यत्न किया। छः वर्ष के प्रभाव से मैं उसे अपने अनुकूल कर चुकी हूँ। उसके माता-पिता की ओर से शर्त यह की गयी है कि विमला भगवती के मज़हब में हस्तक्षेप करे।

"दो वर्ष हुए विमला ने भगवती से विवाह की बात की थी। तब से ही भगवती घर बनाने के लिये धन एकत्रित कर रहा था। धन एकत्रित हो गया। घर भी लेकर बना लिया गया है, परन्तु बहू के आने में ढील हो रही है।"

"मैं समझती हूँ कि विमला यहाँ नहीं आयेगी। उसके कमरे में किसी और को लाने का प्रबन्ध करना होगा।"

"अभी मैं इतनी निराश नहीं हुई। मैं अभी उसके आने की प्रतीक्षा कर रही हूँ।"

सुशीला देख रही थी कि ये माँ-पुत्र विचार-विचार कर जीवन में पग रखते हुए जा रहे है। अपने साहब के विषय में भी वह विचार करती थी। वे रात को जागते थे, दिन को सोते थे। जब लोग काम करते थे, वे नौकरों के साथ गप्पें हाँका करते थे।

सुशीला को अपने जीवन के अकारथ जाने का दुख लगा। उसका मुख मलिन दिखायी दिया तो राधा से उसके मुख का बदलता रंग छुपा नहीं रह सका। उसने पूछ लिया, "क्यों सुशीला बेटी! क्या बात है? यह सब कुछ पसन्द नहीं आया क्या?"

"इसमें मेरे पसन्द न पसन्द की बात नहीं है। मैं अपनी अकर्मण्यता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर विचार कर रही थी। देखिये माँ जी, आज हम दिन के साढ़े आठ बजे उठे थे। शौच, स्नानादि से निवृत्त होते-होते दस बज गये। हमने ग्यारह बजे अल्पाहार किया। इसके बाद मुझे कुछ कपड़े और बच्चों के जूते खरीदने थे। मैं बाज़ार चली गयी। एक बजे लौटकर आयी तो कुँवर साहब अपने एक मित्र, भ्रदी के राजा साहब से मिलने गये थे। मैंने घर बैठे एक उपन्यास पढ़ना आरम्भ कर दिया। बच्चे खाकर सो गये, परन्तु कुँवर साहब तीन बजे लौटकर आये। मध्याह्न का भोजन हमने तीन बजे किया। उसके उपरान्त वे सो गये। मैं विचार कर रही थी कि क्या करूँ? भगवती भैया की दुकान पर गयी और आप के मकान का पता पूछ यहाँ चली आयी हूँ। वे सोकर उठेंगे और फिर उनका ड्राईवर अथवा नौकर समीप हुआ तो उससे शतरंज खेलने लगेंगे। इसमें रात के दस बज जायेंगे। तब रात का खाना होगा। और फिर बारह-एक बजे तक का समय बातें करते-करते निकल जाता है। दिन के समय सोने के कारण रात को नींद ठीक समय पर नहीं आती।"

राधा यह सब वृत्तान्त सुनती हुई चकित बैठी थी। सुशीला ने कहा, "क्या करूँ और फिर क्यों करूँ?"

राधा ने सुशीला की पूर्ण समस्या का अर्थ यह समझा कि यह राजसी प्रकृति का जीव कार्य करने के लिये छटपटा रहा है। और इसको पति मिल गया है तामसी प्रकृति का प्राणी। वह इससे उलटा ही कार्य कराना चाहता है। अपने इस अनुमान की वह परीक्षा करना चाहती थी। उसको एक बात स्मरण आ गयी। उसने उस विषय में ही पूछ लिया, "सुशीला बेटी! यह क्या बात है कि तुम्हारे पति ने कल शिकायत की थी कि तुम और बच्चे नहीं चाहतीं? कुछ कष्ट है तुमको?"

सुशीला पुनः लज्जा से लाल होती दिखायी दी। राधा ने पूछ लिया, "क्या बात है बेटी? कुछ न बताने वाली हो तो छोड़ो इसे। मैं पुनः नहीं पूछूँगी।"

सुशीला ने आँखें नीची किये हुए कहा, "माँ जी! लज्जा की बात तो है, परन्तु मैं विचार करती हूँ कि जिसको माँ बना लिया, फिर उससे कोई बात नहीं छुपी रहनी चाहिए। कल मैं उनके सामने ही उनकी निन्दा नहीं करना चाहती थी। आज भी निन्दा के भाव से नहीं कह रही। एक वस्तुस्थिति का वर्णन कर रही हूँ।

"मैं समझती हूँ कि और अधिक बच्चे उत्पन्न न करने की बात उनके मन में ही है। वे इसके लिये प्रयत्न ही नहीं करते। वे रात को सोने के कमरे में दो-ढाई बजे से पहले आते ही नहीं। और मैं उस समय एक स्वस्थ प्राणी की भाँति सो रही होती हूँ। ये मुझको बिना जगाये सो जाते हैं। रात के अतिरिक्त समय में उनकी संगति प्राप्त करने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी यत्न किया है परन्तु सफल नहीं हुई।"

"परन्तु और बच्चों के लिये तुम्हारी उत्कट इच्छा है क्या?"

"उत्कट तो नहीं कह सकती। फिर भी एक-आध और हो जाता तो ठीक ही था।"

: 8 :

"मैं समझती हूँ," राधा ने बातों की दिशा बदलने के लिये कह दिया, "दो पर्याप्त हैं, परन्तु जीवन केवल बच्चे उत्पन्न करने के लिये ही तो नहीं। वास्तविक जीवन का लक्ष्य कुछ और है। तुम तो पढ़ी-लिखी लड़की हो। मैं अनपढ़ भला तुमको क्या कह सकती हूँ। तुम अपने जीवन का लक्ष्य ढूँढो और यदि पा जाओगी तो फिर तुम्हारा यह प्रश्न कि क्या करूँ, कैसे करूँ? का उत्तर मिल जायेगा।

"देखो, मैं तुमको अपनी बात बताती हूँ। एक बार जीवन में मैं भी समझने लगी थी कि मेरे लिये करने को कुछ नहीं रहा। इस कारण जीवन समाप्त कर देना चाहिए।

"बहुत विचारोपरान्त यह समझ में आया कि भगवती के पिता ने मेरे लिये एक काम सौंपा हुआ है। वह काम था उनके लड़के का पालन-पोषण कर, उसे अपनी टाँगों पर खड़ा कर देना। भगवती के प्रति दो कर्त्तव्य थे। एक तो इसका विवाह करना, और दूसरे, इसको निर्वाह कर सकने के योग्य बनाना। मैं दोनों के लिये यत्न करने लगी। उसी यत्न में मुझे घोर मानसिक यंत्रणा भी सहन करनी पड़ी। परन्तु लगी रही और अभी तक उनमें से एक ही कार्य पूर्ण हुआ है।। वह एक भी तो मेरे किये से नहीं हुआ। भगवती ने अपने ही पुरुषार्थ से उसका पार पाया है। वह सुख-पूर्वक निर्वाह के योग्य पैदा कर रहा है। अपने दूसरे काम के लिये भी मैंने यत्न किया है। छः वर्ष तक निरंतर उसको सुख पहुँचाने वाली पत्नी को तैयार करती रही। वह भी तो भगवती के अपने पुरुषार्थ से ही प्राप्त होने वाली है। मेरा यत्न तो अँधेरा ढोने के ही समान रहा।

"इस कारण काल से मैं यह विचार करने लगी थी कि मैंने व्यर्थ में जीवन को लम्बा किया है। जो काम मैंने अपने करने के लिये समझे थे, वे मुझसे तो हुए नहीं। वे तो किसी अन्य के करने से हो रहे हैं।

"इस समय मुझे यह अनुभव होने लगा कि मैं कौन हूँ, किसी कार्य को करने वाली! भगवती ने भी जो कुछ किया है, अथवा करने वाला है, वह भला स्वयं कर रहा है क्या? जब विचार करती हूँ तो उसके कार्य के पीछे कोई और शक्ति कार्य करती दिखाई देती है।

"एक रात मैं तुम्हारे ज्येष्ठ द्वारा घोर उत्पीड़न का शिकार बनी तो उसी समय आत्म-हत्या करने का विचार करने लगी थी। विचार आया इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मान् आयोजन से पहले भगवान का पूजन तो कर लूँ। पूजन करने से प्रकाश हुआ कि अभी नहीं। फिर एक दिन वही दुर्घटना हो गयी। उस समय तो निश्चय पूर्ण हो चुका था, परन्तु मिसेज़ दास ने पूछ लिया, 'क्या निश्चय से जानती हो कि अगला जन्म इससे अच्छा मिलेगा?'

"मैं समझ गयी कि निश्चय से नहीं कह सकती। इससे विचार की दिशा बदली। मैं समझ गयी थी कि मेरा जीवन-कार्य कुछ न रह गया और वह कार्य भी, जिसको अपना कार्य समझ बैठी थी, स्वयमेव बिना मेरे किये ही हो रहा है। फिर भी मैं अभी विश्वास से यह नहीं कह सकी कि मेरा अगला जन्म उससे श्रेष्ठ अथवा कम से कम ऐसा भी होने वाला है। इस कारण उसको प्राप्त करने के यत्न में लगी हुई हूँ।

"मुझे तो अवकाश ही नहीं रहा कि एक क्षण के लिये भी अपने को खाली समझूँ। दो ही काम करती हूँ, एक तो इस जीवन को लम्बा करना, अगले जन्म के लिये इतना कुछ संचय कर लूँ कि विश्वास से इसको छोड़, अगले में जा सकूँ, अपने नये वस्त्र अपनी बुद्धि अनुसार बनाने में संलग्न हूँ, जिससे इन वस्त्रों के फटने से पहले ही अनको इससे अच्छे नहीं, तो कम-से-कम ऐसे ही तैयार कर सकूँ।

"सन्तान उत्पन्न करना, उसका पालन-पोषण करना भी तो कदाचित अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिये ही है। यह अपना पिछला ऋण उतार, अगले जन्म में उऋण होने की बात ही है।

"परन्तु कार्य एक ही है। यह आत्मा एक यात्रा पर चल रही है। यात्रा लम्बी है और इसको पूर्ण करने के लिये सावधानी से निरन्तर पुरुषार्थ करने की आवश्यकता है।"

सुशीला कलकत्ता विश्वविद्यालय की स्नातिका थी। वह जानती थी कि राधा तेरह-चौदह वर्ष तक कुछ हिन्दी और बहुत कम संस्कृत पढ़ कर विवाह दी गयी थी। विवाहित जीवन में भी वह दो वर्ष तक ही रही। उसका पति एक विद्वान ब्राह्मण अवश्य था, परन्तु इन दो वर्षों में घर-गृहस्थी, भगवती का जन्म और पालन-पोषण भी हुआ था। भला इस काल में यह क्या सीख सकती थी? फिर भी वह देख रही थी, कि राधा अपने कथन से उस पढ़ी-लिखी स्नातिका के सामने एक नया मार्ग खोल रही है, उसको उस मार्ग पर चलने के लिए आश्रय दे रही है। वह आश्चर्यचकित थी।

"पर माँ जी!" उसने पूछ लिया, "मार्ग तो है। अपने हिन्दू संस्कारों से मुझे इस मार्ग के होने का ज्ञान तो है, परन्तु उस मार्ग का द्वार भी दिखाई नहीं देता और फिर उस पर चलने की सामर्थ्य कहाँ से पाऊँ?"

राधा हँस पड़ी। हँसकर बोली, "जिज्ञासा तो निर्माण होती है बुद्धि की प्रेरणा से, और मार्ग मिलता है सत्संग से। चलने की सामर्थ्य और मार्ग संरक्षण मिलता है, योगाभ्यास से। योग का दूसरा नाम भगवान ने बताया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, 'कर्मसु कौशलम्'। कर्मों में कुशलता का नाम योग है। और योगाभ्यास का द्वार है : तपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि क्रियायोगः। इसका अभिप्राय है, तपस्या, स्वाध्याय और ईश्वराश्रय योग कार्य हैं।

"तपस्या का अर्थ है, किसी कार्य-सिद्धि के लिये निरन्तर यत्न में संलग्न रहना। स्वाध्याय का अर्थ है, जिस विषय में सिद्धि प्राप्त करनी हो, उसका साहित्य लेकर पढ़ना और फिर कार्य-सिद्धि के लिये अपने को ईश्वरार्पण कर देना।"

"कहो, कुछ समझी हो?"

"कुछ नहीं।"

"तुम यह भी जानती हो या नहीं कि तुम हो कौन?"

"यही तो मेरा प्रथम प्रश्न था कि मैं क्या करूँ, कैसे करूँ और फिर क्यों करूँ?"

"और तुम हो कौन?"

"मैं नहीं जानती। शरीर तो माता-पिता ने बनाया है। दो बच्चे तो मैंने भी बना डाले हैं। परन्तु क्या मैं और बच्चे शरीर मात्र हैं?"

"बस यही तुम्हारा कार्य है। तुमको तो यह ही जानना है कि तुम हो क्या? क्या यह शरीर तुम हो अथवा इससे कुछ अतिरिक्त हो? इसको जानने से ही तुम्हारी समस्या सुलझ जायेगी।"

सुशीला इस पूर्ण वार्त्तालाप से विचारों के अरण्य में फँसी हुई घर पहुँची तो सांयकाल हो चुका था और दास बाबू की लड़की विमला भगवती के कमरे के बाहर खड़ी, विचार करती मिल गयी।

"ओह, विमला! यहाँ खड़ी क्या कर रही हो?" सुशीला ने पूछ लिया।

"मौसी को ढूँढ रही हूँ। कल उनको यहाँ छोड़ गयी थी।"

सुशीला हँस पड़ी। हँसते हुए उसने पूछ लिया, "मौसी कोई मिट्टी की माधो हैं जो रख गयी थीं तो वहीं पड़ी रहतीं।"

विमला हँसने लगी। वह भी समझ गयी थी कि उसने हँसी की बात की है। हँसकर उसने पूछ लिया, "तो कहीं घूमने गयी हैं? यह समय तो उनकी पूजा का है।"

"तो तुम उनकी पूजा में सहायक होने आई हो?"

"सहायक तो नहीं। मैं भला एक बच्ची क्या सहायता करूँगी। मैं तो अपने मार्ग पर चलने में सहायता लेने आयी हूँ।"

"क्यों, मार्ग में कोई बाधा आ खड़ी हुई है?"

"हाँ।"

सुशीला ने पूछ लिया, "बहुत जल्दी है क्या? तुम्हारी मौसी तो इस समय अपने पूजा-पाठ में होंगी न?"

"वही तो समय उनसे कुछ जानने का होता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सत्य? तब तो मैं भूल से उठकर चली आयी हूँ। मैं समझी थी कि अब उनको अपने ईश्वर से बात करने दूँ।"

"जब वे अपनी पूजा समाप्त करती हैं कि उस समय उनका मन शुद्ध, शान्त और एकाग्र होता है। उनकी बुद्धि निर्मल होती है और उनकी प्रत्येक वस्तु और बात में उसका रहस्य दिखाई देने लगता है।"

"तो तुम जाओ, कदाचित् तुम्हारी समस्या सुलझ जाये। वे सामने 'ओबराय स्पोर्टस्' की दुकान के ऊपर के फ्लैट में चली गयी हैं।"

"धन्यवाद!" विमला ने कहा और सीढ़ियाँ उतर गयी। सुशीला उसको भागकर जाते देखती रह गयी।

कुँवर साहब शतरंज की एक दर्जन बाजियाँ हार चुके थे और सुशीला के कहीं चले जाने पर उद्विग्न हो कर बैठे थे। बाहर सीढ़ियों पर किसी से बातें करते उसकी आवाज़ सुन, वे द्वार खोल देखने लगे। विमला को भागते देख उन्होंने सुशीला से पूछ लिया, "क्या बात थी?"

"एक लड़की थी। पथ से भटक गयी प्रतीत होती थी।"

"तो रास्ता दिखा दिया उसको?"

"हाँ।"

सुशीला अपने पति के पीछे-पीछे कमरे में आ गयी। यह बैठक थी। भूमि पर अभी भी शतरंज विछा था और मोहरे इधर-उधर बिखरे पड़े थे। सुशीला ने उनको देख पूछ लिया, "तो आपका खेल समाप्त हो गया?"

"एक घण्टे से प्रतीक्षा कर रहा हूँ। विचार था, आज कोई पिक्चर देखने चलते।"

"क्या लाभ होता देखने से?"

"खेल में हार जाने से उत्पन्न खिन्नता मिट जाती।"

"पर अब तो देर हो गयी है।"

"हाँ, तो चलो जरा मोटर में घूम आयें।"

"चलिये।" सुशीला समझ रही थी कि कितना लक्ष्य-विहीन जीवन है।

: 9 :

आज कुँवर साहब बाज़ी-बाज़ी हारते गये थे इस कारण ऊबे बैठे थे। अतः रात के भोजन के उपरान्त वे शतरंज अथवा ताश में रुचि न रखने के कारण, सुशीला से मनोविनोद करने उसके निजी कमरे में जा पहुँचे।

बच्चे सो चुके थे। सुशीला राधा के पूर्ण प्रवचन पर मनन करना चाहती थी। परन्तु पतिदेव को आज उसके कमरे में देख, मन में विचार करने लगी। आज क्या बात है जो ये अपने नौकरों से विनोद करने नहीं जा रहे। उसने पूछ लिया, "किस का धन्यवाद करूँ कि आप आज इस समय दर्शन देने चले आये हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरे शतरंज में हारने का, निरन्तर हारने का। हारते-हारते खेल से ऊब गया हूँ।"

"तो पत्नियाँ खेलों से ऊबे पतियों के मनोरंजन की सामग्री होती हैं?"

"देवी जी, नाराज हो गयी हैं?"

"नहीं, नाराज नहीं हूँ।" सुशीला ने अपने पति को अपने पलंग पर पकड़ कर बैठाते हुए कहा, "फिर विस्मित अवश्य हूँ। कितने काल के उपरान्त आज आपने यहाँ पदार्पण किया है।"

"सरिता के उत्पन्न होने के उपरान्त तुम्हारी संगति का फल कभी मिला हो, स्मरण नहीं।"

"परन्तु इस फल की प्राप्ति, आज जब जीवन के अन्य खेल-तमाशे उपलब्ध नहीं, कुछ शोभनीय प्रतीत नहीं हो रही। मनुष्य को जब बढ़िया वस्तु प्राप्त न हो तो घटिया पर ही संतोष कर लेता है। यह तो एक अति अपमान-जनक स्थिति है न?"

"अपमान-जनक क्यों, किसके लिये?"

"उस पदार्थ के लिये, जो घटिया होने पर भी सहन किये जा रहा है।"

"आज मेरा मन स्वस्थ नहीं है। राजा साहब भद्री आये हुए थे और बाज़ी-पर-बाज़ी लगाते गये और मैं हारता गया। जब गये तो मैं विचार करता था कुछ दिन के लिये शतरंज लपेट कर रख दूँ।"

"यही तो पूछ रही हूँ कि जब बढ़िया वस्तु उपलब्ध नहीं तो घटिया पर संतोष होने लगा है?"

"मैं तो इसको इस प्रकार समझा हूँ कि जब मीठा खाते-खाते मुख उचाट हो जाये तो नमकीन खाया जाता है।"

"तो करिये मुख का स्वाद ठीक," सुशीला हँस दी। परन्तु इस कहने में उसके मन की पति के प्रति घृणा की स्थिति का प्रदर्शन ही था।

इस वार्त्तालाप की प्रतिक्रिया उस इतिहास की पृष्ठभूमि पर, जो उसके विवाह के उपरान्त घटा था, अति भयानक हो उठी थी।

विवाह के उपरान्त वह नौगवाँ में गयी थी अपनी सास से सहानुभूति के कारण। राजा भैया के पुनः पकड़े जाने पर राजा बहादुर के शोक से रुग्ण हो जाने का समाचार सुन, सास की दयनीय अवस्था पर सहानुभूति प्रकट करना वह कर्त्तव्य समझने लगी थी; परन्तु जब भैया पुनः छूटे और मुकदमे से मुक्त हुए तो वह नौगवाँ छोड़ देने के पक्ष में थी। उसका कहना था कि ज़मींदारी के लिए वहाँ उनका पड़ा रहना व्यर्थ है। ज़मींदारी उनकी है नहीं। उनके पास रहेगी नहीं। तो भला वे क्यों अपने जीवन का अमूल्य समय वहाँ गँवायें। परन्तु कुँवर साहब का कहना था कि पिता जी के लिए हमको यह करना ही होगा।

सुशीला ने कहा था, "यदि पिता जी समझते हैं कि आप जमींदारी का प्रबन्ध करने के योग्य हैं तो वे आपको अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दें। बड़े साहब के लिए गुजारा बाँध दें।"

छोटे साहब यह करा नहीं सके। वे कराना चाहते भी नहीं थे। सुशीला का विचार था कि यह एक नालायक व्यक्ति का उच्छृंखलता में सहायक होना है।

कुँवर साहब माने नहीं। राजा बहादुर के मस्तिष्क में यह बैठा हुआ था कि कुछ वर्ष पहले पैदा हो जाने से राजा भैया का ज़मींदारी पर अधिकार बन गया है।

कुँवर साहब के नाम फार्म कराने के लिए सुशीला को सत्याग्रह करना पड़ा था। वह भूख-हड़ताल कर ही राजा बहादुर से इसकी रजिस्ट्री करा सकी थी।

राजा बहादुर के देहान्त के उपरान्त राजा भैया द्वारा बे-सरो-सामान निकाल दिये जाने पर सुशीला का कहना था कि मुकदमा नहीं करना चाहिए। अपना ज़मीदारी से तथा देहात से किनारा कर लेना चाहिए। परन्तु कुँवर साहब ने न केवल मुकदमा किया, वरन् सुशीला के इस आग्रह को किसी प्रकार के उद्योग में रुपया लगाया जाय, भी नहीं माना। इसी बीच कुँवर साहब की सिनेमाबाजी, शतरंज, ताश और मित्रों से गप्पबाजी चलती रही। इसके अतिरिक्त पति-पत्नी में परस्पर सहवास पर भी मतभेद बढ़ता गया। सुशीला को संदेह होने लगा कि उसके पति रुग्ण हैं और असमर्थ हैं।

इस सबके उपरान्त मीठा और नमकीन में तुलना ने तो उसको अपमानित और लज्जित कर दिया। अगले दिन सुशीला रात की पूर्ण घटना पर विचार करने लगी तो वह कुछ समझ नहीं सकी। उसका पति रुग्ण नहीं था। वह असमर्थ भी नहीं था। वह उससे अरुचि भी नहीं रखता था। तो यह क्या था? उसे अब ये संदेह होने लगा कि उसकी तुलना में कोई मिठाई-जैसी स्वादिष्ट वस्तु उन्हें मिली थी और स्वादिष्ट खाते-खाते मुख फिर जाने के कारण नमकीन वस्तु खाने चले आये थे।

वह एक दूसरी पत्नी रखने पर इतनी रूष्ट नहीं थी, जितनी इस बात पर कि उससे ऊब कर ही वे उसके प्रयोग के लिए आ सके हैं।

अतः नित्य के विपरीत अगले दिन वह प्रातः विचार-मग्न गम्भीर हो गयी थी। सदा की भाँति ग्यारह बजे अल्पाहार पर बैठे हुए भी वह गम्भीर और खिन्न-मन थी।

कुँवर साहब ने पूछ लिया, "मैं विचार करता था कि आज तुमको अति प्रसन्न होना चाहिए था।"

"आज क्या विशेष बात है?" सुशीला ने पूछ लिया।

"क्या पिछली रात नित्य से विलक्षण नहीं थी?"

"ऐसी रातें तो पहले भी हो चुकी हैं। इसलिए इसमें कुछ भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विलक्षणता नहीं। हाँ, इसमें विचित्रता यह है कि यह क्यों हुई थी? जो दो वर्षों तक नहीं था, वह कल क्या था? इस कारण को न जान सकने पर ही चिन्तित हूँ।"

"परन्तु इसके जानने की चिन्ता क्यों है?"

"यह इसलिए कि अपने पर जिसको उपमा मिली है, वह किन गुणों के कारण है? यह प्रश्न मन को कष्ट दे रहा है।"

"तो जानना चाहती हैं सुशीला देवी, कि वह क्या है, जिसने मुझे इतने दिन तक पकड़ा हुआ था?"

"इच्छा तो है, जिससे मैं अपने हीन गुणों को उसके बराबर करने का यत्न करूँ।"

"अच्छा बताऊँगा।"

"कब बतायेंगे?"

"जब प्रसन्न दिखाई दोगी।"

"यत्न करूँगी कि शीघ्र ही सन्तुष्ट हो जाऊँ। प्रसन्नता की बात कह नहीं सकती।"

जीवन सामान्य हो रहा प्रतीत होता था। फिर भी सुशीला समझी थी कि फार्म न मिला न सही, उनकी अपनी पर्याप्त आय है और उनको भगवती का मकान छोड़ देना चाहिए और अपना पृथक् मकान बना लेना चाहिए अथवा कोई अन्य मकान भाड़े पर ले लेना चाहिए। कुँवर साहब सिद्धान्त से तो इसको मानते थे, परन्तु इसके लिए यत्न नहीं करते थे। सुशीला, भगवती अथवा उसकी माता जी से इसके लिए कहती थी तो वे हँस देते थे।

राधा का तो कहना था, 'जब तक कुँवर रानी के घर पाँच बच्चे नहीं हो जाते, तब तक बड़े मकान की आवश्यकता नहीं।'

सुशीला राधा से मिलने उसके घर में जाती रहती थी। एक दिन वह गयी तो विमला अपनी मौसी के पास बैठी रो रही थी। सुशीला उसे रोती देख विस्मय में खड़ी रह गयी। राधा ने उसे देखा तो कहा, "आओ सुशीला! बैठो। सब ठीक है?"

सुशीला ने राधा के प्रश्न का उत्तर देने के स्थान पर विमला से पूछ लिया, "रो क्यों रही हो?"

विमला गालों पर ढुलके आँसू पोंछ रही थी। वह बोली नहीं। सुशीला ने राधा से पूछ लिया, "माँ जी, क्या हुआ है विमला बहन को?"

"इसका एक खिलौना टूट गया है। उसके शोक में यह रोने लगी है।"

विमला ने कहा, "मौसी! टूट जाता तो शोक नहीं होता और अपने छः मास के परिश्रम को टूक-टूक हो गया देख, उत्साह-हीन न होती। परन्तु यह तो तोड़ दिया गया है। तोड़ने वाले की भावना पर मुझे दुख हो रहा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 10 :

सुशीला कुछ समझती हुई विमला को अपने समीप खींचकर उसके गले में हाथ डाल कर पूछने लगी, "क्या था वह? कैसे खिलौने से खेल रही हो आजकल?"

बात इस प्रकार हुई थी। जिस दिन राधा दास बाबू का मकान छोड़कर आयी थी, उस दिन से विमला कठिनाई की आशंका करने लगी थी। फिर भी वह घर लौटी और माँ को यह आश्वासन दे कि वह पूर्ण स्थिति पर पुनरावलोकन करने को तैयार है, अपने नित्य के कर्म में लग गयी थी। अगले दिन सायंकाल की चाय के समय से पूर्व ही क्राफर्ड आया था और रमणी ने विमला को नीचे ड्राइंग-रूम में बुला, दोनों का परिचय करा दिया और उनको बातचीत करने के लिए छोड़, स्वयं बाहर चली गयीं।

क्राफर्ड ने कहा, "मेरा परिचय तुम्हारी मम्मी ने ठीक नहीं दिया, इसलिए मैं कुछ कह दूँ तो अधिक ठीक होगा।

"मैं एंग्लो-इण्डियन समुदाय से हूँ। हमने हिन्दुस्तानी बने रहने की इच्छा प्रकट की है। मेरे पिता इस प्रान्त के चीफ इन्जीजियर थे। इस समय उनकी सम्पत्ति चालीस-पचास लाख की है। वे मसूरी में अपनी एक कोठी में रहते हैं। मैं सरकारी कामों पर ठेकेदारी करता हूँ। चार वर्ष हुए, मेरा विवाह हुआ था, परन्तु मेरी पत्नी का हस्पताल में देहान्त हो गया। इसे दो वर्ष हो चुके हैं। अब मैं पुनः विवाह करने की इच्छा करने लगा हूँ। इसी मतलब से मैं आया हूँ। हमारे गिरजाघर के डीन मिस्टर जे॰ ब्राउन ने आपकी बहुत तारीफ की है और मैं आपको वैसा ही पाता हूँ।

"मैं पिता का अकेला लड़का हूँ। माँ नहीं है। मेरी आय लगभग डेढ़-दो लाख रुपया वार्षिक है। वैसे मैं अभी चौबीसवें वर्ष में चल रहा हूँ और मैं अपने को प्रत्येक प्रकार से आपकी सेवा से लिए उपयुक्त समझता हूँ।

"अब आप बताइये। मैं आपसे मिलने आया करूँ अथवा नहीं?"

"आपसे मिलकर मुझे बहुत प्रसन्नता होगी।" विमला ने गम्भीर हो उत्तर दिया, "विवाह के लिए इतना परिचय पर्याप्त नहीं। कुछ दिनों में हम एक-दूसरे को भली-भाँति जान लेंगे तो विवाह के विषय में बात कर लेंगे।"

उस दिन क्राफर्ड सन्तुष्ट और प्रसन्न गया। सायंकाल विमला राधा से राय करने गयी। राधा ने कहा था, "किसी घर आये व्यक्ति के साथ सभ्यता, शालीनता का व्यवहार और मुस्कराते हुए बात करना एक भली लड़की का गुण है। विवाह एक पृथक् बात है। यह तुम अपने अन्तर-आत्मा से राय कर लेना। मन करे सो करना, न मन करे तो न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना।'

इसी सुझाव के अनुसार विमला क्राफर्ड से व्यवहार करती रही। इस व्यवहार से माता-पिता और क्राफर्ड भी विचार करने लगे थे कि विमला विवाह के लिए तैयार हो रही है। अब दोनों इकट्ठे पिक्चर देखने तथा कहीं अच्छे होटल में खाना भी खाने लगे थे।

एक दिन दोनों में पुनः विवाह के विषय में बातचीत हुई। दोनों एक होटल में लंच ले रहे थे। क्राफर्ड ने कहा, "पापा चाहते तो इंगलैंड जाकर वहाँ का नागरिक बन रह सकते थे। परन्तु हमने यहाँ ही रहना स्वीकार किया है। जानती हो किसलिए?"

"यह कैसे जान सकती हूँ। हम अपने को हिन्दुस्तानी समझते हैं और हैं भी।"

"जब हमने यह सुना कि भारत एक सैक्यूलर स्टेट होगा, तो हमने यहाँ रहना स्वीकार कर लिया। हमारा विचार है कि इस सैक्यूलर स्टेट में आगामी दो वर्ष में यहाँ ईसाइयों की तादाद इतनी कर देंगे कि राज्य ईसाई हो जायेगा। यही एक प्रजातन्त्रात्मक और सैक्यूलर स्टेट का स्वाभाविक परिणाम है।

"हमने यह निश्चय किया है कि इसमें अपना सहयोग दें और यहाँ कि जाहिल जनता को सत्य मार्ग का दर्शन करायें।"

"यह आपका बहुत ही नेक काम है, परन्तु इतना धन बटोरते हुए आप यह सब कर सकेंगे क्या?"

"धन इसमें सहायता करेगा। देखो, राँची में एक जर्मन मिशन की सहायता से एक संस्थान खोला गया है। इसमें पापा पाँच हज़ार प्रतिमास देते हैं। और हम वहाँ के आदिवासियों को धन ऋण में देते हैं। वे बेचारे लौटा नहीं सकते। तब हमारे पादरी वहाँ पहुँच जाते हैं और उनको कहते हैं वे गिरजाघर चलें तो उनका ऋण अदा समझा जायेगा। पिछले चार-पाँच वर्ष में हम कई लाख आदिवासियों को ईसाई बना चुके हैं।

"अब वे लोग सभ्यता का स्वाद लेकर हमारा धन्यवाद करते हैं।"

"पर इस प्रकार बिना समझाने के ईसाई बनाने से लाभ क्या होगा?"

"लाभ यह होगा कि ईसाइयों की संख्या बढ़ेगी और हम भारत को एक ईसाई देश बनाने में आगे बढ़ रहे हैं।"

"परन्तु यह धन के लोभ में मज़हब-परिवर्तन तो अपराध है।"

"अपराध उसको कहते हैं जिसको पुलिस अपराध माने और मुकदमा कर सके।"

"पर मैं तो धन, राज्य-बल और तलवार से मज़हब के विस्तार को पाप ही मानती हूँ। यह तो लगभग ऐसा है जैसा बहुत से लोगों को एक जेलखाने में बन्द कर दिया जाय और उनको तथा उनके बच्चों को दूसरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मज़हब की बातें जानने से वंचित कर दिया जाय। इस प्रकार उनके ज्ञान को सीमित कर उनको पशु बना दिया जाय।"

"वाह! ये कैसे हो गया? दूसरे मज़हब वालों को हम मना तो करते नहीं कि वे भी ऐसा न करें, जो हम कर रहे हैं।"

"ठीक है। आपकी बात समझ में आती है। आप चीफ इन्जीनियर को रिश्वत दे, अनुचित भावों पर ठेका ले लेते हैं और कहते हैं कि यह पाप नहीं है, क्योंकि किसी दूसरे को अधिक रिश्वत देकर ठेका स्वयं लेने का अवसर था।

"अर्थात् भला आदमी जो रिश्वत देना नहीं चाहता, उसे आप पापी बनने का आह्वान करते हैं और यदि वह नहीं बनता तो उसको भूखों मरने पर विवश करते हैं।"

"यह दुनिया है। इसमें इसी प्रकार रहा जा सकता है। पण्डित नेहरू ने राज्य को सैक्यूलर बना कर हमको वृद्धि पाने का अवसर दिया है और इस अवसर का लाभ न उठा कर, हम मूर्ख बना रहना चाहते हैं।"

"आप महान पाप में सहयोग दे रहे हैं।"

दोनों भोजन कर रहे थे और क्राफर्ड ने कह दिया, "मैं तो समझता हूँ कि हम कौम को सभ्य बनाने का पुण्य-लाभ कर रहे हैं। जैसे एक नालायक को मिठाई का लोभ देकर पढ़ाई के लिए राजी किया जाता है, वैसे ही सुख-सुविधा देकर इनको हम सभ्यता सिखा रहे हैं।"

"देखो मिस्टर!" विमला ने कहा, "हिन्दुओं को न तो मैं जाहिल समझती हूँ और न ही ईसाइयों को, जैसे आप हैं, सभ्य मानती हूँ। हाँ, उन आदिवासियों को निर्दोष और सरल चित्त मानती हूँ और उनमें कार्य करने वाले ईसाइयों को धूर्त्त और पाजी तथा इन पादरियों को धन देने वालों को महापापी।"

एक ही वाक्य में इतना कुछ सुन क्राफर्ड का मुख लाल हो गया। फिर भी उसने कहा, "तो हम विवाहित जीवन कैसे चला सकेंगे?"

"हमारा विवाह होगा ही, यह आप कैसे जानते हैं?"

"आपके पापा ने कहा है कि विवाह होगा।"

"उनका अथवा मेरा?"

"आपका मेरे साथ।"

"मैं समझती हूँ कि पापा को भ्रम हो गया है।"

"तो तुम्हारा विवाह कहाँ होगा?"

"हो जायेगा। आपको चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं।"

"तुम्हारी मम्मी को चिन्ता प्रतीत होती है।"

"मैं ऐसा नहीं समझती। मम्मी को विदित है कि मेरा विवाह कहाँ होगा और कब होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"तो यह निश्चय हो चुका है?"

"जो कुछ सन्देह था, वह आज मिट गया है। आप-जैसे धर्मात्मा सज्जन से मेरा विवाह नहीं होगा।"

"कदाचित् आप समझ रही हैं कि इतना कुछ इन ईसाई मिशन वालों को देने के उपरान्त आपके लिए कुछ नहीं बचेगा?"

"मैं ऐसा कुछ नहीं समझ रही। मेरी आवश्यकताएँ बहुत कम हैं।"

भोजन समाप्त हुआ तो क्राफर्ड विमला को घर छोड़ने को पहुँचा। वहाँ रमणी उनकी प्रतीक्षा करती मिली। क्राफर्ड ने उससे अपना समाधान करने के लिए पूछ लिया, "मिसेज़ दास! विमला ने बताया है कि आप जानती हैं कि इसका विवाह कहाँ होने वाला है?" क्राफर्ड का प्रश्न था।

"होने वाला है, नहीं, होने वाला था। हम इसके विवाह को वहाँ पसन्द नहीं करते। इसलिए आपको अवसर देना चाहते थे कि आप इसके हृदय को जीत सकें।"

"मैं जरा जानना और देखना चाहता हूँ कि किसके साथ मेरा मुकाबला है। वह कौन है और कहाँ है?"

रमणी ने एक क्षण तक विचार किया और फिर विमला की ओर देख पूछ लिया, "मिस्टर क्राफर्ड को उन्हें दिखा दिया जाय?"

"क्या हानि है?"

"तो चलो, विमला के कमरे तक चलना होगा।"

रमणी उठ खड़ी हुई। वह मन में विचार कर रही थी कि एक महीना हो गया, इनको परस्पर मिलते हुए और वह विमला के मन पर प्रभाव नहीं डाल सका। वह भी समझ रही थी कि संयोग होना होता, तो एक नज़र में ही हो जाता। यह संयोग नहीं होगा।

क्राफर्ड विस्मय कर रहा था कि वह लड़का विमला के कमरे में है। बहुत विचित्र है! विमला तो समझ गयी थी कि उसके द्वारा बना भगवती का चित्र दिखाया जा रहा है।

तीनों ऊपर की मंज़िल पर पहुँचे। विमला के पास दो कमरे थे। एक उसका स्टुडियो था यहाँ बैठ वह अपनी चित्रकला को उन्नत करने का यत्न किया करती थी। माँ का विचार था कि भगवती का चित्र वहाँ अभी स्टैण्ड पर होगा। वह वहाँ नहीं था। रमणी ने प्रश्न-भरी दृष्टि में विमला की ओर देखा तो उसने कह दिया, "भीतर बैड-रूम में है।"

रमणी क्राफर्ड को वहाँ ले गयी। विमला उनके पीछे-पीछे थी। भगवती का चित्र एक फ्रेम में लगा हुआ विमला के बैड के साथ की मेज़ पर रखा था। उसके आगे ताज़े फूलों का गुलदस्ता, फूलदान में लगा था।

क्राफर्ड ने उसे देखा और पहचान गया। उसने कहा, "यह तो अरुणोदय पुस्तक केन्द्र पर काम करने वाला व्यक्ति प्रतीत होता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ। इसका नाम भगवतीचरण है। जन्म से हिन्दू ब्राह्मण है। यह कुछ काल तक अपनी माँ के साथ हमारी कोठी में रहा है।"

"तो यह आस्तीन का साँप है?"

"पर मैं यह समझती हूँ कि यदि वह चाहता तो विमला से विवाह कर सकता था। विमला सज्ञान है। यह उसके संकेत मात्र से उसके पास चली जाती, परन्तु इस लड़के ने यह कहा है कि जब तक हम इसका विवाह स्वेच्छा से नहीं करेंगे, यह इसे पत्नी के रूप में स्वीकार नहीं करेगा।"

"इसके सज्ञान होने पर भी?"

"वह समझता है कि इस विषय में सज्ञान का प्रश्न नहीं, इसमें परिवारों के संयोग का सम्बन्ध है। हमने विमला से कहा था कि यह आपको अवसर दे और यदि आप इसको जीत सकें तो हम प्रसन्न होंगे।"

"देखो विमला!" क्राफर्ड ने कह दिया, "यह महामूर्ख है। यह तुम्हारे सौन्दर्य को देख नहीं सका। न ही यह कानून जानता है। ऐसे मूर्ख के साथ तुम सुखी नहीं रह सकोगी। मैं समझता हूँ," क्राफर्ड ने तस्वीर के सामने रखे गुलदस्ते को उठाकर खिड़की में से नीचे लान में फेंकते हुए कहा, "इस बदसूरत, मूर्ख और अनपढ़ लौंडे का विचार छोड़ो और चलो, कल हम गिरजाघर में 'मैंन एण्ड वाइफ' होने का वचन दें, तदुपरान्त हनीमून के लिए अमरीका भ्रमण को चल दें।"

"मिस्टर क्राफर्ड!" आखिर विमला का मुख खुला, उसे गुलदस्ता उठाकर फेंका जाना अत्याचार समझ में आया था। उसने कहा, "मैं आपको सभ्यता नहीं सिखा सकती। हाँ, आपके मिथ्या वाक्यों का खण्डन कर सकती हूँ। इधर देखिये, यह दर्पण लगा है। ज़रा अपनी सूरत और इनकी सूरत से मुकाबला करेंगे तो आपको पता चलेगा सुन्दर कौन है। यदि बुद्धि का मुकाबला करना हो, तो मैं आपको भेंट में, इनका लिखा एक लेख दे सकती हूँ। आप ले जाकर पढ़ सकते हैं।"

विमला ने अपने तकिये के नीचे से एक पुस्तिका 'द रीयल हिन्दुइज्म' निकालकर आगे कर दी, "इससे आपको इनके पढ़े अथवा अनपढ़ होने का ज्ञान हो जायेगा।"

"देखो विमला, यह तस्वीर पर चमक-दमक तो तुम्हारे ब्रुश की बनाई है। यह तो मैं ठीक कर देता हूँ।" इतना कह क्राफर्ड ने जेब से चाकू निकाल, उस कैनबस को चीर कर उसके तीन-चार टुकड़े कर दिये और लकड़ी के फ्रेम को बल-पूर्वक मरोड़ दिया।

विमला इस असभ्य और घृणा-योग्य व्यवहार को और सहन नहीं कर सकी। उसके चित्त में तो आया कि इस जंगली के मुख पर एक चपत लगा दे, परन्तु मौसी का कथन स्मरण कर, वह क्रोध भीतर-ही-भीतर पी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयी। राधा का कहना था कि क्रोध से मति-भ्रम होता है, स्मृति विलुप्त होती है और फिर सर्वनाश होता है। इस कथन को स्मरण कर, उसने क्रोध को भीतर-ही-भीतर दबाने का यत्न किया। इस यत्न में उसके आँसू निकल आये। उसकी डबडबाई आँखों को देख, क्राफर्ड ने कह दिया, "आँसुओं से भरी मोटी-मोटी आँखें और भी सुन्दर हो उठी हैं।" और वह खिलखिलाकर हँस पड़ा।

विमला के लिए और अधिक सहन कहना कठिन हो गया। वह कमरे से बाहर निकल, सीढ़ियाँ उतर गयी। रमणी और क्राफर्ड खिड़की में से देखने लगे कि वह कहीं बाहर तो नहीं जा रही है।

विमला कोठी के बाहर निकल गयी। रमणी ने कहा, "यह अवश्य इस लड़के की माँ के पास जा रही है।"

क्राफर्ड कमरे से बाहर निकल आया। उसने मिस्टर दास से कहा, "विमला घर से भाग गयी प्रतीत होती है।"

"क्यों?"

"वह उस किताब की दुकान वाले से विवाह करने गयी प्रतीत होती है।"

"तो?"

"आप मेरे साथ आ जायें। हमें इस ब्राह्मण के बच्चे को अपने स्थान पर बैठाना चाहिए। आइये, मैं तमाशा दिखाता हूँ।"

हरिमोहन क्राफर्ड की मोटर में सवार हो गया और दोनों बाहर निकल गये।

रमणी इस पूर्ण घटना पर विचार करती हुई खड़ी रह गयी। विमला सत्य ही राधा के पास गयी थी। वह वहाँ पहुँच, राधा को पूर्ण वृतान्त बताती-बताती रो पड़ी थी।

इसी समय सुशीला वहाँ पहुँची थी। राधा ने संक्षेप में सुशीला को सब बातें बतायीं तो सुशीला ने कह दिया, "माँ जी! आज सायंकाल ही दोनों का विवाह कर दीजिये।"

"भगवती नहीं मानेगा।"

"वह क्या चाहता है?"

"उसका कहना है कि विवाह होगा तो विमला के माता-पिता की स्वीकृति से होगा। यह स्वीकृति तपस्या और त्याग से ही मिल सकती है।"

सुशीला विमला को देख रही थी। विमला मन की व्यथा को सहन न करती हुई रो रही थी।

एकाएक राधा ने पूछ लिया, "विमला! भगवती से विवाह करोगी?"

विमला इस प्रश्न का अभिप्राय समझने के लिए राधा का मुख देखने लगी। उसकी आँखों में आशा की किरण चमक उठी थी। राधा ने कहा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चलो मेरे साथ! मैं तुम्हारे माता-पिता से तुमको भगवती के लिए माँगती हूँ।"

"मौसी! तुम्हारा अपमान हो जायेगा।"

"पगली! मान-अपमान में क्या रखा है! ठीक और गलत व्यवहार में ही जीवन का सार है।"

राधा ने विमला को बाँह से पकड़ कर उठाया और उसे लेकर मकान के नीचे उतर आई।

बाज़ार में जाती एक खाली रिक्शा में बैठ, राधा और विमला मिस्टर दास की कोठी पर जा पहुँचीं।

रमणी इस परिस्थिति के उत्पन्न होने पर, खिन्न मन ड्राइंग-रूम में बैठी थी। वह राधा के साथ विमला को आते देख, प्रश्न-भरी दृष्टि में उनकी तरफ देखने लगी।

राधा ने रमणी के पास बैठते हुए और विमला को अपने दूसरी ओर बैठाते हुए कहा, "रमणी बहन! यह भगवती से विवाह करने के विचार से मेरे पास गई थी। परन्तु मैं तो आपसे ही इसको माँग कर ले जा सकती हूँ। यह तुम्हारी लड़की है। अब वयस्क हो गई है। परन्तु यह नहीं जानती कि हमारे धर्मशास्त्र में लिखा है कि माता-पिता जब तक जीवित रहें, तब तक उनकी आज्ञानुसार सन्तान को रहना चाहिए। धर्म के कार्य भी उनकी स्वीकृति से ही करने चाहिए। ऐसा मनु महाराज ने लिखा है।[1]

"मैं इसे लेकर आई हूँ कि आप अपनी लड़की पर दया करें। इसे और परीक्षा में न डालें। इसमें इसका कल्याण होगा, आपका कल्याण होगा और हमारा तो कल्याण होगा ही।"

रमणी ने विचारकर कहा, "भगवती के विषय में तो हम, मेरा मतलब है इसके पापा और मैं सहमत थे, परन्तु वह हिन्दू है और हम ईसाई हैं। इससे एक मतभेद का विषय हो गया है।"

"परन्तु हमने हिन्दू-धर्म स्वीकार करने की शर्त नहीं लगाई?"

"और विवाह कैसे होगा?"

"कोर्ट में रजिस्ट्री कराने से।"

"वह आग जला कर भँवरें लेने से नहीं?"

"वह आवश्यक नहीं। दोनों का परस्पर सहमत होना और फिर विवाह होने का प्रमाण होना आवश्यक है।"

रमणी वर्तमान परिस्थिति में यह सुझाव सर्वश्रेष्ठ समझती थी। उसने एक बात और पूछ ली, "और यह गिरजाघर जा सकेगी?"

"इसकी इसको स्वतन्त्रता होगी।"

---

1. तेषां त्रयाणां शुश्रूषा परमं तप उच्यते।
नतैरभ्यननुज्ञातो धमन्यं समाचरेत्।। मनु॰ 2-229

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और इसके बच्चे?"

"उनकी समस्या आज से बीस-इक्कीस वर्ष उपरान्त उपस्थित होगी, उस विषय में आज चिन्ता करनी व्यर्थ है।"

विमला ने कुछ उद्विग्न हो कह दिया, "और माँ! बच्चों के बच्चों का और फिर उनके बच्चों का क्या होगा?"

इस भीषण परिस्थिति में भी रमणी के मुख पर मुस्कराहट दौड़ गयी। वह समझ गयी कि वह मूर्खतापूर्ण बातें कर रही है।

वह बोली, "राधा बहन! मैं तो इस प्रबन्ध को संतोष-जनक मानती हूँ। परन्तु . . .।"

इस समय कोठी के बाहर क्राफर्ड की मोटर आकर रुकी। उसमें से वह स्वयं, दास बाबू तथा पुलिस का थानेदार बाहर निकले। रमणी ने इनको कार से उतरते देखा तो चुप रही। उसने यह भी देखा था कि मोटर-गाड़ी के पीछे पुलिस वैन में एक दर्जन पुलिस-कॉन्स्टेबल वहाँ पहुँच गये हैं।

क्राफर्ड, दास और थानेदार ड्राइंग-रूम में आये तो दास ने कहा, "यह औरत है।" उसने राधा की ओर संकेत कर दिया।

रमणी इत्यादि उनके आने पर खड़े हो गये थे। थानेदार ने लड़की और अन्य सब को बैठने को कहते हुए, स्वयं भी बैठकर राधा को सम्बोधन कर कहा, "देखो माताजी! यह रिपोर्ट है कि राधा और भगवतीचरण दोनों ने मिस्टर हरिमोहन दास की अल्पवयस्क लड़की का अपहरण किया है। राधा लड़की का विवाह बलपूर्वक अपने लड़के के साथ कराना चाहती है।

"हम पुलिस लेकर लड़की को छुड़ाने के लिये आपके मकान पर पहुँचे तो आपके नौकर से पता लगा कि आप घर पर नहीं हैं। दास बाबू हमको लेकर भगवतीचरण की दुकान पर पहुँचे। वह दुकानदारी कर रहा था और वहाँ यह लड़की नहीं थी। वहाँ खड़ी एक औरत ने बताया कि भगवतीचरण की माँ और लड़की दास बाबू के घर पर हैं। अतः हम यहाँ चले आये हैं।"

राधा मुस्करा रही थी। उसने मुस्कारते हुए पूछ लिया, "आप जानते हैं कि यह लड़की के माता-पिता का घर है?"

"हाँ।"

"तो ये लड़की का अपहरण तो हुआ नहीं। रिपोर्ट की पहली बात गलत है।

"दूसरी बात कि लड़की अल्पवयस्क है, यह इसकी माँ बैठी है। इससे पता करिये कि लड़की की क्या आयु है?"

थानेदार ने रमणी की ओर देखकर पूछा, "हाँ जी! आप अपने बयान भी लिखा दीजिये।"

थानेदार ने अपने बैग में से कागज़ और जेब से कलम निकालकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखना आरम्भ कर दिया।

क्राफर्ड ने कहा, "इसकी क्या आवश्यकता है? पिता के बयान जो हैं।"

थानेदार ने कहा, "इस तरह नहीं साहब! लड़की का अपहरण गलत सिद्ध हुआ है। जरा इस माई की दूसरी बात की भी परीक्षा कर लें।"

रमणी ने कहा, "लड़की उन्नीस वर्ष की हो गयी है। इसका अपहरण नहीं किया गया। यह अपनी इच्छा से गयी थी और अपनी इच्छा से ही लौटी है।

"यह भगवतीचरण से विवाह करना चाहती है। चूँकि यह अब वयस्क है, इस कारण विवाह का होना इसकी और भगवतीचरण की इच्छा पर निर्भर है।"

थानेदार ने रमणी के बयान लिखे और उठ खड़ा हुआ। फिर दास बाबू की तरफ देखकर बोला, "यह केस ऐसा नहीं कि पुलिस इसमें हस्तक्षेप करे।"

वह बाहर निकल, पुलिस-वैन में चढ़ गया। क्राफर्ड उसके पीछे-पीछे वहाँ जा पहुँचा। उसने कहा, "और साहब, मेरा पाँच सौ रुपया?"

"कोई और काम बताइयेगा। हम आपकी खिदमत के लिये हाजिर हैं।"

ड्राइंग-रूम में रमणी ने क्रोध में भरकर घरवाले से पूछ लिया, "यह आपने क्या किया है?"

"बन्दूक मिस फायर हो गयी।"

"देखो जी! मैं विमला के साथ जा रही हूँ। आज सायंकाल इनका विवाह इनके मकान पर होगा।"

"तो अकेली ही इसका विवाह कर दोगी?"

"नहीं। आप सायंकाल वहाँ पहुँच जाइयेगा।"

"जरा विचार कर लो रमणी!"

"कर लिया है।. . . चलो राधा बहन! आओ विमला!"

"तो तुम भी घर छोड़ रही हो?"

"जी नहीं। मैं तो लौट आऊँगी। रात यहीं रहूँगी।"

हरिमोहन दास और क्राफर्ड मुख देखते रह गये।

: 11 :

माँ ने भगवती को घर पर बुलाया तो भगवती के साथ सुशीला भी चली आयी। यह सुशीला ही थी, जिसने थानेदार को हरिमोहन के घर भेजा था। वह तब से दुकान पर ही खड़ी थी। और देख रही थी कि क्या होता है?

भगवती ने दुकान के चपरासी को बाईसिकल पर हरिमोहन की कोठी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर भेजा था, जिससे वहाँ क्या होता है, पता चल जाये। माँ का संदेश पहुँचने से पहले चपरासी लौट आया था और उसने सूचना दी थी कि पुलिस किसी को भी पकड़े बिना, वापस लौट गयी है। इसने क्राफर्ड और थानेदार में पाँच सौ रुपये की बात सुन ली थी। वह उसने भगवती को बताई तो सुशीला और भगवती हँस पड़े।

घर का नौकार आया तो उसने बताया कि माँ जी बुला रही हैं।

"अकेली हैं क्या?"

"जी नहीं। विमला ज़ी हैं। और विमला जी की माँ हैं।"

इस समाचार पर भगवती और सुशीला देवी, दोनों घर पर जा पहुँचे। रमणी ने ही यह बताया, "भगवती! आज सायंकाल विवाह संस्कार का प्रबन्ध करो।"

राधा ने कहा, "बहन! कोर्ट को तो पन्द्रह दिन का नोटिस देना होता है।"

"मैं तो हिन्दू तरीके से विवाह करने को कह रही थी।"

"मैं समझती हूँ। जल्दी की आवश्यकता नहीं। हम अभी कोर्ट में चले जाते हैं। वहाँ प्रार्थना-पत्र दे आते हैं। विवाह कोर्ट में ही होना ठीक होगा।"

"विमला का अब अपनी कोठी में जाना ठीक नहीं।"

"इसका प्रबन्ध हो जायेगा। मैं समझती हूँ कि आप भी आइये।"

भगवती ने टैक्सी की और चारों भगवती, विमला, रमणी और राधा टैक्सी में डिस्ट्रिक्ट कोर्ट को चले गये।

मार्ग में भगवती ने बताया, "माँ! राजा भैया की हत्या हो गयी। और छोटे साहब नौगवाँ गये हैं।"

"और सुशीला नहीं गयी?"

"न तो सुशीला बहन ने जाना ठीक समझा है, न ही छोटे साहब उसे ले जाने में कल्याण मानते थे।"

"यह हुआ कैसे?"

"पूरी बात तो पता नहीं चली। गाँव में ही हत्या हुई है। किसी का उत्पीड़न किया होगा और उसने पेट में छुरा घोंप दिया प्रतीत होता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपसंहार

लालसा का स्वरूप और उत्पत्ति

चिर-स्थायी कामना को लालसा कहते हैं। किसी वस्तु को पाने की उत्कट इच्छा, जो सुगमता से मिट न सके, को लालसा का नाम दिया जाता है।

यह कैसे उत्पन्न होती है? लालसा संस्कारों का परिणाम है। संस्कार, अनुभवों के मन पर उस प्रभाव को कहते हैं, जो शीघ्र विस्मरण न हो सके। और उतनी ही उसकी स्मृति चिरायु होती है। उन संस्कारों के अधीन ही मनुष्य के कर्म चलते हैं।

एक उदाहरण से बात स्पष्ट हो जायगी। किसी समय अति स्वादिष्ट गाजर का हलुआ किसी ने खाया। उसने हलुवे का स्वाद अनुभव किया। स्वाद का अनुभव मन को स्मरण रहा। यह संस्कार है। इस संस्कार का स्वाभाविक परिणाम यह होगा कि वैसा ही स्वादिष्ट हलुआ पुनः-पुनः खाने की इच्छा होती रहे। जब-जब भी स्वाद की स्मृति जागृत होगी, तब-तब ही उस स्वाद को प्राप्त करने की इच्छा उत्पन्न हो जायगी और यदि स्वाद की स्मृति गहरी है तो उसे पुनः प्राप्त करने की इच्छा चिरकाल तक होती रहेगी। यही लालसा है।

कर्मों की श्रेणियाँ और उनके फल

मनुष्य के कर्मों को तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया है—काम्य कर्म, नैमित्तिक कर्म तथा नित्य कर्म। इन तीनों में काम्य कर्म ही सबसे अधिक खराबी अथवा भलाई करने वाले होते हैं।

काम्य कर्म उन कर्मों को कहते हैं, जो किसी इच्छा की पूर्ति के लिये किया जाय। इच्छा, जैसा कि ऊपर बताया है, संस्कारों का परिणाम होती है। अतः यदि काम्य कर्म ही मुख्य है। और ये ही भलाई अथवा बुराई के हेतु हैं, तो संस्कारों की महत्ता का अनुमान लगाया जा सकता है।

नैमित्तिक और नित्य कर्म तो किसी सामयिक आवश्यकता के परिणाम-स्वरूप किये जाते हैं। चोर ने मकान को सेंध लगानी आरम्भ कर दी, मकान के स्वामी को पता चल गया और वह लाठी ले चोर को भगाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये चल पड़ा, चोर ने स्वरक्षा के निमित्त स्वामी का विरोध किया, स्वामी ने लाठी चलाकर चोर को घायल किया। चोर के सेंध लगाने के अतिरिक्त अन्य सब कर्म नैमित्तिक कर्म हैं।

एक रोगी के पेट में पीड़ा हो रही है। डाक्टर कारण न समझ उसका पेट चीर कर कारण जानना चाहता है। वह उसका पेट चीर देता है। रोगी की मृत्यु हो जाती है। डाक्टर का उस रोगी को मार डालना भी नैमित्तिक कर्म है। इसी प्रकार परिस्थितिवश तथा विवशता के कारण जो कर्म किये जाते हैं, वह नैमिक्तिक कर्म होते हैं। ऐसे कर्मों का फल कुछ नहीं होता। दण्ड-विधान में भी ऐसे कर्म अपराध नहीं माने जाते हैं। काल और परिस्थितिवश मनुष्य इन्हें करने के लिये विवश हो जाता है। वर्तमान सभ्य देशों में इस प्रकार के कर्मों को दण्ड का विषय भी नहीं माना गया। अपनी सुरक्षा में की गयी हत्या भी दण्ड का विषय नहीं होती।

नित्य कर्म तो वे हैं, जो शरीर को चालू रखने के लिये किये जाते हैं। जैसे, उठना-बैठना, खड़े होना, चलना, खाना-पीना, सूँघना, देखना, आँखों को मींचना इत्यादि कर्म नित्य कर्म कहाते हैं। शरीर को चालू रखने के अतिरिक्त इनका भी कोई फल नहीं होता। इतना विचार अवश्य रखना होता है कि नित्य कर्म करते हुए किसी दूसरे का अधिकार न छिन जाये। उदाहरण के रूप में भोजन करते हुए किसी मनुष्य के मुख में से कौर निकालना। ऐसा कर्म पाप-पुण्य, अच्छा-बुरा कर्म हो सकता है। परन्तु केवल मात्र खाना न तो पाप-कर्म है और न ही पुण्य-कर्म।

काम्य कर्म कर्म-बन्धन के कारण

इस प्रकार तीन प्रकार के कर्मों में केवल काम्य कर्म ही हैं, जिनका मनुष्य की भलाई-बुराई से सम्बन्ध है। भलाई-बुराई से मनुष्य के कर्मबन्धन का अभिप्राय है। कर्म-बन्धन शास्त्रों का एक पारिभाषिक शब्द है। इसका अर्थ है, जन्म-मरण के चक्र में फँसा रहना। जन्म और मरण दोनों ही अति अप्रिय घटनाएँ हैं। जन्म के समय मनुष्य को नौ मास तक एक ही अवस्था में और एक ही सीमित स्थान पर बन्द रहना पड़ता है और फिर जन्म के समय एक अति तंग द्वार से निकलने की प्रक्रिया, तदनन्तर शैशव, बाल्यकाल और कौमार्यावस्था में दूसरों पर निर्भर रहना, जन्म के ही परिणाम हैं। ये अवस्थाएँ अवांछित हैं। कोई भी बुद्धिशील प्राणी इसे नहीं चाहता। यह मरण और जन्म, मनुष्य के अपने अधीन नहीं। इनका काल एक सीमा तक आगे-पीछे किया जा सकता है, परन्तु इससे सदा के लिये बचा नहीं जा सकता।

शास्त्रों का कथन है कि मरण तथा जन्म कर्म-फल की प्राप्ति में होता है। जब किसी कर्म का फल भोगा जा रहा होता है, तब नये कर्म भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने लगते हैं। और फिर उनका फल भोगने के लिये पुनः जन्म-मरण के बन्धन में आना पड़ता है।

उदाहरण के रूप में एक मनुष्य अपने पूर्व-जन्म के कर्मों के फल स्वरूप निर्धन है। उसका धन अर्जन करने का कोई भी प्रयास सफल नहीं होता। उस समय वह मनुष्य चोरी करने का अथवा किसी दूसरे के परिश्रम से उत्पन्न फल को स्वभोग में लाने का यत्न करता है। यह पूर्व-जन्म के कर्मों का फल भोगते हुए नवीन कर्म हो गया। यह अपना फल देगा।

इस प्रकार कर्म से फल, फल प्राप्त करते पुनः कर्म, और फिर उसका फल, ऐसी एक अटूट श्रृंखला बन जाती है। इस श्रृंखला में से मनुष्य बाहर नहीं निकल सकता और बार-बार भिन्न-भिन्न योनियों में जन्म लेता है।

कर्म-बन्धन काम्य कर्मों का ही परिणाम होता है। काम्य कर्म कामनाओं से प्रेरित होकर किये जाते हैं। कामनाएँ संस्कारों का परिणाम हैं तथा संस्कार मन पर बनते हैं। उपनिषद् का यह कथन है—

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।
बंधाय विषयासंगि मोक्षे निर्विषयं स्मृतम्।।

(मैत्र्यु॰ 6-34, अमृतबिन्दु 2)

अर्थात् मनुष्य के बन्धन अथवा मोक्ष का कारण मन है। मन के विषयासक्त होने से बन्धन तथा निर्विष्य होने से मोक्ष होता है।

मोक्ष का अभिप्राय है, जन्म-मरण से मुक्ति पाना।

यह कहा जाता है कि यह संसार अति लुभायमान है। इसके विषय अति मनोरम है। अतः इनकी प्राप्ति जन्म का दुःख भोग कर ही हो सकती है। ऐसा मानने वाले कहते हैं—

यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः।
वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः।।
कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम्।
क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति।।

(भ॰गी॰ 2-42, 43)

(भोगों में लिप्त सांसारिक ज्ञान में रत, अविवेकी मनुष्य ही रंगीन भाषा में यह कहते हैं कि इस जन्म में कर्म का फल और भोग स्वर्ग से भी ऊपर है। ये लोग कामनाओं से अभिभूत इस लोक में अनेक प्रकार के उपद्रव करने में सफल होते हैं। वास्तव में ये जीव ही इतर योनियों में अज्ञान के अन्धकार में भटकते फिरते हैं।)

दुःख-सुख और कर्म

यह युक्ति और प्रमाण से सिद्ध होता है कि इस संसार में सुख-दुःख अकारण नहीं होते। ये कर्मों के फलस्वरूप ही होते हैं। भ्रम इस कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जाता है कि कुछ जीव अपने पूर्व-जन्म के फलस्वरूप वर्तमान जीवन में प्रत्येक प्रकार की उच्छृंखलता को करते हुए भी सुख तथा आनन्द का भोग करते हैं। यह स्थिति इस प्रकार समझी जा सकती है कि जैसे एक कर्मचारी जीवन के एक भाग में उसका भोग करता है। जब तक धन व्यय नहीं हो जाता, उसका भोग चलता रहता है। कभी उसका प्रतिस्पर्धी उसके भोग छीनना चाहता है, परन्तु वह अपने पूर्वसंचित धन-सम्पदा से प्रतिस्पर्धी को पछाड़ कर अपने भोग जारी रखता है।

इस संचित धन को अधिक काल तक चलाने के लिये कुछ लोग ऐसा भी करते हैं कि भोग के साथ-साथ और धन का संचय करते जाते हैं। अभिप्राय यह है कि पूर्व-जन्म के पुण्य-कर्मों से प्राप्त भोगों को भोगते हुए पुण्य-कर्म करते रहते हैं। ये लोग अपनी पूँजी में वृद्धि करते हुए भोगों को और अधिक लम्बे काल तक चलाने में सफल हो जाते हैं।

दुःखों की निवृत्ति

पुण्य अथवा पाप, जैसे भी कर्म किये जाएँ, उससे जन्म-मरण से बचा नहीं जा सकता। हाँ, जीवन में दुःख तथा यन्त्रणा को कम किया जा सकता है और फिर इससे मुक्ति भी पायी जा सकती है। इस विषय में भगवद्गीता एक मार्ग बताती है।

यस्य सर्वे समारम्भा कामसंकल्पवर्जिताः।
ज्ञानग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः।।

त्यक्त्वा कर्मफलासंगं नित्यतृप्तौ निराश्रयः।
कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किंचित्करोति सः।।

निराशीर्यतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः।
शारीरं केवलं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्विषम्।।

(4-19, 20, 21)

(कर्म करने के पूर्व कामना का संकल्प न करो। अर्थात् फल की इच्छा न करो। कर्म को ज्ञान से परख कर करो। तब तुम पण्डित माने जाओगे।

(किसी भी कर्म के फल की इच्छा न करो। कर्म करते हुए सदा प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहो और किसी की प्रशंसा तथा निन्दा की चिन्ता न करो। इस विचार को रखते हुए कर्म करो तो ये कर्म तुम्हें बन्धन में नहीं बांधेंगे।

(कर्म करते समय किसी प्रकार की आशा मत रखो। अपने मन को वश में करके स्वार्थ का विचार निकाल दो। इस अवस्था में शरीर सम्बन्धी सब कर्म करते हुए भी किसी प्रकार के पाप में युक्त नहीं होगा।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षेप में यह उपाय है कर्म बन्धन से छूटने का। यहाँ एक उदाहरण से बात और स्पष्ट हो जायगी।

गाँव में एक दुकानदार है। वह अपनी दुकान पर नगर से सामान लाकर बिक्री करता है। दुकान करने का एक यह उद्देश्य हो सकता है कि गाँव के सीधे-साधे सरलचित्त लोगों को सुन्दर वस्तुएँ दिखाकर उनके धन को लूटना। दूकान करने का एक दूसरा प्रयोजन भी हो सकता है। वह यह कि अपने क्रय करने के ज्ञान से लोगों की आवश्यकताओं को पूर्ण करना। प्रथम उद्देश्य से दुकान ठगी हो जाती है तथा दूसरे से सेवाकार्य। लाभ तो दोनों अवस्थाओं में होता है, परन्तु दूसरी अवस्था में लाभ करना ही उद्देश्य न होने से यह सेवा-कार्य है। भगवद्गीता के कथनानुसार यह कार्य मनुष्य को बाँधेगा नहीं। अर्थात् यह कर्म करते हुए भी मनुष्य कर्म-बन्धन में बँधेगा नहीं। ऐसा कर्म यज्ञ, अर्थात् लोक कल्याण का कार्य, कहा जाता है।

मन की भावना पर ही कर्म-फल निर्भर है। कर्म करते समय मन में निष्काम भाव हो, तभी मुक्ति मिल सकती है। इसका अभिप्राय है कि कर्म का फल तो मिलता है, परन्तु मन पर संस्कार नहीं बनता। अतः कामना यदि लोक-कल्याण की बना ली जाये, तो कामना से कर्म तो होगा, कर्म का फल भी मिलेगा, परन्तु वह कर्म मन पर किसी प्रकार का संस्कार नहीं छोड़ेगा। परिणाम यह होगा कि कर्म-बन्धन से मुक्ति मिल जायेगी।

निष्कर्ष

इस सब विवेचन का तथा विवेचित कथा का निष्कर्ष यह निकला कि कर्म लालसा-रहित होने से केवल दो प्रकार के रह जाते हैं—नैमित्तिक तथा नित्य। तब कर्म कामना युक्त नहीं रहता। अतएव उसका फल नहीं रह जाता।

इस कथा की पात्रा राधा रानी विवशता से राजा भैया की भोग सामग्री बन जाती है, परन्तु पतन से बच जाती है। कारण यह कि वह इसमें किसी प्रकार की कामना नहीं रखती। उसका गाँव में रहना, खेती करना, उसके नित्य-कर्मों में आ जाता है।

इसके विपरीत राजा भैया किसी पूर्व-जन्म के शुभ-कर्मों से एक बड़े ज़मींदार के घर पैदा होता है। सब प्रकार की सुख-सुविधा रखते हुए भी, वह पूर्व जन्म के शुभ-कर्मों में वृद्धि नहीं करता। वरन् वह उन्हें व्यय करता जाता है। एक समय आता है कि उसके सब पुण्य-कर्म क्षीण हो जाते हैं और समय से पूर्व ही वह मान-प्रतिष्ठा तथा धन-वैभव खो बैठता है।

भगवतीचरण कर्म और विकर्म में अन्तर को देखता हुआ जीवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यतीत करता है।

कथा इस लोक की है। लेखक पूर्व-जन्म और भावी लोक का द्रष्टा न होने से, नहीं बता सकता कि किस पुण्य अथवा पाप-कर्म के फलस्वरूप एक आततायी बन, दूसरे को पीड़ित करता रहा तथा उसके इस लोक के पाप-कर्मों का उसके भावी जन्म पर क्या प्रभाव पड़ा। पीड़ित व्यक्ति अपने दृढ़-संकल्प और धर्मयुक्त व्यवहार से इस लोक में ही कठिनाई को पार कर जाता है।

कथा काल्पनिक है। किन्तु भाव में सच्चाई है। आँखें खोल कर देखने से चारों ओर घट रही घटनाएँ यही बात प्रकट करती हुई दिखाई देंगी।

इस पुस्तक में लेखक ने कथा की भूमिका को नया रूप दिया है। इसी कारण इसे भूमिका न कहकर, उपसंहार कहा है। यह विषय का संहार अर्थात् सारांश है।

गुरुदत्त

Central Library
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
167973

081
167973

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY		
	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या R 089.9143 GUR-L   आगत संख्या 167973

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त

1894-1989 शिक्षा : एम. एस–सी.

प्रथम उपन्यास "स्वाधीनता के पंथ पर" से ही ख्याति की सीढ़ियों पर जो चढ़ने लगे कि फिर रुके नहीं।

विज्ञान की पृष्ठभूमि पर वेद, उपनिषद् दर्शन इत्यादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया तो उनको ज्ञान का अथाह सागर देख उसी में रम गये।

वेद, उपनिषद् तथा दर्शन शास्त्रों की विवेचना एवं अध्ययन अत्यन्त सरल भाषा में प्रस्तुत करना गुरुदत्त की ही विशेषता है।

उपन्यासों में भी शास्त्रों का निचोड़ तो मिलता ही है, रोचकता के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढ़ना आरम्भ करने पर समाप्त किये बिना छोड़ा नही जा सकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar